वैश्विक परिप्रेक्ष्य में गांधीजी और अन्य शोध

डॉ. गुलाबचंद पटेल

रंगमंच प्रकाशन

सौजन्य से *प्रकाशन* ...

महात्मा गांधी साहित्य सेवा मंच

गांधीनगर, गुजरात (8849794377)

Email: gulabchandpatel15072@gmail[dot]com

टाइप सेटिंग– श्री कांतिलाल रावल गांधीनगर

सहायक संस्था–साहित्य दर्शन डॉट कॉम,

श्री एल. आर. सेजु. थोब 'प्रिंस'

टाइप सैटिंग – प्रदीप जी पटेल ,गांधीनगर

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में गांधीजी और अन्य शोध

ISBN : 978-81-946742-1-4

संस्करण –प्रथम, November ***2020***

ऑन लाइन– october2020

विधा – **शोध**

मूल्य **: 450/-**

कॉपीराइट ©

डॉ. गुलाब चंद पटेल

साहित्य है सबके लिए

पुस्तकें अनमोल धरोहर हैं

मुद्रक : आर.एच. प्रिन्टर्स, दिल्ली

सत्यमेव जयते

विजय रुपाणी

मुख्यमंत्री, गुजरात राज्य

ipr/Ug/2020/06/08/jp

दि. ०८/०६/२०२०

संदेश

'साहित्य का कर्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है,

परंतु एक नया वातावरण भी देना है।'

- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

साहित्यकार समाज में घटित घटनाओं को अपनी कल्पना शक्ति और सृजनशक्ति से शब्दों में अंकित करके जीवंत बनाते हैं। साहित्य से ही मनुष्य को ज्ञान मिलता है और जीवन उल्लासमय बनता है।

डॉ. गुलाबचंद पटेल लिखित ई-पुस्तक **"वैश्विक परिपेक्ष्य में गांधीजी और अन्य शोध"** पुस्तक का विमोचन महात्मा गांधी साहित्य सेवा मंच, गांधीनगर द्वारा दि. १२ जून २०२० को हो रहा है यह जानकर प्रसन्नता हुई। इस अवसर पर ओन लाइन कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है जो आवकार्य है।

साहित्य क्षेत्र में डॉ. गुलाबचंद प्रगति करते रहें और हिन्दी साहित्य को समृद्ध करें यही शुभेच्छा के साथ महात्मा गांधी साहित्य सेवा मंच, गांधीनगर को अभिनंदन प्रेषित करता हूँ।

आपका

(विजय रुपाणी)

To,
Dr. Gulabchand Patel, President,
Mahatma Gandhi Sahitya Seva Manch,
Hari Kripa, Plot No. 127/1,
Sector-14, Gandhinagar.

Shri. Lal Bahadur Rana

फाउंडर एंड प्रेसिडेंट

गांधी पीस फाउंडेशन नेपाल

99104 82481

वैश्विक परिप्रेक्ष्य मे गांधीजी
और अन्य शोध

लेखक की कलम से

राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की जन्म भूमि पर हमे प्रेरणा मिली और नशा मुक्ति अभियान प्रणेता बन गए हैं, ब्रेसट कैंसर अवेर्नेस प्रोग्राम आयोजक इंडियन लायंस गांधी नगर मे सेवा का अवसर मिला, हिंदी गुजराती साहित्य मे आज एक नई पहचान मिली है

अध्यक्ष
महात्मा गांधी साहित्य सेवा
मंच गांधी नगर

1 जून 2020

GANDHIAN LITERATURE & INTERNATIONAL

स्वास्थ्य का गांधीमार्ग

SAARC

SWACCHA ABHIYANI AWARD 2020

On the occasion of 150th Birth
Anniversary Celebration of Guru Mahatma Gandhi ji,
this certificate is granted to

Shri. Dr. Gulabchand Patel

for his/her Service in Swachha Abhiyan/Literature
as G. Literature . We wish your effort would bring
new changes in Environment and Human Life.

Organized by:

Date:
18/06/ 2020

Gandhi Peace Foundation Nepal
Kathmandu, Nepal

Venue:
Gandhinagar,Gujarat,India

SWACHHATA
HI SEVA

Swachhata
स्वच्छता अभियान

Dr. Lal Bahadur Rana
Founder President
Gandhi Peace Foundation Nepal

स्वास्थ्य का गांधीमार्ग

प्रस्तावना

गुजरात के जाने माने समाजसेवी तथा हिन्दी के प्रखर कवि चिंतक अनुवादक डॉ. गुलाब चंद पटेल की कृति ''वैश्विक परिप्रेक्ष्य में गांधीजी और अन्य शोध" के संदर्भ में मुझे लिखने का अवसर प्राप्त हुआ अधिक प्रसन्नता हुई। देश में विश्व महामारी कोरोना की भीषणता के कारण लोकडाउन का डॉ. पटेल ने भरपूर उपयोग करते हुए समाज सेवा तथा साहित्य सेवा की है। विभिन्न साहित्यिक संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कवि सम्मेलनों में स्वयं हिस्सा लेकर साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किया। कोरोना संक्रमण की सेवा भाव हेतु ऑनलाइन जन जागरूकता अभियान चलाकर देश हित में कार्य करने वाले डॉ. गुलाबचंद पटेल जी प्रशंसनीय और बंदाई के पात्र हैं।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में गाँधीजी और अन्य शोध पुस्तक में डॉ. पटेल के कई आलोचनात्मक लेख का संग्रह है। ये लेख साहित्य, समाज, संस्कृति,शिक्षा,सिनेमा के साथ कोरोना महामारी पर केन्द्रित हैं। साथ ही गुजरात की माटी में जन्मे राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के जीवन दर्शन पर भी कई लेख संग्रहीत हैं।

इन लेखों के अलावा विविध विषयों पर भी लेख इस पुस्तक में संग्रहीत किए गए हैं। इन लेखो में डॉ. पटेल की विगत कई वर्षों की साधना परिलक्षित हो रही है। इस साधना हेतु इन्हें कई साहित्यिक संस्थाओं तथा गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री विजय रूपाणि द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। राष्ट्रपिता गांधीजी पर केन्द्रित उनकी हिन्दी साहित्य पर गांधीजी का प्रभाव, गांधीजी की ऐतिहासिक अफ्रीका यात्रा, गांधी दर्शन, भाषा, समाज,राजनीति, सत्या और साधन, गांधी बापू को पत्र, गांधीजी का हिन्दी प्रेम,अस्पृश्यता आंदोलन और गांधी आदि के लेख उनके गांधीवादी चिंतन को रेखांकित करता है। इस पुस्तक में गांधी नगर के आँगन में महात्मा गांधी साहित्य सेवा मंच गांधी नगर की और से आयोजित ऑनलाइन गुजराती कवि सम्मेलन पर भी दृष्टि डाली गई है। जिसमें डॉ. गुलाब चंद जी की सहभागिता प्रशंसनीय है। इसमें अपनी मातृ भाषा तथा समाजके प्रति अगाध प्रेम झलकता है। इन्होनें इलेट्रॉनिक मीडिया से हिन्दी प्रचार लेख में राष्ट्रभाषा प्रेम का संदेश भी दिया है। इनके अन्य लेख वैश्विक इतिहास और संस्कृति में मीडिया व सिनेमा के योगदान में उनकी व्यापक दृष्टि परिलक्षित हो रही है। कहीं-कहीं इनके लेखों में श्रीमदभगवद् गीता के संदेश की बोछार है तो किन्ही लेखों में बालकों की मनोदशा पर दृष्टि डाली गई है। वहीं दूसरी और संस्कृति और वेदों पर भी विस्तृत लिखा गया है। वर्तमान मानव जीवन की सर्वाधिक विकट समस्या ''कोरोना महामारी" को भी डॉ. पटेल ने अपने कुछ लेखों द्वारा इस पुस्तक में संकलित किया है। यह विकट समस्या विश्व के महान बुद्धिजीवियों द्वारा ही

निर्मित की गई है,क्योंकि यह जैविक हथियार गरीब और अनपढ़ लोगों द्वारा नहीं बनाया और छोड़ा गया बल्कि विश्व के बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा ही निर्मित किया गया है। जिससे अपार जन–धन की हानि हुई है। इस संकट से वे बुद्धिजीवी भी प्रभावित हैं, जिन्होंने यह वायरस पूरी दुनिया में फैलाने का घृणित कार्य किया है। इस महामारी से हुए विनाश के संदर्भ में ईश्वर भी यह संदेश दे रहा है कि एक ग्राम का हजार वाँ भाग भी पूरी दुनिया का विनाश कर सकता है। अपने इन लेखों के आधार से डॉ. पटेल जी देश और दुनिया को यह संदेश देना चाहते हैं कि अपने ज्ञान बुद्धि तथा बल का प्रयोग विश्व कल्याण तथा सद्कार्यो में करना चाहिए उनके द्वारा लिखित भारतीय संस्कृति और कोरोना संकट वैश्विक जन–धन के विश्व कल्याण तथा कोरोना संकट से निदान की प्रार्थना ईश्वर से करते हुए प्रतीति हो रही है।
यही अन्य लेखो में जैन संत कवि,स्वामी विवेकानंद,बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर तथा गुजरात के क्रांतिकारी साहित्य जगत के स्वामी जवेरचंद मेघानी,गुजराती साहित्यकार कन्हैयालाल मुंशी पर अपने लेखों के माध्यम से अपनी साहित्यिक मेधा का परिचय देते हैं। इस प्रकार डॉ. गुलाब चंद पटेल द्वारा रचित इस पुस्तक में साहित्य,कला,संस्कृति,मीडिया,कोरोना संकट, तथा महापुरुषों पर केन्द्रित शोधलेखों को संग्रहीत किया गया है। ये लेखसाहित्य जगत के साथ विश्व कल्याण हेतु सम्पूर्ण विश्व में शिक्षा तथा जागरूकता का संदेश हैं। यही मेरी मंगल कामना है। डॉ. पटेल को भी इस कृति के ऑनलाइन प्रसारण हेतु शुभकामनाएँ। आशा है यह कृति हिन्दी विषय में शोध करने वाले शोधार्थियों तथा आम पाठकों हेतु शिक्षाप्रद तथा संग्रहणीय साबित होगी।

डॉ. घनश्याम भारती
अध्यक्ष हिन्दी विभागः,
शाखा–पीजी कॉलेज,गढ़ कोटा
सागर,मध्य प्रदेश

निवास / पत्राचार
विद्यापुरम (एक्स्टेंसन)सागर
मध्य प्रदेश 470004
मो. – 9893747806
ईमेलः drghanshyambharti@gmail.com

अनुक्रमणिका

१. हिन्दी साहित्य पर गांधीजी का प्रभाव 12
२. गांधीजी की एतिहासिक अफ्रीका यात्रा 16
३. गांधी दर्शन – भाषा, समाज, राजनैतिक साध्य और साधन 21

४. गांधी बापू को पत्र 29
५. गांधीजी का हिन्दी प्रेम 31
६. गांधीनगर के आंगन में महात्मा गांधी साहित्य सेवा मंच गांधीनगर की और से आयोजित ऑनलाइन गुजराती कवि सम्मेलन 37
७. अस्पृश्यता आंदोलन : गांधीजी 37
८. इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से हिंदी प्रचार 42
९. वैश्विक इतिहास साहित्य और संस्कृति में मीडिया व सिनेमा का योगदान 46
१0. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक न्याय संस्कृति के विकास में श्रीमद भगवद् गीता 51
११ वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य की भूमिका 56
१२.मौजूदा साहित्य शिक्षा समाज एवं मीडिया में बाल मानस 65
१३ हिंदी संस्कृति और वेद 72
१४ भारतीय संस्कृति और कोरोना संकट 79
१५ वैश्विक जन धन को चुनोती देती महामारी कोरोना वायरस 19 82
१६ कोरोना वायरस की स्थिति प्रति दिन 84
१७ नारी उद्धारक स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मंत्री डॉ. बी. आर. अम्बेडकर 90
१८ फेसबुक ट्विटर पर उभरता साहित्य – दशा और दिशा 92

१९. भारतीय संस्कृति और सिनेमा 97
२०. एक राष्ट्र एक राष्ट्र भाषा और वैचारिक प्रदूषण 102
२१. हिंदी भक्ति काव्य का सामाजिक सरोकार 105
२२. महा प्रज्ञ आचार्य महान जैन संत कवि लेखक 109
२३ प्रवासी विमर्श 115
२४ स्वामी विवेकानंद 119
२५ अतीत से भविष्य की और ले जाने वाले विचारक – स्वामी विवेकानंद 122
२६ गुजरात के क्रांतिकारी साहित्य जगत के स्वामी जवेर चंद मेघानि 124
२७ गुजराती साहित्यकार कन्हैयालाल मुन्शी 130
२८ इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से हिंदी प्रचार 138
२९ दलित पत्रकारिता पर डॉ. अम्बेडकर का प्रभाव 139
३० सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रभाव 146
३१ हिंदी साहित्य में सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त 151
३२ सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त 153

हिन्दी साहित्य पर गांधीजी का प्रभाव

गांधीजी एक साहित्यकार थे। इन्होंने सत्य अहिंसा से भारत को स्वतन्त्रता दिलाई इस लिए उनका साहित्यकार रूप कम उजागर हुआ है, किन्तु सत्य के प्रयोग नामक आत्मकथा। यह पुस्तक ने इन्हें बहुत ही प्रसिद्धि दिलवाई। इनके विचारों को प्रदर्शित करने वाली पत्रिका 'इंडियन ओपिनियन, नवजीवन' थी। उनका लिखने का उद्देश्य लोक जागृति था। गांधीजी ने 'हिन्द स्वराज', दक्षिण अफ्रिका का सत्याग्रह', आरोग्य की चाबी', मंगल प्रभात' और अना शक्ति योग' थे। उनके पत्र और भाषण की बहुत सारी पुस्तकें बनी है। गांधीजी सरल और सहज लोगों को स्पर्श करे, ऐसा साहित्य लिखते थे। राम नाम : महात्मा गांधीजी की हिन्दी पुस्तक गूगल पर उपलब्धहै।

गांधी पर आधारित 300 पुस्तकों की प्रदर्शनी लखनऊ के चार बाग रेल्वे स्टेशन के बाहर चल रहे गांधी पुस्तक मेले में प्रदर्शनी में लगाई गई थी। राज मोहन गांधी के चर्चित पुस्तक 'मोहनदास ए ट्रू स्टौरी ऑफ ए मैन हीज पीपल एंड एम्पायर' से प्रेरित इस पुस्तक का रूपांतर हिन्दी में संजीदा और लोकप्रिय कवि प्रो. अशोक चक्रधर ने किया है। ''गांधीः मेरा जीवन ही मेरा संदेश'' शीर्षक से रूपांतरित पुस्तक सर्व श्रेष्ठ कृति है। 205 पन्नों की यह पुस्तक सरल और सहज होने के कारण अनूठी बन गई है। सत्य के प्रयोग यानि कि आत्मकथा ने कई व्यक्तियों की जिंदगी बदल दी । ये तो गांधीजी के पुस्तक की बात की गई लेकिन हिन्दी साहित्य पर गांधीजी का क्या प्रभाव रहा यह बात अब करना जरूरी है।

गांधीजी ने अपने विचारों, अपने व्यक्तित्व, अपनी भाषा, अपने कार्यक्रमों, विशेषकर अपने भाषणों एवं लेखन के सशक्त माध्यम से देशवासियों में मूलतः लेखकों, साहित्यकारों, के मानस में सत्य, अहिंसा ,प्रेम-एकता,शांति-सद्भावना जागृत की। गांधीजी का सर्व प्रमुख राजनैतिक सिद्धांत था- सर्वोदय व्यवस्था।

भारत के सभी साहित्यकार सन् 1920 से 1940 तक प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से उनसे प्रभावित हुए थे। उनमें से कई गांधीजी के संपर्क में आए थे। कई ने उनके रचनात्मक कार्यक्रम में 'राष्ट्रीय भाषा' सूत्र से यह वाक्य अपनाया था, अगर हमें अपने देश की आत्मा से सच्चा प्रेम है,तो हमें कम से कम उतने महीने हिंदुस्तानी सीखने में लगाने ही चाहिए जितने वर्ष हमने अंग्रेज़ी सीखने में बिताए हैं।

प्रेमचंद जी गोरखपुर में 1923 में गांधीजी का भाषण सुनकर इस तरह प्रभावित हुए कि उन्होंनें 23 बरस की अपनी सरकारी नोकरी छोड़ दी। फलतः हिन्दी साहित्य जगत में उपन्यास सम्राट बने। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने भी गांधीजी से प्रभावित होकर, उपेक्षिता उर्मिला को लेकर 'साकेत' की रचना के बारे में गांधीजी से पत्र व्यवहार किया था। इस प्रकार गांधीजी की प्रेरणा से हिन्दी भारतीय साहित्य में बोलचाल की सरल–सहज भाषा,कहानी और कविता का माध्यम बनी। पहले जो संस्कृत और बोझिल पंडित भाषा लिखी जाती थी,वह एक तरह से काल बाह्य हो गई । महात्मा गांधीजी का कथन था कि,' समाज में वंचित–मुंचित, 'दलित–शोषित' 'दरिद्र नारायण' की सेवा करो। फलस्वरूप कई काव्य और उपन्यास अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जन जातियों पर लिखे गए। सन 11 ई स से लेकर चालीस के बीच पचासों उपन्यास इस दिशा में अग्रसर हुए। मैथिली शरण गुप्ता के 'किसान' और अछूत' खंड काव्य,रवीद्र नाथ की 'चंडालिका' शरत चन्द्र चटर्जी का 'पल्ली समाज' इसी कोटी की है। गांधीजी ने सेवा संयम एवं अहिंसा का जो पाठ पढ़ाया था, उसी तथ्य पर आधारित व्यंग्य नाटक, 'बकरी' सर्वेक्षर डायल सक्सेना का है। नरेंद्र कोहली का 'शंबूक की हत्या' भी इसी कोटी की है। हिन्दी साहित्यकारों के साथ–साथ दक्षिण भारत के साहित्यकारों में भी गांधीजी के भाषण का अद्वितीय प्रभाव रहा। गांधीजी का कहना था कि 'गांवों की और चलो।' विकेन्द्रीकरण के इस नारे का ही प्रभाव था कि हिन्दी में देहाती दुनिया, गोदान और मेला आँचल तक ग्राम और ग्रामीण जीवन ,कहानियाँ और उपन्यासों का विषय बना। महात्मा गांधीजी के सिद्धांतोंका प्रभाव केवल राष्ट्रीय आंदोलन पर ही नहीं,विश्व शांति के लिए अहिंसा का प्रेरणा देने में भी था। इस विषय को लेकर कई काव्य हिन्दी में लिखे गए। प्रायः हर हिन्दी भाषा भाषी परदेशों में राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं और प्रेमियों ने आत्मा कथा लिखी है। जिसमें गांधीजी की देश को एक सूत्र में बांध रखने की तड़प के दर्शन होते हैं। राजेंद्र प्रसाद हो या जय प्रकाश नारायण,द्वारिका प्रसाद हो या सेठ गोविंद दास, सभी में 'एक जगत' और 'मानव– मानव सब है एक समान' की भावना ही मिलती है। गांधीजी के जिन भाषा विषयक विचारों से भारतवासी प्रभावित हुए, उनमें उन लेखों का स्थान प्रमुख था। जो 'यंग इंडिया,हरिजन सेवक 'हरिजन बंधु' आदि में प्रकाशित हुए थे। इसके अतिरिक्त गांधीजी के द्वारा लिखी गई इंडियन होम रूल, हिन्दी स्वराज, और होम रूल जैसी पुस्तकों और तत्कालीन विभिन्न व्यक्तियों के नाम पर लिखे गए पात्रों आदि से भी प्रभावित हुए। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद कई साहित्यकारों ने कहानियों,उपन्यासों,और नाटकों के माध्यम से गांधी दर्शन से संबन्धित विभिन्न विचार व्यक्त किए । साहित्यकारों ने अपनी और से समाज हित के लिए बहुत कुछ करने के प्रयास किए और इस दिशा में काफी हद तक वे सफल हुए । गांधीजी ने जिस मंगल भारत की कल्पना की थी,उसे स्वर्ग तुल्य बनाने में हमें गांधीजी की मूल्य मर्यादाओं का पालन करना आवश्यक है।

गांधीजी के आदर्शों का प्रभाव जहाँ हिन्दी के कथा साहित्य पर संपूर्णता में व्याप्त हुआ है, वही कविता साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। भारतीय सनातन संस्कृति सत्य, अहिंसा, एवं साम्यवादी संस्कृति है, इसलिए रामायण एवं श्री रामचरित मानस के रचनाकारों ने श्री राम के चरित्र का निर्माण किया एवं एक आदर्श राज्य की कल्पना की । गांधीजी भी श्री राम के चरित्र से प्रभावित थे एवं राम राज्य की कल्पना को साकार करना उनका परम उदेश्य था। इसलिए जब राष्ट्रीय आंदोलन के नेतृत्व का मोका उन्हेंमिला तो गांधीजी ने उस आंदोलन को शांति से लड़ने का आग्रह अपने राष्ट्रवादी देशभक्तों से किया । एवं हिंसा का मार्ग छोड़कर अहिंसा के मार्ग पर चलने की हिदायत दी। यही कारण था कि उस समय के तथा उनके बाद के हिन्दी साहित्य एवं पत्रकारिता पर भी उनके व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही हो गया था। जहाँ प्रेमचंद एवं जैनेन्द्र जैसे कथाकारों ने अपनी कथाओं में आदर्श चरित्रों का निर्माण किया वही कविताओं में मैथिली शरणगुप्त जैसे राष्ट्रवादी कवियों ने भी एक व्यापक आदर्श प्रस्तुत किए। हिन्दी साहित्य पर महात्मा गांधी के प्रभाव को स्पष्ट एवं व्यापक रूप में देख सकते हैं। उनके चिंतन, दर्शन, राष्ट्र निर्माण एवं स्वराज की कल्पना को हिन्दी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं का विषय बनाया । साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज में हो रही घटनाओं का समकालीन एवं उसके बाद के साहित्य पर प्रभाव पड़ना अनिवार्य हो जाता है। गांधीजी अपने आप एक शांति के आंदोलन करता थे एवं तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन की घटनाओं के शांति के प्रणेता थे। अतः उनके द्वारा किए गए कार्यों को हिन्दी साहित्यकारों ने साहित्य में स्थान दिया एवं उनके मूल्यों एवं आदर्शों का हिन्दी साहित्य में तत्वाधारित रूप में अपनाना सीमा चिन्ह प्रतीत होता है। इस लेख के लेखक डॉ. गुलाब चंद पटेल ने अपने हिन्दी गुजराती काव्य संग्रह के प्रमुख पृष्ठ पर महात्मा गांधीजी की तस्वीर लगाई है। उनके काव्य संग्रह में गांधीजी के लिए काव्य 'स्वतन्त्रता की की चलाई आँधी नाम था उसका– 'मोहन गांधी' और सभी प्रमुख आंदोलनकारियों के नाम अपनी कविता में समाविष्ट किए हैं। गांधीजी की जन्म भूमि पोरबंदर से ही उन्हेंसामाजिक कार्य नशा मुक्ति अभियान चलाने की प्रेरणा प्राप्त हुई। इसी सेवा कार्य ने उन्हेंभारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी जी और कथाकार पूज्य श्री रमेश भाई ओझा के करकमलों से सम्मान प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया ।

सत्य

सत्य महात्मा गांधी के जीवन दर्शन का ध्रुव तारा है,निरपेक्ष सत्य को उन्होनें ईश्वर के साथ समीकृत किया है। इनके अनुसार सत्या ही ईश्वर का दूसरा नाम है। महात्मा गांधी के इन विचारों का प्रभाव हम जैनेन्द्र की 'वे तीन' शीर्षक कहानी में पाते हैं। गांधीजी के विचारों के प्रभाव को उनकी कहानियाँ 'फांसी ',वातायन' 'एक रात' 'पाजेब' आदि में देखा जा सकता है और साथ–साथ ही उपन्यास 'सुनीता' में भी देखा जा सकता है। सत्य का चित्रण विष्णु प्रभाकर ने अपने कहानी संग्रह 'मेरी प्रिय कहानियाँ' में किया है। इनकी

'वापसी' कहानी में राम सिंह विद्वेष की आग में जलते हुए सोचता है की मैं उसके परिवार को दर–दर का भीख मंगवाऊंगा,भिखारी बनाऊँगा, लेकिन जब उसे सत्य का बोध होता है और आत्म ज्ञान की चक्षु दृष्टि खुलती है तो वह घर में लगी आग से अपनी जान की बाजी लगाकर सोतेले भाइयों को बाहर निकालता है। वसुदेव आठ्ले की कहानी 'मानवता की भेट' में गांधीवादी दार्शनिक चरित्र डेकज्ने को मिलता है। कुमार बक्शी की 'कोड़ियो का नाच' शीर्षक कहानी में महात्मा गांधी के सत्यतत्व की प्रतिष्ठा का प्रयास किया गया है। कहानी का पात्र नन्द कुमार संपन्न परिवार का लड़का है,1947 के सांप्रदायिक दंगो में उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है और वह सम्पन्न बनने के लिए असत्य मार्ग को अपनाता है,तभी उसकी माँ उसे असत्य मार्ग छोड़ने एवं सत्यमार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है और वह सत्य के मार्गपर चलने का प्रण लेता है। गांधीजी के अहिंसा के विचार विनोद शंकर व्यास की 'स्वराज कब मिलेगा? शीर्षक कहानी में असहयोग आंदोलन वर्णन के प्रसंग में होता है। अहिंसा की अनिवार्यता आनंदप्रकाश जैन की 'देवताओं की चिंता कहानी में दृष्टि गोचर होता है।

चैतन्य भट्ट ने अपनी 'रंग में भंग' कहानी में महात्मा बुद्ध के मुख से अहिंसा की महत्ता का प्रतिपादन कराया है,"साधारण नियम तो यह होना चाहिए कि पशु हिंसा त्यज्य है ही, यज्ञानुष्ठान में तो यह कदापि नहीं होना चाहिए' । श्री पारसनाथ सरस्वती ने अपनी कहानी 'अहिंसा विजय' में कहा है कि शत्रुता को कभी लड़ाई और हिंसा के द्वारा नहीं जीता जा सकता है। इसका शमन मात्र प्रेम आचरण द्वारा ही संभव है। धर्म जीवन का परम ध्येय है, सभी धर्म भलाई के लिए प्रयत्नशील है, उसका प्रतिबिंब विष्णु प्रभाकर की कहानी 'उस दिन' पात्र मंजु के माध्यम से देख सकते हैं। मंजू सांप्रदायिक तनावपूर्ण बर्बर वातावरण में एक मुस्लिम बालक को अपने घर में शरण देकर मानवीय धर्म का पालन करती है। गांधीजी के मानवीय धर्म का उत्कृष्ट उदाहरण हमें राधेलाल विजधावने 'अटरूट' की कहानी 'एक सूत्र' में प्रकट होती है। फरीदा का विवाह हिन्दू मुसलमान के झगड़ों का कारण बन जाता है,तब उसका मामा कहता है कि–क्या कोई भी धर्म संप्रदाय इंसानियत का गला घोंटने की अनुमति देता है तो फिर आप हिन्दू–मुसलमानों के चक्कर में मानव धर्म को क्यों भूल जाते हैं? आप एक दूसरे से गले मिलकर मानव धर्म को क्यों नहीं अपनाते हैं ?

गांधीजी ने अपने पत्र हरिजन में ईश्वर को जीवन की शक्ति माना है और शक्ति हमारा जीवन है। स्वरूप कुमार बक्शी की 'निर्जर कन्या' कहानी संग्रह की दो कहानियाँ 'बुल बुल' और जीवन की सैट समस्याएं के किंचित् अंश महात्मा गांधी की धारणा की पुष्टि करते हैं। गांधी ने सत्य की खोज के लिए सेवा को आवश्यक माना है। बलदेव उपाध्याय की 'पतिव्रता का व्रत' स्वरूप कुमार बक्शी

की बुल बुल, कुरूप कन्या, प्यार कभी बूढ़ा नहीं होता एवं सोम वैरा की ' धरती की बेटी' शीर्षक कहानी में उल्लेख मिलता है। जीवन की सैट समस्या कहानी में पार्न कुटीर निवासिनी आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न महिला के पास एक व्यक्ति जीवन की सभी समस्याओ के समाधान के लिए जाता है और महिला के प्रबोधन से युवक अंतःतः समझ जाता है कि वास्तविक रोग केन्सर नहीं है,मन की तृष्णा ही केन्सर है,और उसकी ओषधि प्रभु की कृपा है।

महात्मा गांधी युद्ध का परित्याग कर शांति प्रसार–प्रचार अधिक बल देते हैं। गांधीजी की शांति रूपी विचार धारा का प्रभाव अमृतलाल नागर की 'एटम बंब' कहानी और आनंद प्रकाश जैन की 'मूछ का बाल' कहानी में देखने को मिलता है। इनके अपरिग्रह का प्रभाव हमें वर्तमान युग के प्रमुख कहानीकार दामोदरे सदन की कहानी 'मेजर श्री नाथ की वसीयत' एवं नवनीत मिस्र की 'छाया मत छूना' कहानी में मिलता है। विष्णु प्रभाकर की 'सूरज' शीर्षक कहानी में स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद का संघर्ष, धरोहर में बंगाल के अकाल,आजादी में गांधीजी का स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु किया गया संघर्ष,मेरा वतन में राष्ट्रीय प्रेम और 'भारत माता' की जय में सांप्रदायिक दंगे के वर्णन में दृष्टि गत होता है। गांधीजी ने अस्पृश्यता निवारण का व्रत लिया था । इनके हरिजनोद्धार का प्रभाव लक्ष्मी नारायण की 'आनेवाला कल' शीर्षक कहानी में मिलता है। सोम वैरा की अपनी कहानी अंगूठी प्रेम चंद की गोदान में दलितों का वर्णन दमित पत्र के रूप मिस्टर नहीं किया है,गांधीजी दहेज प्रथा नारी उद्धार के प्रबल समर्थक थे, उन्होने वैश्या वृति, विधवा विवाह ,दहेज समस्या, और नारी शिक्षा की दिशा में काफी प्रयास किए हैं, विधवा विवाह के समर्थन में सोमा वैरा की 'रेत के टीले' और बिंदिया कहानी का नाम उल्लेखनीय है। सोमा वैरा ने दहेज के लिए 'अधूरी गांठ' और राख की पुड़िया' में दहेज की कुप्रथा की तीव्र भर्त्सना की है। रामेश्वरी चकोरी ने अपनी 'आंखो का कोतुक 'शीर्षक कहानी में भारतीय नारी के लिए दहेज की विवशता का वर्णन किया है।

गांधीजी बहूजन हिताय एवं ग्राम स्वराज के पक्षपाती थे, जिंनका प्रभाव हमें प्रेमचंद और परवर्ती साहित्यकारो पर भी देख सकते हैं। मैथिली शरण ने गांधीजी के आदर्शों को अपनी कविता में प्रस्थापित किया है,राष्ट्र कवि माखन लाल चतुर्वेदी ने 'निः शस्त्र सेनानी' कविता में गांधीजी के अंतरंग व्यक्तित्व का वर्णन किया है। गांधीजी के प्रभाव से भवानी प्रसाद मिस्र ने 'गांधी पंचशती' नामक हरदायद्रवक काव्य ग्रंथ की रचना ही कर डाली है। बाल कृष्ण वर्मा ने 'तुम युग परिवर्तन कलेश्वर' नामक शीर्षक से महात्मा गांधी पर कविता लिखी जिसकी कुछ पंक्ति है, –

रंग प्रभावित किया नहीं, जन के मन को,
सात्विक्ता ने तुम और ईशा, सुकरात सभी, कर गए प्राण उत्सर्ग
यहाँ पर जन बोना ही रहा और उतरा न भूमि पर स्वर्ग

आधुनिक हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ महादेवी वर्मा ने गांधीजी को धारा का अमर पुत्र बताते हुये कहा है कि,

हे धरा के अमर पूत , तुमको अशेष प्रणाम,
जीवन के अज्स्त्र प्रणाम, मानव के अनंत प्रणाम'

महात्मा गांधी ने भारतभूमि की स्वाधीनता के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया और हिन्दी साहित्यकारों पर अपना प्रभाव भी छोड़ गए।

● ●

सन्दर्भ सूची :रचनात्मक कार्यक्रम और उसका रहस्य, (गुजराती) लेखक :मोहनलाल करमचंद गांधी, साहित्य कुंज पत्रिका, देश बंधु पत्रिका

● ●

गांधीजी की ऐतिहासिक अफ्रीका यात्रा

विदेश जाने से जितना वियोग नहीं हुआ था इतना दक्षिण अफ्रीका जाते समय हुआ था। सिर्फ पत्नी का साथ इस समय दुखद था। विलायत (इंगलेंड) से आने के बाद दूसरे एक बालक की प्राप्ति हुई थी। इगलेंड से आने के बाद बहुत कम समय वो साथ रहे थे। स्टीमर में केबिन खाली न होने से डेक में जाने के लिए ना कह दिया था। स्टीमर के चीफ को मिलने से केबिन में एक झूला खाली था वो मिला। दादा अब्दुला शेठ ने टिकट करवा लिया। 1893 अप्रैल को वे उत्साह में दक्षिण अफ्रीका अपना नसीब आजमाने चल पड़े थे। लमू और मुंबब्बासा होकर झाँझी बार में दस दिन रुकना था। कप्तान ने उन्हेंसैर करने को निमंत्रित किया । एक अंग्रेज़ मित्र मिला था ,तीनों साथ में चले। वे कोटरी में शर्म से रुक गए,कप्तान ने बूम लगाई, उन्होने ईश्वर का आभार प्रकट किया क्यू की ,इस में एक स्त्री थी और इन्है कोई आशक्ति नहीं हुई थी। झाँझीबार से वे मई माह के अंत में नाताल पहुचे ।

नाताल का बंदर ‘डरबन’ नाम से पहचाना जाता है। उन्हेंलेने के लिए अब्दुल्ला सेठ खुद आए । गांधी को अपनी बगल वाली कोटरी में अब्दुल्ला सेठ ने रुकने के लिए व्यवस्था की। दूसरे दिन अब्दुल्ला गांधीजी को डरबन की कोर्ट देखने के लिए ले चले। वहाँ कुछ पहचान भी करवाई। कोर्ट में उनके वकील के पास बिठाये गए। मेजिस्ट्रेट उनकी और देखने लगे, उन्हेंपगड़ी उतारने को कहा,किन्तु गांधीजी ने पगड़ी नहीं उतारी । कोर्ट से निकाले गए । अब्दुल्ला ने पगड़ी का मतलब समझाया । जिसने मुस्लिम पोशाक पहना हो वो मुसलमानी पगड़ी पहन सके। दूसरे हिंदियों को कोर्ट में जाने से पहले अपनी पगड़ी उतारनी होती है। वहां भी मुस्लिम ‘अरब’ नाम से और पारसी मेहताओं के नाम से,तमिल तेलुगू गिरमिटिया के और गिरमिट मुक्त हिंदियों के अलग चोखे रखे गए थे। गिरमिटीयों को ‘अंग्रेज़ कुली’ के नाम से पहचाने जाते थे। हिन्दी लोग ‘सामी’ कहते थे। इस लिए गांधीजी कुली बेरिस्टर कहलाए। व्यापारी कुली व्यापारी कुली के नाम से जाने जाते थे। गांधी ने पगड़ी के बजाय अंग्रेजी टोपी पहनना चाहा तो अब्दुल्ला को पसंद नहीं आया। उनहोंने बताया की आज ‘वैटर’ जैसे लगोगे ।

प्रिटोरिया जाने के लिए केस समझ लिया था। ‘पी नोट’ को भी समझ लिया था। नामा की किताब पढ़ लिया और प्रिटोरिया जाने के लिए तैयार हुए। अब्दुल्ला को कहा कि आपका वकील जहाँ व्यवस्था करेंगे वहीं रहूँगा और आपकी ख़ान की कोई बात लीक नहीं करूंगा। तैयब सेठ अब्दुल्ला के संबंधी थे,इसलिए समाधान करने का सुवचन किया किन्तु, तैयब सेठ माने ऐसे नहीं थे।

गांधी डरबन जाने के लिए रवाना हुये। नाताल की राजधानी मेरित्स्बर्ग में ट्रेन नौ बजे पहुंची। एक मुसाफिर आया। उस अमलदार को बुलाया,गांधी

को अंतिम डिब्बे में बैठने को कहा गया। कुछ सवाल जवाब हुए । गांधी नीचे नहीं उतरे तब इन्हें सिपाही ने धक्का लगाया और गांधी का सामान नीचे फेक दिया। ट्रेन चल पड़ी। गांधीजी वेटिंग रूम में बैठे रहे। उनके पास सिर्फ पर्स था। दक्षिण अफ्रिका में सर्दी की मौसम में ज्यादा ठंड होती है। इन्हें ठंड लगने लगी। ओवरकोट सामान में था। डर की वजह से उन्होंने मांगने की हिम्मत नहीं की यदि फिर से अपमान सहना पड़ा तो ?

वे कुली गिनते थे इस लिए गांधीजी को वहां बिठाया गया। गांधी ने अपमान सह लिया। पारडीकोप पहुंचे तब गोरा मुखिया को गांधी जहा बैठे थे वहां उसको बैठना था,इसलिए उन्हें पैर रखने की जगह पर बैठने को कहा गया, गांधी ने मना किया। तब उन पर तमाचे की बारिश हुई। गांधी को घसीटा, तब एक इंसान को दया आई,उसने बताया कि उसकी बात सही है। उसे हमारी पास बैठने दिया जाय, तब वो शर्मिंदा हुआ। दो चार गालिया गांधी को सुनाई। गांधी का जी घबरा रहा था,वे चुप रहे और प्रभु को याद करते रहे। स्टेंडर्टन पहुचे,वहां 60 हिन्दी चेहरे दिखे,तो शांति हुई। ईसा सेठ की दुकान पर उन्हेंले गए, उन्होंने अपने साथ हुए बर्ताव की बात सुनाई। सिगरम कंपनी के एजंट को चिट्ठी लिखी,इन्हें ईसा सेठ के आदमी सिगरम पर ले गए। गांधीजी को सही जगह पर बिठाया गया। वे बिना कोई तकलीफ जहोनिस बर्ग रात में पहुंचे। कमरूदीन का आदमी दुकान पर ले गया । यह बात अब्दुल गनी सेठ ने सुनी तो हँस पड़े। होटल में वे लोग गांधी को रुकने देंगे क्या ? ऐसा सवाल गांधीजी ने किया। उन्होनें ट्रांसवेल में सहे हुए दुखों का इतिहास गांधीजी को सुनाया। प्रिटोरिया जाने के लिए स्टेशन मास्टर को चिट्ठी लिखी,स्टेशन पर पहुंचे तो ट्रांसवालर नहीं था। लेकिन होलेनदार था। उसने परिस्थिति समझाया और टिकट दिया । अब्दुल गनी सेठ उन्हेंछोड़ने आए थे,वो यह देखकर आश्चर्य चकित हो गए। प्रथम श्रेणी में बैठे तो जरमिसटन में गार्ड टिकट चेक करने निकला, उसने गांधी को इशारा किया, तीसरे वर्ग में जाओ। एक अंग्रेज़ ने गार्ड को धमकाया। उसके पास प्रथम वर्ग की टिकट है और हमें कोई तकलीफ नहीं है, इसलिए इन्हें बैठने दो। गार्ड कुछ गुनगुना और चला गया । रात को आठ बजे ट्रेन प्रिटोरिया पहुंची । एक अमरीकन हबसी गांधी को अमरीकन मालिकी की एक छोटी सी होटल में ले गया। गोरे ग्राहक चले न जाए इस लिए गांधी को कोटरी में ही खाना दिया। दूसरे दिन एक वकील के पास गए,उसका नाम ए. डब्ल्यू बेंकर था। वो रसोइया की स्त्री के पास ले गया। रुकने के लिए एक स्त्री रखी थी,मी. बेंकर वकील धर्मचुस्त पादरी थे,उसे बताया गया कि मैं हिन्दू हूं। मैं धर्म के बारे में कुछ नहीं जानता हूं। ऐसा बताया तो बेंकर राजी हुए। आत्मा की शांति के लिए तथा प्रकाश (ज्ञान के उदय) के लिए वो प्रार्थना करते थे ,उसमें जुडने के लिए गांधी व्याकुल हुए। होटल से निकलकर गांधी नए घर में गए,वो घर की मालकिन अच्छी थी। अब्दुल शेठ को खबर पहुंचाया। क्रिस्चियन धर्म और हिन्दू धर्म का साहित्य कहां से मिलेगा ?यह सोचते हुए वे निद्राधीन हो गए।

दूसरे दिन बेंकर प्रार्थना सभा में ले गए। वहा मी. कोट्स मिला,गांधी को गले मिलते हुए देखकर बेंकर दुखी हुआ। गांधी ने अपने गले से माला नहीं निकलवाई, नताल में जो स्थान दादा अब्दुल्ला का था वही स्थान प्रिटोरिया में सेठ तैयब काजी महंद खान का था। गांधी ने हिन्दूओं की स्थिति का अभ्यास करना चाहा,हिंदीओं की सभा में पहली बार गांधीने भाषण किया। ट्रांसवाल के फ्री स्टेट में 1888 में एक कानून बना था,उस पूर्व हिंदीओं के सभी हक छीन लिए गए थे। 1885 में सख्त कानून बना था जिससे हिन्दीओं को फुटपाथ पर चलने का परमीशन न था। । फुटपाथ पर चल न सके और रात के 12 बजे के बाद घर से बाहर न निकल सके। मी. कोट्स गांधी को सरकारी वकील दाकाऊ जी के पास ले गए, गांधी को परमीशन नहीं दिया लेकिन एक लेटर दिया,वो लेटर साथ रखकर गांधी घूमते थे, दा काऊज जहोनिसबर्ग में पब्लिक प्रोसिक्यूटर के पद पर नियुक्त हुए । वो गांधी के मित्र बन गए थे। प्रेसीडेंट कृगर का घर प्रेसीडेंट स्ट्रीट में था,वहां एक सैनिक घूमता रहता था,वहां से गांधी हमेशा जाते थे। लेकिन सैनिक कुछ बोलता नहीं था। उसने एक दिन गांधी को बिना कुछ बताए पैर से लात लगाई,तब वहां से कोट्स निकले,उन्होनें गांधी को कहा कि मैंने सब कुछ देख लिया है,आप केस करना चाहते हो तो मैं साक्षी रहूँगा,गांधी ने निश्चय किया कि कोर्ट नहीं जाना है। कोट्स ने डच में सैनिक से बात की। उसने गांधी से माफी मांगा। लेकिन गांधी ने तबसे उस गली का रास्ता छोड़ दिया ।

गांधी को प्रिटोरिया में बहुत कुछ सीखने को मिला। वकालत भी यहां सीखने को मिली। दादा अब्दुल्ला का केस छोटा नहीं था। दावा 40,000 पाउंड का याने की छह लाख रुपए उस वक्त के अनुसार था । केस में रस लिया। गांधीने सोचा कि दोनों केस लड़ते लड़ते मालामाल हो जाएंगे,इसलिए गांधी ने समाधान के लिए ज्यादा मेहनत की। तैयब सेठ समाधान के लिए राजी हो गए। अंत में पंच नियुक्त किया गया,केस चला,केस में दादा अब्दुल्ला जीते,पंच के आदेश से तैयब सेठ इतना सारा पैसा आप जमा केसे करेंगे इस लिए दादा अब्दुल्ला ने तैयब सेठ को समय दिया। दोनों राजी हुए । गांधी वकालत सीखे। इंसान की अच्छी बात खोजना सीख गए। मनुष्य के ह्रदय तक पहुंचना सीख गए। बीस साल की वकालत में सैंकड़ों केसों का समाधान करवाया।

मी. बेंकर गांधी को वेलीनटन कनवेंसन हॉल में ले गए। ईशू ख्रीस्त वे एक ईश्वर के पुत्र थे,उसे जो माने उसका कल्याण हो जाए,यह बात गांधी को मानने में नहीं आई, ईशू को गांधी एक प्यारी आत्मा महात्मा, देवी शिक्षक,के रुपमें स्वीकारने तैयार नहीं थे। हिन्दू धर्म की त्रुटि गांधी को नजर में आई,अस्पृश्यता हिन्दू धर्म का सडा हुआ अंग है,। ख्रीसती और मुसलमान दोनों गांधी को ललचा रहे थे। अब्दुल्ला सेठ इस्लाम के अभ्यास के लिए प्रेरित कर रहे थे। ''हिन्दू धर्म में जो सूक्ष्म और गहन विचार है,आत्मा का निरीक्षण है,दया

है,ऐसा दूसरे धर्मो में नहीं है। ऐसा सोचते हुए गांधी को प्रतीति हुई थी। केस पूरा हो गया, अब्दुल्ला सेठने सिड़न होम में गांधीजी के सम्मान में खाने पीने का कार्यक्रम रखा था,यहां गांधी ने एक न्यूज़ पत्रिका देखी। इंडियन फ्रेंचाईज़ ,ऐसे हैडिंग से समाचार थे,इसका मतलब था कि,हिन्दीओं को नाताल की धारा सभा में सदस्यों को चुनने का जो हक था,वो वापस ले लेने का। गांधी इस कानून से अज्ञात थे,ये कानून को बचाने के लिए,रोकने के लिए गांधी को एक आदमी ने बात की। गांधी एक माह रुकने के लिए तैयार हुए। स्वाभिमान की लडत का बीज बोया गया। ईश्वर ने गांधी को दक्षिण आफ्रिका में रुकने का मार्ग बनाया।

सन 1893 को नाताल में हिन्दी कॉम के अग्रणी नेता सेठ हाजी महमद ,हाजी दादा के प्रमुख स्थान में एक सभा का आयोजन हुआ, जात पात के भेदभाव बिना सभी इकट्ठे हुए। फ्रेंचायईज़ बिल के सामने अर्जी किया । अर्जी में दस हजार हस्ताक्षर हुए। टाइम्स ऑफ इंडिया ने उसे अग्रलेख में पब्लिश किया। हिन्दीओं की मांग को अच्छा साथ दिया, लंदन के टाइम्स का भी अच्छा सहकार मिला। 300 पाउंड की फीस व्यापारियों ने मिलकर एक साल के लिए गांधीजी के लिए तय किया गया। सेठ अब्दुल्ला ने ऑफिस के लिए जरूरी फर्नीचर की व्यवस्था की। नाताल में गांधी रुक गए।

वकालत की सनद के लिए दो गोरों का दस्तखत लिया। वकील सभा ने उसका विरोध किया,सेठ अब्दुल्ला के सोगंद नामे की मांग रखी गई,सोगंद नामा तैयार किया गया। वकील सभा ने अदालत में विरोध किया। अदालत ने इनके विरोध को खारिज किया। गांधी को सनद के लिए मंजूरी दी गई। वकील का वेश धारण करने को कहा गया। शेठ अब्दुल्ला के साथ चर्चा करके गांधी ने 1894 में मई माह की 24 तारीख को नाताल इंडियन कोंग्रेस को जन्म दिया।

बाला सुंदरम को सेठ ने बहुत पीटा था, उसे मेजिस्ट्रेट के पास ले गए। 1894 को गिरमिटिया हिंदीओं पर हरसाल 25 पाउंड का याने कि 375 रुपए का कर डाला गया । नाताल सरकार से ये कर रद्द करने के लिए कॉँग्रेस को तीन साल लग गए।

गांधीजी ने नर्मदा शंकर की पुस्तक ‘धर्म विचार’ पढ़ा। मेक्समूलर का पुस्तक ‘हिंदुस्तान क्या सिखाता है? वो भी ध्यान से पढ़ा। थियोसोफ़िकल सोसाइटी ने प्रकट किया गया उपनिशद का अनुवाद भी पढ़ा। गांधीजी का हिन्दू धर्म के प्रति आदर बढ़ गया। वोसिंग्टन ‘अदिंग वृत’ पढ़ा। महमद का ‘धर्म चरित्र’ और ‘बाइबल, महमद की स्तुति पढे। पैगंबर के प्रति भी गांधी का मन बढ़ गया। जरथुस्त के ‘बचन’ नमक पुस्तक भी पढ़ा। दक्षिण अफ्रिका में तीन साल रहे। 1896 में पोंगला स्टीमर में गांधी 24 दिन बाद हुगली की सुंदरता देखते हुए

कोलकाता पहुंचे। उसी दिन मुंबई जाने के लिए टिकट करवाई थी। कोलकाता से मुंबई जाते समय प्रयाग बीच रास्ते पड़ता है। 45 मिनिट ट्रेन रुकनेवाली थी,शहर में जाकर केमिस्ट के पास जाकर दवाई ले आए। स्टेशन पहुंचे तो गाड़ी चल पड़ी थी, गांधी होटल में रुके। प्रयाग के त्रिवेणी संगम के दर्शन किए। फिर मुंबई पहुचे। एक चोपनीया लिखा,उसका हरा कवर बनाया। बाद में हरा चोपनीया (पत्रिका) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मुंबई में मर्की रोग फ़ैल गया था। तब राजकोट में भी मर्कि फैलने का डर था। स्टेट को लिखा। कमिटी नियुक्त किया गया। उसमें गांधी का समावेश किया गया। वे सभी घर की तलाश करने के लिए निकले कमिटी के साथ हरिजन मुहल्ले में जाना हुआ,देखा तो आँगन में और घरो में स्वच्छता थी। बर्तन भी साफ़ सुधरे थे। गांधी आश्चर्यचकित हो गए।

राजनिष्ठा खुद में ज्यादा थी। ब्रिटिश राजनीति गांधीजी को अच्छी लगती थी। दक्षिण आफ्रिका में उल्टा नीति देखा । रंगद्वेष देखने को मिला। गांधीजी अंग्रेज़ो से स्पर्धा करना चाहते थे। अंग्रेज़ो के राष्ट्र गीत का सुर भी उन्होनें सीख लिया था। गोद वे द किंग वे 'कोटूम्बिक परिवार के बच्चों को सिखाते थे। ट्रेनिंग कॉलेज के विध्यार्थीओं को भी दिया गया। अहिंसा के विचार उनमें प्रबल थे। मुंबई में वो फिरोजशा को मिले। पूना गए। पूना में दो पक्ष थे। वो लोक मान्य तिलक को मिले। गोखले को भी मिले। फिरोजशा उन्हेंहिमालय जैसे लगे। लोक मान्य समंदर जैसे और गोखले गंगा जैसे लगे। पूना के त्यागी मण्डल ने गांधी को सम्पूर्ण प्रोत्साहन के साथ विदा किए। गांधी वहां से मद्रास गए। वहां सभी से अंग्रेजी में बात करनी थी,मद्रास से कोलकाता गए। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को मिले। अमृत बाज़ार के ऑफिस में गए। बंगालियो ने तो हद कर दी, गांधी को एक घंटे तक बैठाए रखा। गांधी की बात न सुनी। गांधी अंग्रेज़ों को भी मिले। इंगलिश मेन मी सोदसे ने इन्हें स्वीकार किया। उनकी ऑफिस में बिठाये । न्यूज़ पत्रिका दिया। उनके अग्र लेख में सुधार करने की भी छूट दी गई। दोनों के साथ स्नेह बन गया।

दादा अब्दुल्ला ने कुरलेनड स्टीमर खरीद ली। उसमें गांधी और उनके परिवार को फ्री में ले जनेका आग्रह किया गया। दिसंबर के प्रारम्भ में कुरलेंड में वे उनकी धर्म पत्नी और दो बेटे और उनके जीजाजी के बेटे के साथ दक्षिण अफ्रिका की और दूसरी बार रवाना हुए। ये स्टीमर के साथ ही दूसरी स्टीमर 'माधुरी' भी डरबन रवाना हुई। उसके एजेंट दादा अब्दुल्ला थे। पति साक्षर और पत्नी निरक्षर ऐसी स्थिति में पति पत्नी के बीच जीवन में अंतर रहता है। पति को पत्नी का शिक्षक बनना होता है। गांधी को अपनी पत्नी और बच्चों की पोशाक,खानपान,बोलचाल,का ख्याल रखना था। गांधीजी को वो स्मरण जब आते थे तब बहुत हँस पड़ते थे। 18 दिन की यात्रा थी। तीन या चार दिन बाकी थे। और समंदर में तूफान आया,सभी लोग घबरा गए। हिन्दू मुस्लिम सभी ने एक साथ मिलकर ईश्वर की प्राथना की। 24घंटे बाद सूर्य नारायण के दर्शन

हुए,तूफ़ान चला गया। सभी खुश हुए। 19 दिसंबर को डरबन पहुंचे। दक्षिण अफ्रिका में बंदर पर मुसफ़रों के स्वास्थ्य की जांच होती है। किसी को कोई रोग हुआ हो तो मुसाफिरों को क्वोरिंटीन में स्टीमर में ही रखा जाता है। यह गोरों की चाल थी कि हमें वापस भेजा जाय । तीस दिन के बाद 1897 जनवरी की 13 तारीख को स्टीमर से मुक्ति मिली। सभी प्रवासियों को स्टीमर से उतरने का आदेश मिला। मी. एक्सकमबे जो प्रधान मण्डल में थे,उन्होनें कप्तान को संदेश भेजा था कि गांधी को उनको परिवार के साथ शाम को स्टीमर से उतारना है। उनका जी जोखिम में है। उनके सामने गोरा बहुत गुस्से में है। संदेश प्रकटीकरण होने के आधा घंटे में मी. लोटन आए। उन्होने कप्तान को कहा,कि यदि गांधी मेरे साथ चले तो मैं मेरी जिम्मेदारी से उन्हेंले जाऊं। गांधी को कहा गया कि, यदि तुम्हें ज़िंदगी का डर न हो तो मैं सोचता हूं कि मिसिस गांधी और बच्चे गाड़ी में रुस्तम जी सेठ के यहां जाएं और तुम और मैं सरियम के रास्ते पैदल जाए। तुम अंधेरा होते शहर में दाखिल हो जाना। अब गोरे चले गए हैं, और शांत है। गांधी सम्मत हुए। जैसे स्टीमर से नीचे उतरे तो कुछ बच्चां ेने गांधी गांधी एसी बूम लगाई ,दो चार लोग इकट्ठे हुए। मी. लोटन ने टेक्सी मँगवाई। बच्चों ने टेक्सी वाले को धमकी दी। वो चला गया। गांधी और लोटन आगे बढ़े। लोगों की भीड़ बढने लगी। हमारे पर लोग कंकर और अंडे फेकने लगे। मैं लोटन से अलग हो गया, गांधी की पगड़ी किसी ने उड़ा दी। लातें शुरू हुई। गांधी को चक्कर आ गए। गांधी जाली पकड़कर खड़े रह गए। उन्हें थप्पड़ें पड़ने लगी। इस दोरान एक पुलिस (महिला) अफसर जो गांधी को पहचानती थी, उसने छाता खोला खड़ी रह गई। वहां से लोग चले गए। गांधी को मी एलेक्जेंडरने बचाया। एक टुकड़ी सुपरिटेंडेंट ने भेजा था जिसने गांधी को बचा लिया। सुरक्षा टुकड़ी के साथ सलामत पूर्ण पारसी रुस्तम जी के घर पहुंचे। गांधी को दो तहोमत थे। हिंदुस्तान में नाताल वासी गोरों की अघटित निंदा की। नातल को हिंदीयों से भर देने की चाहत में गांधी निर्दोष थे। नाताल जाने के लिए उन्होनें किसी को लालच नहीं दिया था। हिंदुस्तान में नाताल के अंग्रेज़ो के लिए एक भी अक्षर गांधी ने नहीं बोला था। गांधी पशचिम के सुधार किया करते थे। गांधीजी ने उसे हिंसक के रुप में पहचाना था। पूर्व के अहिंसक कप्तान ने पूछा कि,गोरे लोग जिस तरह धमकी दे रहे हैं,उस हिसाब से आपको चोट पहुचाएंगे तो ? गांधी ने उन्हेंजवाब दिया कि उन्हेंमाफ करने कि और उन पर काम चलाने की हिम्मत और बुद्धि ईश्वर हमें देंगे।

मी. चंभर ने गांधी पर हमले करने वाले पर केस चलाने और गांधी को न्याय दिलाने के लिए तार किया। मी एसकंजे ने भी उन्हेंअपने पास बुलाया और हमला करने वाले पर केस चलाने की बात की। गांधी से दिलगिरी व्यक्त किया। उन्हेंचोट आई थी इसलिए जिस दिन गांधी नाताल में उतरे उस दिन नाताल एडवरटाइजिंग का प्रतिनिधि उन्हेंमिला। उसने प्रश्न पूछे। सभी प्रत्युतर आरोप लगाए थे,उसके जवाब दे दिये।

गांधी डरबन उतरे तब तीन बालक साथ में थे,उन्हेंकहा पढ़ाने / गोरों के लिए जो स्कूल थी और हिन्दी के बच्चों को पढ़ने के लिए खीस्ती मिशन की जो स्कूल थी उसमें बच्चों को पढ़ाने के लिए गांधीजी तैयार नहीं थे। उन्होंने एक एडवरटाइजमेंट दिया। एक बाई मिली,जिसे बच्चों कों पढ़ाने के लिए रोक लिया। बच्चे अपने साथ रहने से स्वतन्त्रता के पाठ सीखेंगे। यदि पाठशाला में भेजा जाए तो ये नहीं सीख पाएंगे। गांधीजी अच्छी कमाई कर लेते थे। लेकिन कुछ समाज कार्य करने का विचार मन में चल रहा था। उस दोरान एक रक्त पीड़ित इंसान घर आ पहुंचा। उसे खाना दिया। फिर एक कोटरी में रखा। उसके घाव साफ किए। उसकी सेवा की। उसे गिरमितियों से चलती एक सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया । रुस्तमजी की सखावत से अस्पताल खुली उसमें दो घंटे काम करने लगे। मन को शांति मिली। हिंदीयों से गहरे संबंध बने। यह अनुभव भविष्यमें बहुत अच्छा उपयोगी रहा।

लड़ाई के काम से मुक्त होने के बाद गांधी को लगा कि अब मेरा काम दक्षिण अफ्रिका में नहीं है किन्तु देश में है। साथियों से मुक्त होने के लिए एक शर्त रखी गई। एक साल के अंदर यदि कोई मुसीबत लगे तो गांधीजी को दक्षिण अफ्रिका वापस आना होगा।

कच्चे धागे से मोजे हारजी ने बंधा,
जैसे खींचे वेसे उनकी रे,
मोजे लगी कटारीप्रेम की

यह मीरा बाई की उपमा गांधी कहे मुजे थोड़ी बहुत लागू होती है। पंच भी परमेश्वर होता है। मित्रों को वे छोड़ नहीं सकते थे,वचन देकर मंजूरी ली।

गांधीजी तीसरी बार दक्षिण अफ्रिका में जाते हैं। मी. चेम्बलर को 30–. 50 करोड़ पाउंड दक्षिण अफ्रिका से लेने के लिए आए थे। ट्रांसवाल बंजर हो गया था। मी. चेम्बर्लेन ट्रांसवाल जाते है। गांधी भी प्रिटोरिया पहुंच गए। फिर ट्रांसवाल में दाखिल हुए। बिना परमिशन जाना गुनाह था। गांधीजी से परवाना मांगने की हिम्मत किसी की नहीं हुई। अफसर को पता चला की परवाना लेकर आए है तो सभी निराश हो गए। प्रिटोरिया और जहोनिसबर्ग में हिन्दी अंग्रेज़ के साथ चर्चा करके अपना ऑफिस खोला। सनद मिल गई। वकालत शुरू की गई।

फिर गांधी को अपने बच्चे, अपने देश की याद आई तो 1915 –9 जनवरी को भारत वापस मुंबई लोटे थे। आज से 107 साल पहले गांधी दक्षिण अफ्रिका से वापस लोटे थे। ये दिन प्रवासी भारतीय एतिहासिक दिवस के रूप में मनाया जाता है। गांधीजी की अफ्रिका की यह यात्रा एतिहासिक बन गई । 2015 में

इस दिवस के अवसर पर समारोह का आयोजन गुजरात में किया गया था। इस समारोह में एन आर आई और पी आई ओ की सराहना के अलावा तमाम मुद्दो पर बातचीत होती है।

महात्मा गांधी मुंबई के एपोलो बंदरगाह पर उतरे थे तब उनका शानदार स्वागत किया गया था। दक्षिण आफ्रिका से संघर्ष करके गांधी भारत लोटे थे तब भारत सरकार ने भी इस एतिहासिक दिवस के स्वागत में भागीदारी की थी।

● ●

सन्दर्भ सूची :गांधीजीवन गाथा (गुजराती) प्रकाशक गुर्जर ग्रंथ रत्न अहमदाबाद, आत्म कथा :मोहनलाल करमचंद गांधी (गुजराती) प्रकाशक :नव जीवन ट्रस्ट अहमदाबाद

● ●

गांधी दर्शन – भाषा, समाज, राजनैतिक साध्य और साधन

महात्मा गाँधी ने किसी नये दर्शन की रचना नहीं की है, उनके विचारों का जो दार्शनिक आधार है वही गाँधी दर्शन है। ईश्वर की सत्तामें विश्वास करने वाले भारतीय आस्तिक के ऊपर जिस प्रकार के दार्शनिक संस्कार आपनी छाप डालते हैं वैसे ही छाप गांधीजी के विचारों पर पड़ी हुई है। वे भारत के मूलभूत कुछ दार्शनिक तत्वों में अपनी आस्था प्रकट करके अग्रसर होते हैं और उसीसे उनकी सारी विचारधारा प्रवाहित होती है। किसी गंभीर रहस्यवाद में न पड़कर वे यह मान लेते हैं कि शिवमय, सत्यमय और चिन्मय ईश्वर सृष्टि का मूल है और उसने सृष्टि की रचना किसी प्रयोजन से की है। वे ऐसे देश में पैदा हुए जिसने चैतन्य आत्मा की अक्ष्क्षुण और अमर सत्ता स्वीकार की है। वे उस देश में पैदा हुए जिसमें जीवन, जगत, सृष्टि और प्रकृति के मूल में एक मात्र अविनाश चेतन का दर्शन किया गया है और सारी सृष्टि की प्रक्रिया को भी सप्रयोजन स्वीकार किया गया है। उन्होंने यद्यपि इस प्रकार के दर्शन की कोई व्याख्या अथवा उसकी गूढ़ता के विषय में कहीं विषद और व्यवस्थित रूप से कुछ लिखा नहीं है, पर उनके विचारों का अध्यन करने पर उनकी उपयुक्त दृष्टि का आभास मिलता है। उनका वह प्रसिद्ध वाक्य है – जिस प्रकार मैं किसी स्थूल पदार्थ को अपने सामने देखता हूँ उसी प्रकार मुझे जगत के मूल में राम के दर्शन होते हैं। एक बार उन्होंने कहा था, अंधकार में प्रकाश की और मृत्यु में जीवन की अक्षय सत्ता प्रतिष्ठित है। उनकी इस चिंतनधारा से असहयोग और सत्याग्रह का जन्म हुआ। यही उनकी अहिंसक क्रांति, रक्तहीन विप्लव और हिंसाहीन युद्ध का मूर्त रूप है। उनकी दृष्टि में अहिंसा अमोघ शक्ति है जिसका पराभव कभी हो नहीं सकता। सशत्र विद्रोह से कहीं अधिक शक्ति अहिंसक विद्रोह में है। शास्त्र का सहारा लेकर अहिंसक वीर आत्मा का दहन करने में कोई सत्ता, साम्राज्य अथवा शक्ति समर्थ नहीं हो सकती। अहिंसा नैतिकता पर आश्रित है, अतः सत्य है और सत्य ही सदा विजयी होगा।

गांधीजी का जन्म पोरबंदर में १९२५ भादो मास की बारस, ई.स. 1869 अक्तूबर की दूसरी तारीख को सुदामापुरी में हुआ था। पिताजी करमचंद गाँधी राजकोट के दीवान थे। गांधी के पिताजी परिवार प्रेमी, सत्य प्रेमी, शूरवीर, उम्दा और क्रोधी थे। लांच से अलिप्त थे। सत्य का अनुसरण कर के न्याय करते थे। उनकी माताजी साध्वी थी। वो भाविक और पूजा पाठ करने वाली, कठिन व्रत की आग्रही थी। सूर्यदर्शन करके ही भोजन करती थी। गाँधी का बचपन पोरबंदर – गुजरात में बीता था। पोरबंदर की पाठशाला में प्राथमिक शिक्षा ली लेकिन

पिताजी राजकोट चले गए तो उन्हेंराजकोट की गामठी स्कूल में प्रवेश दिलाया गया। हाईस्कूल में पहुँचते बारहवां वर्ष निकल गया। वो बहुत शर्मीले थे। पिताजी ने खरीदा श्रवण पितृ–भक्ति, नाटक उन्होंने पढ़ा था। श्रवण का दृश्य देख कर उनके माता पिता को काँवर में यात्रा करते हैं उसका गहरा असर उन पर हुआ थी। वही समयकाल में हरिश्चंद्र का नाट्क देखा। हरिश्चंद्र का नाटक बार बार देखते थे, इससे उन्हेंहरिश्चंद्र के स्वप्न आने लगे। उससे प्रभावित हुए और सत्य के आग्रही बने, हरिश्चंद्र का दुःख देखकर वो बहुत रोये थे।

तेरह साल की उम्र में उनका विवाह पोरबंदर में हुआ था। उनके बिचले भाई, चचेरे भाई और उनका विवाह एक साथ हुआ था। विवाह होने से निर्दोष भाव से संसार में झुकाया। उस समय निबंध की पत्रिका निकलती थी, उसे वो पढ़ते थे। एक पत्नीव्रत का पालन करना वो पति धर्म है ऐसा, उन्होंने उनकी पत्नी के साथ व्यवहार किया था। उनकी पत्नी के साथ कभी कभी झगड़े भी होते थे, बच्चों के साथ अबोल रहना वो सामान्य रूप से बनता था। उन्हें उनकी पत्नी पर ज्यादा प्रेम था। विवाह के बाद भी गाँधी का अभ्यास चालू था। उन्हें कसरत से नफरत थी। शर्म के कारण वो क्रिकेट और फुटबॉल खेलने नहीं जाते थे। पिताजी की सेवा करना अच्छा लगता था। एक ही साल में दो कक्षा, तृतीय और चतुर्थ एक साथ पढ़ लिया। फारसी के वर्ग में भी जाते थे। उन्हें संस्कृत से नफरत होने के बावजूद शिक्षक के आग्रह से संस्कृत सीखना शुरू किया। उनके एक मित्र थे, जब वो मित्र के संग राजकोट गए थे तब उन्हें मदिरा पान, मांसाहार की फायदाकारक बातें कही और उन्हें ललचाया गया। इसलिए गाँधी ने मांसाहार किया और शराब का सेवन भी किया। वैष्णव संप्रदाय से जुड़े थे इसलिए उन्होंने मांसाहार और शराब को त्याग दिया। मित्र के संग में वो व्यभिचार में भी जा गिरते लेकिन उनहोंने अपने को सम्हाला। उन्हें बीडी पीने का शोक था। चाचा को बीडी पीते देखते थे और बीडी पीकर फेंक दे तब वो चोरी छुपी से बची हुई बीडी पीते थे, जिससे उन्हें बीडी पीने की आदत सी बन गई। हर समय बीडी नहीं मिलती थी इसलिए नोकर की जेब से पैसे चुराने लगे और बीडी खरीदने लगे। उन्हें एक दिन पैसे नहीं मिले तो वो दुखी हो गए और मित्र को बुलाकर जंगल में गये और जहरीले बीज ढूंढकर ले आये लेकिन खाने का जी नहीं चल पाया क्यूँ कि अगर मर गए तो ठीक है किन्तु, बच गए तो सेवा कोन करेगा ? वो सोचकर दोनों केदारजी के मंदिर गए और संकल्प किया कि कभी आत्महत्या करने के लिए नहीं सोचेंगे, और जीवन में कभी व्यसन नहीं करेंगे। उस समय उनकी उम्र तेरह साल की थी। उन्होंने चोरी भी की थी। कर्ज चुकाने के लिए बड़े भाई का सोने के कड़े से सोना काट कर चुरा लिया। उन्होंने पिताजी के सामने अपनी भूल कबूल कर ली कि भाई के हाथ से कड़े में से सोना मैंने चुराया था। जब उनकी उम्र सोलह साल की थी तब पिताजी की मृत्यु हो गई। उन्होंने पिताजी की बहुत सेवा की थी। वो पिताजी की पग चंपी भी करते थे। सेवा को वो भक्ति समझते थे, उन्हें धर्म में आस्था

थी। वो वैष्णव सम्प्रदाय के थे, बार बार हवेली दर्शन के लिए जाना होता था। हवेली में चल रही अनैतिक बातों से उनका मन न लगा। गाँधी ने भूत प्रेत से बचने के लिए ''रामनाम'' का ओषध रम्भा के पास से प्राप्त किया था। रामनाम से शक्ति मिली, राम रक्षा का पाठ करने लगे। उन्होंने बचपन में ही भागवत ग्रन्थ पढ़ा था, मनुस्मृति पुस्तक पढने मिली थी। उन्हें धर्म की शिक्षा स्कूल में कहीं पर न मिली थी। धर्म का अर्थ आत्मभान–आत्मज्ञान जो कुछ हवेली से नहीं मिला था, वो दाई के पास से उपलब्धहुआ था। राजकोट में उन्हें सर्वधर्म समभाव की तालीम मिली थी। मनुस्मृति से उनमें नास्तिकता आई।

१८८७ में मेट्रिक की परीक्षा पास की थी। वो कॉलेज में पढने गये। उन्हें विलायत पढने जाने की इच्छा हुई लेकिन चाचाजी ने उन्हें रजा न दी। चाचाजी ने गाँधी को अपनी माता से परवानगी लेने को कहा। उनकी माताने कहा कि युवा लोग विदेश जाकर मांसाहार करते हैं, सिगरेट पीते हैं, व्यभिचार करते हैं। में तुम्है विदेश जाने के लिए अनुमति नहीं दूंगी। समाज में चर्चा हुई, समाज से और मात–पिता से अति आग्रह के कारण अनुमति मिली, लेकिन वहाँ जाकर, मांसाहार, शराब, बीडी–सिगरेट या व्यभिचार जैसी चीजों से दूर रहना होगा, गाँधीजी सहमत हुए। बिन–मांसाहार मिले ऐसी जगह ढूंढ ली। फेरिंगडन में वेजीटेरीयन रेस्टौरेंट में पहुंचे। सोल्ट का पुस्तक 'अन्नाहार की हिमायत', 'विभूतियाँ और विभूति पूजा' कार्लाइल का पुस्तक पढ़ लिया। उन्होंने अर्नाल्ड का 'बुद्धचरित' भी पढ़ा था। मादाम ब्लेवेटस्की की पुस्तक 'की टू थियोसोफी' भी पढ़ा। बाइबल पढ़ा और नया करार भी पढ़ लिया था लेकिन, जूना करार नहीं पढ़ सके।

वो बेरिस्टर बन गए। विलायत से घर पहुंचे तो माता का निधन हो गया था, वो उन्हें पता न था। उन्हें बहुत दुःख हुआ। टोल्स्टोय की किताब 'वैकुण्ठ तेरे हृदयमें,' रस्किन की 'अन टू धीस लास्ट' नाम की किताब से रायचंदभाई के सत्संग से बहुत प्रभावित हुए थे, मुंबई में हाईकोर्ट में वकालत शरु की गई। वहाँ से राजकोट आये लेकिन कुछ फायदा नहीं हुआ। उन्हें पोरबंदर की मेमन फर्म ने बुलाया। दक्षिण अफ्रीका में उनकी फर्म थी। उसका केस लड़ने के लिए उन्हें नियुक्त किया गया। अब्दुल करीम की बात से सहमत होकर वो दक्षिण अफ्रीका गये। वो नाताल के डरबन बंदर गए। शेठ अब्दुल्ला उन्हें लेने आये थे। शेठ अब्दुल्ला ने उन्हें प्रिटोरिया भेजा। वहाँ रंग–द्वेष का महारोग चलता था। वहाँ से गाँधी चार्ल्सटाउन पहुंचे। जोहान्सबर्ग पहुंचने के लिए घोड़े का सीगराम चलता था उसमें सीगराम चालक के पास बिठाया गया। वहाँ उन्हें अपमान सहना पड़ा। सीगराम पारडी कोप पंहुचा। वहाँ गोरे को बिठाना था इसलिए गाँधी को पैर रखने की जगह –सीडी में बेठने को कहा। गांधीने मना किया तो तमाचों की बारिश हुई। वो प्रिटोरिया पहुचे, होटले में रुके। वहाँ मी. बेकर की ख्रिस्ती धर्म सभा में वो गए। प्रिटोरिया पहुँचने से पहले ट्रेन में फर्स्ट क्लास की टिकट ले

कर बैठे थे फिर भी गार्ड ने उन्हें धमकाया और बताया के तुम यहाँ क्यूँ बैठे हो। गाँधी ने फर्स्ट क्लास की टिकट गार्ड को दिखाई फिर भी उन्हें थर्ड क्लास के डिब्बे में बैठने के लिए कहा। ये तो गोरे लोगों का डिब्बा है। गाँधी को इस घटना से आजादी की लड़ाई के लिए सोचने को मजबूर किया। दादा अब्दुल के 40000/– पाउंड के केस में गाँधी ने जीत हांसिल की। १८९६ में वो देश में परत आ गये। 1901 में कोलकाता की महासभा में पहुँचे। आजादी की लड़ाई में अपना पूरा जीवन समर्पित किया।

भाषाः– गांधीजी के विचार

अपनी मातृभाषा से ज्यादा अंग्रेजी पर प्रेम रखा इस लिए राजकीय दृष्टिकोण से जाग्रत ऐसे उपले वर्ग के लोगों के समुदाय अलग पड गया है और दोनों वर्ग कें बीच एक गहरी खाई बन गयी है, इसलिए हिन्दुस्तान की भाषाएँ गरीब बन गई हैं और विज्ञान की चोक्कस परिभाषा नहीं है। हमारी आम जनता आधुनिक मानस से, यानि कि नए विचारों से अभिभूत होने लगी है। हिंदुस्तान की महान भाषाओँ की अनदेखी हुई है, इसके परिणाम स्वरूप हिन्द को बहुत नुकसान हुआ है, इसका अंदाजा नहीं निकाल सकते। जो नुकसान हुआ है, वो नुकसान का इलाज नहीं है। आम समुदाय के विकास में वो सहभागी नहीं बन सकेगी। अहिंसा के स्तंभ पर खडी हुई आजादी की लड़ाई में सभी इन्सान अपना हिस्सा ले सकें इसलिए आम जनता अपनी बोली में ही जुड़ सके ऐसे आशा कैसे रखें ?आजादी की लड़ाई में भी भाषा का प्रश्न खड़ा था। इसलिए उन्होंने हिंदी में पत्रिका के माध्यम से हिंदी भाषा को सहारा बनाया था। उससे राष्ट्रभाषा का जन्म हुआ।

राष्ट्रभाषा :–

हिन्दुस्तान में हमें ऐसी भाषा की जरूरत है कि जिस भाषा को सबसे अधिक लोग जानते हो और समझते हो और बाकी बचे सभी लोग ऐसी भाषा निःसंदेह जल्दी से सीख सके। ऐसी एक ही भाषा हिंदी ही है। हिन्दू और मुस्लिम लोग जो भाषा बोलते हैं और समझते थे वो भाषा उर्दू लिपि में नाम से प्रचलित है, १९२५ की साल में कानपुर में बीच बैठक में मंजूर किये गए ठहराव में हिंदुस्तान में वही बोली को राष्ट्रिय महासभा ने हिंदुस्तान के नाम से पहचानी और तबसे और कुछ नहीं लेकिन सिद्धांत में हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा के रूप में पहचानी गई। सिद्धांत में जानबूझकर कहा गया था कि खुद राष्ट्रिय महासभा के लोग भी उसका महत्व रखना चाहिए उतना नहीं रखते हैं। इतना हैबिट भी नहीं रखा गया। हिंदुस्तान के आम जनता राजकीय अभ्यास के लिए हिंद की बोली का महत्व को पहचान कराने के और स्वीकार करने के लिए एक महत्वपूर्ण कोशिश

1920 शुरू की गई। इसलिए राजकीय दृष्टि से जागृत हुआ हिंद सरलता से हिंदी बोल सके, और हिंद के अलग अलग प्रान्तों में से महासभा का अखिल भारतीय सम्मेलनों में एकत्र होते महासभावदियों समझ सके। समग्र हिंदुस्तान की एक बोली को पहचानने का और स्वीकार करने का एक खास तोर पर प्रयास शुरू हुआ था। ये राष्ट्रभाषा हम सभी उसकी दोनों शेली को समझ सके और बोल सकें तथा लिपि में भी लिख सके, उस तरह सीखनी चाहिए।

गांधीजी ने दिलगीरी से बताया था कि महासभावादियों ने ठराव का अमल किया नहीं है इसलिए उन्होंने बताया कि मेरी समझ से उसे दागपूर्ण कहा जा सकता है, अंग्रेजी में बोलने वाले और आग्रह रखने वाले खुद की समझ के लिए दूसरे लोगों को भी भाषा बोलने और समझने के लिए महासभावादी लोग झूठा दिखावा करते हैं, वो देखने को मिल रहा है। अंग्रेजी के चुंगल से हम अभी निकल सकें। हम हिंदुस्तानी अपनी ध्येय प्राप्ति की कूच को पीछे धकेल रहे हैं। अंग्रेजी पढने के लिए जितने वर्ष हम बिगाड़ रहे हैं इतने महीने से भी कम हम हिंदुस्तान की भाषा सिखने का प्रयास नहीं करते हैं। इसलिए आम जनता के प्यार के लिए हम जो प्रयास कर रहे हैं उसमें सफलता प्राप्त कैसे होगी ? आज हिंदी विश्व की दूसरे नंबर की भाषा बनने जा रही है। हिंदी में सारे विश्व में हिंदी साहित्य सम्मलेन होने लगे हैं। हिंदी में पत्रिकाएं निकल रही हैं। आम जनता में हिंदी भाषा के साहित्य में रस बढ़ने लगा है। मीडिया के द्वारा उसका प्रचार–प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य हो रहा है। हमें गौरव होता है कि, हिंदुस्तानी भाषा को इतना मान–सम्मान और बढ़ावा मिल रहा है। अपने देश के मुखिया श्रीमान नरेन्द्र मोदी जी विदेश में जहाँ जाते है वहाँ अपना वक्तव्य हिंदी में देते है। अपनी राष्ट्रभाषा के लिए हम सभी हिंदुस्तानी लोगों को गोरव होना चाहिए। शिक्षा का माध्यम हिंदी होना चाहिए तो देश की संस्कृति को बचा सकेंगे, विकास में तेजी आएगी।

समाजः–

अंग्रेज सरकार ने हिंद के मुसलमानों में अलगता की भावना पैदा की। 1857 में हिलचाल शुरु की गई। 1909 के सुधारों से और कानून से ये प्रवृति को तेज गति मिली। गोळमेजी परिषद् तक मुसलमान लोग अलग मताधिकार की बात करने लगे लेकिन, ३० के दायके की शुरुआत में अंग्रेज ने दलितों को भी हिन्दू बस्ती से अलग करने का प्रयास किया था। दलितों को सम्मान दिलाने और गोरव बढाने के लिए गांधीजी और उनके शिष्यों ने रोल अदा किया था। १९१५ में सत्याग्रह के वख्त एक दलित परिवार को अपने साथ समभावपूर्ण बसाया गया था। इससे गांधीजी को बाकी के हिन्दू समाज की नाराजगी झेलना पड़ा था। उसके बाद दलितों को, अस्पृश्य लोगों को आगे बढाने के लिए और

समृद्धि के लिए,समता देने के लिए अपने से जितना हो सके उतना प्रयत्न गांधीजी ने किये थे। दलितों के लिए उन्हें बहुत प्रेम था। फिर भी गोळमेजी परिषद् के बक्त देश के एक महान सपूत डॉ. भीमराव आम्बेडकर को गाँधीजी के सामने टकरा दिया। लुच्चे अंग्रेज ने गन्दी चाल चली। गोळमेजी परिषद् में दलितों को अलग मताधिकार देकर, विधानसभा में उन्हें प्रतिनिधित्व कायमी रूप से चयन करने की व्यवस्था सरकार ने सोची। ऐसा होने से मुस्लिम,दलित और सभी लोग अलग हो जाय ऐसी एक दूसरे के दुश्मन बन जाय ऐसे बात रखी थी। गाँधीजी ने उसका विरोध किया था। गांधीजी ने जेल में से ब्रिटिश सरकार को पत्र लिखा और अलग मताधिकार देने से अंत तक उपवास की धमकी दे दी। लेकिन, ब्रिटिश सरकार ने अस्पृश्य लोगों को अनामत जगह पर इलेक्शन लड़ने का अधिकार दिया। गांधीजी ने अस्पृश्यता के कलंक को नाबूद करने के लिए और सम्पूर्ण नागरिक समानता देने का प्रयास देने का प्रयास शुरू किया था। गांधीजी ने दांडी कूच की थी। गांधीजी हरिजनों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। जेल से बाहर आकर गांधीजी ने हरिजन सेवा में दोगुनी तेजी से काम शुरू किया था। गांधीजी ने सामाजिक चेतना और सुरक्षा के लिए वायसराय को एक ११ मुद्दों का मांग पत्र भेजा था।

मांग पत्र के मुद्देः–

सम्पूर्ण दारुबंधी
ब्रिटिश चलन के सामने हिंद के रुपये की सलामती
जमीन महैसुल में 50% कटोती की जाये
नमक पर से कर हटाया जाये
लश्करी खर्च में 50% कटोती की जाये
सरकारी कर्मचारियों के वेतन में 25% कटोती की जाये
विदेशी कपडे पर आयात कर लगाया जाये।
दरियाई वाहन व्यवहार में सरलता उपलब्धकराई जाये
सभी राजकीय केदियों के केस बदं कर के उन्हें रिहा किए जाये
छुपी पुलिस का खाता बंद किया जाये
स्वरक्षण के लिए शस्त्र रखने के लिए परवाना दिया जाये
नमक कुदरती पैदाश है, जैसे हवा, पानी, वृक्ष, पोंधे कुदरत से विना मूल्य उपलब्धहै , ऐसे समंदर के पानी से उत्पन्न होता नमक पर कोई कर नहीं होना चाहिए, इसलिए गांधीजी ने दांडी यात्रा की थी।

राजनीतिः–

गांधीजी 'महात्मा' का बिरुद पाए थे। उन्होंने आश्रम शुरू किया था। प्रार्थना, समूह–श्रम, स्वाश्रय, धार्मिक और सुधारात्मक प्रवृतियां की थी। राजकीय परिषद्

के निर्देश पर राजकीय क्षमता भी थी। बिहार के चंपारण में उन्हें अंग्रेज के सामने टकराने का अवसर मिला था। वहाँ के किसान राजकुमार शुक्ल ने गांधीजी के बारे में सुना था कि गांधीजी अग्रेजों के अन्याय के खिलाफ वो अफ्रिका में लडे थे और न्याय दिलाया था। इसलिए गांधीजी को ये काम सोंपा गया था। चंपारण में गांधीजी जो काम कर रहे थे उस काम में राजकारण की भी जरुरत थी। राजसत्ता को पडकार फेंकने की बात थी, लोक सेवा में भी राजकारण समाया हुआ है। किसानों की लड़त में गांधीजी सहभागी हुए। ऐसे इच्छा और अनिच्छा से राजकीय प्रवृति में शामिल होना पड़ा। वो राजकारण छोड़ने के लिए कोशिश कर रहे थे लेकिन उसमें सफल न हुए, क्यूंकि उसमें लोक सेवा थी।

चंपारण में उनकी पहली हिंदी लड़ाई थी, उस में वो विजयी बने। अंग्रेज नील मालिकों को निकाल देने में असफल हुए। न्यूज पत्रिकाओं में किसानों की समस्याओं के लिए गांधीजी ने आलेख लिखे थे। देश में चंपारण प्रसिद्ध हो गया। गांधीजी गावों में जाते थे वहाँ गोरा मेजीस्ट्रेट उनके साथ होने से लोगों की यातनाएं उन्हें लिखा देते थे। राजकुमार शुक्ल को गोराओं से मुसीबत झेलनी पड़ी थी। गांधीजी के कारण अंग्रेज के जुल्म कम हुए थे। अंग्रेजों के सामने गांधीजी अन्याय का विरोध करते थे। लोगों को जागृत कराते थे। गांधीजी ने अंग्रेजों के सामने चंपारण के केस में जीत हांसिल की थी।

साधन और साध्य :–

साध्य का अर्थ है सिद्ध करने योग्य
वह विचार जिसे पूरा करने के लिए कोई काम किया जाए
कार्य जिसका साधन हो सके
जिसका उपचार संभव है
जो सिद्ध और पूरा किया जा सके
आसान
सुगम
तर्क या न्याय में पक्ष या विषय जो प्रमाणित किया जाने को हो
वास्तव में रोग जो चिकिस्तक के द्वारा दूर किया जा सकता हो
काम या बात जिसका प्रतिकार हो सकता हो अथवा किया जा सकता हो
विषय जो प्रयत्न करने पर जाना जा सकता हो
कोई काम पूरा करने की योग्यता या शक्ति
सामर्थ्य
न्याय में व पदार्थ जिसका अनुमान किया जा सके
इक्कीसवा योग
यहाँ अग्नि साध्य है जिसका अनुमान किया गया है
ज्यों गुरु से लिए जाने वाले खास प्रकार के मन्त्रों में से एक प्रकार का मंत्र
देवता मंत्र एक प्रकार के गण देवता जिसकी संख्या बारह है

गांधीजी के दर्शन में सत्य को साध्य के रुप में और अंहिसा को

साधन बनाया गया है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150 वी जन्म जयंती के उपलक्ष्य में विविध कार्यक्रम होने जा रहे हैं। महात्मा गांधीजी ने सत्य और अंहिंसा के विचार के दम पर देश को आजादी दिलाई थी। महात्मा गांधीजी ने पूरा जीवन सत्य और अहिंसा के मार्ग पर ले जाने में व्यतीत किया गया था। सत्य और अहिंसा के दम पर गांधीजी ने पूरे देश को एक जुट करके स्वतंत्रता का आन्दोलन का नेतृत्व किया था, महात्मा गांधी आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने की वे उस दोरान थे, गाँधी के कुछ विचार जानते जो कि देश के युवाओं को सही दिशाएं देने के लिये काम आयेंगे। अपनी गलती को स्वीकार करना झाडू लगाने के सामान है जो कि, धरातल को और अधिक चमकदार एवं स्वच्छ बनाएगी। गांधीजी ने अपना जीवन सत्य या सच्चाई की व्यापक खोज में समर्पित कर दिया। उन्होंने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपनी स्वयं की गलतियाँ और खुद पर प्रयोग करते हुए सिखने की कोशिश करते थे। उन्होंने ने अपनी आत्मकथा को सत्य का प्रयोग नाम दिया है। गांधीजी ने कहा था कि सब से महत्वपूर्ण लड़ाई लड़ने के लिए अपने दुष्ट आत्माओं को भय और असुर जैसे तत्वों पर विजय पाना है। गांधीजी ने अपने विचारों को सबसे पहले उस समय संक्षिप्त में व्यक्त किया, जब उन्होंने कहा भगवान ही सत्य है, बाद में अपने इस कथन को सत्य ही भगवान है – में बदल दिया। इस प्रकार सत्य में गाँधी के दर्शन है।

अहिंसा :–

हालाँकि गांधीजी अहिंसा में सिद्धांत के प्रवर्तक बिलकुल नहीं थे, फिर भी इसे बड़े पयमाने पर राजनैतिक क्षेत्र में इस्तेमाल करने वाले पहले व्यक्ति थे। अहिंसा और अप्रतिकारक भारतीय धार्मिक विचारों में एक लंबा इतिहास है और इसके हिन्दू,बोद्ध, जैन, यहूदी और इसाई समुदायों में बहुत सी अवधारणाएं है। गांधीजी ने अपनी आत्मा कथा 'द स्टौरी ऑफ़ माय एक्सपेरिमेंट विथ ट्रुथ' में दर्शन और अपने जीवन के मार्ग का वर्णन किया है। उन्हेंकहते हुए बताया गया था कि, 'जब में निराश होता हु तब में याद करता हूं कि हालाँकि, इतिहास सत्य का मार्ग होता है, किन्तु प्रेम इसे सदैव जित लेता है', यहाँ अत्याचारी और हत्यारे भी हुए हैं और कुछ समय के लिए वे अपराधी लगते थे किन्तु, अंत में उनका पतन ही होता है –इसका सदैव विचार करे। गांधीजी ने अपने सत्याग्रह आन्दोलन में ऐसे लोगों को दूर ही रखा जो हथियार उठाने से डरते थे अथवा प्रतिरोध करने में स्वयं की अक्षमता का अनुभव करते थे। उन्होंने लिखा है कि मैं मानता हूँ कि जहाँ डरपोक और हिंसा में से किसी एक को चुनना हो तो में हिंसा के पक्ष में अपनी राय दूंगा। प्रत्येक सभा में चेतावनी दुहराते थे कि, जब तक उन्हें यह अहसास नहीं हो जाता कि एक ऐसे अहिंसात्मक बल के अधिकार में आ गये हैं। जिसके अधिकार में वे पहले भी थे और वे उस प्रयोग के आदि हो चुके थे और उनका मानना था कि उन्हें

अहिंसा से कुछ लेना देना नहीं है तथा फिर से हथियार उठा लिए थे’।

वीरता केवल अच्छे निशानवालों में ही नहीं होती है बल्कि मृत्यु को हरा देने वाले में तथा अपने सीने को गोली के लिए सदा तैयार रहने वालों में भी होती है। बचपन में गांधीजी को मांस खाने का अनुभव मिला था। वेजिटेरियन का विचार भारत में हिन्दू और जैन प्रथा में भरा पड़ा है लेकिन उनकी मातृभूमि गुजरात में ज्यादातर हिन्दू शाकाहारी है। अपनी माता पुतलीबाई से वादा किया था कि लंदन जा कर वो मांस और शराब को नहीं छुएंगे। शाकाहारी होना ब्रह्मचर्य में गहरी प्रतिबद्धता देता है। गांधीजी ने ब्रह्मचर्य आगे जा कर अपनाया था। गाँधीजी सप्ताह में एक दिन मोन रखते थे। इस परहेज से उनका मानना था कि इससे आंतरिक शांति मिलती है, उन्होंने कागज के माध्यम से लिखकर अपना संपर्क बनाया करते थे। उन्होंने अख़बार पढने से भी कभी कभी मना कर दिया था, क्योंकि उससे आन्तरिक अव्यवस्था में जो स्थिर व्यवस्था है उस में अशांति की तुलना में अधिक भ्रमित करता है।

ज्होन रस्किन की ‘अन टू द लास्ट’ पढने के बाद उन्होंने अपनी जीवन शैली में परिवर्तन करने का फैसला किया तथा एक समुदाय बनाया जिसे अमरपक्षी, अव्यवस्थापन कहा जाता था। अपने साधारण जीवन को दर्शाने के लिए उन्होंने बाद में अपने शेष जीवन में धोती पहनी थी। गांधीजी ने भगवद् गीता की व्याख्या गुजराती में की थी। महादेव देसाईं ने गुजराती से पांडु लिपि और विवरण के साथ अंग्रेजी में अनुवाद किया था। गाँधीजी का मानना था कि प्रत्येक धर्म के मूल में सत्य और प्रेम होता है। उनका कहना है कि कुरान, बाइबल, जेंद, अवेस्ता, ताममुंड अथवा गीता किसी भी माध्यम से देखिये तो हम सब का इश्वर एक ही है, और वह सत्य तथा प्रेम स्वरूप है। बिहार में भीषण भूकंप के सन्दर्भ में २४ जनवरी १९३४ को भिन्न वाल्मीकि की सभा में कहा था कि भले ही आप मुझे अन्ध विश्वास कहे, मगर मुझ जैसा आदमी यही मानेगा कि भगवान ने हमें हमारे पापों का दण्ड देने के लिए इस भयंकर भूकंप को भेजा है। रविन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा है कि भौतिक आपदा भौतिक तथ्यों के योग से होता है। गांधीजी की सब से बडी विशेषता यह थी कि, वह सिद्धांत के रूप में जो भी कहते हैं उसे अमल में लाते थे। १९४७ में देश को आजाद किया लेकिन भारत के दो टुकड़े हो गए। राम के पुजारी और गीता के उपासक जब अंतिम समय आता है तो उनके मुंह से ‘हे राम’ निकला। बिना किसी हथियार के देश को आजादी दिलाने वाले साबरमती के इस संत के बारे में कहा जाता है कि, ‘दे दी हमेंआजादी, बिना खडग बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर किया कमाल’ –आज देश में गांधीजी हमारे बीच में नहीं है लेकिन आज भी उनकी शिक्षाएं हमारे जीवन में खास महत्व रखती है। विश्व वंदनीय बापू सत्य के प्रतीक थे। वह देश में रामराज्य की स्थापना करना चाहते थे लेकिन उनका यह सपना साकार न हो सका। मानवता इतिहास में बापू का नाम सदैव अमर

रहेगा। गांधीजी का शरीर दुबला पतला था लेकिन, आत्मा से महान, शरीर पर कपडे के नाम पर एक धोती लेकिन, दिल के धनी, अपनी बात पर अडने वाले परन्तु अहिंसा के पुजारी थे, इन्ही गुणों के कारण पूरा भारत उनकी समक्ष नत मस्तक हो गया है। उनकी जीवन साधना, त्याग, बलिदान और तपस्या की प्रेरणामूर्ति के रूप में आज भी जन–मानस के हृदय में सजीव है।

साधन का अर्थः–

साधन का अर्थ है किसी कार्य के लिए पर्याप्त वस्तुओं का संग्रह। यह शब्द हिंदी में किसी कार्य के लिए पर्याप्त होता है यदि आप इसका सटीक अर्थ जानते हैं तो पृष्ठ को संपादित करने में संकोच न करे। मोक्ष प्राप्ति के लिए सूत्रों, विचारों, साधन, अभ्यासकारो और अभ्यास के अंत तक पहुँचना, सुनने और सोचने वाले लोग समझते है किन्तु, साधन क्या करना है वो नहीं जानते है। रामचरितमानस के अनुसार साधन का एक अर्थ ध्यान लगाना भी होता है, जैसे साधन धाम मोक्ष कर द्वारा, पाई न जेहि परलोक संवारा –६५४ अर्थात् यह शरीर साधनों का घर और मोक्ष का द्वार है इसे पाकर जिसने परलोक नहीं सुधारा। साधन का मतलब किसी कार्य को पूर्ण करने के जरिये या माध्यम, किसी कार्य को पूरा करने युक्त, या तरकीब –किसी वस्तु आदि को तैयार करने की सामग्री।

● ●

सन्दर्भ सूची : संक्षिप्त आत्मकथा –गांधीजी – लेखक मोहनदास करमचंद गाँधी – प्रकाशकः नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद

रचनात्मक कार्यक्रम और उसका रहस्य तथा स्थान –लेखकः मोहनदास करमचंद गाँधी –प्रकाशकः नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद

गाँधी जीवन गाथा – महात्मा –1 –लेखक यशवंत मेहता –प्रकाशक : गुर्जर ग्रन्थ रत्न, अहमदाबाद

गाँधी जीवन गाथा –राष्ट्रपिता –2 –लेखक यशवंत मेहता –प्रकाशक : गुर्जर ग्रन्थ रत्न, अहमदाबाद

● ●

गांधी बापू को पत्र

प्रिय बापू ,

नमस्कार,

आपकी कुशलता चाहते हैं।

प्रिय बापू आप हमारे लिए अमर हैं। आजादी के फल खाते हुए हमें आप रोजाना याद आते हैं। गुजरात में रहते हुए गुजरात विद्यापीठ से गांधी आश्रम से,कोचरब आश्रम से गुजरते हैं तब भी बापू आपकी याद आती है। आश्रम रोड पर आयकर भवन के सामने आप खड़े हैं। हम तुम्हें मिलने और देखने वहां बार बार आते हैं। आप हमारे लिए ही नहीं बल्कि पूरे गुजरात एवं पूरे हिंदुस्तान के लिए अमर हैं। अरे, हिंदुस्तान क्या आप पूरे विश्व में जीवित हैं। आप को विदेश में आज भी लोग सम्मान देते हैं। आप को याद करते हैं। आप के जन्म स्थान पोरबंदर से ही हमें व्यसन मुक्ति अभियान की प्रेरणा बापू आप से ही प्राप्त हुई है। हम स्कूल एवं कालेजों में प्रोग्राम करने जाते हैं वहां आप को ही याद करते हैं। आप का ही उदाहरण पेश करते हैं।

आपके बताए गए रास्ते पर लोग चलते हैं। चरखा चलाते हैं, खादी का कपडा़ बुनते है। खादी पहनते हैं। देश का राष्ट्रध्वज भी खादी कपड़े से बना हुआ है। स्वातंत्रय दिवस पर बापू आप को हमेशा याद करते हैं। आप हमारे दिलों में जिंदा है।भारत देश की राजधानी दिल्ली में आपका 'हे राम',आज भी सुनाई देता है। आप के सत्य के प्रयोग में आप जिंदा है। आप की 'आत्म कथा' साक्षी है। आपने बनाया गया वो आश्रम साबरमती नदी के किनारे कस्तूरबा और बापू आप की निशानी स्वरूप में और कोचरब आश्रम पालड़ी अहमदाबाद में भी आप जीवित हैं। देश की आजादी के लिए आप का बलिदान हम कैसे भूल पाये ?आज हमारे दिलो में आप जिंदा है,बापू आप अमर हैं।

अमर वो इंसान बन जाता है,जो अपने परिवार की फिक्र न करते हुए अपना पूरा जीवन देश के लिए कुर्बान करता है, वो इंसान अमर बन जाता है। आप ने देश के लिए बापू अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया है । बापू आप का जितना आभार प्रकट करे उतना कम है।

प्रिय बापू मजदूरों के लिए किए गए वो उपवास, स्वतंत्रता के लिए किए गए

वो उपवास खेड़ा सत्याग्रह बारडॉली सत्याग्रह, और चंपारण्य में किसानों के लिए चलाई गई वो लडत,स्वछ्ता अभियान,प्रोढ़शिक्षा, सर्वोदय के सिद्धान्त ,महात्मा गांधी के रूप में हमें बहुत ही याद आता है। ' बापू ' दक्षिण अफ्रिका में व्यसनी लोगों की आदतें दूर करने के लिए किए गए उपाय,कोमी एकता और अस्पृश्यता निवारण तथा दारू बंधी 1920 की साल से आपने सुधारा के रूप में अपनाया था। गुजरात में आज भी शराब बंदी है। आपकी खादी की हिमायत आज भी चालू है। 1940 की साल में 13451 गांवो में 2,75,146लोग गाँव के निवासी थे, वे सूत चरखा चलाकर निकालते थे, रुई पिंजना, चरखा चलाना, कपड़ा बुनना, कुल मिलाकर 34,85 609 रुपये मजदूरी के मिले थे। यह आंकड़े में 19645 हरिजन,57378 मुस्लिम,थे। उसमें स्त्रियों की संख्या ज्यादा थी। आपने ग्रामोद्योग का विकास किया। गांवों को सफाई का मंत्र दिया,प्रोढ़ शिक्षा की शुरुआत की गई,हिन्दीभाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकारने की बात कही। परिणाम स्वरूप 1925 की साल में कानपुर की सभा में राष्ट्रीय महा सभा ने ठराव में हिंदुस्तान की राष्ट्र भाषा हिन्दी को बनाया गया । गौ सेवा को सम्मानित कार्य के रूप में लिया था।

अहिंसा से समाज में सुधारणा लाने के लिए किए गए प्रयोग आज भी चालू है। सत्य और अहिंसा से प्राप्त की गई स्वतन्त्रता की सिद्धि आज भी आप की याद दिलाती है।

बापू महात्मा गांधी आप का जन्म पोरबंदर गुजरात में 1869 को दूसरी अक्टूबर के दिन हुआ था। आप का नाम मोहनदास गांधी रखा गया था। आपकी माता का नाम पुतली बाई और पिताजी का नाम करमचंद गांधी था। दक्षिण आफ्रिका में आप ने वकालत की थी। आप सत्य के आग्रही थे। आप का विवाह करुणामयी कस्तूरबा से किया गया था । आप कर्म योगी थे। राष्ट्र नायक थे। आपने प्रार्थना को जरूरी माना था। हे प्रभु,ले चल मुझे उस परमात्मा की ओर ''वैष्णव जन तो उसे कहिए ,जो पीड़ा पराई जाने रे,"आप का प्रिय भजन है। आप ने अक्षर की आराधना की थी। आप कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर के साथ चर्चा करते थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने आपको 'महात्मा' का बिरुद दिया था। आप स्वातंत्र्य संग्राम के राहबर थे, त्रिमूर्ति थे। सत्याग्रह आश्रम कोचरब और गांधी आश्रम साबरमती हृदय कुंज में बापू आप आज भी जिंदा हो। दांडी यात्रा,शांति यात्रा,बिहार शांति यात्रा, में बापू आप आज भी जिंदा हो। आल्बर्ट आइन्स्टाइन ने आप के लिए कहा था कि,"आनेवाली पीढ़ियां शायद ही मान सकेगी कि,हाड़-मांस से बने किसी ऐसे मनुष्य ने कभी इस पृथ्वी पर भ्रमण किया होगा। "

आप ने ईश्वर के लिए लिखे गए वो शब्द ''ईश्वर के नाम तो हैं, लेकिन एक ही नाम ढूँढे तो वह है, सत्य सत्य । इस लिए सत्य ही ईश्वर है।

आपका जीवन ही आप का संदेश है। मोहन दास से महात्मा तक की

यात्रा में सदैव सत्य की खोज की है। आप का जीवन सत्य की खोज के लिए प्रयोग की तरह है। उसे देखकर ही ''आत्म–कथा" सत्य के प्रयोग ऐसा शीर्षक रखा गया है। 1924 से 1925 तक नव जीवन पत्रिका में गांधीजी की आत्मकथा क्रमशः छपी थी। आत्मकथा में बचपन के अनुभव,शिक्षण,छोटी उम्र में शादी,मांसाहार,पाप–चोरी,पिता पुत्र के संबंध,धर्म जिज्ञासा ,व्यवहार,बेरिस्टर के रूप में अनुभव,समाज (जाती) बाहर रखे गए वो प्रसंग,दक्षिण आफ्रिका का वृतांत,जैसे जीवन के अलग अलग प्रसंगो का सत्य के रुपमें देखने का प्रयास किया गया है। यरवड़ा जेल का नाम यरवड़ा मंदिर दिया गया। यहा तुम्हैं न्यूज़ पत्रिकाए पढ़ने के लिए मिलती थी। आश्रम से बहुत सारे पत्र भी आते थे। फुरसद के समय में सूत यज्ञ में चरखे की भक्ति में और गीता पढ़ने में बिताया जाता था। अपने स्वदेशी व्रत पर आलेख लिखा गया था। जो नव जीवन में प्रकाशित हुआ था। वे प्रवचन मंगल प्रभात में लिखते थे। इस के लिए आप के प्रवचन संग्रह का नाम मंगल प्रभात रखा है।

दिनांक –22 जुलाई 1930 के दिन यरवड़ा जेल से आश्रम पर लिखे गए पत्र में आपने लिखा था की,–––पत्र में सूचना थी कि ,मुझे हर सप्ताह में कुछ प्रवचन,प्रार्थना के समय पढ़ने के लिए भेजना होगा। सोचते हुए यह मांग आप को सही लगी थी । प्रार्थना के समय कुछ ज्यादा चेतना डालने के लिए मेरा यह योगदान गिनना ऐसा कहा गया था

● ●

सन्दर्भ सूची :रचनात्मक कार्यक्रम और उसका रहस्य, अभिनव कर्म :गांधी नव जीवन ट्रस्ट 1941

● ●

गांधीजी का हिन्दी प्रेम

1918 में गांधीजी ने हिंदी साहित्य सम्मेलन में हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए कहा था, हिंदी भाषा को जनहित की भाषा गांधीजी ने बताया था, 1949 में स्वतंत्र भारत के प्रश्न पर 14 सितंबर में हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने का विचार विमर्श बाद यह निर्णय लिया गया जो भारतीय संविधान के भाग 17 के अध्याय की धारा 343(9) में इस प्रकार हैं।

''संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी, संघ व राजकीय प्रयत्नों के लिए प्रयोग होने वाले अंक का रूप अंतरराष्ट्रीय रूप होगा"

यह निर्णय 14 सितंबर को लिया गया इस कारण हिंदी दिवस के लिए इस दिन को श्रेष्ठ माना गया है, गैर हिंदी भाषी राज्य के लोग इसका विरोध करने लगे तो और अंग्रेजी की भी राजभाषा का दर्जा देना पड़ा, इस कारण हिंदी में भी अंग्रेजी भाषा का प्रभाव पड़ने लगा।

भारतीय संविधान में राष्ट्र भाषा का उल्लेख नहीं है, संसद का कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जा सकता है, लेकिन राज्यसभा के सभा पति महोदय या लोकसभा के अध्यक्ष महोदय विशेष परिस्थिति में रुके गए सदस्य को अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकते हैं। (संविधान का अनुच्छेद 120) हिंदी को भारत में राजभाषा के रूप में 14 सितंबर सन 1949 को स्वीकार किया गया, इस के बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के संबंध में स्वी कार की गई, इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिए 14 सितंबर के दिन प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हिंदी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर वर्ष 1953 से भारत में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वतंत्रता पूर्व 1833-86 गुजराती के महान कवि श्री नर्मद (1833-86)में हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए विचार रखा था।

1872 आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कोलकाता में केशव चंद सेन से मिले तो उन्होंने स्वामी जी को यह सलाह डाल दिया कि आप संस्कृत को छोड़कर हिंदी बोलना आरंभ कर दे, तो भारत का कल्याण हो सकता है, तभी से स्वामी जी के व्याख्यान की भाषा हिंदी हो गई और इसी कारण स्वामी जी ने सत्यार्थी प्रकाश की भाषा हिंदी ही रखी, सत्यार्थी प्रकाश

आर्य समाज का आधार ग्रंथ है,. 1918 में मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कोंग्रेस अध्यक्ष की हैसियत सेघोषित किया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी।

1918 इंदोर में संपन्न आठवे हिंदी सम्मेलन अध्यक्षता करते हुए महात्मा गांधी ने कहा कि, मेरा यह मत है कि हिन्दी को हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा बनते गोरव प्रदान हो, हिंदी सभी समझते हैं, इसे राजभाषा बनाकर हमें अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए, 1918 महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की।

1886 में इंदिरा गांधी ने राजभाषा पुरस्कार प्रारम्भ किया गया, 1988 को सयुंक्त राज जनरल एसेम्बली के तत्कालीन विदेश मंत्री श्री नरसिंह राव ने हिंदी में बोला था, 14/09/1999 संघ की राजभाषा हिन्दी की सुवर्ण जयंती मनाई गई, मई 2018 अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् ने हिंदी माध्यम से इंजीनियरिंग की शिक्षा को अनुमती दी गई ’17 जुलाई 2019 सर्वोच्च न्यायालय ने अपने सभी निर्णय हिंदी और अन्य असमिया, कन्नड, मराठी, ओडिया, तेलुगु में भी अनुवाद किया गया।

राष्ट्र भाषा प्रचार आंदोलन :

विश्व की शायद ही किसी भाषा का प्रचार इतनी शीघ्रता और इतने बड़े पैमाने पर हुआ हो, जितना कि (राष्ट्र भाषा के रूप में) हिंदी का, यह भी सच है कि शायद ही किसी भाषा के स्वरुप को लेकर इतना मतभेद रहा हो जितना कि इस भाषा के सम्बंध में रहा है, हिंदी को राष्ट्र भाषा का पद प्राप्त करने के लिए अनेक संघर्ष का सामना करना पड़ा है, राष्ट्र भाषा हिंदी के प्रचार का इतिहास भारत के स्वातंत्र्य संग्राम के इतिहास के समांतर अग्रसर हुआ है, और वह उसी के समान महत्व पूर्ण भी है, जिस प्रकार बापू के व्यक्तित्व को समझे बिना हमारी स्वतन्त्रता का इतिहास समझ में नहीं आ सकता है, उसी प्रकार बापू के योगदान को समझे बिना हिंदी प्रचार आंदोलन का वास्तविक स्वरूप समझ में नहीं आ सकता है, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने बापू की इस विशेषता के सम्बंध में एक जगह कितना अच्छा लिखा है।

एक बड़ी भारी मूर्ति की तरह बापू हिन्दुस्तान के इतिहास की आधी सदी में पांव फैलाकर खड़े है, वह बड़ी भारी मूर्ति शरीर की नहीं, बल्कि मन और आत्मा की है। भाषा समस्या के अधिकारी विद्वान स्व. श्री मगन भाई देसाई ने अपनी ’हिंदी प्रचार मूवमेंट’ शीर्षक अंग्रेजी पुस्तक में, हिंदी प्रचार आंदोलन में बापू के योगदान के सम्बंध में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि, ’भारत में हिंदी प्रचार आंदोलन का इतिहास मुख्यतोर पर महात्मा जी के इस दिशा में किए गए

प्रयत्नों का इतिहास है । (हिंदी प्रचार मूवमेंट, पृ. 2)

स्वर्गीय मगन भाई देसाई का कथन अक्षर सह सत्य है सन 1908 से सन 1948 तक के राष्ट्र भाषा प्रचार के प्रायः सभी प्रयत्न गांधीजी के नेतृत्व में अर्थात् उनको केंद्र में रखकर हुए थे, 1908 से पूर्व भी हिंदी प्रचार के छिटपुट प्रयत्न सहज रूप में हुए थे, इस तथ्य को भी आ स्वीकार नहीं किया जा सकता है, इनके पश्च्यात स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके आर्य समाज ने भी हिंदी के विकास में महत्व पूर्ण योगदान दिया है।

सन 1909 में महात्मा गांधीजी ने 'हिंद स्वराज' में अंग्रेजी भाषा का विरोध और हिंदी का समर्थन करते हुए स्पष्ट रूप से लिखा था, "हरेक पढ़े लिखे भारतीय को स्व भाषा का, हिन्दू को संस्कृत का, मुस्लमान को अरबी भाषा का, पारसी को पर्शियन का और सब को हिंदी का ज्ञान होना चाहिए।"

महात्मा जी के इस उद्घोष को राष्ट्र भाषा प्रचार आंदोलन का प्रथम शंखनाद समझना चाहिए, इस के द्वारा हिंदी प्रचार का जो सक्रिय आंदोलन प्रारम्भ हुआ उसकी परि समाप्ति ठीक 40 वर्ष बाद 14 सितंबर 1949 को हुई, इस दिन भारतीय संविधान ने हिंदी को राज भाषा के रूप में स्वीकार किया, महात्मा गांधी ने सन 1909 से राष्ट्र भाषा के बारे में गम्भीरतापूर्वक सोचना – विचारणा चालू कर दिया था, किन्तु प्रचार आंदोलन का सक्रिय प्रारम्भ हिंदी साहित्य सम्मेलन के सन 1918 के अधिवेशन से मानना अधिक उचित प्रतीत होता है, सन 1935 में सम्मेलन का अधिवेशन इंदोर में हुआ, जिस के गांधीजी फिर सभापति बने, सन 1949 में भारतीय संविधान ने हिंदी को राज भाषा के रूप में मान्य किया, आज गांधी शताब्दी के 150 वर्ष के इस पावन पर्व पर हिन्दी आंदोलन सूत्र पात के सो वर्ष पूरे हो रहे हैं, अध्ययन की सुविधा के लिए हिंदी प्रचार आंदोलन के इस डेढ़ सो वर्ष के इतिहास को उपर्युक्त सूत्रों के आधार पर तीन स्पष्ट काल खंड में विभाजित कर सकते हैं।

1. प्रारम्भिक काल :सन 1918 से 1935 तक
2. संघर्ष काल : सन 1935 से 1946 तक
3. स्वातंत्र्य काल : सन 1946 से आज तक

भाषा के बारे में गांधीजी बड़े दूरदर्शी थे, उनकी मान्यता थी कि साहित्य केवल पढ़े लिखे वर्ग तक सीमित न रहे, उसकी सुवास ग्रामीण जनता तक भी पहुंचनी चाहिए, इसके अतिरिक्त सभी प्रांतीय साहित्य का आपस में आदान प्रदान भी वे आवश्यक समझते थे, गांधीजी के साहित्य सबंधी विचारो ने न केवल गुजराती ब्लकि सभी भारतीय भाषाओं और उनके साहित्य को प्रभावित किया था, वे युग पुरुष थे, भारतीय साहित्य को उन्हों ने एक सुनिश्चित दिशा दी है,

राष्ट्र भाषा के लक्षण :

सन 1917 में भरूच की 'गुजरात शिक्षा परिषद्' के दूसरे अधिवेशन में दिए गए भाषण में उन्होंने राष्ट्र भाषा के पांच प्रमुख लक्षण का निरूपण किया गया था, ये लक्षण उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार हैं–

1. अधिकारीओं के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए.

2. उस भाषा के द्वारा भारत वर्ष का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यावहार हो सकना चाहिए.

3.यह जरूरी है कि भारत वर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हैं,

4.राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए

5.उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्प स्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए,

राष्ट्र भाषा की परिभाषा :

महात्मा गांधी ने जिस हिंदी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार किया उस की परिभाषा तथा व्याख्या भी उन्होंने अपने लेखों तथा भाषणों में प्रस्तुत किया, हिंदी साहित्य सम्मेलन के इंदोर अधिवेशन (सन 1918) में उन्होने अपनी इस परिभाषा को आग्रह के साथ अध्यक्षीय भाषण में प्रस्तुत किया । हिंदी भाषा वह भाषा है, जिसको उत्तर में हिंदू व मुस्लमान बोलते हैं, और जो नागरिक अथवा फारसी लिपि में लिखी जाती है, यह हिंदी एकदम संस्कृत मई नहीं है, न वह एकदम फारसी शब्दों से लादी हुई है, " उल्लेखनीय यह बात है कि, हिंदी की परिभाषा केवल अध्यक्षीय भाषण का अंश न होकर उस प्रस्ताव का भी अंश है, जिसे सम्मेलन ने स्वीकार करके अपने उद्देश्यों में भी सम्मलित कर लिया था, गांधीजी द्वारा प्रस्तुत की गयी हिंदी की यह परिभाषा उनकी भाषा नीति की बुनियाद है, इस में तीन बाते स्पष्ट है।

1. हिंदी उत्तर भारत के हिन्दू मुसलामानों की संयुक्त भाषा है
2. वह नागरी तथा फारसी दोनों लिपियों में लिखी जाती है
3. उनका वास्तविक रूप न संस्कृतनिष्ठ है न फारसी युक्त

राष्ट्र भाषा के विकास के इतिहास में सम्मेलन से महात्मा गांधीजी के सम्बंध विच्छेद को नजर–अंदाज नहीं किया जा सकता है, विशेषकर इस लिए कि यहघटना राष्ट्र भाषा की परिभाषा को लेकरघटीं थी, महात्मा गांधी ने एक राष्ट्र और एक राष्ट्र भाषा का स्वप्न देखा था, इस स्वप्न को साकार करने के लिए वे हिंदू मुस्लिम ऐक्य एवं हिंदी उर्दू के समन्वय की आजीवन हिमायत करते रहे, यदि यह कहै कि इन्हीं के लिए वे बलिदान हो गए, तो भी अत्युक्ति न होगी, क्यो की इन्हीं बातों को लेकर प्रतिक्रियावादी तथा क्रांतिकारी लोग उनसे विशेष रूप से असंतुष्ट थे।

सच्चा शिक्षण स्व भाषा के माध्यम से ही होना चाहिए यह उनकी मान्यता थी, इस लिए अपनी परिकल्पना की राष्ट्रीय विश्व विद्यालय 'गुजरात विद्यापीठ' में जब उन्होंने सन 1920 में हिंदी हिन्दुस्तानी के शिक्षण को अनिवार्य विषय बनाया, तो शिक्षा के माध्यम के रूप में स्व भाषा (गुजराती) को चुना, विद्यापीठ के विधान में ईन दोनों तथ्यों का स्पष्ट निर्देश दिया है,

राष्ट्र भाषा हिंदी हिन्दुस्तानी का शिक्षण विद्यापीठ के अभ्यास क्रम में अनिवार्य रहेगा, सन 1919 से गांधी युग का प्रारम्भ हुआ ऐसा मानना चाहिए, हिंदी साहित्य के इतिहास में इस युग को छायावाद युग कहा गया है! उन्होंने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा तथा अहमदाबाद में नवजीवन और गुजरात वि॥पीठ जेसी राष्ट्रीय संस्थाओ की स्थापना की है।

सन्दर्भ सूची ःराष्ट्र भाषा हिंदी और गांधीजी, लेखक ःडॉ. नागर प्रकाशन वर्षः1970
रचनात्मक कार्यक्रम और उसका रहस्य, (गुजराती) मोहनदास करमचंद गांधी नव जीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद - 1941

● ●

गांधीनगर के आंगन में महात्मा गांधी साहित्य सेवा मंच गांधीनगर की और से आयोजित ऑन लाइन गुजराती कवि सम्मेलन

गांधीनगर के आँगन में महात्मा गांधी साहित्य सेवा संस्थान की और से गुजराती ओन लाइन कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ ।

गुलों का हश्र है खिलकर मुरझा जाना किन्तु उसका फ़र्ज भी है , चमन को महका जाना ' ' संस्थाके सभी साथियों ने अपना धर्म निभाया । बंदाई हो ! महात्मा गांधी साहित्य सेवा संस्थान के अध्यक्ष श्री डॉ. गुलाबचंद पटेल और सभी साथियों ने नींव रखी थीं तथा डॉ. गुलाबचंद पटेल सर ने सातों मानदंड के अधिनायकों पर बुनियाद रखी बाकी सेना ने एकजुट होकर सहयोग किया बहुत ही सफलता पूर्वक कार्य को पार किया । सब अभिनंदन के अधिकारी हैं । श्री रमेशभाई मुलवाणी ने आशिकी कर ली थीं उसी मोहब्बत का नतीजा यानी हम सब आश्वस्त हुए हैं । भरोसा खुद पर रखो तो ताकत बन जाती हैं । रमेश भाई आप बिना विचलित हुए अपने मकसद और डॉ. गुलाबचंद पटेल सर के विश्र्वास पर खरे उतरे हैं । कितनी, कैसी तारीफ करूँ ? आज शब्द भी आँख मिचोनी खेल रहें हैं। गीता के कर्मयोग में कहा है कि "जमीन औऱ कर्म की एक ही रीत हैं । जो बोया है वो ही बाहर निकलकर आता है।" आपकी साफगोईं का नतीजा बेहतर होगा ! ! ! धन्यवाद ज्ञापन में जिस तरह से आपने गुलदस्ते को बिखेरा वह काबिले तारीफ था । अंततः आपने खुद के विश्र्वास को जीत लिया हैं
चाँद औऱ सूरज अपने अपने समय पर चमकते हैं गोया कल एक ही साथ रोशनी देते नज़र आए ...मेरी और से सभी सहयोगी दल को मेरा वंदन ... डॉ. सुरेश वी. देसाई

अस्पृश्यता आंदोलन : गांधीजी

अंग्रेज सरकार ने हिंद के मुस्लिमों में अलगाववादी भावना भड़काने का काम 1857 के विद्रोह के बाद शुरू कर दिया था, 1909 के सुधार किए गए कानून से यह प्रवर्ती को ज्यादा बढावा मिला, गोल मेजी परिषद् तक कहीं सारे मुस्लिमों ने अलग मताधिकार ही नहीं बल्कि अलग देश की रचना के लिए सोचने लगे, लेकिन अंग्रेजो को दलित समुदाय को भी हिन्दू समाज से अलग करने का यकायक ख्याल आया, दलितों को गौरव महसूस कराने वाले महात्मा गांधी और उनके शिष्य थे, 1915 में सत्याग्रह आश्रम में एक दलित परिवार को अपने साथ समभाव की भावना से गांधीजी ने हिन्दू समाज की गम्भीर ख़फ़ा झेलकर भी रखा गया था, उसके बाद भी दलितों को, अस्पृश्य लोगों को आगे बढ़ाने के लिए, उन्हें समृद्ध बनाने के लिए, समकक्ष बनाने के लिए भी गांधीजी ने अपने से हो सके इतने प्रयत्न किए गए थे, उनकी भावना शंका से परे थी, फिर भी गोलमेजी परिषद् के समय ये देश के एक महान विद्वान् को गांधीजी के विरोधी के रूप में डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर को अंग्रेजों ने खड़ा कर दिया था, गोलमेजी परिषद् में दलितों को भी अलग मताधिकार देकर, विधानसभा में उनके प्रतिनिधियों को जाति के मुताबिक चुनने का अधिकार सरकार ने सोचा, लेकिन यदि जो ऐसा ही होगा तो मुस्लिम, दलित आदि सभी प्रकार के हिन्दू अलग हो जाय और एक दूसरे के दुश्मन बन जाय, हिंद के एकात्मकता की भावना खत्म हो जाय, गांधीजी किसी भी कीमत पर ऐसा अलगाव होने नहीं देना चाहते थे,

इस लिए गोलमेजी परिषद् में जाकर मुंबई के आजाद मैदान में प्रथम सभा को संबोधित करते हुए कहा कि, अस्पृश्य लोगों को अन्य हिंदी लोगों से अलग करने का प्रयास यदि ब्रिटिश शासन करेगा तो में मेरे प्राण की परवाह किए बिना उसका विरोध करूंगा, गांधीजी सामाजिक एकता के ऐसे उपाय सोचते थे, शिक्षण, तालीम, गृह उद्योग, राष्ट्रभाषा इत्यादि राष्ट्र निर्माण के कार्यक्रम करते थे, तब ब्रिटिश शासन ने एक ही बात पर अपना ध्यान केंद्रित किया था, हिंद की आजादी की लड़ाई को तोड़ देना, अंग्रेजो ने इस प्रकार एक प्रकार से युद्ध ही छेड़ दिया था, जवाहर, सरहद के गांधी बादशाह खान आदि स्वतंत्रता के अहिसंक योद्धाओं को जेल में डाल दिया था, गांधीजी ने वाईसरॉय को मिलने की अनुमति मांगी तो उसने मुलाकात देने से इंकार कर दिया, और बताया कि तुम कानून भंग की प्रवर्ती कर रहे हैं, इसलिए कानून का पालन करने के लिए सरकार जो कदम उठाए उसके लिए गांधीजी की जिम्मेदारी होगी ।

अंग्रेज की ऐसी धमकियों से गांधीजी डरने वाले नहीं थे, उन्होंने तो कोंग्रेस को समग्रतः लड़ाई का एलान कर दिया था, परिणाम स्वरुप गांधीजी को भी कैद कर लिया था, साथ साथ महादेव भाई देसाई को भी गिरफ्तार कर लिया, उन्हें यरवड़ा जेल में बंद कर दिया, इस गिरफ्तारी के पीछे अंग्रेजो की

एक मैली मुराद थी, जबकि ब्रिटिश शासन कोमी निर्णय दे तब उसका विरोध करने के लिए कोई बड़े नेता जेल से बाहर न हो, गांधीजी ब्रिटिश शासन की चाल समज गए थे, इसलिए उन्होंने जेल में बैठे–बैठे ब्रिटिश शासन को एक पत्र लिखा, जिसमें बताया कि अस्पृश्य लोगों को हिन्दूओं से अलग गिनकर यदि अलग मताधिकार दिया जाएगा तो मैं जीवन के अंत तक उपवास करूंगा, ब्रिटिश शासन ने लंबे समय तक ये पत्र का जवाब नहीं दिया और जवाब दिया तब यह दिया कि, आपकी भावनाओं का ध्यान रखेंगे,

लेकिन अगस्त महीने में ब्रिटिश प्रधान मंत्री ने जो निर्णय दिया गया था उसमें दलितों को अलग मताधिकार दिया, उनके लिए बैठक भी तय कर दी किन्तु साथ साथ ही दंगा शुरू कर दिया, अस्पृश्य उम्मीदवार की रिजर्व जगह पर अस्पृश्य ही इलेक्शन में खड़े हो सके, लेकिन बिन रिजर्व जगह पर भी इलेक्शन में नामांकन कर सके ऐसा छूट मिला, याने कि हिन्दी लोग अस्पृश्य लोगों को चुनकर अपनी उदात्त भावना दिखा सके, गांधीजी की मांग को लेकर ऐसा किया गया है,ऐसा अंग्रेज लोगों ने दिखावा किया, यह निर्णय से हिन्दूओं को दोगुना नुकसान होता था, अस्पृश्य बाकी के समाज से अलग हैं ऐसी भावना जन्म लेकर कायम बन जाता, यदि कोई अस्पृश्य बिन रिजर्व बैठक पर इलेक्शन में नामांकन के लिए यदि आगे आए तो सवर्ण हिन्दू गुस्से में आए,

गांधीजी अंग्रेजो की ऐसी अलगाववादी नीति से बहुत थक गए थे, उन्होंने तय किया था कि उच्च बलिदान के बिना अब यह प्रश्न हल नहीं होगा, उन्होंने ऐसा बताया, कोमी निर्णय में अस्पृश्य लोगों को हिन्दूओं से अलग रखा गया है उसके विरोध में, मैं 20 सितंबर से उपवास शुरू करूंगा,

आप शुभ आशय से काम करते हो फिर भी आप के विरोधी दुश्मन आप के कामों का हल्का अर्थ निकाल सकते हैं, ये दुनिया में पहले से ही ऐसा ही चलता आया है, बड़े लोगों के जीवन में ही नहीं बल्कि छोटे लोगों के जीवन में भी ऐसा ही होता है, कितने लोग मूलरूप से ही स्वार्थी, द्वेषी और विकृत मनोदशा वाले होते हैं, शुभ निष्ठा से किए गए कामों का भी ये लोग विकृत अर्थ निकालते हैं, इशू खीस्त तो भोले मानव को सिर्फ प्रेम और दया का मार्ग दिखाता है, सड़ी हुई धर्म विधियां छोड़कर एक परम पिता की भक्ति की रीत सिखाते थे, लेकिन अपनी सता और संपति छिन जाएगी ऐसी डर के कारण धर्म गुरुओं ने उनको दंगा बाज ठहराए, राज्य छीनने के लिए उत्सुक ठहराए, देश के दुश्मनों के हाथों उन्हें स्तंभ में जड़ दिया गया, गांधीजी की भी ऐसी ही दशा हुई, उनके दिल में अस्पृश्य लोगों के प्रति द्वेष का एक अंश भी नहीं था, रूढीवादी चुस्त हिन्दू अस्पृश्य के प्रति जो हल्का व्यवहार करते थे उसे बदलने के लिए गांधीजी ने तो हृदय पूर्वक प्रयास किया था, उनकी सिर्फ यही इच्छा थी कि हिन्दू कोम में शामिल हिन्दू समाज में बंटवारा न हो जाए, हकीकत में हिंदी प्रजा में हिन्दू मुस्लमान के भाग करने में अंग्रेज सफल हुए ही थे, और यह हल्के काम के लिए हिन्दू और मुस्लिम दोनों कोम से अमीर लोग मिल गए थे, अस्पृश्य लोगों को गांधीजी की कोंग्रेस में पर्याप्त स्थान था, इलेक्शन में भी

पर्याप्त स्थान मिलने वाला था, अरे, क्रमशः अस्पृश्यता मिट जाये और हिन्दू सिर्फ हिन्दू बनकर रहे, उनके बीच भेदभाव न हो, यह दिशा में गांधीजी और उनके सज्जन साथी काम कर रहे थे,

फिर भी अंग्रेज शासनकर्ताओं ने गांधीजी के उपवास का और उनकी एकता की भावनाओं का भी उल्टा अर्थ निकाला, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने बताया था कि गांधी अस्पृश्य लोगों को उनके अधिकार से वंचित रखने चाहते हैं, इसलिए वो अस्पृश्य लोगों की रिजर्व जगाओ और अलग मताधिकार का विरोध करते हैं,! यह सभी पत्र व्यावहार लोगों के सामने रखा गया, पूरे देश में हाहाकार मच गया, अस्पृश्य लोगों को अपनाने का उत्साह पूरे देश में प्रकट हुआ, अस्पृश्य लोगों के लिए मंदिर भी खुल्ले रखने का शुरू हुआ, ज्यादातर हिन्दू अस्पृश्य लोगों को अपनाने के लिए तैयार ही थे, सिर्फ कुछ पुरानी रस्म के रूढीवादी और उच्च मानते हिन्दूओं को थोप कर लाभ प्राप्त करने की कोशिश करते हुए सडे हुए राजकीय लोग ही एकता के विरुद्ध थे ।

गांधीजी के उपवास की खबर और अनेक प्रकार से अस्पृश्य लोगों को अपनाने की हिंदीओं की प्रेरणा फिर भी अंग्रेज सरकार ने कोमी निर्णय मुल्तवी रखा, इसलिए बीसवीं सदी में सितंबर से गांधीजी ने उपवास शुरू कर दिए, इस लिए उन्हें गुरुदेव रवींद्र टैगोर के साथ समग्र देश की शुभकामनाएँ प्राप्त हुई, पूरे देश ने गांधीजी के स्वस्थ्य के लिए प्रार्थना की, उपवास के चार दिन बीत गए तो पूरे देश में हलचल मच गई, अस्पृश्य लोगों के सबसे अग्रणी नेता डॉ. भीमराव अम्बेडकर थे, लोगों ने अम्बेडकर को समझाया कि जिद न करे, अस्पृश्य लोगों को अलग मानने की आपकी मांग छोड़ दो, ब्रिटिश सरकार आपकी मांग को लेकर ही गांधीजी और कोंग्रेस पर आरोप लगा रहे हैं, बहुत समझाने के बाद अम्बेडकर मान गए, उन्होंने गांधीजी के साथ समझोता किया, यह समझोते को 'यरवडा पेक्ट' कहा गया, हिंदी नेताओं का ऐसा समझोता हो जाने के बाद ब्रिटिश शासन के पास अस्पृश्य लोगों के अलग मंडल रचने का बहाना न बचा, इसलिए ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने तुरंत ही तार करके यह नियम रद्द किया, इस तरह पांच दिन के उपवास के बाद गांधीजी की एकात्मकता का विजय प्राप्त हुआ, उस दिनों में गांधीजी और अम्बेडकर बार–बार मिले, उसके बाद अम्बेडकर और अन्य देश नेताओं के साथ ही रहे, आजादी के बाद केन्द्र में मंत्री बने, और हिंद का स्वतंत्र संविधान बनाने के समय उन्होंने मुख्य रूप से भूमिका अदा की, उनके कारण संविधान में प्रगति शील नियम बन सके, इस और गांधीजी ने अस्पृश्यता के कलंक को दूर करके अस्पृश्य मनाते लोगों को सम्पूर्ण नागरिक समानता दिलाने के लिए सतत प्रयत्न किए गए, इसके लिए तो उन्हें कुछ शास्त्रों का अध्ययन करना पड़ा, कुछ हिंदू शास्त्री उनके पास दलील करने के लिए जाते थे, खास कर के महाराष्ट्र और मद्रास के शास्त्री अस्पृश्यता को बना रखने के लिए बहुत ही चुस्त थे, लेकिन गांधीजी की वक़ालत उस समय काम आई, फिर भी कुछ जड़ दलील के सामने हार जाते थे और शाम तक उनका सिर दुखने लगता था, गांधीजी की अस्पृश्य सेवाओं

ने विचित्र प्रकार की प्रतिक्रिया को जन्म दिया है, कुछ द्वेषी ऐसा प्रचार करने लगे कि गांधीजी ने हरिजन – हरि जनों की लत लेकर देश की आजादी की लड़ाई को कमजोर बना दिया है!

गांधीजी के आश्रम में एक ऐसी घटना बनी कि आश्रम की शुद्धि के लिए गांधीजी को इक्कीस दिनों का उपवास करना पड़ा, हम जानते हैं कि, गांधीजी की महात्मा के रूप में पहचान से बहुत सारे विदेशी भी उनके साथ रहना चाहते थे, मेडी लेनेस लेडी नामक महिला ने तो अपना नाम मीरा धारण करके गांधीजी जब तक जिए तब तक हिंद मे ही रहे, दीन बंधु एन दूज की गांधी भक्ति जानी जाती है, लेकिन पश्चिम के कुछ लोग ने हिंद और हिंदीओ का मतलब स्व इच्छा के अनुसार छूट, ऐसी एक महिला आश्रम में रहने के लिए आ गई थी, नीला देवी नाम धारण किया था, उसका स्वेच्छाचार इतना बढ़ गया था कि पूरे आश्रम में भय का माहोल बन गया, गांधीजी ने उस महिला को बहुत ही डाँटा उससे उनके आत्मा को शांति नहीं मिली, इस लिए उन्होंने प्रथम तो इक्कीस दिनों के उपवास किए, आश्रमवासिओं की चारित्र्य का ही मुद्दा उपवास में था नहीं की राजकीय, यह उपवास में से मुश्किल से वो बाहर निकले, तब उन्होंने एक अलग दूसरा निर्णय लिया, साबरमती आश्रम को बिखेर देने का, जिस आश्रम में नैतिकता न हो ऐसा आश्रम रखके क्या फायदा, ऐसी उनकी भावना थी, उन्होंने कहा कि अगस्त की पहली तारीख को मैं और 32 आश्रम वासी जो शुद्धि की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हैं, हम सभी आश्रम छोड़ देंगे, हम पैदल खेड़ा जिले में स्थित बोर सद के पास रास गांव में जाएंगे और वहा से वो हरिजन लोगों की सेवा करेंगे, गांधीजी की पद यात्रा डांडी कूच जैसा परिणाम लाएगी ऐसे डर के कारण अंग्रेज सरकार ने गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया, उन्हें यरवाड़ा जेल में ले गए, वहां उन पर केस चलाकर उन्हें एक साल की सजा दी गई, ऐसी सजा से गांधीजी डरते नहीं थे, लेकिन अगली साल 1932 को जिस जेल में बैठे–बैठे हरिजन कार्य की छूट थी ऐसी छूट यहा नहीं मिलेगी, गांधीजी ने कहा कि हरिजन की सेवा तो मेरे लिए प्राण समान है, इस लिए वाइसरॉय ने जवाब भेजा कि यदि तुम्हें हरिजन सेवा प्राण समान हो तो वहीं काम करिए, उसके लिए आपको हम छोड़ दें लेकिन तुम्हें राजकीय काम नहीं करना है, हिंद की स्वतन्त्रता की बात नहीं करने की, गांधीजी ऐसे दबाव में आए ऐसे नहीं थे, उन्होंने तो फिर उपवास शुरू कर दिया, लोगों ने वाईसरॉय को समझाया कि गांधीजी को आप जेल में नहीं रख सकते हैं, उनकी सेवा प्रवर्ती पर रोक नहीं लगा सकते हैं, लेकिन सरकार जिद में आ गई, सभी लोगों को मना कर दिया, नेताओ ने भी गांधीजी को समझाया कि उपवास छोड़ दो, आप जितने दिन जेल में होंगे उतने दिन हरिजन सेवा का काम हम करेंगे, गांधीजी ने कहा कि ब्रिटिश सरकार को मेरे काम में दखल देने का कोई अधिकार नहीं है, जब तक मुझे कैद में से नहीं छोड़ेंगे तब तक मेरे उपवास चालू रहेंगे, छह दिन के बाद गांधीजी बहुत ही बीमार हो गए, सरकार ने उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया, वहां कृत्रिम रूप से उन्हें खाना देने के लिए कोशिश

किया किन्तु वो सफल नहीं हुए, अब अंग्रेज घबराए, कहीं ये मर जाएगा, यदि वो कैदी की हालत में मर जाये तो देश में दंगे फसाद चालू हो जाएं उसकी चिंता होने लगी, अंत में लोगों के तार संदेश के कारण गांधीजी को मुक्त किया जाता है ऐसा दावा सरकार ने किया, सरकार ने उन्हें बिना किसी शर्त रिहा कर दिया, 23 अगस्त को वो कैद से मुक्त हुए, हरिजन सेवा में उन्होंने पूरे जोश से काम करना शुरू किया था ।

आज भी हिन्दू धर्म में लगा हुआ अस्पृश्यता का कलंक को ढ़ो देने के लिए ज्यादा लंबा लिखने की जरूरत नहीं है, इसके लिए महासभावादियों ने बहुत कुछ किया है, यह बात सच है लेकिन बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि, बहुत सारे महासभावादियों ने अस्पृश्यता निवारण को हिन्दूओं का सम्बंध है तब तक हिन्दू धर्म को जिंदा रखने के लिए जरूरी समझने के बजाय सिर्फ राजकीय जरूरीयात गिन सकते हैं, हिन्दू कांग्रेसी यह कार्य करने में अपनी सफलता है ऐसा मानकर उसे उठा लें तो सनातनीओं के नाम से पहचाने जाते उनके धर्म बंधु पर आज तक जितना असर पड़ा है उसके अलावा ज्यादा असर पहुंचाकर उनका दिल पलट सकेंगे, सनातनीओं के पास उन्हें लड़ने के लिए अपनी अहिंसा को स्पर्श करें ऐसी मित्रचारि की भावना से पहुंचना चाहिए, खुद हरिजनों की बाबत् में तो यकायक हिन्दूओं ने उनका अपना काम मानकर उन्हें मदद करना चाहिए, और उनके अलगाव में उनकी साथ खड़ा रहना चाहिए अपने हिंदू भाई बहन को बाकी के हिन्दूओं अपने से अलग रखते हैं, परिणाम स्वरुप उन्हें जो दर्दनाक और राक्षसी अलगाव सहना पड़ता है, उसकी जोड़ दुनिया में कहीं भी मिल सके ऐसा नहीं है, यह कार्य कितना कठिन है वो मैं अनुभव से जानता हूँ, स्वराज की इमारत खड़ी करने के लिए जो काम हम लेकर बैठे हैं उसका ही यह एक हिस्सा है, अलबता ये स्वराज तक पहुंचने का रास्ता चढ़ने वाला और शंकु है, उस रास्ते में बहुत सारे ढलान और गहरी खाईयां हैं, यह सभी ढलान और चढ़ने वाले रास्ते से शिखर तक जरा सा भी हिले बिना स्थिरता से पहुंचना चाहिए ।

अस्पृश्यता का अर्थ है किसी को स्पर्श करने से अपवित्र हो जाते हैं, ऐसी मान्यता है, अखा भक्त ने कहा है कि, 'अस्पृश्यता अदा के अंग' वह हर जगह कहीं भी धर्म के नाम पर विघ्न डालते ही रहते हैं, और धर्म को कलंकित करते हैं, यदि आत्मा एक ही है, ईश्वर एक ही है, तो अस्पृश्य कोई भी नहीं है, जिस तरह हरिजन को अस्पृश्य गिने जाते हैं वो भी अस्पृश्य नहीं है, उसी तरह मृत देह भी अस्पृश्य नहीं है, वो मान और करुणा के पात्र हैं, मृतक का शरीर का स्पर्श करके तेल लगाकर या हजामत करके कराके स्नान करते हैं वो तो स्वस्थ्य के लिए, मृतक के शरीर को स्पर्श करके या तेल लगाकर स्नान नहीं करे वो चाहे गन्दा कहलाये, वो पापी नहीं है, वैसे तो माता चाहे बच्चे का मैला उठाने के बाद स्नान न करे, या हाथ पैर न धोए, तब तक अस्पृश्य होता है, लेकिन यदि बच्चा खेलते खेलते उसे स्पर्श करे तो वो अस्पृश्य नहीं होगा, उसका आत्मा मैला होगा, लेकिन वो तिरस्कार के रूप में वाल्मीकि, चमार या

बुनकर के नाम से पहचाना जाता है, चाहे उसने हजार बार साबुन से अपना शरीर शुद्ध पानी से स्नान करके साफ किया हो, चाहे वह रोज गीता पाठ करता हो, लेखक हो तब भी वो अस्पृश्य गिना जाता है, ऐसे जो धर्म माना जाता है कि आचरण किया जाता है वो अधर्म है और नाश के पात्र हैं, अस्पृश्यता हिन्दू धर्म में घुसा हुआ सडा है, वहम है, पाप है, उसका निवारण करना हर हिन्दू का धर्म है, उसका परम कर्तव्य है, समझदारी से प्रत्येक हिन्दू ने अस्पृश्य मानते भाई बहन को अपनाना चाहिए,ऐसा गांधीजी ने मंगल प्रभात व्रत में कहा है,प्रेम से स्पर्श करके, उन्हें पावन मानकर अस्पृश्य के दुख दूर करना चाहिए, वर्षो से उन्हें कचड़ा है, उनके दोष दूर करने में मदद करना चाहिए, अस्पृश्यता का कलंक पृथ्वी पर भार रूप बन गया है, ईश्वर के नाम पर खुद को पूजते हो गए हैं, जीव मात्र को अपने में नही देखेगा खुद को जीव मात्र में डाल नहीं देगा तब तक शांत नहीं होगा, अस्पृश्यता दूर करना याने कि पूरे जगत के साथ मैत्री रखना उसका सेवक बनना,ऐसे अस्पृश्यता निवारण अहिंसा की जोड़ बन जाता है, अहिंसा याने कि प्रत्येक जीव के प्रति सम्पूर्ण प्रेम, अस्पृश्यता निवारण का यही अर्थ है, जीव मात्र के साथ भेद मिटाना, अस्पृश्यता का दोष जगत में कुछ अंश में व्यापक है, यहां हिन्दू धर्म में सडा के रूप में सोचा है, क्योंकि हिन्दू धर्म में धर्म का स्थान लिया है, धर्म के नाम पर करोड़ों लोगों की स्थिति गुलाम जैसी बन गई है, 1915 में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना हुई तब गांधीजी जब अहमदाबाद से पसार हुए तब कुछ मित्रों ने अहमदाबाद पसंद करने को कहा, और आश्रम का खर्च उन्होंने उठाने का अवसर प्राप्त किया, मकान ढूंढने का भी उन्होंने कबूल किया, अहमदाबाद पर गांधीजी की नजर ठहरी थी वे गुजराती होने से गुजराती भाषा के द्वारा देश की ज्यादा से ज्यादा सेवा कर सकेंगे ऐसा मानते थे, अहमदाबाद पहले हाथ बुनाई का केंद्र होने से चरखे काम यहा बहुत अच्छी तरह हो सकेगा ऐसी भी मान्यता थी, गुजरात का राजधानी होने से यहां के अमीर लोग धन की ज्यादा मदद कर सकते हैं ऐसी आशा थी, अहमदाबाद के मित्रों के साथ संवाद में अस्पृश्यता का प्रश्न की चर्चा हुई थी, गांधीजी ने स्पष्ट रूप से कहा था कि, यदि कोई कोई अस्पृश्य भाई आश्रम में दाखिल होना चाहता है तो मैं जरूर उन्हें आश्रम में दाख़िल करूंगा, ऐसी उच्च भावना के साथ आश्रम की स्थापना गांधीजी के द्वारा की गई है! ऐसे मानवता वादी युग पुरुष को कोटि कोटि वंदन,

● ●

सन्दर्भ सूची :गांधीजीवन गाथा – राष्ट्र पिता – 2 लेखक :यशवंत मेहता – 1949

● ●

इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से हिंदी प्रचार

मीडिया की भूमिका हिंदी ही है, जो सारे भारत में हिंदी में घटनाएँ एवं न्यूज का विवरण प्रस्तुत करते हैं, ज़न मानस को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं, हिंदी राष्ट्र भाषा प्रचार समिति या भी पूरे भारत वर्ष में हिंदी को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं, हर साल देश विदेश में हिंदी साहित्य सम्मेलन होते हैं, उसमें प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन के जरिए हिंदी का प्रचार प्रसार करने के लिए मीडिया द्वारा ही जानकारी दी जाती है,

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय केंद्रीय हिंदी निदेशांलय की और से भी पूरे भारत वर्ष में हिंदी तर भाषी राज्यों में हिंदी शिविर का आयोजन करके लोगों के मानस तक हिन्दी को पहुचाने का उत्तम कार्य कर रहे हैं, हमें प्रसन्नता हुई है क्यूंकि भारत सरकार के द्वारा आयोजित हिंदी शिविरों में हमने केरल, दार्जिलिंग, हरिद्वार, पुणे, नागपुर, मुंबई और शिलोंन्ग तक हिस्सा लिया है। किन्तु कहीं पर भी संपर्क करने में हमें कोई कठिनाइयां महसूस नहीं करनी पडी, हिंदी सिनेमा, हिंदी न्यूज देखने पढ़ने में कोई कठिनाई का सामना करना नहीं पड़ता है लेकिन हिन्दी को बोलचाल की भाषा उपरांत पत्राचार की भाषा बने, ऐसी मेरी इच्छा है, अंग्रेजो को गए हुए 70 साल हो गये फिर भी अंग्रेजी भाषा का मोह लोगों का पीछा नहीं छोड़ता है, एक क्रेज हो गया है, अपने बच्चों को अंग्रेजी भाषा स्कूल में दाखिला लेते हैं किन्तु यह अंग्रेजी भाषा की स्कूलों में हिंदी के माध्यम से ही बच्चों को समझाया जाता है, बच्चे घर और स्कूल के अंदर ज्यादातर हिंदी में ही बात करते हैं,

अस्सी साल पहले गांधीजी ने हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने का काम किया है, राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने हिंदी का सम्मान बढ़ाया है, उन्होंने संसदीय समिति की रिपोर्ट याने कि सिफारिश का स्वीकार किया है, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री हिंदी में बातचीत कर सकते हैं, पढ़ लिख सकते हैं, तो हिन्दी में ही अपना स्पीच देते हैं, अब सी. बी. एस. सी. की केंद्रीय विद्यालयों में आठवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक हिन्दी को कमपलसरी किया गया है, अपने प्रधान मंत्री विदेश में चीन, रूस, जापान और कहीं भी जाते हैं तो वहा अपने समकक्षों के साथ हिंदी में बात करते हैं, अपना वक्तव्य भी हिंदी में देते हैं,

यह तो हिन्दी के प्रचार प्रसार की बात की है, मीडिया के माध्यम से ही हम यहा बैठकर सब कुछ देख सकते हैं, सुन सकते हैं यह सभी ऊपर में की गई बातों के हम सभी साक्षी है, आज हिंदी अभिव्यक्ति की सबसे सशक्त माध्यम बन गया है, हिंदी चैनलों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है, बाजार की स्पर्धा के कारण अंग्रेजी चैनलों का हिन्दी में रुपांतर हो रहा है, अब सैंकड़ों

पत्र पत्रिकाएं इन्टरनेट पर उपलब्धहैं, हिंदी के वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों में भी देखा जा सकता है, संचार माध्यमों ने हिंदी के वैश्विक स्वरूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है, देश की संस्कृति भी हिंदी भाषा की वाहक है, संचार माध्यमों पर प्रसारित कार्यक्रम से समाज के बदलते सच को हिंदी के वहन के माध्यम से ही उजागर किया गया है, डिजिटल युग में दुनिया में हिंदी की मांग अंग्रेजी की तुलना में पांच गुना अधिक तेज है, हिंदी अंग्रेजी की तुलना में पाँव गुना तेजी से बढ़ रही है, हिंदुस्तान में हर पांचवाँ इंटरनेट प्रयोगकर्ता हिंदी का उपयोग करता है, अंग्रेजी की सामग्री की खपत केवल 19 फीसदी दर से बढ़ रही है जबकि देश में हिंदी सामग्री की डिजिटल मीडिया में खपत 94, फीसदी के दर से बढ़ रही है,

आज स्मार्ट फोन के रूप में हर हाथ में एक तकनीकी डिवाइस मौजूद हैं और उसमें हिंदी की ऑपरेटिंग सिस्टम हिंदी में मैसेज भेजना, हिंदी संदेश पढ़ना सुनना या देखना लगभग उतना आसान हो गया है कि जितना अंग्रेजी सामग्री को, हालाकि कंप्यूटर पर भी हिंदी का व्यापक प्रयोग होता है, इंटरनेट पर भी, लेकिन मोबाइल ने हिंदी भाषा के प्रयोग की इतना तेज गति पकड़ लिया है कि उसकी कल्पना करना मुश्किल है, इन्टरनेट पर भारतीयों में हिंदी भाषा के प्रति रुझान बढ़ा है, भारत में 50 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी भाषा का बोलचाल में उपयोग कर रहे हैं, 21 प्रतिशत लोग ही भारतीय हिंदी में इंटरनेट का प्रयोग करना जानते हैं, भारतीय युवा 93 प्रतिशत हिंदी वीडियों देखते हैं, हिंदी मीडिया के प्रमुख घटक नीचे दिए गए हैं,

1. हिंदी रेडियो..
2. टेली विजन
3. हिन्दी फ़िल्में
4. हिन्दी ई पत्र पत्रिकाएं
5. हिन्दी सायबर

भारत सरकार ने इंटरनेट पर हिन्दी के लिए बहुत सारी वेबसाइट उपलब्धकरायी गयी है,

1. www wordanywhere.in
2- www-lprciiit-ac.in
3- www-3dllmit-gov.in
4- www-cflpiatb.in
5- www-cseiitbas.in
6- www-nic.in
7- www- bicthindikhoj.com

हिंदी में लोग सिनेमा देखना ज्यादा पसंद करते हैं, हिंदी बोलने वाले की संख्या

बढ़ी है, इंटरनेट के कारण संख्या में बढ़ोतरी हुई है, प्रचार प्रसार के लिए इंटरनेट सबसे अच्छा माध्यम है, हिंदी पढ़ने वाले की संख्या में इजाफा हुआ है, हिंदी का प्रचार प्रसार करने में सोशल मीडिया ने बड़ी भूमिका निभाई है, इंटरनेट के प्रयोग ने हिंदी भाषा के लिए एक नई दिशा खोल दिया है,

आज से 60 साल पहले 14 सितंबर 1949 में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी भाषा को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है इसलिए हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, हिंदी अब व्यवहारिक तोर पर देश की संपर्क भाषा बन गई है उस में कोई दो राय नहीं है, हिंदी की अनिवार्यता विदेशी सरकारें भी महसूस कर रही हैं, इसलिए अमेरिका, चीन, यूरोप तथा अन्य प्रमुख देशों में हिंदी के अध्ययन की व्यवस्था की गई है, विदेश में बड़ी संख्या में छात्र छात्राएं हिंदी संस्थान में विभिन्न विश्व विद्यालयों में और अन्य शिक्षण संस्थानों में हिंदी पढ़ने के लिए जाते हैं, 1960 और 1970 के दशकों में दक्षिण के जिन राज्यों में हिंदी के विरुद्ध आंदोलन चले थे, अब राज्यों में हिंदी विषय को लेकर बी.ए. एम. ए. करने वाले बच्चों की संख्या भी बढ़ती जा रही है।

सौ सालों में भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए हमारे हिन्दी कवि लोग तुलसीदास, मैथिली शरण गुप्त, रामधारी सिंह, दिनकर, सुमित्रानंदन पंत, प्रेमचंद, जगदीश गुप्त, बच्चन और आग्नेय ने बहुत महत्वपूर्ण रोल अदा किया है, हमारे धर्म ग्रंथों, साहित्य, रामायण और भागवत गीता का भी योगदान देश के विकास के लिए हिंदी भाषा में परिवर्तित हुआ है, कबीर को एक समाज सुधारक के रूप में देखा गया है, कबीर के पास कोई डिग्री नहीं थी, फिर भी उनके द्वारा रचे गए दोहे आज के दिशाहीन समाज के लिए काफी महत्वपूर्ण है, मीडिया के माध्यम से हिंदी में यह सभी धर्मग्रंथ उपलब्धहोते हैं, मीरा के पद भी बहुत प्रचलित हैं, यह सब हिंदी भाषा साहित्य है, हिंदी को आगे बढ़ाने में हमारे धर्म ग्रंथ, धर्म गुरु, महात्माओं का योगदान भी हमें सो सालों से महत्वपूर्ण रूप से प्राप्त हुआ है, उन्हें इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से हमारी और पहुच कर एक बड़ा उपकार किया है, उन्हें भूलना नहीं चाहिए ।

भाषा शास्त्रीय लोगों का मानना है कि, 21 वी सदी के अंत में विश्व की 6000 से 90 प्रतिशत भाषाएं लुप्त हो सकती है, इसलिए राष्ट्र भाषा को बचाना हम सभी की जिम्मेवारी है, सो सालों में परिवर्तन आया है, आजकल विदेशों में भी हिंदी साहित्य सम्मेलन होने लगे हैं, दशवें हिंदी साहित्य सम्मेलन 2015 में भारत में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था, अमरिका में भी हिंदी साहित्य सम्मेलन आयोजित होते हैं, मोरेसियास में भी होते हैं, आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि, हिंदी को गंगा नहीं समुद्र बनाना होगा,

उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में जहां भारतीय भाषाओं का प्रयोग की पूर्ण रूप से उपेक्षा की जाती थी, अब हिंदी ने सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है, रेडियो, टी. वी. तथा हिंदी पत्र पत्रिकाओं में हिंदी में विज्ञापन देने की होड़ लगी है, उन तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि हिन्दी को देशव्यापी स्वीकार्यता मिल चुकी है, वो समय दूर नहीं है अब हिंदी पूर्णरूप से भारत की एक मात्र संपर्क भाषा बन जाएगी,

हिंदी ने जो प्रगति हासिल की है उसमें मोबाइल, कंप्युटर, लेपटोप और टेबलेट का योगदान इंटर नेट के माध्यम से बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका के रूप में रहा है यह कहना जरा सा भी गलत नहीं है, मेरे मत से हिंदी ने सोशल मीडिया से बहुत तेजी से दौड़ लगाई है, अपने कदम मजबूती से रखने में सफल हुआ है, राष्ट्र भाषा हिंदी ने बहुत कुछ हासिल कर लिया है, और देश को समर्पित किया गया है, अपने धार्मिक ग्रंथ बाईबल और कुरान भी हिंदी में उपलब्ध है, ये भारतीय संस्कृति को उजागर करता है, हिंदी ने अपनी जड़ें मजबूत कर दिया है, साहित्य जगत, व्यापार उद्योग के क्षेत्र में अपना पगडंडा मजबूत किया है, देश के विकास में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है,

एक समय था जब पढ़े–लिखे होने का मतलब था अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना, आजादी के बाद उस समय राष्ट्रीय न्यूज अंग्रेजी में पब्लिश होते थे, किन्तु शिक्षा और साक्षरता के कारण प्रसार प्रचार की दिशा बदल गया है, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को सर्व स्वीकार्य बनाने में रेडियो की उल्लेखनीय भूमिका रही है, आकाश वाणी के समाचार, विचार, शिक्षा, सामाजिक सरोकार, संगीत और मनोरंजन इत्यादि सभी स्तरों पर अपने प्रसारण के माध्यम से हिंदी को देश के कोने कोने तक पहुचाने में महत्व पूर्ण योगदान दिया है, इस में हिंदी फ़िल्में और फिल्मी गीतों ने तहलका मचा दिया है, हिंदी फ़िल्मों की लोकप्रियता भारत की सीमा ओ को पार कर के रूस, चीन और यूरोप तक जा पहुंची है, आकाश वाणी की विविध भारती सेवा तथा अन्य कार्यक्रम से देशभर में लोगों के जुबान पर गाने को ला दिया है, उस समय आकाशवाणी के 225 केंद्र थे और 361 ट्रांसमीटरों के साथ लगभग 1400 एफ एम और सामुदायिक रेडियो स्टेशन थे, अधिकतर रेडियो प्रसारण हिंदी में होते थे, कौन बनेगा करोड़पति जैसे कार्यक्रम ने लगभग पूरे देश को एक सूत्र में बांधकर रखा है, हिंदी में प्रसारित ऐसे कार्यक्रम में पूर्वोत्तर राज्यों जम्मू कश्मीर और दक्षिण राज्यों के प्रतिभागिओं ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया है, हिंदी समाचार सबसे अधिक देखे सुने जाते हैं, 2009 में 22 हिंदी चैनलों को अनुमति मिली है उसमें अधिकांश हिंदी की है । भारतीय संविधान में भाग 17, के अध्याय की धारा 343 (9), में इस प्रकार हैं,

संघ वह राजकीय राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी, संघ व राजकीय प्रश्नों के लिए प्रसंग होने वाले संघ का रूप अंतरराष्ट्रीय होगा ।

यह निर्णय 14 सितंबर को लिया गया इसलिए इस दिवस को श्रेष्ठ माना गया है, गैर हिंदी भाषी राज्य के लोग इसका विरोध करने लगे तो अंग्रेजी भाषा को भी राजभाषा का हक देना पड़ा, इस कारण हिंदी में भी अंग्रेजी भाषा का प्रभाव पड़ने लगा, हिंदी के हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर वर्ष 1953 से भारत में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, हिंदी को भारत में राजभाषा के रूप में 14 सितंबर 1949 में स्वीकार किया गया, इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा को संविधान में स्वीकार किया गया,

स्वतंत्रता पूर्व 1833 – 1886 गुजरात के महान कवि श्री नर्मद ने हिंदी को राजभाषा बनाने का विचार रखा गया था,, 1918 में मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कोंग्रेस के अध्यक्ष के हैसियत से घोषित किया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी, 1918 में इंदोर में संपन्न आठवें हिंदी सम्मेलन में अध्यक्षता करते महात्मा गांधी ने हुए कहा कि मेरा मत है कि हिन्दी को हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा बनाने का प्रयत्न न हो तो हिन्दुस्तान समाप्त है, राजभाषा बनाना हमारा कर्तव्य है, 2019 को सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय हिंदी और अन्य भाषाओ में अनुवादित करेंगे! अभी न्यायालयों के निर्णय भी मीडिया के माध्यम से आम लोगों को जल्द से जल्द मिल रहा है, कोई भी व्यक्ति अपना केस का स्टेट्स भी ऑनलाइन जान सकता है!

जब इंटरनेट ने भारत में कदम रखा तो यह आशंका व्यक्त की गई थी कि कम्प्यूटर के कारण देश में फिर से गुलामी आएगी किन्तु यह धारणा गलत साबित हुई, आज हिंदी वेबसाइट तथा ब्लॉग न केवल गलत चल रहे हैं बल्कि देश के साथ साथ विदेश के लोग भी ईन पर सूचनाओं का आदान प्रदान तथा चैटिंग कर रहे हैं, इस प्रकार इंटरनेट भी हिंदी में सहायक होने लगे हैं, हिंदी आज राजमार्ग पर सरपट दोड़ रही है और हिंदी अश्वमेघ के घोड़ों को रोक पाना किसी के भी बस में नहीं है, मीडिया इस दोड़ को और गतिशील बना रहा है, आज यह सच है कि जिस तरह हिंदी को अपने प्रसार के लिए मीडिया की जरूरत है, उसी तरह मीडिया को अपने विस्तार के लिए हिंदी भाषा की आवश्यकता है ।

भारत में आरंभ से 30 साल तक टेलीविजन की प्रगति धीमी रही लेकिन वर्ष 1980 और 1990 के दशक में दूर दर्शन ने राष्ट्रीय कार्य क्रम और समाचारों के प्रसारण के जरिए हिंदी को जनप्रिय बनाने में काफी योगदान दिया, वर्ष 1990 के दशक में मनोरंजन और समाचार के निजी उपग्रह चैनलों के पर्दा पन के उपरांत यह प्रकिया और तेज हो गई, रेडियो की तरह टेलीविजन पर भी मनोरंजन में फ़िल्मों का भरपूर उपयोग किया गया और फीचर फिल्म, वृत्त चित्र, तथा फिल्मी गीतों के प्रसारण से हिंदी भाषा को देश के कोने कोने तक

पहुंचाने का सिलसिला आगे बढ़ाया गया, टेलीविजन पर प्रसारित धारावाहिक ने दर्शको को में अपना विशेष स्थान बना लिया, सामाजिक, पोराणिक कथाओं, धार्मिक विषयो को लेकर बनाए गए हिंदी धारावाहिक घर घर में देखे जाने लगे, रामायण, महाभारत, हमलोग, भारत एक खोज जेसी धारावाहिक न केवल हिंदी प्रसार के वाहक बने ब्लकि राष्ट्रीय एकता का सूत्रधार बन गया,

हिंदी देश में संपर्क की भाषा बन गई है, हिंदी बोलने में, लिखने में शर्म नहीं करनी चाहिए, देश के नागरिको को अपनी राष्ट्र भाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए, देश के विकास के लिए उसे अपनाना होगा, हिंदी बोलना होगा और लिखना होगा, आज कल पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी की स्थिति अच्छी है, हिमाचल प्रदेश, मेघालय और सिक्किम आदि, मेघालय राष्ट्र भाषा प्रचार समिति द्वारा "आजान फकीर" हिंदी में अनुवाद किया गया है जवाहर लाल नेहरू ने कहा है कि हिन्दी एक शानदार भाषा है, वह जितनी बढ़ेगी, देश का इतना ही नाम होगा!

● ●

सन्दर्भ सूची :गूगल विकी पीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से अनुभव

● ●

वैश्विक इतिहास साहित्य और संस्कृति में मीडिया व सिनेमा का योगदान नीदरलैंड

मीडिया :

वर्तमान युग में साहित्य समाज के मनोरजन व मार्गदर्शन करने का एक सशक्त माध्यम के रूप में सामने आया है। मीडिया में सिनेमा भी एक मनोरंजक साधन है। मीडिया वह साधन है ,जिसके माध्यम से बड़ी संख्या में लोगों के साथ संर्वेक्षण किया जाता है। वर्तमान समय में मीडिया शब्द सम्पूर्ण पत्रकारिता के जगत को संबोधित करने के लिए पर्याप्त है। यदि स्वतन्त्रता पूर्व की बात की जाय तो यह कहना असंगत न होगा देश की स्वतंत्र करने में मीडिया अर्थात पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उस समय केवल समाचार पत्र और पत्रिकाए ही समाचार प्राप्त करने का माध्यम था। सन् 1780 में होगरस हिकी नामक अंग्रेज़ी में 'बंगाल गज़ट 'नामक पहला समाचार पत्र निकला था। इसी वर्ष 'इंडिया गज़ट 'नाम से दूसरा पत्र भी शुरू हुआ। इस बीच कई भाषाओं में पत्र निकाले गए, परंतु हिन्दी भाषा में सन् 1826 में प्रकाशित हुआ। बंगदुत हिन्दी में प्रकाशित होने वाला दूसरा पत्र था । जिसका सम्पादन का श्रेय श्री निलरत हलदार को जाता है। समय के साथ साथ कई समाचार पत्र व पत्रिकाएं हिन्दी में होती रही।

आज इक्कीसवी शताब्दी में हिन्दी भाषा केवल भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान स्थापित किया है। विश्व के सभी महत्वपूर्ण राष्ट्रों और महाद्वीपों में हिन्दी किसी न किसी रुप में प्रध्युत हो रही है । वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा विश्व में सम्मानित और आदरणीय स्थान प्राप्त कर चुकी है। वैश्विक परिदृश्य हिन्दी की बदलती भूमिका के चलते आज लगभग 121 देशों में इस भाषा को बोला और समझा जाता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करे तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का विश्व भर में लगभग 176 विश्व विद्यालयों में अध्ययन - अध्यापन जारी है। भारत के पडोसी देशों पाकिस्तान ,नेपाल,अफ़ग़ानिस्तान ,भूटान,बांग्लादेश,बर्मा, तथा श्रीलंका के अतिरिक्त अमेरिका ,यूरोप,अफ्रिका ,मोरेशियस, थाइलेन्द, फ़िजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, जापान, रूस, केन्या, होलेण्ड, इटली, कोरिया, जर्मनी, स्वीडन, मेक्सिको, न्यूजीलेंड, आदि देशों में होनेवाले प्राथमिक,माध्यमिक उच्च शिक्षा ने विश्व में हिन्दी के अति महात्व पूर्ण तथा सम्मान जनक स्थान दिलवाया है। वर्तमान समय में हिंदी को विश्व व्यापी भाषा बनने में मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस क्षेत्र में भी चाहे वह प्रिंट मिडिया हो या इलेक्ट्रोनिक मीडिया ,हर स्थान पर हिंदी का ही बोलबाला है। आज देशभर में लगभग 500 से 600 दैनिक हिन्दी समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे है। जिन में राजस्थान पत्रिका ,दैनिक जागरण,नई दुनिया,दैनिक

भास्कर पंजाब केसरी,आदि प्रमुख है। यह हिन्दी की व्यापकता ही है,जिसके चलते इकोनॉमिक टाइम्स,तथा बिजनेस स्टैंडर्ड जैसे अंग्रेज़ी समाचार पत्र भी हिन्दी में रूपनांतरित होकर प्रकाशित हो रहे हैं। अपनी संभावनाओं को उद्घोषित कर रही है।

यही संचेतना 'हंस, गगनांचल, उद्भावना, साहित्य अमृत, शोध दिशा, दस्तावेज़ आदि जैसी कई साहित्यिक पत्रिकाओं के साथ सारिका,सहेली,जैसी पत्रिकाएं हिन्दी भाषा को सुधारने व सँवारने में कार्यरत है। यह हिंदी की स्वपूर्ति ही है। जिसके कारण आज विश्वभर में रहनेवाले प्रवासियों,के साथ साथ वह के नागरिकों द्वारा भी कई हिन्दी पत्र पत्रिकाएं संपादित व प्रकाशित की जा रही है। लंदन से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र 'हिंदोस्थान 'को विदेश से प्रकाशित होने वाले प्रथम पत्र की मान्यता प्राप्त है। इसके अतिरिक्त वैदिक पब्लिकेशन तथा प्रवासी भी यहां से प्रकाशित हो रही है। हिंदुस्तानी जनता आर्योदय,कोंग्रेस,दर्पण,हिन्दू धर्म, इंडियन टाइम्स,अनुराग ,महा शिवरात्रि,आत्मा आदि मोरेशियस से प्रकाशित होने वाले उल्लेखनीय पत्र पत्रिकाएं हैं। निकलोई गिबचोब के सम्पादन में सोविएट संघ नामक पत्र मॉस्को से प्रकाशित होता है। सर्वोदय जपान से प्रकाशित होने वाला उल्लेखनीय पत्र है,तो वही ज्वालामुखी नामक पत्रिका की विशेषता यह है कि,इसे जापानी वाचकों द्वारा ही संपादित किया जाता है। इसके अतिरिक्त उनेस्को कूरियर, नमक पत्र फ्रांस से,अमृत बिन्दु ,धर्म वीर,जैसे पत्र दक्षिण अफ्रिका से प्राची प्रकाश जागृति तथा ब्रह्मभूमि बर्माँ से ,दैनिक कोहिनूर प्रकाश,शांति दूत ,ज्योति सूरीनाम से अखिल फ़िजी कृषक संघ नामक पत्र ,किसान मित्र,नाम से कृषि विषयक पत्रिका ,तथा किसान शीर्षक पत्रिका फ़िजी से प्रकाशित होने वाले उल्लेखनीय पत्रिकाएं हैं। अतः यह कहना असंगत न होगा की हिन्दी भाषा के विकास में विकास में विदेशों में भी जो कार्य हो रहा है,उसे द्रष्टी में रखते हुए विदेशों से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएं व पत्र के महत्व को अस्वीकार नहीं जा सकता।

बाजारीकरण के ऐस दौर में विज्ञापन के बिना व्यवसाय करना असंभव सी बात है,क्योकि उत्पादक की मांग को बनाए रखने हेतु विज्ञापन आवश्यक है। कॉर्पोरेट जगत भारत का एक बहुत बड़ा उपभोक्ता के रूप में देखता है। कंपनीयां भारतीय जनता के रंग में अपनी सामान ढाल कर अपने उत्पादन का प्रचार हिन्दी माध्यमों से कर रही है।

रेडियो और टेलीविजनः

राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का प्रभावशाली आकर्षण और सर्च स्वीकार्य बनाने में रेडियो और टेलीविज़न की भी महात्वपूर्ण भूमिका रही है। आकाशवाणी की भारतीय सेवा और अन्य कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रसारित होने

वाले कार्य क्रमो विशेषकर फिल्मी गीतो ने हिन्दी भाषा को देशव्यापी मान्यता दिलवाने के साथ साथ विश्व स्तर पर भी प्रसिद्धि दिलवाई। यह हिन्दी की लोकप्रियता है,की आज मोरेसियस जैसे देश में हिन्दी हिन्दी सैट चेनलों के माध्यम से अपना अस्तित्व बनाए हुये है। इस प्रक्रिया में टेलीविज़न भी पीछे नहीं रहा है। विगत कुछ वर्षो से मनोरंजन और समाचार के निजी उपग्रह चेनलों के प्रदापर्ण के कारण यह प्रक्रिया और तेजी से बढ़ रही है। जिसके सशक्त उदाहरण है,स्टार न्यूज़ ',स्टार स्पोर्ट्स,और ई एस पी एन जैसे अँग्रेजी चेनल जो अँग्रेजी में आरंभ हुए थे पर घटती टी पी आर पी के कारण पूर्णतःहिन्दी चेनल में रुपांतरित हो गए हैं।

टेलीविज़न के क्षेत्र में मनोरंजक कार्यक्रम में हिंदी फ़िल्मों तथा धारावाहिकाओं के प्रसारण ने हिन्दी भाषा को देश विदेश में लोकप्रियता की चरम सीमा पर पहुंचाया है। जहां एक और सामाजिक,धार्मिक,पारिवारिक,ऐतिहासिक,पोराणिक विषयों पर बने धारावाहिकों ने दर्शकों में अपना विशेष स्थान बनाया वहीं,कोन बनेगा करोड़पति,जरा नाचके दिखा, दशका डैम, बिगबॉस ,आदि जैसी रियलिटी शो में हिन्दी का बोलबाला होने के कारण इन कार्यक्रमों ने केवल पूरे भारत को न बांध रखा अपितु लोगों को हिन्दी भाषा के प्रति आकर्षित भी किया,स्टार प्लस पर प्रसारित होती धारा वाहिक 'इस प्यार को क्या नाम दूं' ?जो तुर्की तथा यू. ए. ई. में, तुम दिया और बाती रोमानिया में,सरस्वतीचन्द्र लगभग 30 देशों में प्रसारित हुआ।महा भारत मोरेसियस ,रूस तथा इन्दोनेसिआ में, जी टी वी पर प्रसारित होने वाले ड्रामा, सीरियल,काबुल है,यू. ए. ई. में कलर्स चेनल पर दिखाया जाने वाला 'नागिन' चिनमें ,आदि। यह हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता ही है, कि,यह कई विदेशी धारावाहिक विशेषकर तुर्की के फातमागुल 'लिटल,अ लव स्टौरी ,तथा साउथ कोरियाई धारावाहिक डिसन्देट्स ऑफ द सन,बोईस एचीवर फ्लावर्स ,(ज़िंदगी चेनल पर)और ज्वेल इन द पेलेस (दूरदर्शन पर)2 हिन्दी में अनूदित होकर दिखाये गए हैं।

सिनेमाः

हिन्दी के प्रचार प्रसार में सिनेमा भी पीछे नहीं है। हिन्दी सिनेमा ने विश्व भर में अपनी एक अखिल भारतीय छवि बनाई है। विदेश में बसे भारतीयों के मनोरंजक के साथ साथ इन्हें जोड़ने का माध्यम भी हिन्दी रहा है। हिन्दी भाषा में बनी फिल्में ही है। इन फिल्मों ने न केवल प्रवासियों के लिए बल्कि हिन्दी जानने वाले विदेशियों को भी अपनी और आकर्षित किया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि,विख्यात होते जा रहे हिन्दी सिनेमा के चलते जहां एक और अहिंदी भाषियों को हिन्दी सीखने में रुचि बढ़ी वही अँग्रेजी,चीनी तथा तमिल फिल्में हिन्दी में अनूदित होने लगी। इतना ही नहीं भारतीय उप महाद्वीपों के अतिरिक्त खाड़ी देशों यूरोप,अमरीका,जापान,मोरेसियश,चीन,कनाडा,आदि देशों में हिन्दी

कार्यक्रम उपग्रह चैनलों के माध्यम से प्रसारित हो रहे हैं। अतः कहा जा सकता है कि,हिन्दी सिनेमा केवल हिन्दी भाषी क्षेत्रों तक सीमित न रहकर पूरे विश्व में अपना विस्तार ही नहीं कर रहा है,अपितु इन संचार माध्यमों की सहायता से हिन्दी भाषा को विश्व व्यापी बनाकर विदेशों में भी अपना अस्तित्व स्थापित कर रहा है।

वर्तमान समय को यदि साइबर स्पेस का युग कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, आज इंटरनेट कई संचार माध्यमों के लिए रीढ़ की हड्डी के समान है। इन्टरनेट एक एसा विशाल जंजाल है जिसके द्वारा कम्प्युटर अपना अस्तित्व बनाए हुए है। अब इन्टरनेट पर हिन्दी भाषा का प्रयोग भी होने लगा है। प्रसिद्धता की और आगे बढ़ती जा रही हिन्दी जा रही है। हिन्दी के कारण माइक्रोसॉफ़्ट कंपनीयों ने ऐसे सॉफ्टवेयर बनाने आरंभ किए है जिनकी सहायता से हिन्दी विकसित ही नहीं बल्कि समृद्ध भी हो रही है। इन्टरनेट जैसे वैश्विक माध्यम के कारण अब हिन्दी के समाचारपत्र ,पत्रिकाएं तथा ब्लोगस संसार भर में विविध साइट्स पर उपलब्धहो रहे हैं। इससे जुड़कर ई मेल, ई कामर्स, ई बुक्स,एस. एम. एस,टेली मेडिसिन आदि के माध्यम से हिन्दी केवल विकसित ही नहीं हो रही है बल्कि उसका आधुनिकरण भी हो रहा है।

कहा जा सकता है कि हिन्दी को वैश्विक संदर्भ देने में यांत्रिक सुविधाऐं ,बहू राष्ट्रिय कंपनिया,उपग्रह,चेनलों ,विज्ञापनों ,आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यदि यह कहा जाये कि हिन्दी भाषा जन संचार माध्यमों की सबसे अनुकूल व प्रिय भाषा बनकर उभर रही है। ये गलत न होगा । साहित्य और सिनेमा ऐसे माध्यम हैं,जिनमें समाज में परिवर्तन लाने की शक्ति सबसे ज्यादा है। इन दोनों का घनिष्ठ संबंध है। गुलजार के शब्दो में साहित्य और सिनेमा का संबद्ध एक अच्छे या एक बुरे पड़ोसी ,मित्र या संबंधी की तरह एक दूसरे पर निर्भर है। साहित्य और सिनेमा का मुख्य उद्देश्य आनंद का श्रुजा करना है। तथा दोनों समाज को नई दिशा देने की क्षमता भी रखे है।जो एसा करनेमें असफल होते है वे साहित्य और सिनेमा निरर्थक है।

डॉ. राही मासूम रजा के शब्दो में,–सिनेमा साहित्य की एक अच्छी विधा है। इसे भी उनही तकाजो का को पूरा करना चाहिए। जो दूसरी साहित्यिक विधा ए पूरी करता है। सिनेमा लोगों को सुख प्रदान करती है। तथा इस सुख से वह समाज को स्वस्थ बनाने की लड़ाई लड़ती है। जिस तरह कोई नज्म ,न दिल,कहानी या साहित्य जो इस कर्तव्य को पूरा नहीं करता है,वह बेकार है। उसी तरह जो फिल्म इस कर्तव्य को पूरा नहीं करती है वह त्रुटि पूर्ण है। जो सिनेमा समाज के साथ नहीं चलती है उसे समाज स्वीकार नहीं करता है। फिर चाहै वह कितने हिबड़े बजेट की ही क्यों न हो या फिर कितने ही बड़े कलाकार उसमें अभिनय कर रहे हो। सिनेमा के जैसे साहित्य भी समाज में होने वाली विभिन्न

प्रक्रियाओं से गहरे रूप में जुड़ा रहता है। सिनेमा के माध्यम से जो कहानी प्रस्तुत की जाती है, उसमें विभिन्न प्रकार के चरित्र या उनके क्रिया कलाप ही नहीं होते बल्कि वे समाज की विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से अपने को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक फिल्म कहानी कहते हुए उनसे जुड़ी संस्थाओं के स्वरूप, चरित्र और उनके प्रति लोगों और समुदायों की सोच को भी प्रस्तुत करती है। जैसे लज्जा फिल्म में विदेशी तथा भारतीय नारी की व्यथा कथा को व्यक्त किया गया है। इस फिल्म का विषय समाज के विभिन्न वर्गो में रहने वाली अमीर और गरीब हर तरह की स्त्री पुरुष समाज द्वारा उत्पीड़ित और लांछित किए जाने संबधित है। सिनेमा देखते हुए लोग न केवल अपना मन बहलाते हैं बल्कि समय और समाज के बारे में नए अनुभव भी लेकर जाते हैं। नाम से फिल्म बनाई जो हिट रही। भगवती चरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रा लेखा' पर भी फिल्में बनी। 1965 में आर. के. नारायण के अंग्रेज़ी उपन्यास गाइड पर इसी नाम से फिल्म बनी जिसने बहुत लोकप्रियता प्राप्त की। फनीधर रेणु की 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम 'पर प्रसिद्ध फिल्म 'तीसरी कसम' बसु भट्टाचार्य के निर्देशन में बनी। मोहन राकेश की 'मक्के का मालिक' कहानी पर 'हीना' फिल्म बनाई गई। कृष्ण चन्द्र की कहानी पेशावर एक्स्प्रेस पर 2004 में 'वीर जरा 'फिल्म बनी। इसी प्रकार हिन्दी साहित्य के पांडे बेचेन शर्मा ,चतुरसेन शास्त्री, यशपाल,धर्म वीर भर्ती ,अमृतलाल नागर जैसे साहित्यकारों की रचनाओ पर भी फिल्मे बनाई गई। स्वतन्त्रता के पश्चात् हिरेन गुप्ता ने 'आनंद मठ 'फिल्म बनाई जो बंकिम चन्द्र चेटर्जी के उपन्यास पर आधारित थी।इस फिल्म में देश को स्वतंत्र करवाने वाले लोगों के बलिदान को प्रमुख रूप से दिखाया गया ,तमस फिल्म भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस 'पर आधारित थी जिसमें पृष्ठ भूमि में फैली सांप्रदायिक मनोवृति को प्रमुखता से दिखाया गया है। प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति'पर प्रसिद्ध निर्माता निर्देशक सत्यजीत राय ने इसी नाम से फिल्म बनाई जिस में भारत में हो रहे उच्छवर्ग द्वारा निम्न जातीयों का शोषण सामने आया। प्रेमचंद के विख्यात उपन्यास 'गोदान' पर इसी अंम से 1963 में फिल्म बनी। इसमें तत्कालीन भारतीय जीवन को दर्शाने की पूरी कोशिश की गयी। अमृता प्रीतम के पंजाबी उपन्यास 'पिंजर' पर चन्द्र प्रकाश त्रिवेदी ने हिन्दी में इसी नाम से फिल्म बनाई । इसी उपन्यास पर 2001 में 'गदर'फिल्म बनी। जिसमें भारत के समय की उस व्यथा को व्यक्त किया है। जिस में मासूम औरतें सांप्रदायिकता जैसे जहर का शिकार हुई। ये हुई भारत की फिल्मों की बात।

हिन्दी के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी फिल्मों की काफी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। फिल्में किसी भी संस्कृति का आना होती है। जिस देश की जैसी संस्कृति होती है,वैसि ही फिल्मों में झलक देखने को मिलती है। वैश्विक पटल पर हिन्दी फिल्मों ने गहरी छाप छोडी है। जिनहै अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहा गया है। हिन्दी वैश्विक परिदृश्य में अमित योगदान है। हिन्दी फिल्मों ने केवल भारत में

ही नहीं अपितु देश विदेश में अपनी छाप छोड़ चुकी है। विदेश में भी फिल्मों को प्रोत्साहित किया जाता है। विश्व में बनने वाली हर चौथी फिल्म हिन्दी भाषा की होती है। जिनकी लोकप्रियता सर्वाधिक है। रूस की जनता भारतीय कलाकार राजकपुर की फिल्में इसलिए पसंद करते थे क्योंकि इनमें भविष्य के प्रति संभावनाएं दृष्टिगोचर होती थी। इसका एक महत्वपूर्ण कारण यह है की, पांचवें दशक का दौर रूस के लिए काफी निराशा का दोर रहा है। राज कपूर की फिल्में जीवन जीने की प्रेरणा देती है। जापान की योकियों यूनिवर्सिटी में हिन्दी अध्यापन कार्य 1908 से ही प्रारम्भ हो गया था। वहां पर भी हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता का ग्राफ काफी बढ़ा है। वहां हिन्दी फिल्मों को प्रदर्शित करके ही हिन्दी सिखाई जाती है। हिन्दी फिल्म जैसे एक था टाइगर,धूम टू,थ्री इडियट्स,और इंगलिश विंगलिश जैसी फिल्मों को जापानी जनता ने काफी पसंद किया। पूर्व सोवियत संघ से खाड़ी के देशों अफ्रिका से लेकर दक्षिण पूर्वी एसियाई देशों तक इसका अभूत पूर्व क्रेज है। हिन्दी फिल्मों का उत्पादन मुख्य रूप से मुंबई भारत में होता है। जिसे बॉलीवुड कहा जाता है। हिन्दी फिल्मों में जीवन सरोकार स्पंदन, भावात्मक संचार रोमांस,पारिवारिक संबंध,आयोजित परिदृश्य इत्यादि बहु खूबी से पेश किया जाता है। रूस के सेंटपीटरबर्ग में हिन्दी पढ़ने वाले डॉ. बारा निकोव के अनुसार हिन्दी के प्रचार प्रसार में हिन्दी सिनेमा ने जितना योगदान दिया है उतना अन्य किसी माध्यम ने नहीं दिया है। मधुर भंडारकर के अनुसार हिन्दी फिल्मों ने पूरी दुनिया में धूम मचा रखी है। विदेशों में भी फिल्मों के दर्शक मिल जाते हैं।

हिन्दी भाषा की फिल्मों के वैश्विक लोक प्रियता बढने का कारण हिन्दी भाषा और हिन्दी सिनेमा के अंतर्राष्ट्रिय लोकप्रियता के कारण इस प्रकार है। विदेशों में बसे हिन्दी प्रवासी भारतीय प्रतियोगिता एवं व्यवसायिक लाभ की भाषा ,बाजारू जरूरत ,अधिकतर देशों में बढ़ता हिन्दी शिक्षा का अध्ययन व अध्यापन हिन्दी सिनेमा के माध्यम से विश्व भर में हिन्दी सीखने का मनोरंजक भ्रामक माध्यम इत्यादि। इसके प्रमुख कारण है। विदेश में अनेक क्षेत्र में हिन्दी लोग कार्यरत है। भारतीय मूल के लगभग तीन करोड़ भारतीय विभिन्न देशों जैसे सूरीनाम,गुयाना,हंगेरी, रुमनीय, यूरोप,न्यूजीलेंड ,इंडोनेशिया इत्यादि देशोंमें नोकरी के लिए गए हुए है। और इन देशों के भारतीय हिन्दी को अपने पूर्वजो की भाषा मानते है। शायद इसी वजह से भी हिन्दी सिनेमा की लोक प्रियता अन्य देशों में ज्यादा है। अन्य भाषा की फिल्मे हिन्दी में दाब हो रही है। वैश्विक परिदृश्य में देखा जाय तो हैरी पॉटर ,टाइटेनिक ,स्पाइडर मेन ,अवतार आदि फिल्मे हिन्दी में दाब किया गया है। विदेशी लोग भारतीय संस्कृति को समझने के लिए सिनेमा को अत्यंत जरूरी माध्यम समझते है। वर्तमान में विदेशी लोग भारतीय योग पद्धति ,धार्मिक ज्ञान ,पौराणिक ज्ञान,को सीखने के लिए काफी दिलचस्पी दिखा रहे हैं।

हिन्दी के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी हिन्दी फिल्मे :

भारत में संत तुकाराम ,नीचा नगर, दो बीघा जमीन, पाथेर पांचाली, अपराजीतों ,खरीच,सलाम,बाँके,दिल से तितली ,लांच बॉक्स ,गात्तू,मसान,नफरत,इत्यादि फिल्मों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरुस्कृत किया गया है। प्यासा,थ्री इडियट्स ,भगत,पाथेर पांचाली,दुश्मन,एयर लिफ्ट,आपूर संसार,जल सागर, चारुलता जैसी फिल्मों को न केवल देश में लोकप्रियता मिली है अपितु इन्हें एक पब्लिकेशन ने विश्व की 100 बेहतरीन फिल्मों में स्थान दिया। जब भी किसी फिल्म को पुरुस्कृत किया जाता है,तब वह उस देश के लिए सम्मान की बात होती है। संत तुकाराम फिल्म विष्णु पंत गोविंद धमले और शाइख फतेलाल के द्वारा वर्ष 1937 में निर्देशित की गई । यह पहली फिल्म थी जिसे वेनिस फिल्म फेस्टिवल में सराहा गया। नीचा नगर उर्दू फिल्म का ग्रांड पृक्स ड्यू फेस्टिवल इंटरनेसनल ड्यू फिल्म कंस में अवार्ड दिया गया। दो बीघा जमीन का 1954 में कंस फिल्म में भी सम्मानित किया गया था। लंचबॉक्स फिल्म को बाफ़्ता द ब्रिटिश एकेडमी एवार्ड से नवाजा गया ।

निष्कर्ष :

हिन्दी फिल्मों ने वैश्विक परिप्रेक्ष्य में गहरी छाप छोड़ी है। हिन्दी फिल्मों के गाने,कहानी,इत्यादि समय समय पर अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सम्मानित किए जाते हैं। हिन्दी फिल्मों ने भारतीय भाषा ,रीति रिवाज,इत्यादि को जन–जन तक पहुंचाने में काफी सराहनीय कार्य किया है। यह बात भी गौर करने की है कि हिन्दी फिल्मों के माध्यम से कई देशों में हिन्दी सिखाई जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में हिन्दी फिल्मों को पुरुस्कृत किया जाता है। आने वाले समय में हिन्दी फिल्मों के विकास के साथ–साथ जन–जन की भाषा हिन्दी होगी।

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

सन्दर्भ सूची :संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य एवं वैश्विक साहित्य की भूमिका संपादक :महेश दिवाकर, प्रकाशन :विश्व पुस्तक प्रकाशन 2019 दिल्ली

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक न्याय संस्कृति के विकास में श्रीमद् भगवद गीता : फ्रांस

''गीता सुगिता कर्तव्य किम्न्दई शास्त्र विस्तरई,
या स्वयं पद्मना भस्म मुख पझाड़ विनी सुता महाभिस्म 43/1

गीता को अच्छी तरह पढ़कर भाव के साथ अंतःकरण में धारण करना होगा, जो स्वयं पद्मनाभ भगवान विष्णु के मुख कमाल से निकली है,स्वयम भगवान ने इसका महत्व समझाया है। गीता सभी मनुष्य के लिए वैश्य,शूद्र ,स्त्री या पाप योनि के इंसान भी गीता धारण करने से परम गति प्राप्त करता है।

अ–९ श्लोक ३२

अपने–अपने कर्म से गीता की पूजा इंसान को परम सिद्धि देती है। जिसने सिर्फ गीता का नाम सुना है,इसे पता नहीं है,वो बताते हैं कि,गीता सिर्फ संन्यासी के लिए है,अपने बच्चे पढ़कर संन्यासी न बन जाए उस डर से लोग बच्चों को गीता पढ़ने नहीं देते हैं।

श्री कृष्ण ने दोनों और मध्य में भीष्म और द्रोणाचार्य तथा राजाओं के सामने रथ को खड़ा रखकर बोले हैं पार्थ ! युद्ध के लिए इकट्ठे हुए कौरवों को देख पृथा पुत्र अर्जुन ने दोनों सेना में खड़े हुए वरिष्ठ चाचाओं,पितामह,पुत्रों, पोत्रों,मित्रों,ससुर ,और स्नेहीजनों को देखा (२६–२७) वह उपस्थिति देखकर और सभी भाईओं को देखकर कुंती पुत्र अर्जुन अत्यंत दुखी और हताश हो जाता है।

अर्जुन ने कहा ः युद्ध क्षेत्र में खड़े युद्ध करने की इच्छा से ये स्वजन समूह को देखकर मेरे गात्र शिथिल हो रहे हैं,और मुँह सूख गया है,मेरे शरीर में कंपन हो रहा है। (२८–२९) हाथ में से गाँडीव धनुष सरकता जा रहा है, चमड़ी जल रही है, मेरा मन घूम रहा है, मैं खड़े रहने योग्य नहीं हूं।,(३०)

हे केशव,विचक्षण नजारे देख रहा हूं,और युद्ध में स्वजनों को मारकर कल्याण नहीं इच्छता । हे कृष्ण, मैं न तो विजय चाहता हूं, न तो राज्य का सुख । हे गोविंद ,मुझे ऐसे राज्य का क्या प्रयोजन ? ऐसे सुखों का जीवन में क्या फायदा ?

हे कृष्ण ,हम जिस राज्य का भोग और सुख सोचते हैं,वह भोग तो धन और जीने की आस छोड़कर यह युद्ध में खड़े हैं, (३०) मैं अभी तीन लोक का राज्य नहीं चाहता । हे जनार्दन, धृतराष्ट्र के पुत्रों को मारकर हमें कोनसा आनंद

मिलेगा ?हमें पाप ही लगेगा ,(३६)

हे माधव, कुल नाश से होने वाले पाप से बचने के लिए हमें सोचना चाहिए। हे कृष्ण ,पाप करने से कुल की स्त्रीयां दूषित हो जाती हैं,स्त्री जब दूषित होती है तब वर्णशंकर प्रजा उत्पन्न होती है,(४१)

हे जनार्दन,जिस के कुल धर्म नाश हो जाते हैं,ऐसे अनिच्छित समय तक नरक में रहते हैं। (४१)

शस्त्र विहीन और मेरा सामना न करने वाले ऐसे हाथ में यदि शस्त्र लेकर खड़े हुए धुतराष्ट्र के पुत्रों वो रण में मेरी हत्या कर दें तो मेरे लिए मरना ज्यादा लाभदायी होगा। (४६)

संजय उवाचः युद्ध भूमि में शोकमग्न अर्जुन धनुष बाण त्यजकर रथ के पीछे के भाग में जाकर बैठ गया, तब भगवान जनार्दन ने कहा कि,हे अर्जुन,तेरे जैसे शूरवीर का इस समय विषाद करना उचित नहीं है,रण भूमि में ईसलिए मोह कहां से हुआ ? क्योंकि न तो ये श्रेष्ठ पुरुषों ने आचरण किया है,और न तो स्वर्ग प्राप्त करने वाला या यश देने वाला है।

इसलिए है पार्थ,नपुंसकता को वश न हो ,तुम्हें ये शोभा नहीं देता,ह्रदय की तुच्छ दुर्बलता को त्यजकर युद्ध के लिए खड़ा हो जा ,अर्जुन ने कहा कि,हे मधुसूदन, रण भूमि में मैं भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य के सामने कैसे लड़ सकता हूं ,मेरी दृष्टिसे ये सामाजिक न्याय और संस्कृति का उत्तम उदाहरण है। क्योंकी वे दोनों पूजनीय हैं, मैं भिक्षा मांगकर जीना पसंद करूंगा लेकिन उन्हें नहीं मार सकता हूं। अर्जुन कृष्ण से उपदेश मांग रहे कि मुझे क्या करना होगा ?(१७)

मैं युद्ध नहीं करूंगा, ऐसा कहकर अर्जुन चुप हो जाते हैं। कृष्ण ने कहा कि,हे अर्जुन, जिसके लिए शोक करना उचित नहीं है उनके लिए तू शोक न कर ।

आत्मा हकीकत में मरता नहीं है,इसे कोई मार नहीं सकता है,आत्मा शाश्वत और सनातन है,शरीर को मारने से वो मरता नहीं है,हर जन्मा हुआ इंसान का मृत्यु निश्चित है,इसलिए शोक न कर। स्व धर्म को देखते हुए तुम्हें भयभीत नहीं होना चाहिए,क्योंकि क्षत्रिय के लिए धर्म युद्ध से बढ़कर और दूसरा कोई कल्याण कारी कर्तव्य नहीं है,फिर तुम युद्ध नहीं कर के स्वधर्म और कर्तव्य घुमाकर पाप प्राप्त करोगे। (३३)
तू युद्ध कर के मरकर स्वर्ग पाएगा या तो फिर तू जीतकर भूमंडल का राज्य प्राप्त करेगा । इसलिए हे अर्जुन ,तू यूद्ध का निश्चय कर,के खड़ा हो जा। (37)
तेरा कर्म करने का अधिकार है, इसलिए तू कर्म के हेतु ही नहीं बना।

हे धनंजय ,तू आसक्ति को त्यजकर सिद्धि और असिद्धि में संबुद्धि रखकर योग में स्थित होकर कर्तव्य कर्म कर। श्रेष्ठ पुरुष जो आचरण करता है, अन्य इंसान भी उसी प्रकार आचरण करता है। सभी मानव इस प्रकार आचरण करता है, (21)अर्जुन ने कहा कि,हे कृष्ण मानव किसी रीति प्रेरित होकर पाप करता है ?कृष्ण ने बताया कि, रजो गुण से क्रोध काम उत्पन्न होता है,लोगों से तृप्त न होने वाला इंसान महापापी है। (37)

इसलिए हे भरतवंशी तू हृदय में रहे हुए अज्ञान और संशय को विवेकरूपी तलवार से छेदकर कर्म योग में स्थित हो जा। और सामाजिक न्याय हेतु तू युद्ध कर,खड़ा हो जा। राजन,हे राजन! महा योगेश्वर और सभी पापों का नाश करने वाले भगवान श्री हरी ने अर्जुन को अपना परम सौन्दर्य दिव्य स्वरूप दिखाया। हे अर्जुन,शत्रुओं का नाश करके समृद्ध राज्य प्राप्त कर। तू निमित्त मात्र हे,ये सभी शूरवीर पहले से ही मरे हुए हैं, हमने उन्हें अशक्त बना दिये हैं। अर्जुन बोले हे अच्युत मेरा मोह नष्ट हो गया है। मैंने स्मृति पा ली है, मैं आपके हुकम का पालन करूंगा।

कुरुक्षेत्र की भूमि में श्री कृष्ण ने जो उपदेश दिया था वह श्रीमद भगवद गीता के नाम से प्रसिद्ध है। यह महाभारत के युद्ध होने जा रहा था तब अर्जुनने युद्ध करने से इंकार कर दिया था। युद्ध क्यों हो रहा था? श्रीमद भगवद् गीता के सभी अठारह अध्यायों के नाम आगरा लिखित है। गीता उत्तम सार है,अति उत्तम ज्ञान है,भगवद गीता में कर्म योग,ज्ञान योग,भक्ति योग,एकेश्वर वाद,की बहुत सुंदर ढंग से चर्चा हुई है। श्रीमद भगवद गीता वर्तमानमें धर्म से ज्यादा जीवन के प्रति अपने दार्शनिक द्रष्टिकोण को लेकर भारत में ही नहीं,विदेशों में भी लोगों का ध्यान अपनी और आकर्षित कर रही है। विश्व के सभी धर्मो की सबसे प्रसिद्ध पुस्तकों में शामिल है। भगवद ईष्ट हिन्दूओं के पवित्रतम ग्रंथो में से एक है। महाभारत के अनुसार कुरु क्षेत्र में युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने गीता का संदेश अर्जुन को सुनाया था। भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि मैं न किसी को सुख देता हूं न दुख,इंसान स्वयं अपने कर्मो से सुख दुख प्राप्त करता है।

भगवद गीता में कुल 700 श्लोक है। जो मनुष्य इच्छाओं और कामनाओं को त्यागकर ममता रहित और अहंकार रहित होकर अपने कर्तव्य का पालन करता है उसे ही शांति की प्राप्ति होती है। श्री कृष्ण से पहले भगवान सूर्य ने अपने पुत्र इशवाकू को यही उपदेश दिया था,भगवानश्री कृष्ण ने अर्जुन को आत्म शक्ति जाग्रत करने के लिए आत्म ज्ञान का उपदेश अर्जुन को दिया था। गीता में बताया है की जो व्यक्ति बिना वजह किसी पर संदेह करता है,वह कभी खुश नहीं रह सकता है। संदेह करनेपर रिश्ते में कड़वाहट आती है। मन की लगाम

सदैव अपने हाथों में रखो,अपने विश्वास को अटल बनाओ,क्रोध मनुष्य का दुश्मन है,उठो और मंजिल की और आगे बढ़ो,क्रोध और लालच ,वासना से दूर रहो,अभ्यास आपको सफलता दिलाएगा,सम्मान के साथ जियो,खुद पर विश्वास रखिए,कमजोर मत बनना,मृत्यु सत्य है उसे नकारा नहीं जा सकता है। गीता में सामाजिक जीवन में जीने की राह दिखाई गई है। सामाजिक न्याय प्रदान करती है गीता ज्ञान।

संस्कृति के विकास में श्रीमद भगवद गीता :

श्रीमद भगवद गीता हमारा महान ग्रंथ है। गांधीजी की प्रार्थना में स्थिर प्रशस्य की भाषा से शुरू करके ये अध्याय बोला जाता था, और गाया जाता था। गीता में कृष्ण अर्जुन संवाद है, भगवान उवाच,की जगह श्री कृष्ण शब्द का प्रयोग किया गया है, भारत वर्ष ने विश्व को दी गई यह अनमोल भेट श्रीमद भगवद गीता है। पाँच हजार सालों पहले महर्षि वेद व्यास ने प्रकट किया गया ये ज्ञान प्रसिद्ध आज भी है,उसका शीतल प्रकाश आज भी वो फैला रहा है। कुरुक्षेत्र में अर्जुन को द्विधा में जो यातना हुई वही यातना आज मनुष्य अनुभव कर रहा है, आद्य शंकराचार्य का गीता का ज्ञान सर्वोत्तम ज्ञान प्राप्त हुआ। श्री रामानुचर्या मधावचार्य के वल्लभचार्य को भक्ति का अनुभव हुआ,लोक मान्य तिलक ने कर्म योग में ही गीता का रहस्य देखा, महात्मा गांधीजी को उसमें अनाशक्ति के योग के दर्शन हुये,श्री अरविंद और विनोबा भावे को ज्ञान कर्म योग भक्ति का मधुर समन्वय की प्राप्ति हुई। गीता ने जीवन के अखंड प्रवाह में हर मोड के अनुरूप माधुर्य दिया गया है। बाह्य दृष्टि से दिखने वाले प्रत्येक खंड का ऐसा सौन्दर्य दिया है की समग्र विश्व भवन के संवादिता सभी लोगों को गीता अपना मार्ग दर्शक का आधार लगता है। प्रत्येक खंड को इसलिए माधुर्य दिया है की,समग्र विश्व की संवदिता निखार गई है। इस लिए भिन्न भिन्न रुचि,वृति या दर्शन धारण करने वाले सभी लोगों का गीता अपना मार्ग दर्शक आधार लगता है। और उपदेश श्री कृष्ण जगत गुरु नीर अपवाद के बिरुद को पाये है। गीता के स्पर्श ,विषाद प्रयास में परिवर्तित हो जाता है, और उपाधि ,योग समाधि योग में पलट जाता है। एसे गीता से सर्वाकालीन और सर्वदेसीय ग्रंथ है, उसका प्रभाव सनातन है। इसलिए ही गीता का प्रथम अनुवाद को जान बूझकर तत्कालीन अंग्रेज़ 'हर्के वोरेन' हैसिंग्सन ने लिखा है

works like the gita will Survive when the british dominion shall have long ceased to exit उनकी भविष्य वाणी सच साबित हुई,

महात्मा ठोरों और एमरसन के विचारो में गीता ध्वनित होती हुई दिखती है। आलडोस हसकल ने तो कह दिया कि गीता ये तो सनातन दर्शन की तमाम विचारधाराओं का सर्वाग्राही और विषाद ऐसा एक मात्र ग्रंथ है उसका चिरंतन मूल्य सिर्फ भारत के लिए ही नहीं लेकिन पूरी मानवजात के लिए उपदेशक है,

विलियम वान हमलेल्ट ने तो विश्व की सभी भाषाओं में हम मात्र परमार्थिक सुंदर दार्शनिक कविता लगती है।

जीवन जीने की कला और सघर्ष में दृढ़तापूर्ण टीक रहने का बल देने वाला यह ग्रंथ आज भी पूरा प्रस्तुत है। यह स्वयं स्पष्ट है, गांधीजी का कथन प्रचलित है,"जीवन में मोह कसोटी के प्रयोगों में अचूक मार्गदर्शन दे सके इसलिए शास्त्र ग्रंथ की जरूरत मुझे बचपन में हुई थी। मैंने कहीं पढ़ा था की,गीता के सिर्फ सातसौ श्लोकों में सर्वा शास्त्र तथा उपनिषद का सार ग्रंथित किया गया है। गीता पढ़ सके इसलिए मैंने संस्कृत सीखा । आज गीता मेरा बाइबल,या कुरान ही नहीं ये सभी से अधिक साक्षात् मेरी माता बन गया है। विनोबा भावे भी गीता को माता 'गीताई' कहते थे,ऊपर दिया गया विधान गीता पढ़ने हेतु गांधीजी संस्कृत सीखे,ये गांधीजी की निष्ठा और स्पष्टता दिखती है। संस्कृत ज्ञाता होने के बावजूद भी अंदर के उमंग से अपनी मातृ भाषा में अनुवाद गीतों की शैली में सभी को प्राप्त हो इसलिए किया गया है,गीता उसके मूल स्वरूप में पढ़ा और गया हो इसलिए आनंद प्राप्त होता है। अपनी माता के लिए विनोबा भावे जी ने मराठी में 'गीताई' नाम का अनुवाद दिया है। गीताई का गुजराती अनुवाद भी उपलब्ध है। गुजराती में कवि श्री नहानालाल जी का गीता का अनुवाद प्रसिद्ध है। किन्तु किशोर मशरुवाला ने किया गया उसका गीता ध्वनि नामक सं श्लोक अनुवाद अति प्रचलित हुआ। और बहुत सारी संस्थाओ में और परिवारों में आज भी उसका पाठ किया जाता है। तद उपरांत गद्य और पद्य में गीता अनुवाद होता ही रहता है। ये अनुवाद श्री डॉ. तनसुख भाई रिंदानी ने किया है,वो बहुत ही भावपूर्ण है। ये अनुवाद के पीछे एक सेवानिस्ठ डॉक्टर का जीवंत अनुभव पड़ा हुआ है,इस लिए ये शाब्दिक अनुवाद ही है,लेकिन संभावी सज्जन के उद्गार है। किशोरलाल मशरुवाला का गीता का गुजराती अनुवाद का दूसरे अध्याय का गांधीजी के आश्रम में शाम की प्राथना में बोला जाता था और आज भी गुजरात की रचनात्मक खड़ी,नई तालिम की संस्थाओ में ये बोला जाता है। यह भारतीय संस्कृति विश्व में फैली हुई है,गीता का उपदेश मानव जीवन को उज्ज्वल बनाता है।

श्री किशोरलाल मशरुवाला की गीता ध्वनि का तीसरा अंक भी पब्लिश हुआ है। गीता ध्वनि किया गया तब उनके आगे श्री दहयाभाई हरगोविंद भाई जिनका 'गीता माधुरी'नामक अनुवाद उनके पास था। उसमें से कुछ अच्छे शब्द उनको मिले। दोनों को मिलाकर एक ही अनुवाद हो इसलिए उनके साथ पत्र व्यवहार भी हुआ था। उन्होनें सम्मति भी दी थी। लेकिन बाद में पता चला कि दोनों के अनुवाद की दृष्टि में कुछ तफ़ावत है,विनोबा गीताई और श्री हरि भाऊ उपाध्याय का हिन्दी गीता का भी उन्होनें सहारा लिया था। नहालाल भाई के अनुवाद के भी वे ऋणी हैं। गीता ध्वनि के आज तक दो लाख से ज्यादा प्रति लोगों के हाथों में पहुंची है। गीता ध्वनि पहली बार 1934 में पब्लिश हुआ,

कुछ पंक्तिया :
छोड़कर सभी धर्मो ,तेरा ही शरण किया,
तुज़ सकल पापों से छुड़ा मुजेये पल
बास्कर सभी भूतो के ह्रदयमें परमेश्वर
माया से फिराये याने की यंत्र पर धरे
तुम्हारी शरत में आऊ सर्वा भावो से केशव
तेरे अनुग्रह ने तेरी शासवत शांति परए

गीता साक्षात भगवान श्री कृष्ण के मुखारविंद से निकली हुई वाणी है। उसका संकलन श्री व्यास जी ने किया है। भगवान श्री कृष्ण ने अपना उपदेश ज़्यादातर पद्य में ही दिया है,उसका कुछ भाग गद्य में था । व्यास जी ने उसे श्लोक में परिवर्तित किया है। ये गीता ग्रंथ अठारह अध्यायों में विभाजित है, गीता का एक भिशब्द बिन उपयोगी नहीं है। श्री वेद व्यास जी ने कहा है कि,गीता को अच्छी तरह पढ़कर उसे जीवन में धरण करना चाहिए। स्वयं भगवान ने उसका महत्व का वर्णन किया है। ये सभी मनुष्य किसी भी वर्ण या आश्रम का हो ,भगवान के प्रति श्रद्धा और भक्ति भाव होने से वैश्य ,शूद्र,स्त्री मोज में आश्रित होकर परम गति प्राप्त कर सकता है। अपने अपने स्वाभाविक कर्मो से पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त कर सकता है। परमात्मा प्राप्ति का अधिकार सभी मनुष्यों को है। कल्याण प्राप्त करने हेतु इंसान मोह माया छोड़कर श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ भाव सहित अध्ययन अपने बच्चों को कराये।

भगवान प्राप्ति के दो मार्ग गीता में बताए गए हैं। 1. सांख्य योग साधना का मार्ग 2. कर्म योग साधना का मार्ग सभी पदार्थो की तृष्णा माया छोड़कर और फल की इच्छा रखे बिना कर्म करने का मार्ग, श्रद्धा और भक्ति भाव से ,मन वाणी से,शरीर से भगवान की शरण में जाकर उनके नाम पूजा और रहित उनके स्वरूप का निरंतर चिंतन करना सांख्य को भगवान ने संन्यास का मार्ग बताया है। संन्यास आश्रम में ही अधिकार है। गृहस्थ आश्रम में अधिकार नहीं है। इसलिए कहना उचित नहीं है। भगवान ने अर्जुन का युद्ध करना योग बताया है,दूसरे अध्याय में श्लोक 11 से 30 तक सांख्य निष्ठा का उपदेश दिया है। अर्जुन को भगवान ने कहा कि तू सतत मेरा चिंतन कर,और कर्म योग का आचरण कर।

संस्कृति का सिंचन करने वाला ये श्रीमद् भगवद गीता ग्रंथ की तुलना में कल्याण हेतु उपयोगी और कोई ग्रंथ नहीं है। गीता में ज्ञान योग ,ध्यान योग,कर्म योग ,भक्ति योग,ये सभी साधन दिखाये गए हैं। जिसमें कोई भी साधन अपनी श्रद्धा ,रुचि,योग्यता के अनुसार करने से मनुष्य का शीघ्र कल्याण होता है। गीता का अर्थ भाव के साथ अपने जीवन में धारण करने का प्रयत्न सभी मनुष्यों को करना चाहिए। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक न्याय का मार्ग दिखाता

है। संस्कृति के विकास में श्रीमद भगवद गीता ग्रंथ सभी ग्रन्थों में से एक ग्रंथ साबित हुआ है।

जय श्री कृष्ण। श्री माधव जगत गुरु को नमन

● ●

सन्दर्भ सूची :श्रीमद भागवत गीता (गुजराती) अनुवाद श्री टी एच रियाना – गीता ध्वनि – प्रकाशक :जितेन्द्र ठाकोर

● ●

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य की भूमिका बेल्जियम

वैश्विक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में आज भारत देश में आज देखा जाये तो भारत देश में राष्ट्र भाषा है और यदि यह कह दें कि भारत देश में राष्ट्र भाषा है। लेकिन उसे अमली बनाया गया नहीं है। विश्व की महाशक्ति अमरीका ,सोविएत संघ ,चीन,फ्रांस ,जापान ,जर्मन,इटली,इंगलेंड,नॉर्वे,आदि को बड़े छोटे देशों में अपनी अपनी राष्ट्र भाषा है। भारतीय दूतावास में, न्यायालयों में सर्वोच्च न्यायालयों में सभी नियमावली में,हिन्दी को व्यवहार में लाने के लिए अंतर्राष्ट्रिय ललित मंच निरंतर 32-33 वर्षो से हिन्दी के प्रचार व प्रसार प्रसार में विविध विविध रूप में लगा हुआ है। देश विदेश में उन्नयन सर्वधर्म के लिए योजनाबद्द होकर कार्य कर रहे हैं।

यह कह सकते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय साहित्य कला ध्येय ने हिन्दी की उन्नयन एवं संवर्धन हेतु नेपाल, श्रीलंका, मोरेशियस नॉर्वे स्वीडन वेस्ट इंडीज उनके विस्तार, सिंगापुर, दुबई, अबूधाबी, फ्रांस, स्वीटजर्लेंड, इटली ऑस्ट्रेलिया, थाइलेन्ड,कंबोडिया,विएतनाम,में हिन्दी समारोह किए हैं। भारत में बहुत सारी हिन्दी संस्थाएं हिन्दी प्रचार प्रसार के लिए आजादी से पहले कार्य कर रही हैं। हिन्दी साहित्य अकादमी प्रयाग हर साल भारत के विभिन्न परदेशों में तीन दिन का हिन्दी साहित्य साम्मेलन आयोजित करती है। हिंदी साहित्य सेवी संस्थान इलाहाबाद,अखिल भारतीय हिन्दी सेवा संस्थान,हम सब साथ साथ है दिल्ली,साहित्य मण्डल नाथद्वारा राजस्थान तो बिना कोई रजिस्ट्रेसन राशि साल में दो बार कार्यक्रम करते हैं और हिन्दी सेवीओं को सम्मानित करते हैं। पूरे दिन का कार्यक्रम होता है,बहुत ही सराहनीय कार्य है। सभी के नाम देना उचित नहीं है। अंतर्राष्ट्रिय जर्मनी, नीदरलेंड ,बेल्जियम, यह सारस्वत कार्य कर रहे हैं। इन यात्राओं की अभिव्यक्ति करते हुए साहित्यकारों ने अनेक कृतियां हिन्दी साहित्य को दी हैं। जिंनका अपना अविस्मरणीय महत्व है।

भारत में भी साहित्यकला मंच ने विविध संस्थापित विद्यालयों में और महा विद्यालयों में ,हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में प्रचारित प्रसारित किया करने हेतु जन जागरण स्वरूप अभी सेमिनार और अंतर्राष्ट्रिय संगोष्ठियां संयुक्त रूप से आयोजित एवं संयोजित भी निरंतर कराया है। इस दृष्टि से कश्मीर ,दिल्ली,हरियाणा,पंजाब,उत्तर प्रदेश राजस्थान, मध्य प्रदेश, बंगाल ,बिहार, कर्नाटक, गुजरात, उत्तराखंड आदि प्रांतो में अतर्राष्ट्रिय साहित्य कला मंच समय समय पर आयोजन करता है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी साहित्य एवं संस्कृति में के लिए ,नीदरलेंड ,फ्रांस और बेल्जियम ने अंतर्राष्ट्रिय साहित्य सम्मेलन का आयोजन एवं संगोष्ठीयों का आयोजन होता है,इसका में भी सहभागी हूं। जर्मनी ,ऑस्ट्रेलिया में भी इस तरह का कार्य हो रहा है।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य का इतिहास लगभग 1100 वर्ष पुराना है। हिन्दी पुरुस्कृत हुई है। अनेक विधाएं उद्घाटित हुई हैं। आज लगभग 29 भारतीय राज्यों में हिन्दी विचार विनिमय,व्यवहार व्यापार,की भाषा बन गई है। प्रवासी भारतीयों ने हिन्दी प्रयोग अनुरूप व विश्व में भाषा, सांस्कृतिक परचम लहराया है वह गौरव का विषय है। हिन्दी लेखन की समृद्धि को प्रोत्साहित करने वाले नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान और म्यांमार (बर्मा) आदि का काम विशेष रूप से से उल्लेखनीय है ।

यदि विश्व के अन्य महाद्वीपों पर नजर उठाएं तो प्रवासी हिन्दी लेखन की समृद्धि के स्त्रोत हमें वहां प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। सर्वप्रथम अमेरिका में, कनाडा में, मेक्सिको में और क्यूबा में भी हिन्दी लेखन की ,हिन्दी साहित्य ज़ोर शोर से चल रहा है। यदि यूरोप महा द्वीप की बात करे तो गर्व से कह सकते हैं कि हिन्दी,हिन्दी लेखन ,और हिन्दी साहित्य ,हिन्दी संस्कृति का विचार वहां निरंतर हो रहा है.

यूरोप में रूस, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम, होलेण्ड, निदरलेंड, ऑस्ट्रिया, स्विटज़रलैंड, डेन्मार्क, पोलेंड ,हंगेरी, चेंक, रोमानिया, बलगिरिया ,उक्रेन तथा कोसिया आदि देशों में हिन्दी अपने पाँव पसार रही है।ओपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में लेखन–सृजन के संदर्भ में हिन्दी भाषा और साहित्य अपनी रचनात्मक उपस्थिती दर्ज कर रही है। कभी किसी जमाने में हिन्दी भारतीय सीमाओ में ही कम विस्तार पर रही है। किन्तु अब अंतरराष्ट्रिय परी व्यापीत ने हिन्दी को पंख लगा दिये हुए है।

याद है की, महात्मा गांधीजी ने प्रवासी भारतीयो के लिए जो लड़ाई लड़ी थी ,संघर्ष किया था ,उसमें उनकी भाषाओं तथा भारतीय संस्कृति का वैश्विक लोक स्वीकृति प्राप्त हुई दक्षिण आफ्रिका में गांधीजी ने इस समस्या के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद की थी। भारत से विदेशगमन करते समय भारत मूल के निवासियों ने अपने साथ रामचरित मानस ,हनुमान चालीसा, गीता, सत्यनारायन कथा ,सुन्दरकाण्ड पुस्तक तथा गंगाजल अपने सह यात्री बताए हैं । इन्हीं के माध्यम से भारतीय संस्कृति का आस्था–विश्वास को उन देशों में प्रतिष्ठित स्थापित किया है। जहां जहां वे गए है। एग्रीमेंट के अंतर्गत जाने वाले विदेशों में ये गिरमिटिया मजदूर अनेक देशों में शासक हैं।

हिन्दी विधा में सैंकड़ों विद्वान गिनवाए जा सकते हैं ,जिन्होंने हिन्दी कोश कार्य में साहित्य ,इतिहास लेखन में अविस्मरणीय योगदान दिया है। जॉर्ज ग्रियसन द्वारा निकोव, ताईसीतोई, जॉन काइट्लर, ठांस कल, ब्रुक ,गासाद,तासी विलियम प्राइज ,प्रो. यांग,क्राइस्ट । जॉन फार्मूसन,कैटलर,बूलके आदि को भुला सकता है

? इस प्रकार लोठार लुजसे ,डॉ. मारिया सिस्टोफ ,डॉ. आमलेन सोकल,डॉ. रूपल समेल,प्रो जिन दीग हाने,डॉ. तोमियों,मिजोकमी, आदि सैंकड़ों विदेशी हिन्दी सेवी विद्ववानों को भुलाया नहीं जा सकता है। अपनी मौलिक सृजनात्मक प्रतिभा से अनुवाद कला से सम्पादन कोशल से कोश निर्माण विवेक से इतिहास लेखन तकनीक कई लोर्गो का मानना है कि, साहित्य में साश्वत या सार्वभोम जैसी कोई चीज नहीं है। कोई भी साहित्य वृत समान रूप से सबके आस्वाद का विषय नहीं बन सकता। इसमें रचनाकार तथा पाठ्क की निजता ,परंपरा,एवं जीवन मूल्य बाधक बनते हैं। भारत में तुलसी चरित महा काव्य रामचरित मानस धार्मिक ग्रंथ माना जाता है। परंतु इसकी स्वीकार्यता सवर्ण हिन्दूओं तक ही सीमित है ,ऐसा कहा नहीं जा सकता है ,हिन्दू जिसे असवर्ण मानते हैं वो भी सीमित रूप से ही सही उसे धार्मिक ग्रंथ मानते हैं। दलित हिन्दू समाज भी उसमें इत्फ़ाक रखता है।

सच्चा साहित्यकार,उदात्वेता,महान कलाकार,मानवतावादी,चिंतक ,एवं प्रकृति प्रेमी भी होता है। जिस प्रकार सृष्टि करता ब्रह्मा अपनी सृष्टि के प्रति सम दृष्टि रखते हैं। ऐसे ही समदृष्टि साहित्यकार को भी अपनी सृष्टि के प्रति रखनी होती है। जो साहित्य आनंद प्रदान करने वाला मानवीय मूल्यों का पोषक ,सम दृष्टि का वाहक एवं जीवन मूल्यों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने वाला होता है वहीं वहीं क्षेत्रीय सीमाओं से ऊपर उठकर विश्व जनित हो सकता है। भारत ने रवीद्र नाथ टैगोर जैसे विश्व कवि को भी जन्म दिया है। साहित्य केवल वर्तमान दर्पण दिखाये एसा साहित्य ही सच्चे अर्थो में सार्थक साहित्य हो सकता है। लेखन मात्र साहित्य नहीं है।

हिन्दी अगर आत्मा के साथ विश्व पटल पर दिव्यमान हो रही है,तो यह उसकी भीतरी ऊर्जा और शक्तिमता का ही प्रमाण है। आज उच्च प्रायोगिक एवं सूचना संचार ने सम्पूर्ण संसार में एक 'विश्व ग्राम' बनाकर जहा मानवीय सुविधाओं अति वृद्धि की है,वही अनेक भाषाओं शेली ,तथा सभ्यता सांस्कृतिक की जड़ों को कमजोर करने का कार्य करने वालों को खत्म किया है। विश्व में बोले जाने वाली तेरह सो प्रमुख भाषायें हैं। हिन्दी साम्राज्यवाद को आगे ले जानेवाली आज प्रमुख भाषा बनने जा रही है। उसकी ताकत का समकालीन स्वतन्त्रता सेनानीओं ने सामना किया है और हिन्दी को आगे बढ़ाने के लिया महात्मा गांधीजी की प्रेरणा को लक्ष्य में लेकर हिन्दी को आगे बढ़ा नेक उमदा कार्य किया है। वह गांधीजी के साथ गुन गुनाती है।

हिन्दी के वैश्विक में भाव यदि समझना है तो भारत से बाहर के मानचित्र पर दृष्टिपात करे तो फ़िजी ,गुयाना ,मोरेशियस ,सूरीनाम दुबईगो ,ट्रिनाद,आदि देशों में आधी आबादी हिन्दी भाषी है। नेपाल का समवर्ती क्षेत्र हो या सोविएट संघ में तकाजीस्तान अफ़्घ्निस्तान ,आदि के क्षेत्र में वह हिन्दी के प्रति प्रयोक्ता मिल जाएंगे। लंदन ,न्यूयोर्क ,हाँग काँग ,मलेशिया ,सिंगापूर ,आदि महानगरों तथा देशों में हिन्दी का प्रदीप जलता हुआ देखा जा सकता है। विश्व

बाजार के अनुरूप हिन्दी आज जर्मनी ,जापान ,कनाडा रूस ,इन्डोनेशिया ,ब्रिटन अमरीका,पाकिस्तान,बांग्लादेश ,म्यांमर आदि देशों में अपनी स्थिति सुदढ़ करने में संलग्न है। राजभाषा भाषा भारत में प्रकाशित डॉ. जयंती प्रसाद नोतियाल के शोध पत्र अनुसार विश्व भर में हिन्दी जानने वाले सबसे अधिक है। चीनी भाषा अर्थात मंदारिणी जानने वाले की संख्या हिन्दी से काफी पीछे है। विश्व में हिन्दी जानने वालों की संख्या बारहसों मिलियन है। तथा विश्व में मंदारिणी जानने वालों की संख्या एक हजार पचास मिलियन है।

तुलसी साहित्य में विशेष रुचि रखने वाले ए पी वारनकोन ने हिन्दी का जो दीप प्रजाव्लित किया उसकी ख्याति सोविएट संघ के विश्व विद्यालयों में विकीर्ण हो रहा है। सेंट पीटर बर्ग और मक्का विश्व विद्यालय में लगभग आज हिन्दी अध्ययन का प्रधान केंद्र है। स्वीडन के स्टोक होम में लगभग सत्तर के दशक से हिन्दी का अध्ययन ,पठन पाठन हो रहा है। यूरोप के अन्य देशों फ्रांस,चेक,ऑस्ट्रिया,रोमानिया,उक्रेन आदिके विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षा ,हिन्दी के विषय को समूहात्मक बनाया है। नेपाल का त्रिभुवन विश्व विद्यालय भारतीय भाषाओं के समादर के लिए विश्व प्रख्यात है। बुतन बोद्ध मतावलंबी देश है। इस लिए वहा हिन्दी संपर्क भाषा है। इस लिए वहां संस्कृति ,पाली तथा हिन्दी आदि का प्रयोग होता है। वहां हिन्दी संपर्क भाषा की भूमिका अदा करती है' श्री लंका के प्रसिद्ध विश्व विद्यालय कोलंबो के लणीमजयवर्धन ,आदि में हिन्दी भाषा साहित्य एवं संस्कृत के शिक्षण प्रशिक्षण का समचित प्रबंध है। श्रीलंकाई छात्र हिंदी का ज्ञानार्जन हेतु भारत आते हैं। भारत के आगरा में केंद्रीय हिन्दी निदेशालय संस्थान आगरा में अनेक विदेशी छात्रों के साथ श्रीलंका के विद्यार्थी हिन्दी की पढ़ाई करते हैं।

सोशियल मीडिया :

हिन्दी वैश्विक क्षितिज पर सोश्ल मीडिया की भूमिका में भी बहुत आगे हैं,सोश्ल मीडिया इलेट्रोनिक उपज है। कम्प्यूटर ,स्मार्ट फोन,इंटरनेट का उपयोग व्यापार एवं परस्पर संबंध बढ़ाने में ज्यादा उपयोगी है। फेसबुक ,ट्विटर ,सोश्ल नेट बेंकिंग,मोबाइल एप्स,यू ट्यूब ,टीवी वेब डिज़ाइन ,न्यूज़ सोश्ल मीडिया के प्रभावी माध्यम और प्रकार हैं। जिसमें हिन्दी भाषा का प्रयोग ८०% होता है,जबकि अंग्रेजी का २० % खपत होती है। ई पेपर ई पत्रिकाओं ने हिन्दी पाठकों का विश्व व्यापी वर्ग तैयार किया है। ई मेल,ई कॉमर्स,ई बुक,एस. एम. एस. वेब जगत में हिन्दी अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर रही है। इसलिए वह सोश्ल मीडिया के माध्यम से सामाजिक ,राजनैतिक,सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिवर्तन की भूमिका महत्वपूर्ण रूप से निर्वहन कर रही है।

उपग्रह द्वारा प्रसारित विभिन्न चैनलों के माध्यम से हिन्दी विश्व के हर डिस्कवरी चैनल ,नेशनल जियोग्राफी ,चैनल तथा दी कार्टून चैनल का हिन्दी में प्रसारण इसकी पहल है। स्टार न्यूज़ जैसी अंग्रेजी चैनलें हिन्दी में रूपांतरित हो गई है। यूरोप ,अमरीका अफ्रीका ,आदि खाड़ी देशों में हिन्दी के कार्यक्रमों के

प्रसारण हो रहे हैं। बी बी सी लंदन द्वारा प्रसारित हिन्दी कार्यक्रमों के प्रति भी लोगों को आकर्षण है।

माइक्रोसॉफ्ट गूगल ,याहू,आई जी एम तथा औरेंकल जैसी विश्व की प्रमुख कंपनीओं ने विशुद्ध व्यापारी दृष्टि और लाभ के लिए हिन्दी के प्रयोगों को बढ़ा रहे हैं। हिन्दी में चैटिंग की सुविधा उपलब्धहै। भारत की नागरी प्राचीरिणी सभा द्वारा प्रकाशित बारह हजार पृष्ठों का 'विश्व हिन्दी कोश ' तथा अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा (नागपुर के पास महाराष्ट्र में) हिन्दी साहित्य के एक लाख पृष्ठों को इंटरनेट पर उपलब्धकराना हिन्दी को वैश्विक बनाने की दिशामें महत्वपूर्ण कदम है। मातृभाषा डॉट कॉम वेब पोर्टल ने 11 लाख हस्ताक्षर हिन्दी में बदलाव कराये है,स्पेनिश ने अभी तक 8 लाख हस्ताक्षर हिन्दी में बदलाए है। गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड भी मातृभाषा डॉट कॉम ने प्राप्त किया है, लंदन से पूरी टीम जानकारी लेने इंदौर आई हुई थी।

उन्हें हार्दिक बंदाई देते हैं। मातृ भाषा डॉट कोम के 15 लाख फोल्लोर्स हैं। दस हजार साहित्यकारों का कोश वे पब्लिश कर रहे हैं। हम भी उसके फोल्लोर्स हैं। ये जानकारी आज मोबाइल फोन पर हमें उपलब्धकराई है'।

हिन्दी साहित्य सभ्यता व संस्कृति का संवाहक है। भारतीय प्राचीन संस्कृति ,धार्मिक मान्यताएं तीर्थ ,नदियां ,पर्वत यग्न, साहित्यिक ग्रंथ आदि भावात्मक ,एकात्मक में सहायक है। फिल्म में एवं हिंदी गीतों भारतीय संस्कृति तथा हिन्दी भाषा को प्रिय बना दिया है।

हिन्दी से आचार संहिता और संस्कृति से संस्कार मिलते हैं,उसका आधुनिक विकसित स्वरूप हिन्दी से सामाजिक संस्कृति का संवाहक है।

संस्कृति सम् पूर्वक कृ धातु से भाव अर्थ में कित् प्रयत्न करने पर संस्कृति शब्द बनता है। जिसका अर्थ होता है परंपरागत अनुच्युत संस्कार । वास्तव में शुद्ध ,शुभ तथा सुसम्बद्ध करने की क्रिया को संस्कार कहते हैं। मानव समाज ने अपनी भूमि और सहज प्रवृतियों का परिष्कार तथा संस्कार करके आचार विचार,भावना संवेदना,आध्यात्मिक साधना,कलात्मक रचना धर्मिता,रचनात्मक आनंदोपयोग,और परोक्ष दिशाओं की काम्यतातिक प्रतीति आदि के क्षेत्र में अकल्पनीय यात्रा ये की है यही मानव संस्कृति है।

यदि कुछ शब्दों में संस्कृति की परिभाषा देना है तो हम कह सकते हैं कि,जीवन में मूल्यों का सिद्धान्त और प्रयोग रूप ही प्रत्यक्षीकरण संस्कृति है। संस्कृति केवल मानव ही से आती है। किसी अन्य जीवन में नहीं, सभ्यता के समान सांस्कृतिक जीवन भी पंख होते है। जो देशकाल वो दूरियां पार करके दूर दूर तक सांस्कृतिक विचारों को पहुंचाता है। कारण यही है कि प्राचीन सभ्यता वाले देश जिसकी समुन्नत संस्कृति दूर तक फैलती है। और आज भी उन्नत की दूरी पार करके एक देश से दूसरे देश में पहुंच रही है। संस्कार वैदिक होते हैं,और जातीय भी ,जातीय संस्कारों के समाविष्ट का नाम ही संस्कृति है। धर्म में भी पार्थ !उन्ही संस्कारो का समावेश रहता है, जो संस्कृति ने भारत

में धर्म में धर्म व्यापक अर्थो में स्वीकार किया जाता है। और इस प्रकार वह समग्र मानव जीवन को शासित करता है। धर्म और संस्कार में फर्क सिर्फ इतना रहता है,कि धर्म जहा शास्त्रों और आप्त मनुष्यों के वचनों पर आवृत होता है वही संस्कृति का आधार हमारी परंपराए होती है। जिस के स्वरूप हमें त्योहारो में देखने को मिलते है। धर्म देश निरपेक्ष है। किन्तु संस्कृति देश सापेक्ष है। संस्कृति जीवन का संस्कार है,वह केवल अतीत की विरासत नहीं है, अपितु भविष्य की संभावना है। संस्कृति के बिना जीवन पशुतुल्य है। वह कई सिरो पार जाने का अर्थ मानवता की उरद्ध गति और मनुष्य की सृजन क्षमता को ही व्यक्त नहीं करता अपितु उसे निरंतर आगे बढ्ने के लिए सचेत भी करता है। भारतीय संस्कृति में समन्वय करने की अद्भुत क्षमता है। विभिन्न प्रांतो में भिन्न भिन्न संस्कार जैसे क्षत्रिय ,विशेषकर के तीज त्यौहार,उत्सव,रहन सहन,खान पान,वेश भूषा ,धार्मिक विश्वास ,आमोद प्रमोद,लोक कला,लोक गीत आदि में जहा क्षेत्रीय संस्कृति का स्वरूप दिखाई देता है। वही रीत रिवाज ,परम्पराए ,वेश भूषा आदि संस्कार हमारे जीवन को प्रभावित करने के लिए हमारे संबंध को भी प्रगाढ़ बनाते है। भारतीय समाज सोलह संस्कारो से भांति भांति परिचित है। इस संस्कारो से सोकन व्यक्ति सुसंस्कृत कहा जाएगा ,प्रत्येक समाज की अपनी एक संस्कृति होती है। समाज के चित्रण के साथ संस्कृति भी साहित्य में समाविष्ट हो जाती है। ये बात शिष्ट साहित्य के लिए है। लोक साहित्य में तो विशेषताएं और भी सुंदर रूप से स्पष्ट होती है, क्योंकि लोक साहित्य में तो सम्पूर्ण लोक जीवन ही मुखर रहता है। लोक जीवन के अंतर्गत लोक की संस्कृति भी साथ रहती है। पुरातात्विक उत्खनन की वस्तुओं के माध्यम से संस्कृति का निरधारण किया जाता है। और हम कहते हैं कि,उस समय की संस्कृति के अमुक अलग विशेषताएं हैं। बात यह है कि ,उत्खनन से प्राप्त विभिन्न युग और कालों पर तत्कालीन समाज की संस्कृति का प्रभाव अवश्य पड़ता है। इस संदर्भ में डॉ. सत्येंद्र का कथन शत प्रतिशत सत्य जान पड़ता है। या प्रत्येक प्रकार का उत्पादन ,प्रजाजन ,धर्म,अर्थोपजन ,के ढंग साधन और विद्या जादू टोना जंतर मंत्र,जीवनचर्या के प्रसाधन ,कला कौशल ,सभी का संबद्ध संस्कृति से है। संस्कृति इस प्रकार समाज में व्याप्त होकर एक परंपराएं भी स्थापित करती है। प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के अंतर गत सभी प्रमुख कार्य संस्कारों से आरंभ होने का उस समय संस्कार भी संख्या की दृष्टि से काफी अधिक थे जैसे जैसे समय बदलता गया लोगों की व्यस्तता बढ़ती गई,परिणाम स्वरूप संस्कार की संख्या घटती गई और अधिकांश लुप्त प्राय हो गई।

यह मनु स्मृति में सोलह संस्कारों का वर्णन हुआ है तथा धर्म शास्त्रों में भी उनकी संख्या सोलह संस्कार की गई है। भारत में भोजपुरी समाज में सभी व्यास स्मृति में और धर्म शास्त्रों को ही प्रमाण मानकर मनुष्य के शरीर व आत्मा की उत्तमता के लिए गर्भाधान से लेकर शमसान अर्थात मृत्यु के पश्चात

अंत्येष्टी संस्कार एक हिन्दू धर्म के सोलह संस्कार माने गए हैं। और आप भी हम भी इन सोलह संस्कारो का दैनिक जीवन में प्रयोग देखते हैं,व साहित्य में भी इन्हीं सोलह संस्कारो की चर्चा हुई है। ये सोलह संस्कार है– गर्भाधान,पुंसवन ,सीमंतोनयन,जात कर्म ,उपनयन,वेदारंभ ,केशांति ,समावर्तन विवाह तथा अंत्येष्टि प्रमुख है।

भारतीय संस्कृति में नाम को विशेष महत्व दिया गया है। ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा पूर्व व्यक्तित्व का आंकलन हो जाता है। उसके व्यक्तित्व की पहचान होती है। चूड़ाकर्म संस्कारों का आजतक जडुला उतारना भी कहा जाता है,चूड का शाब्दिक अर्थ है,–शिखा,चूड़ाकर्म के अंतर्गत बच्चे का शिर से बाल पहली बार उतारे जाते हैं।

प्राचीन काल में यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात बालक गुरुकुल में भेज दिया जाता था,इसे उपनयन कहते है,प्राचीनकाल में माता पिता संस्कृत बोलते थे,उस समय वेदारंभ संस्कार किया जाता था,सर्व प्रथम गायत्री मंत्र सिखाया जाता था। केशांत संस्कार के पश्चात् समावर्तन संस्कार किया जाता था।
विवाह संस्कार मानव जीवन एवं सृष्टि की निरंतरता के लिए अति आवश्यक है। विवाह संस्कार प्रजोत्पत्ति के लिए आवश्यक है। मरणोपरांत किए जाने वाले सोलहवां संस्कार अंत्येष्टि या दाह संस्कार कहलाता है। यह मानव जीवन का अंतिम संस्कार है। भष्म पुराण में अंत्येष्टि का वर्णन है,शव को गाड़ना ,जलाना या फेंकना,मनु स्मृति के अनुसार भारत में दो साल के बालक का शव जमीन में गाड दिया जाता है।
लोक संस्कृति की आत्मा साधारण जनता है,जो दूर दूर नगरों या गांवो में निवास करती है। भारतीय गांवों में रहने वाली जनता संस्कृति की मूलाधार है।

गीता में स्वयं श्री कृष्ण ने कहा है कि तुलसी का पौधा भारतीय लोक मानस में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है, हर घर में तुलसी का पौधा लगाया जाता है। एकादशी पूर्णिमा के दिन तुलसी विवाह किया जाता है। पीपल के पेड़ के नीचे जल अर्पित करना और दीप जलाना यहां की संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग माना गया है । ऐसा कहा जाता है कि पीपल के वृक्ष के नीचे जड़ में ब्रह्मा तन में विष्णु और शाखाओं में शिव का वास होता है।

भोजपुरी समाज में सियार,भेड़िया,लोमड़ी तथा बिल्ली का रास्ता काटना शरीर पर छिपकली गिरना तथा सोना पाना या खोना दोनों अपशकुन माना जाता है। लोक जीवन और लोक संस्कृति का बड़ा घनिष्ठ संबंध है। साहित्य लोक साहित्य की आत्मा है और लोक संस्कृति उसकी काया है।

अंग्रेजी भाषा अमरीका ,ब्रिटेन ,आस्ट्रेलिया,जैसे देशों की भाषा है। इसलिए पूरे

विश्व में उसका जतन होता है। कहते हैं कि ब्रिटेन का सूर्य कभी अस्त नहीं होता था। इसलिए अपने प्रत्येक उपनिवेश में अंग्रेजी को जबरन थोपा गया है। एवं इसे विश्व की श्रेष्ठ भाषा घोषित किया गया था।

भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने सर्वप्रथम यू एन ओ में (संयुक्त राष्ट्र संघ) में हिन्दी में भाषण किया था ,जिसे वर्तमान प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा पुनर्जीवित रखा गया । यह हमारे भाषा एवं संस्कृति के लिए गौरव की बात है। भाषा संस्कृति की संवाहक होती है। भारतीय संस्कृति हमेशा सम्पूर्ण विश्व के लिए जिग्नासा ,उत्सुकता और अनुकरण का विषय रही है।

न्यूजीलेंड में केवल भारतीय संस्कृति के बोध हेतु बल्कि व्यवसायिक स्तर पर भी हिन्दी का भाषा की कक्षए चलाई जाती है। चीन में हिन्दी भाषा को जानने समजने के लिए पाइजिंग विश्व विद्यालय के indology विभाग भी खोला गया है। जो हिन्दी की वैश्विक प्रगति के लिए संकेत है। हिन्दी का जयकार सात समंदर पार में हो रहा है।

भाषा संस्कृति की संवाहक ही नहीं होती है,किन्तु भाषा संस्कृति का पर्याय भी होता है। भाषा जब संस्कृति का रूप धारण करती है तो उसका तीव्रतर विकास होता है। जैसे चीन,जापान। नेपाल आदि। केवल भाषायें ही नहीं संस्कृति भी है

मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में किसी भी देश की राष्ट्र भाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। निज भाषा विश्व के राष्ट्रों ,प्रांतो के सम्पूर्ण और सर्वांगी विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। विश्व के देश अपनी अपनी राष्ट्र भाषाओं की समृद्धि के बल पर मानव सामाजिक जीवन को इतना सुदृढ़ बना सकती है तो स्वदेशीय राष्ट्र भाषा की महत्ता उभर कर सामने आती है। हिन्दी ही समस्त संस्कृतिक ,सार्वजनिक और साहित्यिक जीवनको वहाँ कर सकती है।

रवीद्र नाथ भारत के गुरुदेव टैगोर के कथन अनुसार ‘‘सभ्यता की भाषा में खास दिक्कत यह है कि,सब जगह और सब तरह के लोग उसे समझ नहीं पाते है और सुसभ्यता की भाषा की यह शान है कि,उसे सब जानते हैं ”।

भाषा भारतीयों की अस्मिता बनाए रखने में सार्थक सिद्ध हुई है,वहीं उसने मानवीय मूल्यों को भाषा के रूप में भारतीय धर्म, संस्कृति ,एवं विभिन्न कलाओं के माध्यम से ‘‘वसुदेव कुटुंबकम ” के संदेश का प्रसार किया है। इतना ही नहीं भारत के पश्चिम स्थित भागों में हिन्दी का विश्व के भिन्न भिन्न देशों में पहुंचाया है। और इसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। इससे स्पष्ट होता है

कि,विश्व में हिन्दी का व्यापक स्थान निर्धारित हो चुका है। भाषाओं के विस्तार का आंकलन करें तो यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि,हिन्दी भाषा का बहुत महत्व है। आधुनिक युग में आदान प्रदान के उन्मय आवश्यकताओं से भाषाओं का विस्तार हुआ है।

हिन्दी के अंतर्राष्ट्रीय रूप के पीछे उसका वैज्ञानिक लिपि देव नागरी लिपि विश्व लिपि बनने में पूर्ण सक्षम है। देव नागरी लिपि के द्वारा विश्व की सभी भाषाओं को सरलता से समजा जा सकेगा । हिंदी को विश्व की महान भाषा कहा गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने हिन्दी को पहला स्थान दिया है।

इगलेंड का भारत से पुराना और घनिष्ठ संबंध है । वह बहुत समय से कुछ अंग्रेज़ी विद्यालय हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं। आज भी इंगलेंड में हिन्दी का पठ्न पाठ्न हो रहा है। परंतु वह हिन्दी पढाने वाले अधिकांश अध्यापक भारतीय है। केंब्रिज में तुलसी की 'विंस पत्रिका 'और कवितावली पर महत्वपूर्ण कार्य किया है।

फ्रांस में हिन्दी व्याकरण,सरल पाठ ,उच्चतर पाठ्य पुस्तके तथा फारसी भाषा से हिंदी में ,और हिन्दी भाषा से फारसी भाषा में अनुवाद होता है। इट्ली में भी हिन्दी के अध्ययन के लिए सुचारु व्यवस्था है। इनवली भाषा में हिन्दी के कुछ प्राचीन ग्रंथ साहित्य तथा प्रेमचंद की कुछ कहानिया का अनुवाद हो रहा है।

भक्ति आंदोलनः

हिन्दी तीर्थों की भाषा है। कश्मीर से कन्या कुमारी तक भारत को जोड़ने वाली भाषा है। हरद्वार ,प्रयाग,इलाहाबाद ,कुरुक्षेत्र और उज्जैन जानेवाले तीर्थ यात्री परस्पर हिन्दी में ही संपर्क करते है। बद्रीनाथ,केदारनाथ ,गंगोत्री,यमनोतरी,जाने वाले तीर्थ यात्री परस्पर संपर्क हिन्दी के द्वारा ही करते है। इसी प्रकार उत्तर से तिरुपति,कांची,रामेश्वरम या कन्या कुमारी जानेवाले सभी यात्री हिन्दी के माध्यम से ही अपना संपर्क करते है। मैं केरला तिरुवनतम पुरम भारत सरकार की और से हिन्दी सम्मेलन में गया तब वह भी मैंने हिन्दी भाषा के माध्यम से ही संपर्क बनाया था।हिन्दी भक्ति आंदोलन की भाषा है। मध्यकाल का भक्ति आंदोलन है,भारत से ही जन्मा था। भक्ति द्रविड़ उदयमी लाये रामानन्द और रामानन्द ने इसे हिन्दी के द्वारा ही पूरे भारत में फैला दिया था। बंगाल के चैतन्य महा प्रभु ,ज्ञान दात्र तथा असम के शंकर देव ,माधव देव,एवं उड़िया के रामानन्द भट्ट नायक जगन्नाथ दास ,अन्नद दास ,संत रविदास आदि द्वारा बंगाल असम तथा उड़िया में प्रचुर मात्रा में भक्ति साहित्य लिखा गया था। संत रविदास ने बनारस में भक्ति काव्य रचा था ,प्रभु तुम चन्दन हम पानी बहुत प्रसिद्ध है।

रेडियो टीवी :

हिन्दी रेडियो की भाषा है। आज भी प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी मन की बात रेडियो पर देते हैं और पूरा भारत देश इन्हें सुनता है। हिन्दी दूरदर्शन की भी भाषा है। हिन्दी भाषा में ही लोग आजतक,जी न्यूज़ ,और एनडीटीवी पर हिन्दी में ही न्यूज़ सुनते है। हिन्दी में बहुत सारी धारावाहिक भी लोगों को जकड़ कर रखती है। ये रिश्ता क्या कहलाता है। हिन्दी में बच्चों के लिए कार्टून भी आते हैं। रामानन्द सागर की रामायण ने हिन्दी को बहुत ही प्रसिद्ध किया है। ऐसे ही महाभारत भी प्रसार किया है।

प्रवासी हिन्दी साहित्य :

प्रवासी हिन्दी साहित्य ने हिंदी का भारतीय संस्कृति का का ध्वज विश्व भर में फहराया है। डॉ. कमल किशोर गोयनका कहते हैं कि,"वास्तव में हिन्दी प्रवासी साहित्य में हिन्दी साहित्य की एक शाखा है,प्रवासी शेत्य ने विदेशों में भारतीयों को भारतीयता से जोड़े रहने में अच्युत सहयोग किया है। प्रवासी साहित्यकार जब अन्य देश की संस्कृति में रच पच जाता है और वह अपने देश की उदात्त जीवन शैली को भूल जाता है प्रवासी हिन्दी साहित्य अपनी गुणवत्ता में पर्याप्त है।

अमरीका में सरकार हर वर्ष हिन्दी टीचर को प्रशिक्षित करने के लिए बहुत सी धन राशि प्रदान करती है। न्यूयोर्क विश्वविद्यालय में हम लोग उन्हें प्रशिक्षित करते हैं। गर्मी में पूरे अमरीका में बच्चों को हिन्दी पढाने के लिए सरकार की ओर से केंप लगाए जाते हैं। स्टार की टॉप का कारण भी हिन्दी की प्रगति हुई है। जिसमें हिन्दी भाषा ,संस्कृत भाषा ,और वेद पुरानो का अध्ययन कराया जाता है,। अमरीका के साहित्यकारों ने हिन्दी के आंदोलन को एक रूप देने के लिए साहित्य मंच की स्थापना की है। न्यूयोर्क में अखिल विश्व हिन्दी समिति 'सोरभ ' आंतरराष्ट्रीय हिन्दी समिति ,विश्व हिन्दी मंच हिन्दी न्याय ,ने 'हिन्दी जगत 'नामक पत्रिकाएं प्रकाशित कर हिन्दी शिक्षण के प्रचार प्रसार के लिए उदय शिखर तक पहुंचाया है। इक्कसवी सदी में हिन्दी केवल भारत में नहीं किन्तु पूरे विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान स्थापित किया है।

सिनेमा :

साहित्य और सिनेमा दोनों ऐसे माध्यम हैं जिनमें समाज में परिवर्तन लाने की शक्ति सबसे ज्यादा है। इन दोनों का घनिष्ठ संबद्ध है। साहित्य और सिनेमा का मुख्य उदेश्य आनद का सृजन करना है। समाज को नई दिशा देने की क्षमता दोनों में है। सिनेमा साहित्य की एक विधा है। डॉ. राही मासूम रजा भव्य फिल्म में विदेशी तथा भारतीय स्त्री की कथा व्यथा कथा को व्यक्त किया गया है, स्त्रियों के उत्पीड़न और लांछित किए जाने के संबद्ध में है। जिस तरह साहित्य समाज से प्रभावित होता है,उसी प्रकार सिनेमा भी समाज से प्रभावित होता है। भारतीय हिन्दी फिल्मों में गांधीवाद,मानवतावाद ,मार्क्सवाद ,समाज वाद आदि को

कई रूपो में दिखाया गया है। साहित्य और सिनेमा दोनों हमें समाज के विभिन्न पक्षो में जानकारी देता है। अमृता प्रीतम का पंजाबी उपन्यास 'पिंजर'परहिन्दी में फिल्म बनी थी। इस उपन्यास पर 'गदर' फिल्म 2001 में बनी थी। जिसमें भारत विभाजन के समय की व्यथा को व्यक्त किया गया है। ऐसा कह सकते हैं कि,हिन्दी साहित्य पर आधारित अनेक फिल्मों का निर्माण हुआ है। भाषा हमें विचारों एवं भावों को व्यक्त करने का साधन ही नहीं बल्कि हमें संस्कारों से भी जोड़ती है। हिन्दी का पहला अखबार उदित मार्तंड कोलकाता से प्रकाशित हुआ था हिन्दी के प्रचार प्रसार में और संस्कृति के फैलाने में न्यूज़ पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है।

हिन्दी विश्व की 3000 भाषा में से एक है। अपभ्रंश भाषा को हिन्दी की आदि जननी माना जाता है। यह विश्व के महा द्वीपो में तथा महत्वपूर्ण राष्ट्रों में प्रयुक्त होती है।

हिन्दी का वैश्विक स्वरूप :

लगभग 130 करोड़ लोग विश्व के 160 देशों में बोल रहे है। वर्तमान समय में हिन्दी संसार के लोगों को एक दूसरे के करीब लाने की समन्वय सूत्र का काम कर रही है। इसकी साहित्य सृजन कला काफी पुरानी है। संस्कृत भाषा के बाद हिन्दी साहित्य का काव्य साहित्य उत्तम माना गया है। हिन्दी विश्व की दश शक्तिशाली भाषाओं में से एक है। जो विश्व भाषा के पटल पर उभरी है। बोलने वालों की संख्या अनुसार विश्व की दो सबसे बड़ी भाषाओं में से एक है,अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी सयुक्त राष्ट्र संघ में एक असरकारक भाषा के रूप में मान्यता के लिए मोरेसियस में विश्व हिन्दी सचिवालय सीमित साधनो के साथ निरंतर प्रयासरत है। विश्व के अनेक देशों में विश्व विद्यालयों में हिन्दी की शिक्षा दी जा रही है। विश्व की अन्य भाषाओं में भी हिन्दी के उत्तम शेत्य की उपलब्धि है। वैश्वीकरण के दबावों में चलते दुनिया के प्रभावशाली देशों में हिन्दी रचनात्मक जुड़ाव तथा विचार विमर्श का सबल माध्यम बन चुकी है। इसे हिन्दी सिनेमा के संवादों एवं गीतों से अत्याधिक लोकप्रियता मिली है, आज विश्व में सबसे ज्यादा पढे जाने वाले समाचार पत्रिकाओं में आधे से अधिक हिन्दी है। वैज्ञानिकता की दृष्टि से हिन्दी और देव नागरी दोनों एकीकरण की प्रक्रिया से गुजरती हुई संरचनात्मक दृष्टि से सरल बनी है। यदि संयुक्त राष्ट्रसंघ लोक तांत्रिक ढंग से विस्तार करते हुए भारत को स्थायी प्रतिनिधित्व देता है तो हिन्दी इस शीर्ष संस्था की भाषा बन जाएगी । प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी का वैश्विक स्वरूप में हिन्दी भाषा की विश्व पटल पर स्थिति को केन्द्रित रखा गया है। वर्तमान में हिन्दी को विश्वस्तरीय कंपनी या भी व्यापक स्तर पर बढ़ावा दे रही है। इसलिए हिन्दी भाषा विश्व भाषा बनने की दिशा में उत्तरोत्तर अग्रसर है। हिन्दी यूरोपीय परिवार की भाषा है। जागरण के मुख्य ब्यूरो संपादक ओमप्रकाश तिवारी के अनुसार 2005 में विश्व में हिन्दी बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक हो चुकी है। डॉ. जयंती प्रसाद नोतियल के भाषा शोध अध्ययन 2005

के हवाले से लिखा है कि हिन्दी जानने वालों की संख्या एक अरब दो करोड़ पच्चीस लाख दस हजार तीन सौ बावन है। जबकि चीनी बोलने वालों की संख्या केवल नब्बे करोड़ चार लाख छह हजार छह सौ चौदह है। 10 जनवरी 1975 में पहला हिन्दी अधिवेशन नागपुर में भारत में हुआ था। हिन्दी दिवस मनाने के हेतु इस तिथि को विश्व हिन्दी दिवस के रूप में विदेश मंत्रालय भारत द्वारा सन् 2006 में लिया गया था। अब हर साल हिन्दी दिवस हिन्दी प्रेमी 14 सितंबर को भारत में और 10 जनवरी को पूरे विश्व में हिन्दी दिवस मनाने लगे हैं। सबसे पहले सन् 1973 में राष्ट्र भाषा प्रचार सवर्धा की कार्यकारिणी समिति ने विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित करने का प्रस्ताव पारित किया था। 43 वर्षो में ग्यारह विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन के बाद अब यह विचार करना आवश्यक हो गया है की इनकी सार्थकता क्या है। इन हिन्दी सम्मेलनों से हिन्दी ने क्या क्या प्राप्त किया ?हिन्दी स्थापित हो कि या नहीं ? इसमें कोई संदेह नहीं है कि,हिन्दी सम्मेलनों के आयोजन से हिन्दी प्रेमियों और हिन्दी रचनाकारों को एक सशक्त मंच मिला है। हिन्दी जन मानस में हिन्दी साहित्य की रुचि बढ़ी है। हिन्दी का प्रचार प्रसार बढ़ा है। अब ये केवल हिंदुस्तान की भाषा न होकर पूरे विश्व में फैल गई है। हिन्दी को विश्व स्तर पर लाने में विद्वानों की भूमिका रही है। अंत में विश्व भर में हिन्दी सीखने वालों की भी संखया में बहुत वृद्धि हुई है। हिन्दी है मेरे देश की धड़कन,हिन्दी से ही पहचान मेरी, मन के भाव सब तक पहुंचा दे । ऐसी सरल और सरस भाषा है हिन्दी । विश्व भाषा बनने के सभी गुण हिन्दी में विद्यमान है। रजनी साहू अनुरोध करती है कि हिन्दी की काव्य धारा में बहकर तो देखिये, हिन्दी की गद्य शैली में रहकर देखिये,संवेदनाओं की अभिव्यक्ति सहकर भी देखिये अलौकिक आनंद है इस हृदय स्पर्श भाषा और इसकी वाणी में वीणा पाणि के आशीष से फलीभूत शब्द श्रृंखला वाक्य विन्यास और कमल दल के सुक्ष्म तन्तुओं से बंधी व्याकरण की चतुराई देखिये भावों की गहराई महसूस करके देखिये,अविरत बहती सतत् धारा में बहकर तो देखिये ।

● ●

सन्दर्भ सूची :पुस्तक :संस्कृति परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य एवं वैश्विक साहित्य की भूमिका, हिंदी की वैश्विक प्रयोगिकता सन्दर्भ और साहित्य संपादक डॉ सुरेश कांनडे, प्रोफेसर बालेश्वर, प्रो. चम्पा कुमारी, डॉ. महैश दिवाकर

● ●

मौजूदा साहित्य शिक्षा समाज एवं मीडिया में बाल मानस

आधुनिक युग में मीडिया युग छा गया है,आज का बालक इलेक्ट्रोनिक खिलौना मोबाइल का आदि बन गया है। हमारा ही कसूर है की हम बच्चे के हाथ में मोबाइल देकर अपनी मस्ती में झूम रहे हैं। बच्चा भी उसे पसंद इमेज, व्हाट्सअप्प, ट्विटर फेसबुक, देखकर आनंद उठा रहा है।

'संगिनी 'हिन्दी पत्रिका के संपादक बाल विशेषांक दिसंबर 2019 में अपनी बात रखते हुए बताते हैं कि संस्कार सिंचन अच्छा साहित्य ही कर सकता है। बालक ईश्वर बनाई हुई वह अनुपम कृति है, जिससे कायम है जीवन की धारा ,परंपराएँ ,संस्कृति और शाश्वत मूल्य । किन्तु आम परिवर्तन की आँधी का वेग इतना तेज हो गया है की उसमें कुछ विलुप्त होता चला जा रहा है। हमारी परंपराए,पारिवारिक जीवन,आदर्श,संस्कार और विचार इन सबसे पहले प्रभावित होता है। बच्चे का सुकोमल मन दुनिया में पड़ा यह सुकोमल मन अनुभूति कर रहा है। आधुनिक समाज में छाई समस्याओं का किस प्रकार परंपराए लुप्त हो रही है,परिवार टूट रहे हैं। सामाजिक जीवन में कड़वाहट आ रही है। संस्कारों का विघटन हो रहा है। बाल मन एकाँकी अपराध बोध से ग्रसित होता जा रहा है। समग्र रूप से देखें तो सारी स्थिति इतनी सोचनीय है कि कभी कभी लगता है कि वह कौनसी चीज हैं जो हम अपनी जवान पीढ़ी को देकर जाएंगे।

आज साइबर मीडिया के कारण बहुत सी चीजें तेजी से बदल रही हैं। इन बदलावों के कारण बच्चों का सुख चैन छिन गया है। उनकी दुनिया व्हाट्स अप्प, फेसबुक, इंटरनेट, कम्प्यूटर ,और मोबाइल में ही सिमट गई है। अभिभावकों व बच्चों के बीच संवाद की स्थिति कम होती जा रही है,बच्चे इस देश की ताकत है एवं भविष्य भी। इन्हें सही रास्ता दिखाना होगा। कई जानकारों का मानना है की बाल मन को तनाव से दूर रखने के लिए ध्यान, योग,आध्यात्म की शिक्षा के साथ ही अच्छा साहित्य पढ़ने को देना होगा। हमें आशा देनी है, विश्वास देना है, अंधेरे में भटकने से पहले बाल मन को सममाल लेना होगा अन्यथा स्थितिया भयानक होनी है। बस आवश्यकता इस बात की है की बच्चे को कीचड़ से मोती चुनना सिखाया जाय, कंकर से शंकर गढ़ने और पत्थर से प्रतिमा बनाने का संस्कार सिंचन अच्छा साहित्य ही कर सकता है।

हम कई वर्षों से जिस बच्चे को समझने का दावा कर रहे हैं वह आज कहाँ से कहाँ पहुंच गया है? वर्तमान परिस्थितियों में हम

सबको याद रखना भी जरूरी है की बच्चों के विकास और कल्याण के लिए अनुकूल वातावरण करने की दिशा में हमारा क्या उत्तरदायित्व एवं जिम्मेदारिया है वह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रत्येक बच्चे का बचपन खुशहाल बने,वह भूख,उपेक्षा और असुरक्षा से मुक्त हो तथा बच्चों से जो हमारी आशा है और भविष्य है वह सब प्रदान किया जा सके जिससे उन्हें सबसे अधिक आवश्यकता है। बालक का चित्त दर्पण की भाति निर्मल होता है। हम जो उसके समक्ष रखेंगे उसके मानस पटल पर अंकित होगा। अतः बालक को आदर्श नागरिक बनाने के लिए हमें अच्छा और सुंदर बाल साहित्य उनको उपलब्धकरना होगा। पठन पठन के प्रति उनमें रुचि उत्पन्न करना होगा। साहित्य समाज का दर्पण होता है। किन्तु साहित्य की सार्थकता तभी सिद्ध होती है जब वह पाठकों तक पहुंचे।

हमें आज के बालकों को ऐसी पुस्तके प्रदान करनी चाहिए जिसमें बच्चों के लिए बच्चों के संसार की बाते हो ,उनकी समस्याओं, उनके परिवेश और उनका महत्वकांक्षाओं से अभिभावकों, पाठकों को परिचित कराने के साथ ही उनके लिए अच्छी रोचक,मनोरंजक युक्त जानकारी हो। जीवन के यथार्थ से जब तक आज का बच्चा परिचित नहीं होगा तब तक आने वाली ज़िंदगी के लिए वह अपने आपको तैयार नहीं कर पाएगा।

राजकुमार जैन **राजन बाल साहित्य** के ध्वज वाहक है। उन्होंने समीर साहित्य दस्तक पत्रिका के सह संपादक के रुप में सेवा दी है। समीर साहित्य दस्तक की पत्रिका की ओर से बाल विशेषांक भी प्रकाशित गया था। बाल विशेषांक के भी अच्छे संपादक रह चुके हैं। आज वे संगिनी हिन्दी मासिक पत्रिका वडोदरा गुजरात से पब्लिश होती है उसके संपादक के रूप में सेवा दे रहे हैं।

मौजूदा साहित्य :

मौजूदा अच्छा बाल साहित्य प्रकाशित हो रहा है। बाल साहित्य के लिए सलूम्बर में डॉ. विमला भंडारी कार्यरत हैं। हर साल साहित्यकारों को सम्मानित भी किया जाता है। हमें भी उनके द्वारा आयोजित साहित्य कार्यक्रम में सम्मानित होने का सलूम्बर में अवसर प्राप्त हुआ है। अकोला राजस्थान में बाल साहित्य के लिए राजकुमार जैन राजन बहुत ही चिंतित होने के अलावा अच्छे बाल साहित्यकार है। उन्होंने करीबन चार लाख रुपए की बाल साहित्य की पुस्तकें विविध प्रदेशों में पाठशालाओ में भेट में दिया गया है। बाल साहित्य में अच्छा साहित्य सृजन करने वाले साहित्यकारों को राशि के साथ सम्मानित करते हैं।

उनकी बाल साहित्य की पुस्तकें पेड़ लगाओ, बच्चों की सरकार ,आदिवासी

बालक,चिड़िया की सीख,उल्टा रोबट दिलायारे राम नेपाली संस्करण, प्यारी छुट्टी जिंदाबाद,बस्ते का बोझ, हिन्दी बाल कहानियों की मराठी संस्कारण की 20 पुस्तकों का सेट प्रकाशित है। बाल साहित्य विशेषांक का सम्पादन भी उन्होंने किया है। उन्हें कई बाल साहित्य सम्मान प्राप्त हुए हैं। उनकी किताबों का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनकी किताब खोजना होगा अमृत कलश पुस्तक का हिन्दी से गुजराती में अनुवाद करने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है। उनके राजकुमार जैन फ़ाउंडेशन अकोला की ओर से हमें भी याने कि ये लेख के लेखक डॉ. गुलाब चंद पटेल को बाल साहित्यकार के रुप में रुपए 2100 की धन राशि के साथ श्री अंबालाल हिंगड़ सम्मान प्राप्त करने का अवसर मिला है। हमारी हिन्दी में एक पुस्तक मौत का मुक़ाबला प्रकाशित है। हमने 350 से अधिक स्कूल एवं कॉलेजों में अपना वक्तव्य दिया है। हमें बच्चों की जागरूकता के लिए पाठ्शालाओं एवं विश्वविद्यालयों में अपना महत्वपूर्ण वक्तव्य देते हैं।

सदैव प्रसन्न दिखने वाली शालीन तथा कर्म को महत्व देने वाली श्रीमति साधना श्रीवास्तव ने सृजन तथा शाला में शैक्षणिक कार्य में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। उनके द्वारा नाटक लिखे गए हैं। उसकी प्रस्तुतियाँ भी करवाती है। उनकी एक पुस्तक 'बालक की चाहत' भोपाल से बाल कविता संग्रह के रुप में प्रकाशित है। दूसरी 'हम धरती माँ के बेटे' भी बाल कविता संग्रह भोपाल से पब्लिश हुई है। उनकी पुस्तक नाट्य कृति 'जीने की राह' है, 'पृथ्वी लोक की सेर' भी परस्कृत नाट्य कृति है।

बच्चों का देश राष्ट्रीय बाल मासिक पत्रिका के संपादक संजय जैन है। यह पत्रिका राजसमंद राजस्थान से प्रकाशित होती है। ' बच्चों का देश ' साहित्य पत्रिका में साहसिक कहानियां होती है। इसके अलावा देश के महान राष्ट्रपुरुषों की प्रेरक कहानियाँ भी होती है।

डॉ. पंकज विरवाल 'किशोर' का बाल कथा संग्रह प्रकाशित है। डॉ. पंकज आसिस्टैंट प्रोफेसर हिन्दी सलूम्बर राजस्थान के हैं। उनकी बाल कथा संग्रह 'सोने का हार' 'एक उम्दा' बाल कथा संग्रह है।

दीनदयाल शर्मा जिन्हें केंद्रीय साहित्य अकादमी नई दिल्ली की ओर से राजस्थानी बाल निबंध संग्रह बलयेनही बातो पर राजस्थान बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उनकी एक पुस्तक ' बाल पहेलियां चुरू राजस्थान से पब्लिश हुआ है। वे टाबर टोली बच्चों की हिन्दी पाक्षिक पत्रिका के संपादक है उनकी राजस्थानी नाटक पुस्तक को पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

गुजरात में नारणभाई जादव ‘ चलो खेले ‘ गुजराती बाल काव्य संग्रह गुजराती में प्रकाशित है। नारण भाई जादव निवृत प्रिन्सिपल हैं। उन्हें कई सम्मान प्राप्त हुए हैं।

सर्वोत्तम भारतीय लोक कथाएं,सर्वोत्तम साहस कथाएं,सर्वोत्तम विदेशी लोक कथाएं,सर्वोत्तम प्राणी कथाएं ये सभी वसंत भाई परमार गांधीनगर गुजरात ने गुजराती में प्रकाशित की है। बाल साहित्य में गुजरात का भी योगदान रहा है। गांधीनगर गुजरात की राजधानी है। गांधीनगर में गुजराती साहित्य सभा का हर महीने सभा का आयोजन होता है। वार्षिक दिवस पर ‘बच्चों की गई कल और आज ‘ विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ था ।

गांधीनगर गुजराती साहित्य सभा के प्रमुख नटवर हेडाउ हैं। नटवर हेडाउ भी एक अच्छे बाल साहित्यकार हैं। वे वनवासी के उपनाम से लिखते हैं। नटवर हेडाउ, बाल कहानी बाल नाटक के लेखक के रुप में पहचाने जाते हैं। गांधीजी के लिए उन्होंने काव्य लिखी है। श्री यसवंत मेहता बाल साहित्य के भीष्म पितामाह कहे जाते हैं। गुजराती साहित्य परिषद अहमदाबाद ने दलपत राम जो गुजराती बाल साहित्यकार थे उनके पाँच ग्रंथ प्रकाशित किए गए हैं। नटवर हेडाउ भाई पटेल बाल नाटक का पूरा इतिहास वार्षिक सभा में प्रस्तुत किया था। योसेफ मेकवान एक उम्दा बाल साहित्यकार हैं। उन्होंने बाल काव्य और बाल कविता की जानकारी प्रस्तुत की । श्री रावजी भाई गाबाछी ने बच्चों को कैसी कहानी पसंद होती है उसकी जानकारी दी थी। श्री अम्बालाल चिलड्रन यूनिवर्सिटी में कार्यरत हैं। उन्होंने उनका ब्योरा दिया था। नटवर भाई पटेल ने बाल काव्य संग्रह संपादित किया है। गुजरात में श्री करसन दास लुहार, उषा बेन उपाध्याय,दलपत राम,चंद्रकांत सेठ ,हरी कृष्ण पाठक उसनश ,रमेश भाई आदि गुजराती बाल साहित्यकार हैं। इस तरह गुजरात में गुजराती में बाल साहित्य लिखा जाता है और प्रकाशित होता है।

शिक्षा :

आज के मीडिया युग में बच्चों को टेबलेट से पढ़ाया जाता है। बच्चे इलेट्रॉनिक साधनों का उपयोग करना सीख गए है। मीडिया का उपयोग शिक्षा के लिए बहुत ही अच्छा है यदि उसका सही रूप से सही दिशा में उपयोग किया जाये । आजकल बच्चों के लिए पेनोग्राफी वेब पर प्रतिबंध लगाने की मांग उठी है। मीडिया में बहुत सारी एप शिक्षा से संबन्धित है। आज शिक्षा महंगी हो गई है। सरकारी नीतियों के कारण सामान्य गरीब वर्ग का बच्चा शिक्षा से वंचित रह जाये ऐसा परिस्थिति का निर्माण हुआ है। जिनके पास पैसे हैं वही शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। डॉक्टर बनने के लिए लाखों रुपए

खर्च करना पड़ता है। स्कूल मेनेजमेंट ने शिक्षा का व्यापार शुरू कर दिया है। कुछ न कुछ बहाने हर साल फीस बढ़ाते जाते हैं। गुजरात सरकार ने फीस पर काबू पाने के लिए कुछ सख्त नियम बनाए हैं। उससे फीस में थोड़ी कटोती हुई है।

ढाई साल की उम्र में बच्चे को नर्सरी,के जी में रखा जाता है। माँ बाप अपने को स्वतंत्र पाकर ख़ुश होते हैं। बच्चे का मानसिक विकास अटक जाता है। बच्चे स्कूल में बस्ता लेकर जाते हैं उसका वजन दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है। सरकार ने उसे कम करने के लिए बस्ते का बोझ तय किया गया है किन्तु उसका पालन सही रूप में नहीं होता है। बच्चे शारीरिक रूप से निर्बल बनते जा रहे हैं। सभी माँ बाप की ख़्वाहिश ऊंची होती है। बच्चा डॉक्टर बने,इंजीनियर बने,पाइलोट बने,बड़ा ऑफिसर बने ऐसी ख़्वाहिश होने से बच्चों पर दबाव डालते हैं। इसलिए कभी कभी बच्चे असफल होने के ड़र से आत्महत्या कर लेते हैं। बच्चे परीक्षा में नापास होने के डर से भयभीत होते हैं। इससे युवा वर्ग में आत्महत्या का प्रमाण बढ़ गया है। गुजरात में 15 से 29 साल की उम्र के युवा सबसे अधिक आत्म हत्या कर रहे हैं। नेशनल क्राइम ब्यूरो के मुताबिक 274 युवा लोग आत्म हत्या कर रहे हैं। 14 साल से नीचे की उम्र 12 वर्ष के 7166 युवा परीक्षा में फ़ेल होने से 2013 में 117 विद्यार्थियों ने आत्महत्या कर ली थी ।

बच्चे के पास खेलने का समय नहीं बच पाता है,स्कूल से आकर खाना खाकर वो ट्यूशन जाता है,फिर घर आकर होम वर्क करता है। थकान से वो सो जाता है,इसलिए शारीरिक रूप से बहुत कमजोर हो जाता है। बालक को विषय में रस है उसी में आगे बढ़ाना चाहिए किन्तु ऐसा नहीं होता है,माँ बाप अपनी पसंद से ,अपनी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए उसे अपनी पसंद के विषय में आगे बढ़ाना चाहते हैं।

केल्क्युलेटर आने से बच्चे गिनती भूल गए हैं। पहाड़ा बच्चे याद नहीं कर रहे हैं । मोबाइल में फेसबुक,व्हाट्सएप,ट्विटर,इंटरनेट,का उपयोग बच्चे करने लगे हैं। बच्चे तो ठीक बड़े बूढ़े सभी लोग मोबाइल में बिजी दिखते हैं। किसी को एक दूसरे से बात करने का भी समय नहीं है। आज का बच्चा भी अकेला पड़ गया है। बच्चा छोटा है तब से उसके हाथ में मोबाइल थमा दिया जाने से बड़ा होकर भी यही करता है। बच्चों की दुनिया मोबाइल में सिमट गई है। बच्चों के पास मोबाइल होने से अच्छा है,उसकी सुरक्षा के लिए भी जरूरी है और जानकारी पाने के लिए भी अच्छा है। शिक्षा के हेतु सभी जानकारी मीडिया से प्राप्त होती है। उसमें किताब भी पढ़ी जाती है। किसी भी विषय की जानकारी मीडिया से उपलब्धहोती है।

समाज :

सामाजिक संवेदना चली गई है। आज के मीडिया के युग में संबंधो में जो मधुरता थी वो चली गई है। एक दूसरे के प्रति जो प्रेम था,चाहत थी,उसका गलाघूंट गया है। सभी काम मीडिया से होने लगे हैं। सामाजिक कार्यक्रमों की जानकारी भी मीडिया से प्राप्त होने लगी है। मीडिया का उपयोग यदि सही दिशा में किया जाये तो बहुत ही लाभदायी होता है। मीडिया का गलत उपयोग करने से नुकसान होता है। शादी के लिए जानकारी भी ऑनलाइन मिल सकती है। आज सामाजिक संगठ्न बनने लगे हैं। सभी अपनी अपनी जाती के संगठ्न मजबूत करने में लगे हैं। जिससे जात पात का भेदभाव बढ़ता है। इससे देश को नुकसान होता है। देश में सामाजिक एकता यदि नहीं है तो उस देश का विकास नहीं हो सकता है। देश में अशांति रहती है।

मेरे मत से सामाजिक व्यववस्था जब तक नहीं बदलेगी तब तक बेटियों की सुरक्षा सही रूप से नहीं हो सकती है। सामाजिक रीति रिवाज ,परंपराए और नियम में बदलाव नहीं होने से बेटी बचाओ का नारा लगाना होगा। जिसके घर बेटियाँ है वह भी सामाजिक परंपरा में बदलाव के लिए राजी नहीं होता है,इसका कारण सामाजिक रीति रिवाज और परंपरा के अनुसार नहीं चलेगा तो समाज का डर उसे सताता है। जब तक सामाजिक व्यवस्था में बदलाव नहीं होगा तब तक बेटियाँ और उसके माँ बाप सुखी नहीं होंगे। आज बेटियों को शिक्षा दी जाती है। बेटियाँ युवाओं से आगे निकाल गई है। लेकिन जब शादी ब्याह की बात आती है तब डावरी याने की दहेज का प्रश्न खड़ा होता है। उसे सोना चाँदी के गहने देने होते हैं। कुछ समाज में सामने वाले लड़के के पिता और संबंधी जो मांग रखते है वो पूरा करना होता है। इस लिए लोग बेटी के जन्म से नाराज होते हैं। दहेज लेना कानूनन अपराध है फिर भी उसका पालन नहीं होता है।

बच्चे के जनम पर खुशी मनाई जाती है। लेकिन उसे संस्कार का सिंचन करना जरूरी है। जीजाबाई ने लोरी सुनाते-सुनाते शिवाजी को शूरवीरता के पाठ सिखाये थे। हिन्दू धर्म में सोलह संस्कार होते हैं। उसमें सीमंत का संस्कार भी होता है। जब स्त्री गर्भ धारण करती है तब पाँच मास पूरे होने के बाद सातवे मास में उसका विधि किया जाता है। यही संस्कार है। माँ के पेट में बच्चा पल रहा होता है तब अच्छी पुस्तके पढ़ाई जाती है। उस पर बुरे संस्कार न आए इस लिए बहुत ही ख्याल रखा जाता है। बेटियों को लोग आजकल ज्यादा पढ़ाते हैं।

मीडिया में बाल मानस :

आज चम्पक,सुमन सौरभ,बालवाटिका,बालहंस,बच्चों का देश

और चकमक जैसी बाल पत्रिकाएं वैज्ञानिक विषयों पर आधारित सामग्री तथा कविता ,कहानी,फीचर लेख,इत्यादि प्रचुर मात्र में प्रकाशन शुरू कर दिया है। यह विभिन्न लेखन की लोकप्रियता का ज्वलंत प्रमाण ही कहा जाएगा कि पिछले दशक में विज्ञान कथाओं के आज करीब तीन दर्जन संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। कुछ उपन्यास भी प्रकाशित हुए हैं और यह सिलसिला अभी जारी है। आज जे के रालिंग द्वारा रचित हैरी पोर्टर श्रृंखला के पुस्तकों को भारत के बाल साहित्यकारों के समक्ष एक प्रतिमान के रूप में रखकर इससे श्रेष्ठतम कृति सृजित करने की चुनौती प्रस्तुत की जाती है। और हिन्दी में स्तरीय बाल साहित्य का सृजन न होने के लिए नित दिन रोदन किया जाता है।

आज वैज्ञानिक चमत्कारों का युग है और भविष्य में तो अकल्पनीय वैज्ञानिक विकास होगा। विज्ञान से पलायन करना मनुष्य के लिए अशक्य है। प्राथमिक तौर पर बाल विज्ञान का उदेश्य बच्चों के लिए ऐसे साहित्य की रचना करना है जो उनमें विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न कर सके। उन्हें वैज्ञानिक नियमों को जानने में या समझने के लिए प्रेरित कर सकें।,किन्तु बच्चों के लिए विज्ञान लेखन का वास्तविक उदेश्य बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना है। यहां वैज्ञानिक दृष्टिकोण का आशय बच्चों को एक एसी सोच या तार्किकता के विकास से है ,जिसके आधार पर वे प्रवृति में घटने वाली समस्त प्रकृतिक उपदानो एवं घटनाओ के बीच एक कार्यकरन संबंध स्थापित करे।

आज बालकों के पास वैज्ञानिक जानकारियाँ,सूचनाएं प्राप्त करने के लिए साहित्य के अतिरिक्त इंटरनेट और टीवी जैसे आधुनिक माध्यमों सहित अनेक बेहतर विकल्प मौजूद है। इसके अलावा स्वयं बच्चों को जानकारी और उनकी बुद्धि भी ज्यादा है। ऐसी स्थिति में विज्ञान लेखन के सभी बाल साहित्यकारों को यह आत्मावलोकन करना आवश्यक है कि जो साहित्य वो रच रहे हैं वह बच्चों के लिए उपयोगी है या नहीं । बच्चों के लिए विज्ञान लेखन में बाल साहित्य के नए आयाम प्रदान किए हैं।

बाल साहित्य के वर्तमान ‘ यूफोरिया ‘ के बीच एक त्रासद स्थिति यह है की विज्ञान लेखन तो पराभूत मात्रा में हो रहा है,किन्तु मीडिया द्वारा उसे दृश्य या मुद्रित रूप प्रदान करने का काम नगण्य हुआ है। आज संपादकों के पूर्व गृह के कारण और रूढ़िवादिता के कारण बच्चों का यह मानसिक सुझाव (समकालीन विज्ञान लेखन) पर्याप्त मात्रा में मुहैया नहीं हो पा रहा है ,परिणाम स्वरूप बच्चे अपनी जिज्ञासाओं के समाधान के लिए अभ्युदिन के जिन सरीखे सर्व व्यापी इंटरनेट (गूगल) की शाखा में जाने के लिए बाध्य हो रहा है।

पंचतंत्र की कहानियाँ प्राचीनकाल से ही भारत में बाल

साहित्य के रूप में मौजूद है। आधुनिक दुनिया मीडिया जगत के कारण बालकों के मनोरंजन के साधन,मोबाइल,कम्प्युटर,लेपटॉप,टेबलेट आदि हैं।

पश्चिमी बाल साहित्य का विकास मध्य युग के बाद सत्रहवीं शताब्दी से रेखांकित किया जा सकता है। यह वह समय था जब यूरोप में अंध विश्वास का ज़ोर था लोग जादूटोना,भूत पिशाच परियों,दानवों या फिर अति मानवीय शक्तियों के अस्तित्व पर काफी विश्वास करते थे और उनके मानस पर ये सभी बुरी तरह से हावी थे। तब यूरोपीय समाज के मानस को पढ़ते हुए जर्मनी के ग्रीम बन्धुओं (जेकब ग्रीम और बिलहैन्स ग्रीम) फ्रांस के चार्ल्स और इंगलेंड के सारा टिमर ने पश्चिमी समाज में प्रचलित अनेक लोक–कथाओं ,दंत कथाओं,परी कथाओं,को लिपिबद्ध किया,बल्कि नई कथाओं का सृजन के पीछे उनका उदेश्य अपनी राष्ट्रीय अस्मिता को पहचान देने के साथ साथ यूरोप में पुनःजागरण की शुरुआत करना भी था।

ग्रीम बंधुओ या चार्ल्स पेरल्ट जैसे लेखको ने कुछ कथाओ के नायक बच्चे अवश्य थे,जिंनका कथा के अंत में कभी कभी बुरा अंत भी होता था ,किन्तु ये कथायें बाल कथायें बिलकुल नहीं थी। पश्चिमी बाल साहित्य का उदेश्य बच्चों में समाजिकता और व्यावहारिकता का विकास करना रहा है। अपने बृहत कलेवर और प्रकृति में पश्चिमी बाल साहित्य बच्चों के समाजीकरण का साहित्य है। उसका धार्मिकता,आध्यात्मिकता या दर्शनिकता से कोई सरोकार नहीं है।

भारत में रामायण में लव कुश की भूमिका बच्चोंके लिए प्रेरणादायी है। अश्वमेघ यज्ञ का घोडा याने कि अश्व को रोका था । भक्त प्रहलाद बाल भक्त भगवान विष्णु का नाम ले रहा था वो उसके पिता हिरण्य कश्यप को पसंद नहीं था। प्रहलाद को मारने के लिए अपनी बहन होलिका की गोद में प्रहलाद को बैठाया गया और होली में आग लगाई तो प्रहलाद बच गया था और होलिका आग में जलकर मर गई। मतलब भक्त प्रहलाद निडर था,उसे आत्म विश्वास था की उसे कुछ नहीं होगा। ऐसा ही उदाहरण नचिकेता का है । श्रवण की कथा भी बच्चों को सामाजिक संस्कृति एवं संस्कार प्रदान करती है। अपने माँ बाप की सेवा करते करते उन्हें कावड़ में बैठाकर अपने कंधो पर उठाकर तीर्थ यात्रा को ले जाता है,किन्तु सरयू नदी में अपने मात पिता के लिए पनि लेने जाता है और राजा दशरथ शिकार के लिए अपनी धनुष से तीर चलाते है और उसी समय श्रवण को तीर लगता है,वो राजा से विनती करता है कि मेरे अंधे माँ बाप को आप पानी दे आना। यह भी हिन्दू धर्म के संस्कार हैं कि तीर लग्न पर भी वो राजा से कुछ नहीं कहता है। क्षमा का भाव प्रदर्शित करता है। हिन्दू धर्म के शास्त्रों में बच्चों को बहुत कुछ सीखने को मिलता है। पहले के जमाने में बच्चों को ऋषि मुनियों के आश्रम में शिक्षा के लिए भेजा

जाता था। उन्हें संस्कृत सिखाया जाता था,और सभी प्रकार का ज्ञान दिया जाता था। आभ में खिला सूरज और जीजाबाई झुलाए झूला ये गुजराती गीत की कड़ी बहुत कुछ कह जाती है। माता जीजा बाई अपने लाल शिवाजी को शूरवीर बनाना चाहती थी,वे उन्हें लोरी सुनाकर प्रेरित करती थी,। आज भी शिवाजी की शूरवीरता और जीजाबाई को याद किया जाता है। बच्चे को शिवाजी की तरह देश भक्त और शूरवीर बनाना होगा।

वह जमाना बीत गया जब बच्चों को परियों,राक्षस ,भूत प्रेत या राजा रानी की कहानियां सुनाकर बहलाया जाता था। नए दौर के बच्चे नई कहानियां सुनना चाहते हैं,ऐसी कहानिया जिनमें न केवल स्वयं उनका बल्कि उनके जीवन,परिवेश,और काफी हद तक समकालीन समाज का बिम्ब उपस्थित हो ऐसा बाल साहित्य चाहते हैं। जिनमें वे अपने प्रश्नों और जिज्ञासाओं के उत्तर समाधान ढूंढ सके।

हिन्दी में कमला चौधरी और शकुंतला सिरोदिया ने लोरी गीत रचकर नए प्रतिमान स्थापित किए गए हैं। दूसरी बाल कवियित्रियों ने बाल मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण कर बाल काव्य को एक नई अर्थव्यवस्था प्रदान की है। किन्तु इनके बाद की महिला बाल साहित्यकारों यथा कामिनी दीदी ,सावित्री परमार,मधु भारतीय ,सरोजिनी अग्रवाल,स्नेहलता प्रसाद ,सरोजिनी प्रीतम,इन्दिरा परमार,महरोत्रा शमिल , शभयता शर्मा,मृदुला सिन्हा,सुरभि जैन ,कृष्ण सोबती,स्वतंत्र लता शर्मा,शशि टंडन,प्रीति जयसवाल,चित्रा श्रीवास्तव और ममता कालिया ने बाल गीतों और बाल साहित्य के परंपरागत ढांचे से मुक्त करते हुए नाटक,एकाँकी ,उपन्यास और दूसरी विधाओ में भी रचनात्मक प्रयोग किए और मुख्य धारा के साहित्य के क्षेत्र में इसे एक गंभीर साहित्य के रूप में स्थापित किया।

प्रारम्भ में बाल साहित्य को मनोरंजक और बाल शिक्षण का पर्याय माना जाता था,बाल मनोविज्ञान को समझते हुए संस्कारो की शिक्षा देने या बच्चों को रोबोट सरीखे आदर्श नागरिक बनाना ही बाल साहित्य का ध्येय अवधारित कर लिया गया था। मीडिया में बाल कहानियां टीवी पर दिखाई जा रही है। कार्टून बच्चों के लिए मनोरंजक है। छोटा भीम बच्चों को बहुत ही पसंद सीरियल है। जेठालाल के कार्यक्रम टीवी में बच्चे ज़्यादातर देखते हैं,उसका कारण यह है कि उसमें बाल कलाकार भी अभिनय कर रहे हैं। जय गणेशा भी बच्चों की लोक प्रिय सीरियल है। आज का बाल मानस मीडिया में डूबा हुआ है। मीडिया से वे बहुत कुछ अच्छी चीजें ,संस्कार भी पाते हैं। आज का बाल मानस बहुत ही तेजस्वी है। सभी प्रकार के उपकरण मोबाइल ,टीवी,टेबलेट ,लेप्टॉप,कम्प्युटर आदि सरलता से चला रहे हैं। मीडिया बाल साहित्य के रूप में बच्चों को पसंदीदा सीरियल दिखाकर बच्चों को प्रेरित करने का कार्य कर रहा है। उसमें कोई दो राय नहीं है। ●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

सन्दर्भ सूची :संगिनी बाल विशेषांक दिसम्बर 2019, बच्चों का देश राष्ट्रीय बाल मासिक पत्रिका – संपादक संजय जैन, डॉ पंकज बीरवाल 'किशोर' का बाल कथा संग्रह

हिंदी संस्कृति और वेद

भारतीय संस्कृति में वेदों का स्थान सर्वोपरि है। वास्तव में वेद हि भारतीय भाषा ,संस्कृति और ज्ञान के आदि स्त्रोत्र है। उनकी मौखिक परंपराओ का हजारों वर्ष काल प्रवाह में भी निरंतर एक रूप रहना भारतीय मेघा का ,मनीषा का अद्‌भुत चमत्कार है। आर्य कुल की भाषाएं या द्रविड़ कुल की भाषाएं सब को वेदों की लकीर पर चलने पर गौरव का अनुभव होता है। वेद केवल भारतीय प्रजा के लिए ही नहीं अपितु विश्व के सभी जनो के लिए समान रूप से कुशल क्षेम आरोग्य ,आयुष्य और मैत्री भावनाओं से ओतप्रोत है।

वेद संसार के सबसे पुराने काव्य हैं। वेद चार हैं। 1 ऋग्वेद ,2 यजुर्वेद, 3 सामवेद, 4 अथर्ववेद । वेद देवों से लेकर लोगों तक ,पशु पक्षियों से लेकर पेड़ पौधों तक,सभी पाँच महाभूतों को एक साथ समेटकर धरती पर एकत्व का अनुभव कराने वाली वाणी के उमंग और उत्साह के उछलते महासागर है। वेदों परंपरा,इतिहास का अनुपम चमत्कार है। वाणी के प्रवाह के हजारों वर्ष तक निर्मल और आविष्कृत रखने का ,ज्यों का त्यों रख देने की कला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरन है। जब सभी प्राचीन साहित्य नाम शेष होते जा रहे थे और सभी भाषाओं के मूल रूप सुरक्षित हो गए हैं। तब वेदों का सार और वेदों की भाषा का महत्व बरकरार है। यही वेदों की पवित्रता है और भारतीय मनीषा का संपूर्ण अद्‌भुत पुरुषार्थ है। अपनी वेदकीय परंपरा को अक्षरश रखने का ‘वेद मानवता के प्राथमिक उद्‌घोष नहीं है अपितु परिपूर्ण मानव एकता के मूलभूत भावनाओं का अपराजेय भी है।

वेदो को जाँचने परखने और उनके कल के प्रवाह के साथ जोड़ने का निरंतर प्रयास भारतीय मनीषी करते आए है। कहा जाता है की लंकेश रावण वेदो को पहले व्याख्याता थे। बाद में अनेक विद्वानो ने वेदो के साहित्य को अनुपम विस्तार प्रदान किया। उनका अध्ययन भारत की हर भाषा में किया गया है। इसी परंपरा में गुजरात में वेदो का गूढ अध्ययन करने उनके विरल विचारो को ,भावना ओ को कहानी के रूप में सामान्य जनता के लिए उपलब्धकराने वाले वेदज्ञ विष्णु देव संकलेश्वर पंडित का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

वेदो का फैलाव विशाल है। संहिताए ,ब्राह्मण ग्रंथ आरण्यक और उपनिषदों का प्रचार वेद साहित्य के अंतर्गत आता है। पंडित विष्णु देव कुछ जानकारो के सामने रखने में नहीं मानते थे। वे वैदिक साहित्य को मथकर कुछ सरल कहानिया के रूप में वेद नवनीत को जनता केघरघर तक पहुचाना चाहते थे । उनकी कुछ वैदिक कहानिया ‘ मधु वार्ता ‘ के रूप में गुजराती में प्रकाशित हुई है। उजुर्वेद में वैदिक राष्ट्र गीत दिया गया है। उसका अनुवाद इस तरह है,

हे ईश्वर ! हमारे देश में ब्रह्म तेजवाले,अध्ययन में तल्लीन ज्ञानीजन पैदा हो,शूरवीर पराक्रमी तथा अपने निशाने पर शत्रु भेदी बाण चलाने वाले राज कर्ता पैदा हो,हमारी माँए गायें दूध देने वाली हो,बैल सक्षम हो,रथरूढ़ योद्धा विजयशील बने,महिलाएं सर्व गुणी हो,सुंदर और निर्भय युवा देश में पेदा हो, मेघ उचित समय पर बरसा करे, वनस्पतीय फलवती और परिपक्व हो,हमें अप्राप्य पदार्थ प्राप्त हो,प्राप्त पदार्थ स्थिर रहे,और हम सुरक्षित बने। यजुर्वेद 22.22 कहते हैं कि प्रजाजनों के विरुद्ध आचरण करनेवाला शासन वेद पलटा जा सकता है। प्रजा अपने प्रतिनिधियों के द्वारा दूसरा शासन स्थापित कर सकती है। प्रजा पालन ही 'प्रजापति का 'का आधार है। " सदा सत्य बोले ,सद व्यवहार करो,और स्वाध्याय कभी मत छोड़ो, अंदर का उजाला बाहर के अंधकार को मिटा देता है। प्रकाश ही देव है। त्याग की महिमा सबसे बड़ी है। श्रद्धा के द्वारा ही यज्ञ की अग्नि पलटी है,श्रद्धा से ही आहुती दी जाती है, हम तो यह भी कह सकते है की श्रद्धा ही सर्वोतम सौभाग्य है। पुत्र शूरवीर हो,पराक्रमी हो,बुद्धिमान हो,परोपकारी हो,और गुणवान हो,तोघर वैकुंठ बन जाता है। वाणी ही पारा देवता है। यदि मनुष्य समय की कीमत जान जाए तो जीवन सफल हो जाए। हमारे मन हृदयप्रवृतीया और दर्शन समान हो हम सब एक साथ समानता दे रहे है,जिससे हम सभी कार्यो को पूरा कर सके। सच्चे मन से गलती की सजा भोगने से सजा ही आशीर्वाद बन जाती है। उत्साह विजय की बनती है,त्रिवेणी विविध भारतीय प्रजाजनों का प्रतीक है।

वेद मानव सभ्यता व लगभग सबसे पुराना दस्तावेज़ है। वेदों की 28 हजार पांडुलिपियां भारत में पुणे में ' भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट में रखी गई है। इनमें से ऋग्वेद की 30 पांडुलिपियां बहुत ही महत्वपूर्ण है। जिन्हें युनेस्को ने विश्व विरासत सूची में शामिल किया है। युनेस्को ने ऋग्वेद की 1500 से 1800 ई.पू की 30 पांडुलिपियों को संक्रमिक धरोहर की सूची में शामिल क्या है। उल्लेखनीय है कि युनेस्को की 158 सूची में भारत की महत्वपूर्ण पांडुलिपिया की सूची 38 है। जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न कर अग्नि आदि चारों ऋषियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये उस ब्रह्मा में अग्नि, वायु ,आदित्या और अंगीरस से ऋग ,यजु,साम,और अथर्ववेद को ग्रहण किया है। 4 वेद ऋषि है,वायु,अग्नि,अंगिरा और आदित्य । बाद में उनकी वाणी को बहुत से ऋषियों ने रचा और विस्तार किया। ये सभी मूलतः इन्हीं को हिन्दू धर्म का संस्थापक माना जा सकता है। मनुस्मृति में कहते हैं कि,अति प्राचीनकाल के ऋषिओं ने उत्कृष्ट तपश्चर्या द्वारा तप व्रत हृदय में ' परावाक 'वेद वागमय का साक्षात्कार किया था। वेद पहले एक ही था। फिर ऋग्वेद हुआ। फिर यजुर्वेद व सामवेद ,वेद के तीन भाग राम के काल में पुरुरवा ऋषि ने किए थे॰। जिसे वेद ऋषि कह गए हैं,फिर अंत में अथर्व वेद को मिरथा अथर्वा ऋषि ने वेदों को परब्रहम ने सर्व प्रथम किसे सुनाया ?यह शोध का विषय हो सकता है।

वेद परमेश्वर के मुख से निकला हुआ ,'पारवाक' है। वह अपौरूषीय ही है। वेद ही हिन्दू धर्म के सर्वोच्च और सर्वोपरि धर्म ग्रंथ है। दूसरा कोई धर्म ग्रंथ नहीं है। वेदो के दो विभाग है। 1 मंत्र विभाग 2 ब्रह्म विभाग । वेदो के मंत्र विभाग के संहिता गति ,संहिता परख विवेचन (आरण्यक),एवं संहिता परख । ब्राह्मण ग्रंथ कहते हैं। ब्राह्मण ग्रंथो की संख्या 13 है।,ऋग्वेद 1,यजुर्वेद में 2, सामवेद में 8 और अथर्ववेद में 1 मुख्य ब्राह्मण ग्रंथ 5 है। एतरेय ब्राह्मण ,तैतिरीय ब्राह्मण ,तलवकर ब्राह्मण,शतपथ ब्राह्मण,और तानडय ब्राह्मण। उपनिषद कया है,वेदो के अंतिम भाग को वेदान्त कहते है। वेदांतों को ही उपनिषद कहते हैं,उपनिषद में तत्व ज्ञान की चर्चा है। उपनिषदों की संख्या वैसे तो 108 है। परंतु मुख्य 12 माने गए हैं। जैसे येन केन कठ,प्रश्न ,मुंडक,मण्डूक्य,तैतिरीय ,एतरेय,छांदोग्य, बृहदकारण्य,कोशी ताकि ,श्वेतश्वर कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास ने ब्रह्मा की प्रेरणा से 4 शिष्यों को 4 वेद पढ़ाये ।

1 मुनि पैल को ऋग्वेद
2 वैशम्पायन को यजुर्वेद
3 जैमिनी को सामवेद
4 सुमन्तू को अर्थववेद पढ़ाया

वेद के चार विभाग है। ऋग्वेद ,यजुर्वेद ,सामवेद और अर्थव वेद ,ऋग्वेद में 100 मण्डल है और 1028 ऋचाएं है। यजुर्वेद में 1975 मंत्र ,और 40 अध्याय है। सामवेद में 1875 मंत्र है। 75 ऋचाएं है। अर्थव वेद में 5987 मंत्र और 20 खंड है। वेद से षड्दर्शन निकला है। वेदो का सार है उपनिषद और उपनिषदों का सार ' गीता ' माना गया है। इस क्रम से वेद ,उपनिषद ,और गीता ही धर्म ग्रंथ है। मनुस्मृति में 116 श्लोक के माध्यम से कहा गया है कि वेद ही सर्वोच्च और प्रदीकृत है। वेद किसी भी प्रकारके ऊंच –नीच,जात–पात,महिला–पुरुष आदि के भेद को नहीं मानते थे। ऋग्वेद ऋचाओं में 414 ऋषियों के नाम है। जिनमें लगभग 30 प्रतिशत तो महिला ऋषियों के नाम है। जन्म के आधार पर जाती का विरोध ऋग्वेद के पुरुष सूक्त व श्रीमद भगवद गीता के श्लोक में मिलता है। प्रकाश से अति गतिशील तत्व अब तक खोजा नहीं गया है। न ही मन की गति को मापा गया है।

हिन्दू संस्कृति :

हिन्दू धर्म सनातन धर्म है। एक धर्म व जीवन पद्धति है, जिसके अनुयाई अधिकांश भारत,नेपाल और मोरेसियस में बहुमत में है.। इस विश्व का प्राचीनतम धर्म कहा जाता है। इस वैदिक सनातन वर्षश्रामधर्म भी कहते है। जिसका अर्थ है,इसकी उत्पति भी पहले से है। ये बात हमें कुछ जचि नहीं । विद्वान लोग हिन्दू धर्म को भारत की विभिन्न संस्कृतियो एवं परंपरा ओ का

समिश्रण मानते है,जिसका कोई संस्थापक नहीं है। प्राचीन काल में आर्य लोग वैदिक मंत्रो और अग्नि यज्ञ से कई देव देवता ओ की पुजा करते थे। आर्य देवता ओ की कोई मूर्ति या मंदिर नहीं बनाते थे । प्रमुख आर्य देवता थे, देवराज इंद्र,अग्नि ,सोम और वरुण । उनके लिए वैदिक मंत्र पढे जाते थे,और अग्नि मेंघी ,दूध,दही,इत्यादिक की आहुती दी जाती थी। प्रजापति ब्रह्मा,विष्णु और शिव का उस समय कम ही उल्लेख मिलता है। आज से बारह सो वर्ष पहले आदि गुरु शंकराचार्य ने एक बहुत ही महत्व पूर्ण कार्य किया.। उन्होने चारों दिशा में भारत के छोरों पर चार पीठ (मठ) स्थापित किए।उत्तर में बद्रीनाथ के निकट ज्योति पीठ ,दक्षिण में रामेश्वरम के निकट शृंगेरी मठ ,पूर्व में जगननाथपुरी में गोवर्धन पीठ और पश्चिम में द्वारका पीठ । तीर्थों के प्रति भारत वासियोमें बड़ी भक्ति भावना है। चारों तीर्थ चार धाम कहलाते हैं। हिन्दू धर्म में भगवान की मूर्तियां द्वारा पूजा की जाती है। मूर्तियां हिन्दूओं के लिए ईश्वर की भक्ति करने के लिए एक साधन मात्र है। हिन्दूओं के उपासना स्थलों को मंदिर कहते हैं। प्राचीन वैदिक काल में मंदिर नहीं होते थे, तब उपासना अग्नि के स्थल पर होती थी। जिस में सोने की एक मूर्ति ईश्वर के प्रतीक के रूप में स्थापित की जाती थी। एक नजरिए के मुताबिक बौद्ध और जैन धर्म द्वारा बौद्ध और महावीर की मूर्तियां और मंदिरो द्वारा पूजा करने की वजह से हिन्दू भी उनसे प्रभावित होकर मंदिर बनाने लगे।

हिन्दू धर्म सूर्य उपासना के लिए प्रसिद्ध पर्व छठ मूलतः सूर्य की षष्टि व्रत होने के कारण उसे छठ कहा गया है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है। किन्तु काल क्रम के कारण अब यह बिहार ,पूर्वी उत्तर प्रदेश ,राज्यों तक सीमित रह गया है। आश्विन शुक्ल प्रति पड़ा से नवरात्रोत्सव आरंभ होता है। नवरात्रोत्सव में घट स्थापन करते है। अखंड दिये के माध्यम से नौ दिन तक श्री दुर्गा देवी की पुजा अर्थात नवरात्रोत्सव मनाया जाता है। श्रावण कृष्ण अष्टमी पर जन्माष्टमी उत्सव मनाया जाता है। इस तिथि में दिनभर उपवास करते हैं। रात्रि बारह बजे झूले में बालक कृष्ण जन्मोत्सव मनाया जाता है। अगले दिन प्रातः दही कलाकंद का प्रसाद लेकर उपवास खोलते हैं। आश्विन शुक्ल दशमी को विजया दशमी का त्योहार मनाया जाता है। दशहरे से पहले नौ दिन नवरात्रि में दशों दिशाएं देवी की शक्ति से प्रभावित होती है। विजयादशमी के दिन राम ने रावण पर विजय प्राप्त की थी। इसलिए विजया दशमी का त्योहार मनाया जाता है। किसी भी हिन्दू को शाकाहारी होना जरूरी है। शाकाहार सात्विक आहार माना जाता है। हिन्दू धर्म में वर्ण व्यवस्था है। ब्राह्मण ,क्षत्रिय ,वैश्य ,शूद्र ,पहले यह व्यवस्था कर्म प्रधान थी। अगर कोई सेना में काम करता है तो वह क्षत्रिय हो जाता है। चाहे उसका जन्म किसी भी जाति में हुआ हो । लेकिन आज के समय में ऐसा नहीं है। जो देश में स्वच्छता का काम करते हैं,उन्हें अपमानित करता जाता है,शूद्र चाहे कितना भी पढ़ा लिखा हो,अच्छे संस्कार हो ,फिर भी उसके साथ अस्पृश्यता का व्यवहार किया जाता है। आज आजादी के

70 साल भी शूद्र याने की दलित का बेटा शादी में डीजे नहीं बजा सकता,घोड़े पर सवारी नहीं कर सकता है। परदेश में ऐसा नहीं है। यहां कानून संविधान में सुरक्षा दी गई है फिर भी उन पर अत्याचार हो रहे हैं ये दुख की बात है। यदि भारत में जात पात का दूषण न होता तो देश आज बहुत ही विकास करता। नरसिंह मेहता हरिजन मुहल्ले में जाकर भजन करते थे। उन्हें भी बहुत सहना पड़ता था। गांधीजी ने अस्पृश्यता के लिए बहुत अच्छा काम किया है। हिन्दू धर्म में यह एक दूषण है। हिन्दू धर्म में दश अवतार माने जाते है। म्तर्म ,कूर्म ,वराह,वामन,नरसिंह ,परशुराम,राम,कृष्ण ,बुद्ध और कल्कि । आराधना करने वाले को त्यागी कहा जाता है। हिन्दू धर्म में नरसिंह मेहता और चैतन्य महा प्रभु भक्त थे। हिन्दू धर्म देवी देवताओं प्रवर्तित धर्म है। इसका एक आधार वेदान्त धर्म ग्रंथ है। जिनकी संख्या बहुत बड़ी है। ये सब दो में विभक्त है।

1 इस श्रेणी के ग्रंथ को श्रुति कही जाती है। ये अपौरषीय माने जाते है। इसमें वेद की चार संहिताओ ,ब्राह्मण,अरन्यंकों,उपनिषद ,वेदांग ,सूत्र आदि ग्रंथो की गिनती की जाती है॰।

2 इस श्रेणी के ग्रंथ समृद्ध कहलाते है। ये ऋषि प्रणीत माने जाते है। इस श्रेणी में 18 स्मृतियां18 पुराण,तथा रामायण व महा भारत ये दो इतिहास भी माने जाते है। आगम ग्रंथ भी स्मृति श्रेणी में माने जाते है।

प्रस्थानत्रयी भगवद गीता तथा ब्रह्म सूत्र उपनिषदों के साथ मिलकर वेदान्त की प्रस्थानत्रयी कहलाते हैं। अथर्ववेद हिन्दू धर्म के पवित्रतम वेदों में से चौथा वेद अथर्ववेद की समता अर्थात मंत्र भाग है। इस वेद को ब्रह्म वेद भी कहते हैं। इसमें चिकित्सा ,विज्ञान और दर्शन के मंत्र हैं।
यजुर्वेद हिन्दू धर्म एवं महत्वपूर्ण श्रुति धर्म ग्रंथ है। यज्ञ की असल प्रक्रिया के लिए गद्य और पद्य मंत्र है। ऋग्वेद के बाद उसे दूसरा ग्रंथ माना जाता है। इस में ऋग्वेद के 663 मंत्र पाये जाते है। ऋग्वेद की रचना सप्त सिंध क्षेत्र में हुई थी। यथार्वेद की रचना कुरुक्षेत्र प्रदेश में हुई थी। सामवेद गीत संगीत प्रधान है। प्राचीन आर्यों द्वारा गण किया जाता था। सामवेद चारों वेदों में से छोटा ग्रंथ है। ये सभी वेदों के सार रूप है। सामवेद में 1875 मंत्र है। सामवेद संहिता के दो भाग है। हिन्दू धर्म देवी देवताओं प्रवर्तित धर्म है। इसका एक आधार वेदान्त धर्म ग्रंथ है। जिनकी संख्या बहुत बड़ी है। हिन्दू धर्म सनातन धर्म अथवा वैदिक धर्म भी कहा गया है। इन्डॉनेसिआ में इस धर्म का ओपचारिक नाम ‘‘हिन्दू आगम ” है। हिन्दू केवल धर्म या संप्रदाय नहीं है। अपितु जीवन जीने की एक पद्धति है। हिन्दू धर्म की सबसे बड़ी खूबी यह है कि,यह अपने लोगों का अपने हिसाब से पूजने की आजादी देता है। दूसरे तमाम संप्रदायो ने वहां के लोगों को ऐसी आजादी नहीं दी है। शायद यही वजह है कि हिन्दू संस्कृति को आध्यात्मिक के लिए सर्वोतम माना जाता है। लिखी है। वे वेदों को समर्पित तथा समर्थ

व्याख्याता के रूप में सारे संसार में प्रसिद्ध है। सरकार और सामाजिक संस्थाओ ने उन्हें सम्मान पूर्वक शिरस्थ स्थान पर बैठाया है। अंग्रेजी माध्यम से उन्होंने मुंबई यूनिवर्सिटी की एम. ए. की उपाधि 1945 में प्राप्त की थी। उन्होंने संस्कृत पाठशालाओं में तथा शाहिनबाग स्ट्रीट स्कूल में अध्यापक बनकर शिक्षा क्षेत्र में प्रवेश किया था। वे प्राचीन संस्कृति को विशेषता वेदों के परिशीलन में दत्तचित हो गए । वेदों के प्रति उनका अगाध श्रद्धाभाव रहा। उन्होंने वैदिक साहित्य को मथकर कुछ सरल कहानियों के रूप में वेद–नवनीत जनता के घर तक पहुंचाया । मधु वार्ता के रूप में उनकी कुछ वैदिक कहानियां प्रकाशित हुई, ये कहानियां बहुत लोकप्रिय हुई। उसका हिन्दी अनुवाद डॉ. शशि बाला अरोरा ने किया है।

वेदों का फेलवा विशाल है। संहिताएं,ब्राह्मण ग्रंथ ,आरण्यक और उपनिषदों का प्रसार वेद साहित्य के अंतर्गत आता है। वेदों की रोचक प्रत्येक कहानियां में जीवन के लिए कुछ न कुछ संदेश छिपा है। उन वेदों की कहानियां क्या संदेश देती है उसका निरूपण करना चाहूँगा।

उनकी प्रथम कहानी में 'सूर्य का विद्यार्थी ' एक मेघावी शिष्य की तेजस्विता की कहानी है। दिये गए कर्तव्य पथ पर इतना विश्वास है कि वह राजसत्ता को उसके सामने नगण्य मानता है। दूसरी कहानी में जन्म भूमि की स्मृति प्रीति की अमर कथा है। लोग भूमि और जन्म भूमि को आज के संदर्भ में बड़ी ही प्रासंगिक है। 'काले चूहे और सफ़ेद चूहे 'प्रतिकारात्मक कहानी है जो रात दिन के हिसाब से ज़िंदगी की यात्रा पर गहरा चिंतन है। चौंथी कहानी में ' मधु–मधु वैध्य जीवन के बगीचे में खिले पुष्पों से मधु संचयित क्रिया की ओर संकेत करती है। पाँचवी कहानी 'राष्ट्र के प्रतिया को वाणी कैसा रूप देती है ,उसका सुंदर निरूपण है। राष्ट्र प्रमुख अपनी शक्तिमयी वाणी से ही अपनी मूर्ति बनाता है,। आठवीं कहानी कहती है कि, अपनों की उपेक्षा अशोभनीय है। नौवीं कहानी आत्मबल से विकृतियों पर विजय पाने की कहानी है। दसवीं कहानी बताती है कि, जिसघर या देश की युवा पीढ़ी पराक्रमी,शूरवीर,बुद्धिमान और गुणवान हो तो वह घर या देश वैकुंठ बन जाता है। ग्यारहवीं कहानी पुरुरवा और उर्वशी की कहानी है। जो देवी और मानवी मान्यताओं पर प्रकाश डालती है। बारहवीं कहानी एक गृहिणी की निडरता और शौर्य को रेखांकित करती है। तेरहवीं कहानी छल–कपट की मौत और सीधेपन के अभिषेक की कहानी है।' यम और यमी' की चौदहवीं कहानी भाई बहन के बीच पति–पत्नीत्व के विषय में निर्णयात्मक मोड लेती है। वासना पर संयम का विषय होता है । पंद्रहवीं कहानी कहती है कि तेज और छाया दोनों का समन्वय आवश्यक है, मनुष्यों के कल्याण के लिए। 16 वीं कथा ताप के दर्शन की कथा है। जिसे सत्य का दर्शन प्राप्त होता है । 17 वीं कथा में कण्व और प्रगाथ की कथा है। जो संशय और भ्रम को तिरस्कृत करती है। 18 वीं कथा संतुलन की कथा है। भाग्य और

पुरुषार्थ के संकलन की कथा है। 19 वीं कथा पाप के प्रायश्चित से ऊपर उठने की प्रेरणा देती है। विकृत में परिवर्तन संभव है। अधम से अधम भी सदगुणों का विकास हो सकता है यह है 20 वीं कथा का लक्ष्य । 21 वीं कथा सक्रियता की कथा है जो प्रवृतिमय है वहीं सौभाग्य को प्राप्त कर सकता है। श्रम ही भोग के द्वार खोलता है। 22 वीं कथा मृत्यु पर विजय प्राप्ति की कथा है। 23 वीं कथा कहती है की वह जीवन एक यज्ञ है जो मानव हित की साधना ही यज्ञ है। 24 वीं कहानी कहती है की श्रम ही श्रेष्ठ है। आराम पाप है। 25 वी कहानी सृजनकी प्रक्रिया को समजाति है । 26 वीं कहानी कहती है कि अंधकार और भ्रम सरजनता को कुंठित करती है। 27 वी कथा में श्रद्धा की आवश्यकता को समझाया गया है। 28 वीं कहानी मनुष्य को दिव्यता की ओर ले जाने की बात करती है। 29 वीं कहानी में, मैं सर्वज्ञाता हूं ,उस अहंकार को नकारती है । 30 वीं कहानी सोमगान के महत्व की कहानी है। 31 वीं कथा में पाँच आवश्यक प्रश्न पूछे गए हैं। 32 वीं कथा में सात स्वरों का विश्लेषण करके महत्व बताया गया है। 33 वीं कथा स्वर साधना के महत्व को व्यक्त करती है। 34 वीं कथा स्वर लहरिया की आवश्यकता को रेखांकित करता है। 35 वीं कथा बड़ी सार्थक और प्रासंगिक है। घुस किसी को भी चपेट में ले सकता है। यह अधमता का प्रतीक है। 36 वी कहानि में त्याग की महता को प्रति पारित किया गया है। 37 वी कथा स्वरो के विषय में है। 38 वी कथा स्वाध्याय के तेज की प्रधानता को प्रकट करता है। 39 वी कथा भारतीय प्रजा को गंगा–यमुना सरस्वती के स्वरूप में त्रिवेणी के रूप बताती है।

40 वी कथा मातृभूमि के महत्व की कथा है। 41,42,और 43 वी कथा ए आज के प्रजातांत्रिक युग के संदर्भ में विचारणीय पृष्ठ भूमि उपस्थित करता है। प्रजा ,राजा और शासन तंत्र कैसा होना चाहिए ,इस विषय में वैदिक विचारणा का असर इन कहानियों में भरा हुआ है। प्रजा चाहे तो अयोग्य राजा या शासन तंत्र को प्रजा और उसके प्रतनिधि प्रसिद्धजनों के द्वारा हटा सकती है,और सुयोग्य शासन की स्थापना कर सकती है।

वास्तव में वैदिक कहानियां मानवीय आरोग्यम और कामयाबी के लिए ऊर्ध्वमुखी चेतना के सानदमन्द स्वर है। भारत की पुण्य भूमि त्रिवेणी है। उसके पशिचम में द्रविड़ जन है,पूर्व में गोडजन है,तथा मध्य उत्तर और दक्षिन्मे सरस्वत जन है। ये तीनों त्रिवेणी का निरभाव करते है। अंदर का उजाला बाहर के अंध कारको मिटा देता है। प्रकाश ही देव है। भोग भूमि में मनुष्य फस जाता है। जन्म भूमि में आकार मुक्त हो जाता है। यदि मनुष्य समय की कीमत जन जाए तो जीवन सफल हो जय । समय तो पनि के बहाव की तरह बह रह रहा है। वर्तमान समय में दया ,समभाव,असहिष्णुता ,समरसता आदि को जगाने वाली मानवता ही मधु विधा है। हवा क्यो चलती है ?नदिया क्यो बहती है ?वृक्ष और वनस्पति क्यो फलफूल तथा अन्न देते है ? गए दूध क्यो देती है ? सब तरफ

मधु ही मधु है। परंतु सबको उसके दर्शन नहीं होते है। ऋग्वेद का रस ' भूर ' व्यहुति माना जाता है। जिससे पृथ्वी बनी है,उसके रस को ग्रहण करके अग्नि बनी ,जो रसों का रस है। दूसरा यजुर्वेद का रस जो,' भुवर ' 'व्यकृत्त कहा जाता है। यह अन्तरिक्ष वही है । उसके रस को ग्रहण करके वायु बना यह भी रसो का रस है।

सामवेद का रस जिसे ' स्वर ' व्याहती कहा है। यह आकाश ' ध्योह ' उसके रस को ग्रहण करके आदित्य बना । सूर्य बना जो रसो का रस है। ,यह स्वयं ही वाणी का रूप ;वह अग्नि है,वाणी पृथ्वी है, यह वायु है, वाणी अन्तरिक्ष है। ही आदित्य और वाणी ध्योःआकाश है। यह प्राण है। वाणी तो वाणी है। सृष्टि के सृजनकाल में प्रजापति ने वाणी को ऐसे पीसा ,जैसे तिल पिसा जाता है,और उसके पीछे जाने से तेल निकलता है,ठीक वैसे ही वाणी का पिसे जाने से जो रस निकला ,वह देवों की तीन विधाओं के रूप में प्रकट हुआ । प्रजापति ने इन तीनों विधाओं को पिसा जिससे निकला रस तीन लोगों के रूप में प्रकट हुआ। तीन लोगों को पीसने से जो रस निकला वह तीन देवों के रूप में प्रकट हुआ। अग्नि,वायु और आदित्य ,सूर्य वेद की तीन विधाओं को फिर से पिसा गया,और उनसे जो रस निकला वह तीन व्यहुतियों के रूप में प्रकट हुआ। वे तीन लोक कहलाए।
1भूर से भू लोक
2भुवर से भू लोक
3स्वर्ग से स्वर्ग लोक

तीन व्यहुतियों को पीस कर जो रस निकला उस रस का क्षरण हुआ । क्षरण होने से वह अक्षर माना गया। वह अक्षर ही उस रूप में प्रकट हुआ । प्रजापति ने अक्षर को पिसा ,उसे पीसने से जो रस निकला रसका क्षरण हुआ। क्षरण होने से उस अक्षर का क्षर नाश हुआ नहीं,वह अभय कहा गया । अक्षर ,अक्षर ही यहए वेदो के सर स्वरूप कार ,सबसे प्रथम संगीत ओ ओ ,ओ, माँ, ओम,ओम इस तरह हुए। स्वबसे उत्तम गीत उद्‌गीत ,कहा गया। उसके द्रष्टा प्रगति पामेष्ठि ,प्रजापति ,उनके पिता आदि प्रजापति ,सं गान के ऋषि है। ब्रह्म स्वयं कार स्वयं ही ब्रह्म है। सामगान के ऋषि है। आकार को यह सं गान उत्तम ज्ञान है। जिसके दरवाजे सब और खुलते है। कोई निषेध नहीं है। देवराज इंद्र ने इस गायो और सभी प्राणियों के वे मित्र बन गए। ऐसा कहो कि भाषा का जन्म हुआ। साम गान का यह रहस्य है। जिनका सृजनहोता है,जो कुछ होने वाला है। वह भविष्य है, जो हो रहा है, वह वर्तमान है, और जो हो चुका है,वह भूत है। तो क्या प्रजापति ही एक मात्र देवता है ?हां यह सच है की,यह सब कुछ प्रजापति के स्वरूप है। लेकिन प्रजापति केवल एक नाम नहीं है। वह एक देवता नहीं है। वह देव जन्म लेता है और जन्म नहीं भी लेता। वह स्वयं दिखाई देता है और नहीं दिखाई देता । वह व्यक्त भी है और अव्यक्त भी है।

सृष्टि का सृजनकरने वाला ये देव प्रजापति है,उन्होंने सृजन करने की इच्छा की और कल्प किया। उनकी यह पहली कामना थी। ऐसा मान लो की स्वयं से ही सृजन किया। काम ने काम का सृजनकिया। काम स्वयं ही दाता है ,काम स्वयं ग्रहण करने वाला है। सृजन का यह पहला द्रव्य है। वह काम है,और उस द्रव्य का सर्जनहार प्रजापति है। जो ज्ञान है। वह इच्छा को प्रेरित करता है। ये तीनों चीजें एक है। वे अनेक बनती है। ब्रह्म रूप बनती है। उनके उस संकल्प में कल्प रहता है। कल्प ही सामर्थ्य है,प्रभाव है। जैसा कल्प करते है,वेसा बनता है, क्योंकि, यह प्रजापति स्वयं कल्प रूप बनता है। सृजन करने के लिए उस प्रजापति ने ताप किया,यह ताप क्या है ?यह काम का प्रेरक बल है।वह ज्ञान है,जो पर्यालोचन करता है, और सृजनको सरल बनता है। देखे न ! जो बीज को उपजाऊ भूमि में बो दिया लेकिन उतने से काम पूरा नहीं हो जाता है। बारिश और गर्मी ज्ञान है।और सृजन स्वयं कार्य है। यह तो एक उदाहरण है। सृजनकी प्रक्रिया पूर्व काल से चालू है। सृजनके पूर्व जो काल था,उसके पहले भी सृष्टि थी। उस सृष्टि का सृजनऔर विसृजनदोनों चलते रहते है।उसे चलाने वाला यह प्रजापति है। नदी का कार्य यह पानी जो बह रहा है,यदि उसे पूछा जय की आप किस लिए बह बह रहि है ?तो उसके पास उत्तर नहीं है। ज्यादा से ज्यादा इतना पता चलेगा की पानी का स्वभाव है बहना ,,यह उसकी वृति है,व्रत वर्णन है। पानी सृजन करने वाली सरिता है। उसके पास भी इसी प्रकार का उत्तर है। सूर्य आकाश में विचरण करता है। वह रहकर वह सृजनके कार्य करता रहता है। इसी प्रकार वायु गति करता है। उसकी गति से पानी पर तरंग उठते हैं। वृक्ष और वनस्पति एक एक पल डॉल उठती है। उस वृक्ष पर फूल आते है। फल आते है। उसका उपयोग वह स्वयं नहीं करते ,दूसरों को देते है, परोपकार करते है। उससे पूछो, आप क्यो परोपकार करते है ? किस लिए परहित करते है ,इसका उसके पास उत्तर नहीं है। उसका उत्तर वह देते है। पहले वे प्रश्न पूछते है,की ,इस वायु,सूर्य सरिता ,वृक्ष, वनस्पति, आदि का सृजन किसने किया ?यह कोनसा देव है ? जो स्वयं को विसृजनकरके दूसरे में प्रवेश कार अपने गुण ,कर्म और स्वभाव का दान करता है ?

वेद उसका उत्तर देता है,की वह प्रजापति है,जो प्रजाजन करके पालन पोषण करता है। प्रत्येक प्रजजन में स्वयं प्रवेश करता है। इस लिए वायु,सूर्य, सरिता वृक्ष,वनस्पति,आदि प्रजापति के सृजनहै। और प्रत्येक सृजनप्रजापति की तरह ही है। सूर्य सृजनकरता है।सरिता और वृक्ष ,वनस्पति सृजनकरते है। दूसरों के सृजनमें,स्वयं का विसृजनभी करते है। परोपकार और परहित करना उनका स्वभाव बंता है। उनकी वृति है। उनका व्यवहार ही यही है। उसे प्रजापति का वृत कहा है। उनहो ने तप किया,श्रम किया,उनके हृदयमें उस व्रत के लिए इच्छा जागी ,उनहो ने संकल्प किया ,इच्छा का स्फुरण हुआ ,वे प्रजापति एक थे। एक से अनेक हुए । एकसे अनेक होने के लिए उनके हृदयमें काम जागा होगा। ऋषि उनकी विविध शक्तिया को जानते है। देखते है और उसी प्रकार

उनका गुणगान करते है। अग्नि गृह पति है। इंद्रा युद्ध का देव है। वरुण ऋतु का पालन करता है। सोम वनस्पति है। इस प्रकार एक देव दूसरे देवता की तुलना नहीं कर सकता । प्रत्येक देव अपनी विशिष्ट विभूति रखता है। वेद प्राचीन भारत के पवित्रम साहित्य है। जो हिन्दूओं के प्राचीनतम और आधार भूत धर्म ग्रंथ है। वेद विश्व में सबसे प्राचीन साहित्य है। भारतीय संस्कृति में वेद सनातन वर्णाश्रम धर्म के मूल्य और सबसे प्राचीन ग्रंथ है। वेदो को ईश्वर कृत माना जाता है। इनमें प्रवृक्त भाषा वैश्विक संस्कृति कहलाती है। वेद राष्ट्र संस्कृत भाषा के विद ज्ञान धातु से बना है। इस तरह वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान है । प्राचीन काल के वसिष्ठ ,शक्ति ,पाराशर, वेद व्यास, जैमिनी ,याज्ञ वलक्य ,कात्यायन, इत्यादि। ऋषिओं को वेदों के अच्छे ज्ञाता माने जाते है।

● ●

सन्दर्भ सूची : वेदों की रोचक कथायें, लेखक :आचार्य विष्णु देव पंडित, अनुवाद डॉ. शशि अरोरा, गूगल,विकीपीडिया

● ●

भारतीय संस्कृति और कोरोना संकट

भारतीय संस्कृति विश्व में सबसे अधिक प्रचलित है। भारतीय संस्कृति के मूल में सबसे अधिक भूमिका हिन्दू धर्म की है। भारत में अनेक विध धर्म के लोग निवास करते है,साभिके धर्म अलग अलग है। आधुनिक युग में संस्कृति का जतन करना बहुत मुसकिल है,फिर भी एक हिंदुस्तान ऐसा देश है जहा संस्कृति आज भी टिकी हुई है। भारतीय संस्कृति लोगों के जीना का तरीका है।

भारतीय संस्कृति का प्रभाव पूरे विश्व में है,क्योंकि भारतीय लोग जहाँ जहाँ जाते हैं वह अपने देश की संस्कृति साथ लेकर जाते हैं। उसे समालते हैं। सिंधुघाटी से चलकर वैदिक युग में वो विकसित हुई है। यहाँ के लोगों का रहन सहन,खान पान,वेशभूषा सब भारतीय संस्कृति के अनुरूप है। बुद्धधर्म से भी उसका नाता जुड़ा है। भारत में सुवर्ण युग था। हिंदुस्तान सोने की चिड़िया कहलाता था। हिन्दू धर्म दक्षिण एशिया की आजू बाजू पाकिस्तान ,नेपाल, बंगला देश, में देखने को मिलता है। धार्मिक या सांस्कृतिक रूप से वो हिन्दू कहलाते हैं। भारत विविध संस्कृति वाला देश है। भारतीय संस्कृति में जीवन शेली मोसम के अनुरूप ,इसके भूगोल की भव्यता स्पष्ट रूप से दर्शाती है। अब कोरोना का संकट विश्व में फ़ैल चुका है ,तब भारत में कोरोना का संस्कृति के अनुरूप उसे दूर करने का प्रयास किया जा रहा है।

भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी जी ने 5 अप्रैल 2020 को राम नवमी के अवसर पर रात में नौ बजे सभी देशवासियों के घर की लाइट बंद करने की अपील की थी,तब ऐसा ही हुआ,सभी लोगों ने उस दिन अपने घर की लाइट रात को नौ बजे नौ मिनिट तक बंद रखा और दीप प्रजावल्लित करके पूरे भारत में प्रकाश फैलाकर संस्कृति को तो उजागर कर दी किन्तु कोरोना को भागने का एक प्रयास भी था। कोरोना से लोगों को बचाने के लिए आदरणीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र भाई मोदी ने भारत में 22 मार्च को जनता कर्फ़्यू की अपील की थी ,तब भी सभी देशवासियोने उनकी अपील पर जनता कर्फ़्यू का अमल सही मायने में किया था। यही दर्शाता है की भारतीय संस्कृति कितनी सराहनीय है। अब कोरोना संकट में कोरोना के लक्षण भी जानना जरूरी है।

कोरोना के लक्षण :

गले में खराश होना, सिरदर्द और डाएरिया, कुछ खाने का स्वाद महसूस न हो, किसी भी चीज की गंध महसूस न होना, यह सभी कोरोना के लक्षण है।

कोरोना वायरस के लक्षण दिखाना शुरू होने में औसतन पाँच दिन का वक्त लगता है। कोरोना के होते खांसी ,आम खांसी नहीं है। कोरोना वायरस फेफड़ों को संक्रमित करता है। भारत में संस्कृति के कारण कोरोना सफल नहीं होगा। कोरोना की वजह से उसे हारने की लिए लोकडाउन सिर्फ भारत में अमली है। उसका असरकारक परिणाम भी पाया गया है। लोक डाउन में कोई भी इंसान बिना किसी वजह घर से बाहर नहीं निकल सकता । इसकी वजह से लोगों का एकांतवास हो गया है। लोगों को परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिला है। लोग एकांतवास में वीडियो बनाकर लोगों का मनोरंजन करते है। खुद भी आनंद उठाते हैं। लोग पुस्तक पढ़ते हैं। कवि लोग ऑनलाइन कवि सम्मेलन में जुड़कर अपना समय बिताते हैं। जिनके पास कोई प्रवृति नहीं है वह लोगों को समय निकालना कठिन लगता है। कोरोना एकांतवास में पूरा देश धकेल गया है। रेल गाड़ियों के पहिये अटक गए हैं। बस,यातायात के सभी साधन बंद हैं। व्यापार उधयोग बंद पड़े हैं। सरकार पर जिम्मेवारी बढ़ गई है । लोगों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए नए अस्पताल खड़े करना ,दवाइयां उपलब्ध ाकराना,लोगों को भोजन की व्यववस्था करना। एकांतवास की अवधि बढ़ती जा रही है। कोरोना का कहर बढ़ता जा रहा है। कोरोना की महामारी से देश और दुनिया त्रस्त है। 22 मार्च से भारत में लोक डाउन चल रहा है, 14 अप्रैल को पूरा होना था किन्तु बढ़ते जाते कोरोना के मरीजो की संख्या के कारण उसकी अवधि 3 मार्च 2020 तक बंदाई गई है। मतलब लोगों का एकांतवास बढ़ गया है।

आज कोरोना के संकट की वजह से राजकीय स्थिति बदल गई है। सभी पक्ष सरकार के साथ हैं,और सहयोग कर रहे हैं। देश की सुरक्षा के लिए सभी नेता आगे आए हैं। किन्तु देश में अलग अलग संस्कृति के कारण तबलगी जमात ने अपना वारवा रूप दिखाया है। स्वास्थ्य जांच के लिए लोगों के घर जाते हुए आरोग्य विभाग के कर्मचारी,डॉक्टर,नर्स ,पुलिस ऑफिसर,पुलिस जवान,होमगार्ड जवान,सफाई कर्मचारी जो अपने जन की परवा किए बिना लोगों के लिए कम कर रहे है, ऐसे सेवाभावी लोगों पर पत्थर बरसा रहे है।

देश के पंजाब प्रांत में एक पुलिस कर्मिका हाथ तलवार से काट दिया है। उसमें वाम पंथी लोगों का हाथ है,ऐसा कहा जा रहा है। देश में उत्तर प्रदेश प्रांत में मुरादाबाद शहर में स्वस्थ्य की जांच के लिए गए हुए डॉक्टर,नर्स,और आरोग्य विभाग के कर्मचारिओं पर कुछ तबलगी जमात के लोगों ने छत से पत्थर बरसा कर उन लोगों को हानी पहुंचाई है । कोरोना को देश से भगाने के लिए सरकार अच्छा कम कर रही है,किन्तु कुछ देश विरोधी ताकतें उसमें अवरोध डाल रही है। ऐसे लोगों को बाहर लाना है,देश और संस्कृति को बचना है। कोरोना देश से भगाना है।

आज भारत में कोरोना के 5500000 केस है। 63497 लोगों की कोरोना की बीमारी की वजह से मौत हो गई है। 96435 केस गुजरात में है,और 3022 लोगों की अब तक मृत्यु हो चुकी है। भारत कोरोना से लड़ रहा है,तब उन देश विरोधियों से लड़े या कोरोना से? देवदूत जैसे डॉक्टरों पर ये लोग हमले कर रहे हैं। देश के प्रख्यात अभिनेता सलमान खान को अपील करने के लिए ,उन लोगों को समझाने के लिए आगे आना पड़ा है। उन्होंने बताया कि रहम करो,देवदूत जैसे डॉक्टर आप की स्वास्थ्य की जांच और उपाय के लिए आ रहे हैं उन पर आप हमले कर रहे हो,पत्थर बरसा रहे हो ?क्या आप बहुत ताकतवाले हो,अपने भाई या अपने मात-पिता को क्या आप कंधे पर उठा कर शमशान पहुचाना चाहते हो ?

मुस्लिम डॉ. एच. एम. खान ने उसकी कड़ी निंदा की है। तबलगी जमात इस्लाम के खिलाफ काम कर रही है,मुस्लिम कॉम को नीचा दिखा रही है,ऐसे लोगों की वजह से पूरी मुस्लिम कॉम बदनाम हो रही है। उन पर कड़ी कार्यवाही करके बड़ा जुर्माना डालना चाहिए। 302 से 307 की कलाम लगानी चाहिए। वो लोग अल्लाह को मानते नहीं है। उनको कड़ी पनिशमेंट करना होगा। सेक्युलरीजम के चश्मे के पीछे यह सब हो रहा है। उनको सऊदी अरेबिया की तरह गोली मार देनी चाहिए। देश को किस ओर ले जा रहे हैं,पुराने भोपाल में भी पुलिस वालों पर हमला हुआ था। 4 अप्रैल को स्वास्थ्य कर्मचारियों पर कानपुर में हमला हुआ था। 1 अप्रैल को इंदौर में हमला हुआ था। 15 अप्रैल को मुरादाबाद में स्वस्थ्य विभाग के कर्मचारियों और डॉक्टर पर,पुलिस पर पत्थर से हमला हुआ था। 14 अप्रैल को एन. एच. बी. हॉस्पिटल दिल्ली में हमला हुआ था। 5 अप्रैल को सूरत में और मुरादाबाद में नवाबपुर में एन एस ए टिम लगाना पड़ा है। 14 अप्रैल को हैदराबाद में अस्पताल में,3अप्रैल को गाजीयाबाद यू पी में हमले हुए थे।

कोरोना से बचने के लिए दिन में दस बार हाथ लिक्विड या साबुन से धोना है,बाहर से निकालकर घर में आने के वक्त हाथ सेनेटाइज़ करना है। मुंह पर मास्क लगाना है,सोशल डिस्टेन्स रखना है,खांसी या सर्दी,बुखार हो तो अस्पताल जाकर जांच कराना है। कोरोना से डरना नहीं है किन्तु सतर्क रहना है।
घर में रहिए, सरकार के आदेश का पालन करना घर रहें, कोरोना को भगाना है।

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

सन्दर्भ सूची :भारतीय संस्कृति :आमुख कार्य क्रम प्रधान मंत्री नरेंद्र भाई मोदीजी :बोद्ध धर्म से नाता भारतीय संस्कृति

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

वैश्विक जन धन को चुनोती देती महामारी कोरोना वायरस 19

जब किसी भी महामारी विश्व में फे़ल जाती है तब इन्सान लाखों की संख्या में मर जाते हैं और उस महामारी से मुक्त होने के लिए अरबों का खर्च होता है। चीन के वुहान शहर से उसने निकलकर पूरे विश्व में हाहाकार मचा दिया है। करीबन 205 देशों में उसने अपनी जड़े मजबूत कर ली है। एसा भयानक महामारी मरकी का रोग 1896 में पूरे विश्व में फे़ल गया था और तबाही मचाई थी।

सबसे पहले समझना होगा की यह महामारी 'कोरोना' है क्या ? साधारण जुकाम अनेक प्रकार के विषाणुओं द्वारा होता है। इनमें 75 % रेहोना वायरस तथा शेष में कोरोना वायरस होता है। इसका संरक्षण स्वसन मार्गसे होता है , किन्तु फेफड़ों को संक्रित नहीं करता। इनका संक्रामण प्रातः 3 से 7 का होता है। यह रोग मौसम बदलाव के समय तथा सर्दियों में अधिक होता है। इस रोग के प्रमुख लक्षण इस प्रकार है,इसे इंन्फलाएंजु भी कहा जाता है।

श्वसन मार्ग की म्यूक्स झिलली में सूजन,नासा कोश में कड़ापन,नाक बहना तथा छिंकना,सिर दर्द,बुखार,गले में खराश एक सप्ताह तक रहती है। इस रोग का संक्रमण छींकने से वायु में मुक्त बिन्दु कणों द्वारा होता है। इसके अतिरिक्त यदि संक्रमित व्यक्ति दरवाजा के हैंडल,घूंड़ियों,आदि को छूते हैं तो वायरस कण यहां पर लग जाते हैं,और वहां से स्वस्थ व्यक्ति में संक्रमण हो जाता है।

इस रोग के उपचार हेतु एसपीरिन,एंट्री हिस्टेमिन,नोझल आदि लाभप्रद होता है। आज कोरोना की वजह से समग्र विश्व में 1350,0000 कोरोना के केस है। भारत में 550000 केस है। 64000 लोगों की मृत्यु हुई है। विश्व में 100000 लोगों की मृत्यु हुई है। विश्व में 1000000 लोग ठीक हुए हैं। यूरोप में प्राणियों में याने कि लॉयन में भी कोरोना फे़ल गया है। कोरोना की लड़ाई लंबे समय तक चलेगी ऐसा लगता है। भारत की तरह अन्य देशों में भी लोकडाउन लगा है। करीबन सभी देशों में लोगों को सरकार की ओर से मदद की जा रही है। भारत में सांसदों की तनख्वाह से 30% रकम की कटौती कोरोना के लिए सरकार ने लेने के लिए संसद में बिल पास किया गया है। विश्व में फ्रांस में 92839 केस और 8078 लोगों की मौत हुई है। तुर्की में

आज दिनांक 7 अप्रैल 2020 को एक ही दिन में 76 लोगों की मृत्यु हुई है। और 3013 कोरोना के केस सामने आए है। स्पेन में 809 लोगों की मृत्यु हुई एक ही दिन में हुई है। आज पूरा विश्व इस महामारी से भयभीत है। विश्व की महासतत अमरीका ने भारत के पास दवाईयां मांगी है,और धमकी भी डोनाल्ड प राष्ट्रपति द्वारा दी गई है। पाकिस्तान में 2880 केस सामने आए है। विश्व में ढाई लाख लोग स्वस्थ भी हुए हैं।

कोरोना की महामारी विश्व के करीबन 205 देशों में फैलने से हवाई उड़ान भी बंद किया गया है। विश्व के अन्य देशों में फंसे हुए भारतीय लोगों को भारत सरकार ने अपने देश में लाने की व्यवस्था की गई थी। विश्व का अर्थ तंत्र बिगड़ गया है। व्यापार उद्योग बंद है। कहीं देशों में शासकीय बसे और ख़ानगी वाहनों को चलाने पर प्रतिबंद लगाया गया है। लोकडाउन का पालन सख्ती से लोगों के स्वास्थ्य के लिए सरकार करा रही है। भारत की बात करें तो दिनांक 5 अप्रैल 2020 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी की अपील पर 9 मिनिट तक लाइटघरो में बंद रखकर दीपक जलाए गए थे,उसका अनुसरण विश्व के अन्य देशों में किया गया था। और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी की अपील से एक दिन का जनता कर्फ़्यू का भी पालन लोगों द्वारा किया गया था।

भारत सरकार ने इस महामारी से बचने के लिए लोगों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए अस्पताल और दवाइया के खर्च को पहुचने के लिए लोगों से धन दान की अपील की गई है। उस के मुताबिक लोगों ने अपनी शक्ति के अनुसार प्रधानमंत्री के खाते में जमा की है। कही कंपनियो ने भी अपनी और से राशि दी गई है।

टाटा कंपनी ने 1500 करोर,रिलायंस ने 500 करोर,आई टी सी ने 150 करोर,हिंदुस्तान यूनि लीवर ने 100 करोर,हीरो साइकिल ने 100 करोर बजाज ग्रुप ने 100 कारोर ,शिरडी देवस्थान की ओर से 51 करोर और अक्षय कुमार ने 25 करोर की राशि भारत सरकार को दी है।

कोरोना की महामारी सबसे पहले चीन में 3500 के करीब लोगों की मृत्यु हुई थी। अब इट्‌ली ,के बाद अमरीका में कोरोना ज्यादा फ़ेल गया है। पूरा विश्व उसका सामना कर रहा है। विश्व में कोरोना का कहर मचा है। हमने तीन कविताएं कोरोना के लिए लिखा है । यहां एक कविता प्रस्तुत कर रहा हूं,जो सभी को पसंद आएगा।

कोरोना का कहर

कैसा ये खतरे का ब्यूगल है, दुनिया पूरी में जहर है।
कैसा ये कोरोना का कहर है,हर जगह हवा में जहर है
हर चेहरे पे मास्क लगा है,हर इंसा सेवा में खड़ा है
जहां भी देखो हाल यही है ,आज भयानक रात पड़ी है,
पंजाब में कर्फ़्यू लगा है,सभी शहर में लोक लगा है
मौन की छाया हर शहर है ,कब क्या होगा किसे खबर है
चीन से कोरोना चला है,पूरे विश्व में फ़ैल चुका है
बंद है व्यापार बंद है द्वारे ,बैठे हैं सब डर की वजह से
क्या होगा इन बेचारों का ? क्या होगा इन लाचारों का ?
कोरोना का कहर चला है, लगता कोई चाल चला है
इनका सब कुछ खो सकता है,इन पे हमला हो सकता है
कोई रक्षक नजर नहीं आता,सोया है आकाश में दाता,
ये क्या हाल हुआ अपनों का,प्यार का आज निकल रहा है जनाजा
कवि गुलाब कहे तुम सतर्क रहना ,कोरोना से तुम न डरना

सन्दर्भ सूची :अखबार के जरिए, सरकारी रिपोर्ट

कोरोना वाइरस की स्थिति प्रति दिन

विश्व में आतंक मचाने वाला यह कोरोना वाइरस क्या है,उसके लक्षण क्या है,क्या करना है क्या नहीं करना है उसकी जानकारी लेंगे। बाद में उसकी स्थिति के बारे में जानेंगे।

कोरोना के लक्षण :

–सिर दर्द
–छींक
–सांस की तकलीफ
–खांसी
–किडनी फेल हो जाना

सबसे पहले यदि इंसान को बुखार आती है,फिर सूखी खांसी और हफ्ते भर यदि यही रहे तो सांस की तकलीफ होती है तो ,कुछ मरीजों को अस्पताल जाना पड सकता है।

क्या न करें :–

खांसी या बुखार है तो किसी के संपर्क में न आए
सार्वजनिक जगह पर न थूंके
जीवित पशुओं से बचे–
कतलखाने के नजदीक न जाए
भीड़भाड़ वाले क्षेत्र में एवं समागम में जाने से बचे
भ्रम से दूर रहे,भ्रम न फैलायें
पर्यटक,पर्यटन स्थल से दूर रहे

Covid–19 वाइरस अधिकतम तापमान 30 से 35 डिग्री सेल्सियस में खुद व खुद निष्प्रभावी हो जाता है।

कोरोना से बचने के लिए उपाय :

दिन में हो सके उतनी बार हाथ साबुन या लिक्विड से 20 सेकंड तक पानी से धोए
खांसी या सर्दी हो तो डॉक्टर को तुरंत ही बताना चाहिए
छींकते वक्त मुंह के सामने हाथ रुमाल रखना है,यदि रुमाल नहीं है तो हाथ को मुंह के आगे रखना चाहिए
कोल्ड ड्रिंक नहीं पीना चाहिए
मांस मटन से दूर रहना चाहिए
घबराना नहीं चाहिए
बिना किसी काम बाहर नहीं निकलना चाहिए
मुंह पर हाथ लगाने से बचना चाहिए

बाहर निकलते वक्त मुंह पर मास्क लगाना चाहिए
इस्तेमाल किए गए टिस्यू को फेंक देना होगा
जो बीमार है उनके संपर्क नहीं रहना चाहिए
ज्यादा अस्वस्थ होने पर तुरंत डॉक्टर को संपर्क करें
अपनी व्यक्तिगत सफाई पर ध्यान दे
जागरूकता के लिए, बचाव के लिए जानकारी लें
सी फूड और अंडे का सेवन न करें

कोरोना से बचने के लिए सरकार सारे इंतजाम कर रही है। फिर भी दिन प्रतिदिन उसका आतंक बढ़ता जा रहा है। अभी एक ऐसी जानकारी मिली है कि सिडनी से भारत आया हुआ 35 साल का नव युवान ने दिल्ली सफदरगंज अस्पताल की छत से छलांग लगाकर अपनी जान दे दी है। उसे पॉज़िटिव रिपोर्ट नहीं आया था फिर भी ऐसा कदम उठाया।

कोरोना की स्थिति :

कोरोना से चीन के वुहान शहर में 3245 लोग मार्च 2020 की शुरुआत में मर गए थे। चीन में सरकार ने इमेडियटली आइसोलेसन अस्पताल रात में खड़े किए। वुहान से किसी को बाहर निकालने नहीं दिया । इसलिए आज वह कोरोना न के बराबर होने लगा है। किन्तु पूरे विश्व में पहुंचने लगा है। 3 मार्च तक कोरोना वाइरस 70 देशों में फ़ेल गया। आज दिनांक 18 मार्च तक विश्व के 166 देशों में कोरोना का वाइरस आतंक मचा रहा है। करीबन पूरा विश्व कोरोना की झपट में आ गया है,विश्व स्तब्ध हो गया है। व्यापार उद्योग बंद पड़े हैं। टूरिज़्म खल्लास है,आज 31 मार्च की 168 ट्रेन भारत में बंद की गई है। नगर निगम की बसें मुसाफिर नहीं होने से 50% बसे बंद है।

3 मार्च तक अमेरिका में 4 मृत्यु हुई थी,वह बढ़कर आज 8 मार्च तक 7887 हो गई है। 9 मार्च तक कनाडा में 69 केसों की पुष्टि की गई है।

आज 18 मार्च तक विश्व में 9000 से ज्यादा लोगों की मृत्यु कोरोना की वजह से हुई है।

ब्रिटन में 17 लोगों की मौत हो चुकी है,और 104 केस ऑब्जरवेसन में है। फ्रांस में 264 लोगों की मृत्यु हो गई है। भारत में 3 लोगों की मृत्यु हुई है। भारत में 91 केस पोजिटिव मिले है। भारत में कोरोना से मरने वाले के परिवार को सरकार 4 लाख सहायता देगी । अब तक भारत में आंध्र में -1 केस ,पंजाब में -2 केस ,लद्दाख में -8 केस,जम्मू कश्मीर में -4 केस,उत्तरा खंड में -1 केस,पश्चिम बंगाल में -1 केस ,मरस में -47 केस,केरल में-27 केस,हरियाणा में -17 केस,राजस्थान में-7 केस,तमिलनाडू में -4 केस

,पॉण्डिचेरी में –कमम121 केस पोजिटिव कोरोना का मिला है। फिलिपाइन्स में 400 विद्यार्थी गुजरात के फसे पड़े हैं। इट्ली में 14 मार्च को एक ही दिन में 250 लोगों की मृत्यु हो गई है। 15 मार्च तक इट्ली में35700 लोग कोरोना की झपट में आ गए हैं। भारत में आज 18 मार्च तक 172 केस पोजिटिव है।

इट्ली के रास्ते सुनसान हैं। डर का महौल है। शव घर में ही पड़े हैं। कोई बाहर नहीं निकलता । वृद्धों को इट्ली में कोरोना की सबसे ज्यादा असर हुई है।

पाकिस्तान में सिंध प्रांत में कोरोना ज्यादा फ़ैल गया है। इमरान खान ने लोगों को घर से बाहर न निकलने की सलाह दी है। इमरान खान बताते हैं कि यह एक प्रकार का फ्लू है।

आज18 मार्च को रात 8 बजे नरेंद्र मोदी प्राइम मिनिस्टर ऑफ इंडिया टीवी पर अपना भाषण सुनाने वाले हैं। भारत में सीबीएससी की परीक्षा 31 मार्च तक स्थगित की गई है। पोर्टूगिज और नागदा बीच दीव में बंद कर रखा है। विदेश से 166 लोग भारत आए उन सभी लोगों का स्क्रीनिंग किया गया है। भारत में आए हुए 131 लोगों को आइसोलेसन वार्ड में रखा गया है। कोरोना की वजह से निफ्टी 500 पॉइंट गिर गया है,जबकि सेन्सेक्स 1800 पॉइंट गिर गया है। शेयर मार्केट टूट गया है।

जयपुर राजस्थान की मानसिंह हॉस्पिटल के डॉक्टर ने 3 कोरोना के दर्दी को स्वस्थ बना दिया है। न्यूज़ 20 पर उसका रिपोर्ट आया था। उस हॉस्पिटल की डॉक्टर टीम ने एच आई वी और क्लोरोक्वीन मलेरिया की दवाई से उन्हें ठीक कर दिया है। कोरोना की दवाई अब तक शोध नहीं कर पाये है। लेकिन डॉ. प्रकाश केशवाणी और उनकी टीम ने बड़ा कारनामा कर दिखाया है। लोपमाइन और आइटोना दवाई 250 मिलीग्राम की मात्र में देकर 3 लोगों को कोरोना मुक्त किया गया है।

‘‘काहै को रोना, जंग है कोरोना ”

गुजरात में ग्राम्य विस्तार में कोल्ड ड्रिंक पर प्रतिबंध फरमाया है। गुजरात में लोक साहित्यकार एवं गायक कलाकार सनी राम दवे ने रेप गीत सुनकर कोरोना से डरना नहीं और क्या करना है बचने के लिए वो गीत प्रस्तुत करके सभी को बताया गया और वैदिक संस्कृति की और वापस लोटकर छाणे और लोबान धूप से यज्ञ करके कोरोना से बचने का उपाय दिखाया है। अभी होट्ल उद्योग ,टूरीज्म सभी बंद पड़े हैं। व्यापार में लोगों को लाखों का नुकसान हो रहा है। आईपीएल मैच भी रद्द कर दिये गए हैं। सितंबर में आयोजित होगा तब तक क्रिकेटरों को करोड़ों रूपयों का नुकसान भुगतना पड़ेगा। मोल,सिनेमा

सभी बंध है। स्कूल एवं कॉलेज बंद है। किन्तु गुजरात गवर्नमेंट ने ऑनलाइन बच्चे गूगल से चैनल पर घर में बैठे पढ़ सके ऐसी व्यवस्था की है। राजस्थान में गुलाबी नगरी जयपुर से सभी पर्यटक अपने घर की ओर लौट गए हैं। अभी कोई पर्यटक यहां नहीं आने से लोगों को व्यापार में नुकसान उठाना पड़ेगा।

इस महामारी से बचने के लिए फ्लॉरिडा में इकट्ठे होने पर पाबंदी लगाई गई है। फ्लू जैसे चिन्ह लगे तो तुरंत अस्पताल जाना होगा। न्यूयोर्क सिएटल वॉशिंगटन में स्कूल बंद कर दी गई है। ऑनलाइन कॉलेज चल रहे हैं। फ्लॉरिडा में 18 केस संदिग्ध है। एक भी मृत्यु कोरोना की वजह से यहां नहीं हुई है पोलेंड की बॉर्डर पर पाबंदी लगाई गई है। व्यापार रोजगार बंद पड़े हैं। रास्ते सुनसान है।

पेरिस में होटेलों में सील लगा दी है। टूरिज्म बंद हो गया है। कुछ कंपनी अपने कर्मचारियों को मास्क और सेनेटाइजर की सवालियत दे रही है। सभी कॉन्फ्रेंस बंद है। किसी भी प्रकार की इवेंट नहीं होगी।
कनाडा के आंटरिया में कोरोना वाइरस का ज्यादा असर है। 9 मार्च तक 69 लोगों की मृत्यु की पुष्टि की है।
लंदन में देव दर्शन पर प्रतिबंद लगा दिया है। लोगों को जीवन की जरूरी चीजें संग्रह करने की सलाह भी दी गई है.

लेस्टर में मास्क खरीदी अमर्यादित होने से मास्क और सेनीटाइजर की अछत हो गई है। लंदन से भारत वापस आई कक्षा 8 की लड़की को कोरोना पोजिटिव आया है। चंडीगढ़ में एक युवती विदेश से आई है उसका कोरोना पोजिटिव आया है। लंदन में विद्यार्थियों की स्थिति बहुत ही खराब है। स्टूडेंट वीजा पर गए हुए विद्यार्थी फस गए हैं। नौकरी बंद होने से खर्चा करना मुश्किल है। खाद्य चीजों का संग्रह करने वालों को कोई तकलीफ नहीं है।

विश्व भर में कोरोना का आतंक यथावत् है। दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। भारत की बात करें तो वैष्णव देवी की यात्रा स्थगित कर दिया गया है। इटली में कोरोना वाइरस ज्यादा खतरनाक है। यूरोप के इटली में रास्ते भयावह है। शहर सुनसान है। इटली में 31506 केस की संख्या बढ़ गए हैं। चीन में से कोरोना की विदाई हो गई है। विश्व के 172 से ज्यादा देशों में कोरोना फ़ैल चुका है। विदेश में करीबन 206 भारतीयों को कोरोना ग्रसित असर हो गई है।

यू एन सुरक्षा परिषद की बैठक संयुक्त राष्ट्र संघ ने रद्द कर दी है। सुरक्षा अध्यक्षता पद हाल चीन के पास है। ईरान से 205 लोगों को भारत सरकार वापस लाई है। श्रीलंका में दो सप्ताह से इंटरनेशनल फ्लाइट रद्द कर

दी गई है। जापान ने कोरोना की दवाई बनाई है,ऐसा दावा हो रहा है। वैज्ञानिकों के मत से कोरोना की दवाई की शोध करने में अभी समय लगेगा

गुजरात की राजधानी गांधीनगर में 3 दर्दी आइसोलेसन वार्ड में भर्ती है। गिफ्ट सिटी की नजदीकी होटल में विदेश से आए हुए 60 व्यक्तियों का स्क्रीनिंग किया गया है। नगर निगम की बसें पानी से धो दी गई है। ड्राईवर कंडक्टर को सेनेटराइज़ और मास्क की व्यवस्था दी गई है। हिम्मतनगर की 600 बसें रद्द कर दी गई हैं। लोग घर से कम बाहर निकल रहे हैं। गांधीनगर की 50% बसें रद्द कर दी गई है।

कोरोना से सुरक्षा देनेवाला आयुर्वेदिक उकाला –

अभी तक कोरोना के वाइरस के नाश के लिए एक भी दवाई या इंजेक्शन की शोध नहीं हुई है।
कोरोना वाइरस से होता है। बेकटेरिया का चेप लगने से बचने के लिए इम्यूनिटी याने कि रोग प्रतिकारक शक्ति अच्छी होनी चाहिए। इम्यूनिटी स्ट्राँग होने से वाइरस का चेप जल्दी नहीं लगेगा । आयुर्वेद में इम्यूनिटी को ज्यादा महत्व दिया गया है। आयुर्वेद में बहुत सारे औषध है जो नियमित रूप से इम्यूनिटी बढ़ाते है। एसे ही सेवन करने से इम्यूनिटी बढ़ती है। एसे ही इम्यूनिटी बढ़ाने वाले उकालेकी नियमित रूप से सेवन करने से इम्यूनिटी बढ़ती है और कोरोना जेस इनफेकसन से रक्षा होती है।

उकाले के मुख्य द्रव्य :

करियाता –1 भाग ,कडु–1/2 भाग,भूमि इमली –1 भाग,महाराष्ट्रवादी कवाथ पावडर,गलो–1 भाग हल्दी–1 भाग,त्रिकाह–1 भाग ये सभी को मिलाकर कूटकर उसे रोजाना पानी में 5–7 ग्राम पावडर लेकर उसे गरम करके 1 चम्मच रह जाय फिर पी लेना होगा।

यदि तुम्हें सर्दी,बुखार या श्वास लेने में तकलीफ लगे तो अस्पताल पहुंच जाना उचित है कोरोना के लिए बहुत सारे देशों ने जेल के कैदियों को मुक्त कर दिये हैं। कुछ जेलों में कैदियों की सुरक्षा के लिए इंतजाम किए गए हैं। कोर्टो में अरजेंट केस ही चलाये जाते हैं। किसी वकील या असिल पर गैर हाजरी में कोई एक्शन नहीं लिया जाएगा।

लेह लद्दाख में भारतीय सैन्य का जवान कोरोना ग्रस्त होने की खबर से चिंता बढ़ गई है। दिल्ली एनसीआर और भुवनेश्वर में लेब शुरू किए जा रहे हैं। एक लैब में रोजाना 1400 सैंपल की जांच हो सकती है। सार्वजनिक जगह पर थूंक ने वालों से दंड वसूला जाता है। गांधी आश्रम और सरदार स्टेच्यू बंद कर दिया

गया है।

कोरोना की वजह से आई हुई मंडी के विरुद्ध विश्व एक हो गया है। अमेरिका सहित 5 देशों ने एक राहत पैकेज की घोषणा की है। डूबते लोगों को बचाने के लिए रुपए 170 लाख करोड़ की सहायता दी जाएगी। अमरीका 1 लाख करोड़ डॉलर की सहायता देगा। जिसमें छोटे बिजनेस मैन एयर लाइन और इंडस्ट्रीज को राहत मिलेगी। टैक्स पे करने में 90 दिन की छूट दी जाएगी। जर्मनी ने 55000 ब्रिटन ने 40000 करोड़ की सहायता देगा। भारत की भी नजर पैकेज की ओर है।

भारत में दिल्ली में सीएए के विरोध में मुहिम चला रही महिलाओं के लिए कोरोना से बचने के लिए उपाय किए जा रहे हैं। इन्हें मास्क और सेनैटराइजेशन की व्यवस्था की गई है।

कोरोना की वजह से भारत में विदेश से आने वाले लोगों पर प्रतिबंध लगा दिया है। पोलेंड फिलिपाइन्स एयर पोर्ट पर गुजरात के 400 विद्यार्थी फस गए हैं। जगह-जगह क्वारेंटाइन वोर्ड खुल रहे क्वारेंटाइन वोर्ड से बाहर निकलने वाले व्यक्ति के सामने एफ आई आर की जाएगी। इस तरह का नियम कलेक्टर की ओर से बनाया गया है।

पूरे विश्व में हाहाकार मच गया है। कोरोना का पंजा आगे बढ़ रहा है। कौन जाने कब तक ये रुकेगा। विदेश में आयोजित सभी मेडिकल कॉन्फ्रेंस रद्द कर दिये गए हैं।

● ●

सन्दर्भ सूची :टी वी न्यूज, अखबार पत्रिकाएं,

● ●

नारी उद्धारक स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मंत्री डॉ. बी आर अम्बेडकर

भारतीय समाज में खास तौर पर नारियों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी, अंतिम दो सौ वर्षो के समय काल में भारत वर्ष के लिए परिवर्तन युग था, 19 वीं सदी में भारतीय नारी सती प्रथा, बाल विवाह, बाल हत्याएं, एक से अधिक पत्नी, विधुर फेर विवाह प्रतिबंध, दहेज प्रथा, जाति बंधन, ऊँच नीच, जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, निरक्षरता, कन्या शिक्षा का अधिकार नहीं, कुरीतियां और अत्याचार से स्थिति दयनीय थी,
डॉ बाबा साहब अम्बेडकर नारी उद्धारक, भारतीय संविधान के रचयिता एवं प्रथम न्याय मंत्री थे. नारीओं के उत्थान में उनका अमूल्य योगदान रहा है.

ऐसी परिस्थिति में से नारीओं को बाहर निकालने के लिए ब्रह्म समाज के अग्रणी राजा राम मोहन राय, प्राथना समाज के अग्रणी महादेव गोविंद राना डे,, आर्य समाज के श्री दयानन्द सरस्वती जैसे अनेक समाज सुधारवादी और संस्थाएं, आगे आई थी, ये सभी नारीओं के लिए सुधारवादी बनकर मर्यादित काम कर रहे थे, लेकिन ये सभी का कार्य ज्यादातर समाज के उपरी वर्गों के लिए केंद्रित था, एक सिर्फ ज्योतिबा फूले और उनके धर्म पत्नी ने महाराष्ट्र में शूद्र वर्ग में काम शुरू किया था,
20 वी सदी में भीमराव रामजी अम्बेडकर के उदय होने से ये सुधारवादी निचले स्तर पर अस्पृश्य महिलाओं तक पहुंचा, अस्पृश्य महिला, अस्पृश्य वर्गों में भी थी, और महिलाएं भी थी, इस तरह उनकी वेदना, व्यथा और दुर्दशा तो दोगुनी होती जा रही थी,

भारतीय नारी समाज का स्वतंत्रता और समानता का संग्राम डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर के नेतृत्व में, पिछड़े वर्ग की नारीओं से, 'महाड' से शुरू हुआ था, चाव दार तालाब में से पानी प्राप्ति का महाड सत्याग्रह (1829)डॉ. बी आर अम्बेडकर के लिए धर्म युद्ध था, यह संग्राम में डॉ. अम्बेडकर के ऐलान से नारियां बहुत भारी संख्या में जुड़ी थी और विजय प्राप्त करवाया था,

यह सत्याग्रही नारीओं को संबोधित करते हुए डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि, 'तुम्हारी जाति को तुम अस्पृश्य मानना नहीं... बिन दलित नारी जिस तरह सारी पहनती है, उस तरह तुम भी पहनो, कपड़े चाहे फटे हुए हो लेकिन उसे स्वच्छ

रखिये, आप काघर भी स्वच्छ रखो, तुम्हारी गोद से जन्म लेना वो पाप, और अन्य की कोख से जन्म लेना पुण्य,ऐसा क्यूं? विचार तुम्हें करना है, तुम संकल्प करो कि ऐसी कलंकित स्थिति में अब तुम जियें गी नहीं, तुम्हें पुराने गंदे विचारो का त्याग करना होगा, तुम्हारी पहचान की निशानी चांदी के गहने है न? छोड़ दें उसे,घर में अमंगल बात होने नहीं देना, मरे हुए पशु का मांस खाना नहीं, शराबी पति, भाई, पिता या फिर पुत्र को खाना देना बंद कर दो, लड़कियों को शिक्षा दिलाएं, ज्ञान और विद्या ही महिलाओं का कल्याण करने वाली है, हमारी मूवमेंट का लक्ष्य अत्याचार, अन्याय, पुरानी रीत रस्म, परम्पराएं, किसी के विशिष्ट अधिकार विरुद्ध लड़कर, हमारे लोगों को कायम की गुलामी में से मुक्त करना है, याद रखिए... जो संघर्ष करता है, उसे ही सफलता प्राप्त होती है,

दूसरे दिन महाड परिषद् में, महिलाओं ने अपने अपने गांव जाने से पहले, अपने नेता के आदेश से, अपनी सम्पूर्ण वेशभूषा बदल ली थी, चांदी के गहने उतार दिया था, युग पुरुष डॉ. अम्बेडकर की युग वाणी का प्रभाव था, नारी मुक्ति की ये चिनगारी डॉ. अम्बेडकर ने प्रकट की थी,

देश में एक व्यापक मान्यता प्रचलित है कि, डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर स्वयं अस्पृश्य वर्ग के हैं, इसलिए उनकी लगन और निष्ठा दलितों के प्रति ही था, लेकिन हकीकत कुछ अलग ही थी, डॉ. अम्बेडकर एक निष्ठावान, संवेदनशील व्यक्ति थे, उन्होंने पीड़ा या दर्द का जहाँ और जब अनुभव किया था, तब उनका हृदय व्याकुल हो गया था, परिणाम स्वरुप खुद पीड़ाएं और यातनाएं दूर करने का मिशन बन चुके थे, डॉ बाबा साहब अम्बेडकर की नारी उत्थान की भूमिका को इस सन्दर्भ में गिनना होगा,

हिन्दू समाज में अस्पृश्य लोगों पर अत्याचार इसलिए होते थे कि उन्हें सबसे निम्न जाति में धकेल दिए थे, परंतु भारतीय नारीओं की हालत इस बाबत में तो सभी जाति और वर्ग में वो निम्न कक्षा की ही थी, और अस्पृश्य शूद्र नारी तो अति निम्न कक्षा में थी, डॉ. अम्बेडकर का मिशन दलित नारी तक सीमित नहीं था, समग्रतः भारतीय महिला जगत को स्वतंत्रता और समानता दिलाने के लिए वो निश्चित थे, हाँ, उनकी काम करने की शुरुआत दलित नारीओं से हुई थी,

अखिल भारतीय दलित वर्ग परिषद् का सम्मेलन सन् 1942 में नागपुर में आयोजित किया गया था, जिसमें 70000 से ज्यादा लोग उपस्थित थे, वहीं मंच के नीचे बाद में मिली हुई 'नारी परिषद्' में डॉ. अम्बेडकर ने संबोधित करते हुए कहा था कि, 'नारीओं का अपना खुद का एक संगठ्न होना अत्यंत महत्वपूर्ण है, समाज में स्थिर बन गई परम्पराओं ने और रीति रिवाजों

को खत्म करके तुमने महान कार्य किया है, आप की प्रगति से मुझे संतोष है, अब तुम्हारे संतानो को शिक्षा दिलाएं, उनकी महत्वकांक्षाओं को जाग्रत करिए, उन्हें कहो कि जगत में महान होने के लिए ही आप का सृजन हुआ है, उनके मन में ज़म गई लघुता ग्रंथी को भगा दो,

कन्याओ को खास तोर पर कहना है कि, शादी करने में जल्दबाजी न करें, शादी करने वाले को समझना होगा कि ज्यादा बच्चे को जन्म देना वो पाप है, और सब से अधिक जरूरी बात यह है कि, विवाहित कन्या ने विवाह के बाद अपने पति के साथ निष्ठा से रहना चाहिए, पति के साथ मित्र भाव, समदर्शिता, नहीं की उसकी दासी के रूप में,

नारियों के जीवन का विकास और उन्नती के लिए डॉ अम्बेडकर ने जीवन के केसे उम्दा पाठ पढ़ाए हैं वो देखो, ये तो सिर्फ नमूने के रूप में है, डॉ. अम्बेडकर ने सभी नारीओं में आत्म विश्वास और आत्म सम्मान जगाया था,

भारतीय संविधान में डॉ. अम्बेडकर ने नारीओं को सामाजिक सुरक्षा, स्वतंत्रता और समानता दिलाने के पक्ष में थे, उन्होंने इसलिए ही भारतीय संविधान में भारत के कानून मंत्री और भारतीय संविधान के रचयिता के रूप में नारी समाज को न्याय दिलाने में बहुत प्रयास किए, इसलिए स्वतंत्र भारत में संविधान से नारी देश की नागरिक है, गुलाम नहीं है, धर्म, जाति, लिंग, प्रदेश में महिलाओं को सम्मान तक प्राप्त है, अब स्वतंत्र है, वाणी की अभिव्यक्ति के लिए, सभा, संगठ्न रचने के लिए देश में चाहे वहां भ्रमण करने के लिए, शासकीय कार्यालयों में नौकरीओं में और सरकारी पदों में उनका समान अधिकार है, शिक्षा प्राप्ति के लिए और पढ़ाई कराने के लिए उनका अबाधित अधिकार है, वे स्वतंत्र मताधिकार धारण करती है, लोक प्रतिनिधि के रूप में चुनाव जीतने के लायक हैं,ऐसे अनेक संवैधानिक अधिकार, जो महिलाओं को स्वतंत्रता के बाद प्राप्त हुए हैं, उसके लिए छेड़ा गया अभियान में डॉ अम्बेडकर का महत्व पूर्ण योगदान है, इन्हें इतने से संतोष नहीं था, उन्होंने नारी कामदार के लिए भी मूवमेंट चलाया, प्रसूति के समय नारी कामदार को छुट्टियां मिले और सह वेतन मिलेएसा उद्योग पति और सरकारों को जिम्मेदारी सौंपी गई, फिर भी उन्हें पर्याप्त नहीं लगने से भारतीय नारीओं के विशेष अधिकारों के लिए लोक सभा में उन्होंने हिन्दू संहिता विधेयक (हिन्दू कोड बिल) पेश किया था, डॉ. अम्बेडकर ने यह विधेयक पेश किया गया था तब पुरुष प्रधान देश में हलचल मच गई थी, विधेयक में विवाह की विविधता पर अंकुश लगाने के लिए, नारी ओ को पति से मुक्त होने का अधिकार, पूंजी पाने का अधिकार, बच्चे को गोद लेने के लिए पत्नी की मंजूरी, जरूरी, जैसे अनेक नए बदलाव अम्बेडकर लाए थे,

यह विधेयक में दूसरे बहुत सारे प्रावधान रखे गए थे, लेकिन प्रचंड विरोध के कारण अंत में ऊपर में दी गई चार बाबत को स्वीकार के सभी के बाद में अलग अलग तौर पर कानून बने, डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर हकीक़त में अभिनंदन के अधिकारी है,

भारतीय नारीओं की स्थिति में सुधार लाने में डॉ. अम्बेडकर का आदर्श गौतम बुद्ध थे, भारतीय महिलाओं को पुरुष समकक्ष, श्रेष्ठता, स्वतन्त्रता, समानता और प्रतिष्ठा दिलाने का उदेश्य था, डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर ने नारीओं के उत्थान के लिए संविधान में उसके अनुरूप कानून व्यवस्था बनाकर अधिकार दिए गए, डॉ. अम्बेडकर को नमन करते हैं!

● ●

सन्दर्भ सूची : डॉ अम्बेडकर विचार और व्यवस्था, लेखक : गोविंद भाई चौहान प्रकाशन :पार्श्व पब्लिकेशन्स अहमदाबाद, 2008 में प्रकाशित

● ●

फेसबुक ट्विटर पर उभरता साहित्य - दशा और दिशा

सोशल मीडिया के माध्यम से फेसबुक और ट्विटर पर लिखा जाता साहित्य एक अलग पहचान लेकर आगे बढ़ रहा है, हिंदी भाषा में ही सुन्दर और उम्दा जानकारी प्राप्त होती है, आज साहित्य की परिभाषा बदल गया है, उसका माध्यम भी फेस बुक और ट्विटर उभर कर सामने आया है, उससे हिन्दी साहित्य ज्यादा उभर आया है,

हिंदी साहित्य की दशा और दिशा बदल गई है, कविता, कहानी लघुकथा, शेर, शायरी और नई किताबों की जानकारी भी प्राप्त होती है, साहित्य की गति तेज बन गया है, एक सेकंड में साहित्य दूसरी व्यक्ति के पास पहुच जाता है, फेस बुक और ट्विटर जैसे मीडिया के माध्यम से हिंदी की सैर तेजी से बढ़ रही है,हिंदी साहित्य की दशा और दिशा बदल गई है,

इलेक्ट्रोनिक मीडिया फेस बुक और ट्विटर के माध्यम से हिंदी का प्रचार :-

मीडिया की भूमिका हिंदी ही है, जो सारे भारत में हिंदी में घटनाएं एवं न्यूज का विवरण प्रस्तुत करते हैं, ज़न मानस को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं, हिंदी राष्ट्रभाषा प्रचार समितियां भी पूरे भारत वर्ष में हिंदी को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं, हर साल देश विदेश में हिंदी साहित्य सम्मेलन होते हैं, उसमें प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन के जरिए हिंदी का प्रचार प्रसार करने के लिए मीडिया द्वारा ही जानकारी दी जाती है,
भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय केंद्रीय हिंदी निदेशॉलय की और से भी पूरे भारत वर्ष में हिंदी तर भाषी राज्यों में हिंदी शिविर का आयोजन करके लोगों के मानस तक हिन्दी को पहुचाने का उत्तम कार्य कर रहे हैं, हमें प्रसन्नता हुई है क्यू की भारत सरकार के द्वारा आयोजित हिंदी शिविरों में हमने केरल, दार्जिलिंग, हरिद्वार, पुणे, नागपुर, मुंबई और शिलॉन्ग तक हिस्सा लिया है किन्तु कहीं पर भी संपर्क करने में हमें कोई कठिनाइयां महसूस करनी पडी, हिंदी सिनेमा, हिंदी न्यूज देखने पढ़ने में कोई कठिनाई का सामना करना नहीं पड़ता है लेकिन हिन्दी को बोलचाल की भाषा उपरांत पत्राचार की भाषा बने,एसा मेरी इच्छा है, अंग्रेजो को गए हुए 70 साल हो गये फिर भी अंग्रेजी भाषा का मोह लोगों का पीछा नहीं छोड़ता है, एक क्रेज हो गया है, अपने बच्चों को अंग्रेजी भाषा स्कूल में दाखिला लेते हैं किन्तु यह अंग्रेजी भाषा की स्कूलों में

हिंदी के माध्यम से ही बच्चों को समझाया जाता है, बच्चे घर और स्कूल के अंदर ज्यादातर हिंदी में ही बात करते हैं,

अस्सी साल पहले गांधीजी ने हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने का काम किया है, राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने हिंदी का सम्मान बढ़ाया है, उन्होंने संसदीय समिति की रिपोर्ट याने कि सिफारिश स्वीकार किया है, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री हिंदी में बातचीत कर सकते हैं, पढ़ लिख सकते हैं, तो हिन्दी में ही अपना स्पीच देते हैं,

अब सी. बी. एस. की केंद्रीय विद्यालयों में आठवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक हिन्दी को कम्पलसरी किया गया है,

अपने प्रधान मंत्री विदेश में चीन, रूस, जापान और कही भी जाते हैं तो वहां अपने समकक्षों के साथ हिंदी में बात करते हैं, अपना वक्तव्य भी हिंदी में देते हैं,

यह तो हिन्दी के प्रचार प्रसार की बात की है, मीडिया के माध्यम से ही हम यहां बैठकर सब कुछ देख सकते हैं, सुन सकते हैं यह सभी ऊपर में की गई बातों के हम सभी साक्षी है,

आज हिंदी अभिव्यक्ति की सबसे सशक्त माध्यम बन गया है, हिंदी चैनलों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है, बाजार की स्पर्धा के कारण अंगेजी चैनलों का हिन्दी में रुपांतर हो रहा है, अब सैंकड़ों पत्र पत्रिकाएं इंटरनेट पर उपलब्ध हैं,

हिंदी के वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों में भी देखा जा सकता है, संचार माध्यमों ने हिंदी के वैश्विक स्वरूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है, देश की संस्कृति भी हिंदी भाषा की वाहक है, संचार माध्यमों पर प्रसारित कार्यक्रम से समाज के बदलते सच को हिंदी के वहन के माध्यम से ही उजागर किया गया है, डिजिटल युग में दुनिया में हिंदी की मांग अंग्रेजी की तुलना में पांच गुना अधिक तेज है, हिंदी अंग्रेजी की तुलना में पाँच गुना तेजी से बढ़ रही है, हिंदुस्तान में हर पांचवा इंटरनेट प्रयोगकर्ता हिंदी का उपयोग करता है, अंग्रेजी की सामग्री की खपत केवल 19 फीसदी दर से बढ़ रही है जब कि देश में हिंदी सामग्री की डिजिटल मीडिया में खपत 94, फीसदी के दर से बढ़ रही है,

आज स्मार्ट फोन के रूप में हर हाथ में एक तकनीकी डिवाइस मौजूद हैं और उसमें हिंदी की ऑपरेटिंग सिस्टम हिंदी में मैसेज भेजना, हिंदी संदेश पढ़ना सुनना या देखना लगभग उतना आसान हो गया है कि जितना अंग्रेजी सामग्री को, हालाकि कंप्युटर पर भी हिंदी का व्यापक प्रयोग होता है, इंटरनेट पर भी, लेकिन मोबाइल ने हिंदी भाषा के प्रयोग की इतना तेज गति पकड़ लिया है कि उसकी कल्पना करना मुश्किल है, इन्टरनेट पर भारतीयों में हिंदी

भाषा के प्रति रुझान बढ़ा है, भारत में 50 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी भाषा का बोल चाल में उपयोग कर रहे हैं, 21 प्रतिशत लोग ही भारतीय हिंदी में इंटरनेट का प्रयोग करना जानते हैं, भारतीय युवा 93 प्रतिशत हिंदी वीडियो देखते हैं, हिंदी मीडिया के प्रमुख घटक नीचे दिए गए हैं,

1 हिंदी रेडियो..

2.टेलीविजन

3.हिन्दी फ़िल्में

4.हिन्दी ई पत्र पत्रिकाएं

5.हिन्दी सायबर

भारत सरकार ने इंटरनेट पर हिन्दी के लिए बहुत सारी वेबसाइट उपलब्ध करायी गयी है,

1-www word any where. In

2-www-Lprc iiit AC. In

3-www-3d L LMit gov. In

4-www-CfLP iAtb. In

5-Www-cse iit B Asl. In

6-www- Nic- In bliss. Org

7-www- Bicthindikhoj. Com

हिंदी में लोग सिनेमा देखना ज्यादा पसंद करते हैं, हिंदी बोलने वाले की संख्या बढ़ी है, इन्टरनेट के कारण संख्या में बढ़ोतरी हुई है, प्रचार प्रसार के लिए इंटरनेट सबसे अच्छा माध्यम है, हिंदी पढ़ने वाले की संख्या में इजाफा हुआ है, हिंदी का प्रचार प्रसार करने में सोशल मीडिया ने बड़ी भूमिका निभाई है, इंटरनेट के प्रयोग ने हिंदी भाषा के लिए एक नई दिशा खोल दिया है,

आज से 60 साल पहले 14 सितंबर 1949 में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी भाषा को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है इस लिए हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, हिंदी अब व्यवहारिक तौर पर देश की संपर्क भाषा बन गई है उसमें कोई दो राय नहीं है, हिंदी की अनिवार्यता विदेशी सरकारें भी महसूस कर रही है, इसलिए अमेरिका, चीन, यूरोप तथा अन्य प्रमुख देशों में हिंदी के अध्ययन की व्यवस्था की गई है, विदेश में बड़ी संख्या में छात्र छात्राएं हिंदी संस्थान में विभिन्न विश्व विद्यालयों में और अन्य शिक्षण संस्थानों में हिंदी पढ़ने के लिए जाते हैं, 1960 और 1970 के दशकों में दक्षिण के जिन राज्यों में हिंदी के विरुद्ध आंदोलन चले थे, अब उन राज्यों के नेता हिंदी विषय को लेकर बी. ए. एम. ए. करने वाले बच्चों की संख्या भी बढ़ती जा रही है

सौ सालों में भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए हमारे हिन्दी कवि लोग

तुलसीदास, मैथिली शरण गुप्त, रामधारी सिंह, दिनकर, सुमित्रानंदन पंत, प्रेमचंद, जगदीश गुप्त, बच्चन और आग्नेय ने बहुत महत्वपूर्ण रोल अदा किया है, हमारे धर्म ग्रंथों, साहित्य, रामायण और भागवत गीता का भी योगदान देश के विकास के लिए हिंदी भाषा में परिवर्तित हुआ है, कबीर को एक समाज सुधारक के रूप में देखा गया है, कबीर के पास कोई डिग्री नहीं थी, फिर भी उनके द्वारा रचे गए दोहे आज के दिशाहीन समाज के लिए काफी महत्वपूर्ण है, मीडिया के माध्यम से हिंदी में यह सभी धर्म ग्रंथ उपलब्ध होते हैं, मीरा के पद भी बहुत प्रचलित है, यह सब हिंदी भाषा साहित्य है, हिंदी को आगे बढ़ाने में हमारे धर्म ग्रंथ, धर्म गुरु, महात्माओं का योगदान भी हमें सौ सालों से महत्तवपूर्ण रूप से प्राप्त हुआ है, उन्हें इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से हमारी ओर पहुंचकर एक बड़ा उपकार किया है, उन्हें भूलना नहीं चाहिए,

भाषा शास्त्रीय लोगों का मानना है कि 21 वी सदी के अंत में विश्व की 6000 से 90 प्रतिशत भाषाएं लुप्त हो सकता है, इसलिए राष्ट्र भाषा को बचाना हम सभी की जिम्मेदारी है, सौ सालों में परिवर्तन आया है, आजकल विदेशों में भी हिंदी साहित्य सम्मेलन होने लगे हैं, दसवें हिंदी साहित्य सम्मेलन 2015 में भारत में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था, अमेरिका में भी हिंदी साहित्य सम्मेलन आयोजित होते हैं, मोरे सियास में भी होते हैं, आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि, हिंदी को गंगा नहीं समुद्र बनाना होगा,

उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में जहां भारतीय भाषाओं का प्रयोग की पूर्ण रूप से उपेक्षा की जाती थी, अब हिंदी ने सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है, रेडियो, टी वी तथा हिंदी पत्र पत्रिकाओं में हिंदी में विज्ञापन देने की होड़ लगी है, उन तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि हिन्दी को देशव्यापी स्वीकार्यता मिल चुकी है, वो समय दूर नहीं है अब हिंदी पूर्णरूप से भारत की एक मात्र संपर्क भाषा बन जाएगी,

हिंदी ने जो प्रगति हासिल की है उसमें मोबाइल, कंप्यूटर, लेपटोप और टैबलेट का योगदान इंटरनेट के माध्यम से बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका के रूप में रहा है यह कहना जरा सा भी गलत नहीं है, मेरे मत से हिंदी ने सोशल मीडिया से बहुत तेजी से दौड़ लगाई है, अपने कदम मजबूती से रखने में सफल हुआ है, राष्ट्रभाषा हिंदी ने बहुत कुछ हासिल कर लिया है, और देश को समर्पित किया गया है, अपने धार्मिक ग्रंथ बाईबल और कुरान भी हिंदी में उपलब्ध है, ये भारतीय संस्कृति को उजागर करता है, हिंदी ने अपनी जड़ें मजबूत कर दिया है, साहित्य जगत, व्यापार उद्योग के क्षेत्र में अपना पगडंडा मजबूत किया है, देश के विकास में हिंदी की महत्व पूर्ण भूमिका रही है,

एक समय था जब पढ़ लिखे होने का मतलब था अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना, आजादी के बाद उस समय राष्ट्रीय न्यूज अंग्रेजी में पब्लिश होते थे, किन्तु शिक्षा और साक्षरता के कारण प्रसार प्रचार की दिशा बदल गया है,

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को सर्व स्वीकार्य बनाने में रेडियो की उल्लेखनीय भूमिका रही है, आकाशवाणी के समाचार, विचार, शिक्षा, सामाजिक सरोकार, संगीत और मनोरंजन इत्यादि सभी स्तरों पर अपने प्रसारण के माध्यम से हिंदी को देश के कोने कोने तक पहुचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, इसमें हिंदी फ़िल्में और फिल्मी गीतों ने तहलका मचा दिया है, हिंदी फ़िल्मों की लोकप्रियता भारत की सीमाओं को पार करके रूस, चीन और यूरोप तक जा पहुंची है, आकाशवाणी की विविध भारती सेवा तथा अन्य कार्यक्रम से देशभर में लोगों के जुबान पर गाने को ला दिया है, उस समय आकाशवाणी के 225 केंद्र थे और 361 ट्रांसमीटरों के साथ लगभग 1400 एफ. एम. और सामुदायिक रेडियो स्टेशन थे, अधिकतर रेडियो प्रसारण हिंदी में होते थे, कौन बनेगा करोड़पति जैसे कार्यक्रम ने लगभग पूरे देश को एक सूत्र में बांधकर रखा है, हिंदी में प्रसारित ऐसे कार्यक्रम में पूर्वोत्तर राज्यों जम्मू कश्मीर और दक्षिण राज्यों के प्रतिभागियों ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया है, हिंदी समाचार सबसे अधिक देखे सुने जाते हैं, 2009 में 22 हिंदी चैनलों को अनुमति मिली है उसमें अधिकांश हिंदी की है,

भारतीय संविधान में भाग 17, के अध्याय की धारा 343 (9), में इस प्रकार हैं,

संघ वह राजकीय राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी, संघ व राजकीय प्रश्नों के लिए प्रसंग होने वाले संघ का रूप अंतर्राष्ट्रीय होगा ”

यह निर्णय 14 सितंबर को लिया गया इसलिए इस दिवस को श्रेष्ठ माना गया है, गैर हिंदी भाषी राज्य के लोग इसका विरोध करने लगे तो अंग्रेजी भाषा को भी राजभाषा का हक देना पड़ा, इस कारण हिंदी में भी अंग्रेजी भाषा का प्रभाव पड़ने लगा, हिंदी के हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर वर्ष 1953 से भारत में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, हिंदी को भारत में राजभाषा के रूप में 14 सितंबर 1949 में स्वीकार किया गया, इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा को संविधान में स्वीकार किया गया, स्वतंत्रता पूर्व 1833 – 1886 गुजरात के महान कवि श्री नर्मदे हिंदी को राजभाषा बनाने का विचार रखा गया था, 1918 में मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कोंग्रेस के अध्यक्ष के हैसियत से घोषित किया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी, 1918 में इंदौर में संपन्न आठवीं हिंदी सम्मेलन में अध्यक्षता करते महात्मा गांधी ने कहा कि मेरा मत है कि हिन्दी को हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयत्न न हो तो हिन्दुस्तान समाप्त है, राजभाषा बनाना हमारा कर्तव्य है, 2019 को सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय हिंदी और अन्य भाषाओं में अनुवादित करेंगे!

अभी न्यायालयों के निर्णय भी मीडिया के माध्यम से आम लोगों को जल्द से जल्द मिल रहा है, कोई भी व्यक्ति अपना केस का स्टेट्स भी ऑनलाइन जान सकता है! जब इंटरनेट ने भारत में कदम रखा तो यह आशंका व्यक्त की गई थी कि कम्प्यूटर के कारण देश में फिर से गुलामी आएगी किन्तु यह धारणा गलत साबित हुई, आज हिंदी वेबसाइट तथा ब्लॉग न केवल गलत चल रहे हैं बल्कि देश के साथ–साथ विदेश के लोग भी इन पर सूचनाओं का आदान प्रदान तथा चैटिंग कर रहे हैं, इस प्रकार इंटरनेट भी हिंदी में सहायक होने लगे हैं, हिंदी आज राजमार्ग पर सरपट दौड़ रही है और हिंदी अश्वमेघ के घोड़ों को रोक पाना किसी के भी बस में नहीं है, मीडिया इस दौड़ को और गतिशील बना रहा है, आज यह सच है कि जिस तरह हिंदी को अपने प्रसार के लिए मीडिया की जरूरत है, उसी तरह मीडिया को अपने विस्तार के लिए हिंदी भाषा की आवश्यकता है, भारत में आरंभ से 30 साल तक टेलीविजन की प्रगति धीमी रही लेकिन वर्ष 1980 और 1990 के दशक में दूरदर्शन ने राष्ट्रीय कार्यक्रम और समाचारों के प्रसारण के जरिए हिंदी को जनप्रिय बनाने में काफी योगदान दिया, वर्ष 1990 के दशक में मनोरंजन और समाचार के निजी उपग्रह चैनलों के पर्दापन के उपरांत यह प्रकिया और तेज हो गई, रेडियो की तरह टेलीविजन पर भी मनोरंजन में फ़िल्मों का भरपूर उपयोग किया गया और फीचर फिल्म, वृत्त चित्र, तथा फिल्मी गीतों के प्रसारण से हिंदी भाषा को देश के कोने–कोने तक पहुंचाने का सिलसिला आगे बढ़ाया गया, टेलीविजन पर प्रसारित धारावाहिक ने दर्शकों के मन में अपना विशेष स्थान बना लिया, सामाजिक, पौराणिक कथाओं, धार्मिक विषयों को लेकर बनाए गए। हिंदी धारावाहिक घर–घर में देखे जाने लगे, रामायण, महाभारत, हम लोग, भारत एक खोज जैसी धारावाहिक न केवल हिंदी प्रसार के वाहक बने बल्कि राष्ट्रीय एकता का सूत्रधार बन गया,

हिंदी देश में संपर्क की भाषा बन गई है, हिंदी बोलने में, लिखने में शर्म नहीं करनी चाहिए, देश के नागरिकों को अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए, देश के विकास के लिए उसे अपनाना होगा, हिंदी बोलना होगा और लिखना होगा, आज कल पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी की स्थिति अच्छी है, हिमाचल प्रदेश, मेघालय और सिक्किम आदि, मेघालय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा ''आजा न फकीर'' हिंदी में अनुवाद किया गया है जवाहरलाल नेहरू ने कहा है कि हिन्दी एक शानदार भाषा है, वह जितनी बढ़ेगी, देश का इतना ही नाम होगा!

● ●

सन्दर्भ सूची :मीडिया के माध्यम से, फेस बुक जूपजजमत गूगल विकिपीडिया

● ●

भारतीय संस्कृति और सिनेमा

भारतीय समाज में संस्कृति के प्रचार प्रसार में अहम भूमिका रही है, क्षेत्रीय भाषाओं में बनी हुई फ़िल्में मनोरंजन तो करती ही है लेकिन साथ साथ भारतीय संस्कृति को भी उजागर करती है, उदाहरण के रूप में रामायण, महा सती अनुसूया, सरस्वती चंद्र आदि फ़िल्में गुजराती भाषा के अलावा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी सिनेमा बनी हुई है, गुजराती में नरसिंह मेहता, संत तुकाराम, रामदेव,गोरा,कुंभा, जैसी धार्मिक फ़िल्में भी बहुत लोकप्रिय है,

गुजरात के सौराष्ट्र इलाके में वीर योद्धाओं के जीवन पर आधारित फ़िल्में बनाई गई है, उदाहरण के लिए वीर मांगडावालों, कादु मकराणी, जेसल तोरादे, नागमति नागवाला, इत्यादि।

डॉक्यूमेंट्री फिल्म महात्मा गांधीजी के लिए और डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर के लिए भी क्षेत्रीय भाषाओं में बनी हुई है,

मुंगी फ़िल्में :

बोलती फ़िल्मों के आगमन पहले बहुत सारी मुंगी फ़िल्में गुजराती लोगों की संस्कृति के साथ जुड़ी हुई थी, बहुत सारे निर्देशक, निर्माता और कलाकार गुजराती और पारसी थे, 1913 से 1931 के समय काल में बॉम्बे (मुंबई) में गुजरातीओं की मालिकी के 20 से करीब सिनेमा गृह, निर्माण गृह और फिल्म कंपनियां थी, करीबन 44 मुख्य गुजराती निर्देशक थे,

मुंगी फिल्म बिल्व मंगल (भक्त सूरदास, 1919, के नाम से जाना जाता था), गुजराती पारसी रूस्तम जी धोतीवाला ने निर्देशित किया गया था, और उसकी कहानी गुजराती लेखक चापशी उदेशी ने लिखी थी, यह पूर्ण लंबाई की (132 मिनिट्स, 12000 फिट, 3700 एम), कोलकाता (अब कोलकाता पश्चिम बंगाल) की एल फिन स्टोन बायो स्कोप कंपनी ने निर्माण की थी, वो बंगाली फिल्म मानी गई थी, 1919 में प्रचलित गुजराती सामयिक बीसवीं सदी के सम्पादक, हाजी महमद अल्ला रखा की मदद से सचेत सिंघ ने ओरिएंटल फिल्म मेन्यू फेंक चरिंग, कंपनी ऑफ बॉम्बे की स्थापना की थी, मुंगी फिल्म नरसिंह मेहता (1920) यह ओरिएंट कंपनी ने बनाई थी, जिस फिल्म में जब पर्दे पर सीन दिखाए गए तब गीत "वैष्णव ज़न तो" सिनेमा होल में उपस्थिति संगीतकार और प्रेक्षकों द्वारा गाया जाता था,

पाटनकर कंपनी का प्रथम चलचित्र राजा श्रीयाल था, क्षति के कारण प्रदर्शित नहीं किया गया, कर फ्रेंड्स एंड के द्वारा निर्देशित फिल्म कच देवयानी

(1920)में पहली बार गरबा का नृत्य प्रयोग किया गया, गुजराती संस्कृति को उजागर करने के लिए कोहिनूर फिल्म कंपनी की स्थापना की गई, गुजराती संस्कृति का निर्देशन फ़िल्मों में विष्णु पंत दिवाकर द्वारा किया जाता था, उसमें राजकोट की अभिनेत्री प्रभा को पार्वती के पात्र में दिखाया गया था, 1921 को कानाजीभाई राठोड़ निर्देशित फिल्म भक्त विदुर, गर्भित राजकीय संदेश प्रेरित था, संपत विदुर के पात्र में थे, वो गांधी टोपी पहने हुए दिखाए गए थे, वो महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रही भारतीय स्वतन्त्रता की मुहिम की ओर संकेत करता था, तत्कालीन कोंग्रेस के ध्वज का रोटियों का चिन्ह का सन्दर्भ देता था और गुजराती गीत रुडा मेरा चरखो, चरखे से निकले हुए तार, तार तारे हुए भारत का उद्धार भी प्रदर्शित किया गया, पावागढ का पतन (1928)फिल्म का निर्देशन नागेन्द्र मजूमदार ने किया था और निर्माण इंदु लाल याज्ञनिक द्वारा किया गया था, याज्ञनिक स्वतंत्रता सैनानी थे, उन्होंने अलग गुजरात राज्य का मांग किया था, महा गुजरात आंदोलन की अगुवाई उन्होंने की थी, याज्ञनिक ने विभिन्न शीर्षक से दस फ़िल्मों का निर्माण किया था, मुंगी फ़िल्मों का निर्माण कोहिनूर ने बहुत सारी फ़िल्मों का निर्माण किया गया था, वो पौराणिक कथाओं का पर विषय वस्तु और सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालते थे, प्रथम सामाजिक फिल्म 1920 को कटोरा भर कानून प्रदर्शित हुई थी, गुजराती साहित्य के प्रचलित कवि कलापी की आत्म कथा रूप कविता हृदय त्रि पुती पर बनी हुई फिल्म ''मनोरमा'' (1924) का निर्देशन होमी मास्टर द्वारा किया गया था, मोहनलाल दवे द्वारा लिखित और राठोड़ द्वारा निर्देशित फिल्म ''गुल ए बकावर्ली'' करीबन 14 सप्ताह तक सफलता के साथ प्रदर्शित हुई, मनी लाल जोशी ने 1922 को फिल्म ''अभिमन्यु'' का निर्देशन किया और उसका निर्माण स्टार फिल्म कंपनी के द्वारा किया गया, बाद में कन्हैया लाल मुन्शी रचित उपन्यास पृथ्वी वल्लभ पर से वहीं नाम से फिल्म का निर्देशन किया,

हिंदी फ़िल्मों का लोक मानस पर अद्भुत प्रभुत्व है, व्यक्ति अपनी कल्पना से सोच सके इसी बाते संवेदनाओं को जब फ़िल्मों में प्रदर्शित होती हुई देखे तब तुरंत ही अपना लगता है, बचपन में जैसे परिओं की काल्पनिक दुनिया में खो जाने का आनंद ही कुछ अलग होता है,ऐसा ही आनंद अभी सभी व्यक्ति को सबंधित बातो ताजा होती दिखे, काल्पनिक दुनिया में खो जाने का आनंद ही कुछ और होता है,ऐसा ही आनंद आज फ़िल्मों से अब भी महसूस कर रहे हैं,

हिंदी फ़िल्मों का इतिहास बहुत पुराना है अभी की वर्तमान पीढ़ी से आगे बढ़ कर पुरानी बीती हुई पीढ़ी से भी करीब 150 वर्ष पुरानी फ़िल्मों की अभी के कंप्युटर युग की हाई टेक जनरेशन को कल्पना भी नहीं आएगी, सबसे पहले पूरी फ़िल्मों के बजाय टुकड़े टुकड़े में बाट ती मुंगी फ़िल्मों से शुरुआत हुई, पहली शॉर्ट भारतीय फिल्म के डायरेक्ट हीरालाल सेन थे, उस के बाद वे इतिहास के पन्ने बदलते गए, फिल्म के रूप रंग भी बदलते गए, फूल लेंथ

मोशन पिक्चर के प्रोड्यूसर दादा फाल्के थे, उसके बाद 1913 में बनी हुई राजा हरिश्चंद्र फिल्म के बारे में आज के बुजुर्गों की भी जानकारी होगी,

करीब बीसवीं सदी को अनुकूल हो ऐसी टिकट के साथ थियेटर में प्रस्तुति होने लगी, शुरुआत में ब्लैक एंड व्हाइट फ़िल्मों में अरदेसर ईरानी की 'आलम आरा' 1931–19 35 की सबसे सफर फिल्म 'देवदास' को अब भी उस समय के लोग याद करते हैं,

समय बदलता गया ऐसे ऐसे गीत, डांस, म्यूजिक के साथ रोमांटिक फिल्म बनने लगी, करीबन 1940 से 1960 तक का समय हिन्दी सिनेमा का 'गोल्डन एज' समय के नाम से जाना जाता है, गुरुदत्त राजकपूर की फ़िल्मों ने तो लोगों को उत्साहित किया, उस के बाद मदर इंडिया, मुग़ल आज़म, वही शांता राम, बिमल रॉय, रितिक घट्क, कमल अमरोही और विजयदत्त आए, उस समय की हिंदी फ़िल्मों में कहानी का महत्व रहता था,

अभी मल्टिप्लेक्स में 100 से 150 रुपये टिकट के खर्च करके फिल्म देखने वालों को यदि ये कहा जाये कि 25 पैसे में अधूरा फिल्म दुबारा फिल्म वहीं से दिखाया जाय तो किसी के दिमाग में नहीं उतरेगा,
समय के बदलाव के साथ ईस्टमेन कलर, साउंड सिस्टम इत्यादि से ज्यादा से ज्यादा आकर्षित बनी हुई फ़िल्मों ने लोगों को ज्यादा से ज्यादा थियेटरों की और आकर्षित किया, फ़िल्मों के रंगों के साथ साथ बहुत कुछ बदलता गया,

आज के युवा वर्ग की दिलों की धड़कन कहे जाने वाले रणबीर कपूर के पिताजी, चाचा और दादा भी हिंदी फ़िल्मों पर अपना आधिपत्य लगाया था, समय बदलते राजेश खन्ना, अमिताभ बच्चन और बाद में शाहरुख खान जैसे अदाकारों ने सुपर स्टार जैसे शब्द हिन्दी फ़िल्मों को दिया,

सदियों पुरानी रामायण या महाभारत जैसे महाकाव्य ने घर घर पढ़े जाते, लोग उसमें से कुछ सीखकर अपने जीवन में अपनाने लगे, आज की पीढ़ी भी करीब करीब उस दिशा में आगे बढ़ रहा है, फ़िल्मों का असर आज भी इतना ही अखंड है, तब ये विचार आता है कि इतने बड़े विशाल माध्यम से हमें कितना सारा अच्छा बुरा सीखने को मिलता है,
किसी भी चीज़ की अच्छी या बुरी दो बातें होती है, सारी बातों को ग्रहण करके बुरी बातों को मन से निकाल देना चाहिए,

एक बात यह थी कि पहले के ज़माने में मात–पिता फिल्म देखे और अच्छा लगे तो ही उन्हें फिल्म दिखाते थे, अभी तो बात यहां तक बढ़ गयी है कि मॉर्निंग शो में टीनएजर की ही उपस्थिति देखने को मिलता है, उसमें कुछ मात–पिता को ज्ञात होता है, फिल्म स्टाइल में जब लड़का बाइक किसी को ठोककर आए

तब पता चलता है बहुत सारी फ़िल्मों में कुछ न कुछ सीखने को मिलता है

सिस्टम के प्रति रोष फैलाने वाली फ़िल्मों के सर्जक श्याम बेनेगल ने वास्तविकता को स्पर्शी, संवेदना प्रकट करती, कथानक फ़िल्में भी दी है, 1970 के समय काल में फ़िल्में 25 सप्ताह, 50 सप्ताह तक चलती थी, उसके बाद अमिताभ युग का प्रारम्भ हुआ, शोले फिल्म ने तो सभी फ़िल्मों का रिकॉर्ड तोड़ दिया, पहले मुगले आज़म सबसे लंबे समय तक चलने वाली फिल्म थी, दीवार, त्रिशूल, सिलसिला जैसी फ़िल्मों के द्वारा अमिताभ बच्चन का सूर्योदय हुआ, यह समय में करीब कॉमर्सियल फ़िल्मों का युग शुरू हुआ, 1980 से 1990 तक के समय के दौरान मि. इंडिया, कयामत से कयामत तक, चांदनी.,मैने प्यार किया, जैसी हिट फ़िल्मों का साम्राज्य खड़ा हुआ, समय के बदलते नए नए सितारे, दिग्दर्शन करने वालों का सितारा चमकने लगा, उस समय लीला भंसाली, मधुर भंडारकर जैसे दिग्दर्शन करने वाले और मणि रत्नम, करण जौहर, संजय लीला भंसाली का समय बहुत ही अच्छा था, समय के बदलते हुए नए नए सितारे, नए नए दिग्दर्शन, नयी नयी तकनीकों, नई नई कहानियां, नए नए प्रयोग होने लगे,

राजेंद्र कुमार जैसे फिल्म स्टार ज्यूबलिस्टार कहे जाते थे, उनकी फिल्म 50 सप्ताह तक चलती थी, वर्तमान समय में फ़िल्मों का स्वरूप बदल गया, हिंसा और मारधाड़ करने वाली फ़िल्मों का दौर शुरू हुआ, फ़िल्में फ्लॉप होने लगी, करोड़ों रुपये खर्च करने पर भी प्रेक्षकों के दिल में न पाई, फ़िल्मों के अच्छे दिन भुलाने लगे, आज की फ़िल्मों टीवी पर या यू ट्यूब पर उसके भाग देखने से लोग पहले से ही तय कर लेते हैं कि फिल्म देखने लायक है कि नहीं,.

गुजराती सिनेमा सामान्य रूप ढोली वूड या गोलीवुड के नाम से जाना जाता है ,प्रारम्भ काल से अब तक 1000 से ज्यादा फिल्में निर्माण हुई है,भारतीय सिनेमा उध्योगका प्रादेशिक और स्थानीय भाषाओ में से गुजराती भाषा के साथ जुड़ा हुआ बड़े उद्योगों में से एक है ,मूँगी फिल्मों के जमाने में सिनेमा उद्योग में व्यक्तिगत रूप से बहुत सारे गुजरात थे,गुजराती सिनेमा के छोर अतीत 1932 तक लंबे है,जब 9 अप्रैल 1932 के दिन प्रथम गुजराती सिनेमा नरसिंह मेहता प्रस्तुत हुआ ,1960,1970,और 1980 के दशक में बहुत विकसित हुआ ,उसके बाद ये उद्योग की पड़ती शुरू हुई ,2000 में तो नए बने हुए सिनेमा का अंक 20 से भी कम हो गया था ,फिर ग्रॅमी लोगों की मांग से नई तकनीकी नई कहानी के साथ गुजराती सिनेमा उद्योग में फिर से तेजी आई ,बाद में गुजरात सरकार ने गुजराती फिल्म को 100 प्रतिशत टैक्स फ्री कर दिया ,2016 में नई प्रोत्साहन नीति अमली हुई ,
भावनगर के उद्योग पति और एल एफ सी फिल्म के बैनर के साथ तैयार हुई गुजराती फिल्म ‘‘साहिल“ एक पत्रकार की कहानी पर आधारित है,जो युवा

पत्रकार का जीवन दर्शाती फिल्म है ,जिसका ट्रेलर सोशल मीडिया प्लेट्फ़ोर्म पर धूम मचाने लगा,ये एक गुजराती फिल्म एक पत्रकार का जीवन पर आधारित होने से गुजराती मीडिया का उसे बहुत साथ सहकार मिला ये फिल्म में रोमांस है कॉमेडी और साहस भी है ,पत्रकार के जीवन में आते हुए उतार चढ़ाव भी अच्छी तरह दिखाया गया होना से प्रेक्षकों को जकड़ रखता है ,ये फिल्म के निर्देशक कोमलकान्त शर्मा बताते है की,ये फिल्म में बॉलीवुड के महान सितारा प्रेम चोपड़ा जी के साथ पत्रकार की भूमिका में राजन राठोड मुख्य भूमिका अदाकर रहे है,ये फिल्म का दिग्दर्शन सोरभ भट्ट ने किया है ,साथ में गुजरात के कलाकार चेतन दहिया जिग्नेश मोदी भूमिका पटेल,मनीषा त्रिवेदी ,इलेश शाह अनुरेखा भगत ,और भूपेंद्र चोधरी जैसे लोगों ने सिनेमा में अपनी भूमिका अदा की है ,प्रेम नाम है मेरा प्रेम चोपड़ा .... मैं वो बाला हूं जो शीशे से पत्थर को तोड़ दूं जैसे प्रेम चोपड़ा का इतिहास आपको लंबे अरसे तक सुनने को मिलेगा,

गुजराती फिल्म की अभिनेत्री स्नेहलता :

स्नेह लता गुजराती फिल्मों में एक सफल अभिनेत्री के रूप में 70 और 80 के दौर में उपेंद्र त्रिवेदी और नरेश कनोडिया के साथ जोड़ी में सफल फिल्में दी हैं,स्नेहलता अब निवृत जीवन जी रही है ,मुंबई में उनकी पुत्री डॉक्टर के रूप में काम कर रही है ,गुजरात के सूरत शहर में कुछ समय पहले स्नेहलता और उपेंद्र त्रिवेदी का शॉल से सम्मान किया गया था ,उन्होनें बहुत सारी हिन्दी फिल्मों में भी अपनी भूमिका अदा की है,

शुरुआत :

सबसे पहले प्रथम फिल्म आलम आरा ध्वनि और चल चित्रा के साथ शुरू हुआ .4 फरवरी 1931 में मुंबई खाते चाव चाव का मुरब्बा शॉर्ट फिल्म प्रस्तुत की गई,उसमें मुझे कीड़े काटे गीत था, ये फिल्म का निर्माण माणिकलाल पटेल के द्वारा किया गया था । गीत के शब्द और संवाद नट्वर श्याम के द्वारा लिखे गए थे,प्रथम गुजराती फिल्म नरसिंह मेहता के बाद श्री कृष्ण –सुदामा और नेक अबला फिल्मिं इंपीरियल फिल्म कंपनी के द्वरा दो रील की की फिल्म बनाकर प्रस्तुत की गई थी ,एक फिल्म गुण सुंदरी का खास तोर पर उल्लेख किया जाता है ,क्यू की ये फिल्म 1927 से 1948 के बीच तीन बार बनी थी ,1932 से 1946 तक 12 फिल्मे प्रस्तुत की गई थी ,1932 से 1946 तक दूसरे विश्व यूद्ध के कारण कोई कचच्ची सामग्री का वितरण नहीं होनेसे उस समय दरमियान कोई फिल्म नहीं बनी थी ,

भारत विश्व में सबसे बड़ा देश फिल्म निर्मार्ण के लिए जाना जाता है ,जहा हर साल 1000 फिल्मों का निर्माण होता है,कुल फिल्मों में से करीब 600 फिल्म तेलुगू और हिन्दी में होती है ,जो की भारत में सिनेमा के द्वारा पेदाइश होती कुल आवक में हिन्दी फिल्मों आ हिस्सा करीबन आधा है,अग्रणीय भारतीय

साहस जैसे कि ज़ी टीवी और एड लेब्स भी फिल्म निर्माण में और वितरण में सक्रिय है ,मल्टीप्लेक्सिस को कर राहत मिलने से भारतीय मल्टीप्लेक्स क्षेत्र में तेजी आई है,भारत में फिल्मों द्वारा पैदा होती आवक में 45% हिस्सा अकेली संगीत के अधिकारों का है।

स्वतंत्रता बाद (1947-1970)

1947 में भारत को आजादी मिलने के बाद गुजराती सिनेमा के निर्माण में यकायक तेजी आई ,फक्त 1948 में 26 फिल्मों का निर्माण हुआ ,1946 से 1952 के बीच में 74 फिल्मों का निर्माण किया गया,जिसमें 27 फिल्में संत ,सती,डाकूओं पर आधारित थी ,ये कथायें ग्राम्य इलाके में बस्ते उससे परिचित दर्शकों के लिए थी, अनेक फिल्में लोगों को ग्नात हो ऐसी पौराणिक कथाओं पर आधारित थी, विष्णुकुमार व्यास द्वारा दिग्दर्शित फिल्म रानकदेवी (1946) ये रानक देवी की दंत कथा पर आधारित थी ,निरुपा रॉय अभिनेत्री ने यह फिल्म से अपनी फिल्मी यात्रा की शुरुआत की थी ,बाद में उन्होने हिन्दी फिल्मों में अनेकविध रोल में अभिनय किया,निरुपा रॉय ने नानुभाइ भट्ट दिग्दर्शित हिन्दी फिल्म की उजरती फिल्म में मीराबाई (1946) में अभिनय किया ,पुनातर दिग्दर्शित गुण सुंदरी फिल्म में 1948 में अभिनय किया था ,फिल्म करियावर में 1948 में दीना पाठक को फिल्म जगत में प्रवेश मिला ,

1951 कंकु फिल्म ये पन्नालाल पटेल की उपन्यास 1936)पर आधारित थी ,17 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में उसे गुजराती श्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार हासिल हुआ

उस फिल्म की अभिनेत्री पल्लवी मेहता को शिकागो में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार महोत्सव में पुरस्कार प्राप्त हुआ था । हिन्दी सिनेमा के अभिनेता संजीव कुमार द्वारा भी बहुत सारी गुजराती फिल्मों में अभिनय दिया गया गया है। गुजराती सिनेमा ज़्यादातर मानवीय और सामाजिक भावनाओं से जुड़ी होती है इस लिए गुजराती सिनेमा ने भारतीय संस्कृति को उजागर किया है,शुरुआत में गुजराती सिनेमा पौराणिक दंतकथा पर आधारित थी,गुजरात के लोकप्रिय संत सती जैसे नरसिंह मेहता ,गंगा सती पर या एल्जिबीटी समुदाय पर मेघधनुष 2013 में प्रथम गुजराती सिनेमा का निर्माण हुआ है,1932 से 2011 के बीच 1030 गुजराती फिल्मों का निर्माण हुआ है,इस तरह सिनेमा भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देती रही है।

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

सन्दर्भ सूची :हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की ओर से आयोजित सोलन में हिंदी साहित्य सम्मेलन,हिंदी साहित्य अधिवेशन

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

हिंदी भक्ति काव्य का सामाजिक सरोकार

हिन्दी भक्ति काव्य मीराबाई, कबीर और संत रविदास ने रचे थे। वो शिक्षा में पारंगत न होने के बावजूद एक उमदा भक्ति काव्य समाज को दिया गया है। सामाजिक चेतना और आध्त्यात्मिकता की और ले जाने वाले ये हिन्दी भक्ति काव्य ने भारत में संस्कृति का सिंचन किया है।

मीराबाई ने कृष्ण भाक्ति में लीन हो कर, राजा राणा के राज्य को तिलांजलि दे दी थी। राणाजी ने मीरा की परीक्षा के लिए जहर दिया था। वो कृष्ण के प्यार में झहर भी पी लेती है फिर भी, उसे कोई तकलीफ नहीं हुई थी। मीरा के पद समाज को श्री कृष्ण की भक्ति की और ले जाने में सफल हुए है।

कबीरजी भी उतने ही धार्मिक थे। उनका साहित्य भी समाज के जीवन के साथ सरोकार रखता है। हिन्दी भक्ति काव्य के रूप में वाल्मिक रचित रामायण, हिन्दी महा भक्ति काव्य है। रामायण समाजीक जीवन कैसे जिया जाता है, पितृ प्रेम, मात्रु प्रेम, पत्नी प्रेम, भात्रू भाव, प्रजा प्रेम, मित्र प्रेम आदि की रीत समाज को दी है।

महाभारत भी एक उमदा हिन्दी महा काव्य है। जिसकी रचना वेद व्यासजी ने की थी। रामायण और महाभारत दोनों पहले भारतीय धर्म भाषा, संस्कृत में लिखे गए थे, लेकिन उसका हिन्दी में संस्करण भी किया गया है। ये दोनों हिन्दी भक्ति ग्रन्थ सामाजिक जीवन में उन्नति लाते है। सामजिक जीवन की परिभाषा शिखाते है।

इसी तरह, संत रविदासजी के द्वारा रचे गए भक्ति काव्य भी एक नयी दिशा देता है। उन्हों ने मांसाहार और नशे से दूर रहने की सीख दी है। वो कर्म कांड और मूर्तिपूजा के विरोधी थे। इरान की यात्रा मुलाकात दरम्यान, वो बेगमपुरा शहर की कल्पना करतें है। बेगमपुरा ऐसा होना चाहिए, जहाँ जात–पात में भेदभाव न हो, सब को अन्न मिले, सब सुख चैन से जिए और धर्म भावना के साथ अपना जीवन व्यतीत करे, ऐसी सुन्दर कल्पना संत रविदासजी ने 600 साल पहले की है। संत रविदास के 41 भक्ति पद जो पंजाब में गुरु नानकजी के 'ग्रन्थ साहिब' में शामिल है। जो जन जीवन को एक नयी ऊर्जा प्रदान करता है। इसी तरह, हिन्दी भक्ति काव्य सामाजिक चेतना और संस्कृति के जतन के लिए एक उमदा हिन्दी भक्ति काव्य है। वो समाज जीवन से बहुत गहरा सरोकार रखता है।

हिन्दी भक्ति काव्यकी रचना संत रविदास, मिराबाई और संत कबीरने बहुत की है। संत रविदास का साहित्य हिन्दी, अंग्रेजी और पंजाबी में बहुत ही उपलब्धहै।

संत रविदास की वाणी

जो तुम गिरिवर तो हम मोरा,
जो तुम चन्द्र तो हम भये है चकोरा।।
माधवे तुम न तोरो तो हम नहीं तोरी,
तुम सो तोरी तो किन सो जोरी।।
जो तुम दिवरा तो हम बाती,
जो तुम तीरथ तो हम जाती।।
रैदास राती न सोइए, दिवस न करिये स्वाद,
अहिनिसी हरिजी सुमिरिए, छांड सकल अपवाद।।
चित सुमिरन करो नैन अवलोकनों,
श्रवण वाणी सो जस पूरी राखो।।
मन सो मधुकर करो, चरण हृदय धरो,
रसना अमृत सम नाम भाखो।।
मेरी प्रीती गोविन्द खोजनि घेरे,
मैं तो मोल महँगी लई लिया सतै।।
साध संगत बिना भाव नहीं उपजे,
भाव बिना भक्ति नहीं होय तेरी।।
कहै रविदास एक बिनती हरी स्यो,
पैज राखो राजा राम मोरी ।।

भारत वर्ष के इतिहास में मध्यकालीन युग में लोगों की मुसीबते ज्यादा थी, देश, प्रान्तों में बटा हुआ था। मुस्लिमोने विजय नहीं पाया लेकिन तबाही मचायी, मंदिर जो रविदास को प्रिय थे उसीको तोड़ते हुए संत रविदासजी ने देखा था। क्षुद्र को अछूत माना जाता था। मुस्लिम मूर्ति पूजा के विरोधी थे। धर्म परिवर्तन कराया गया। इस युग में पंजाब में गुरु नानक और पूर्व उत्तर मैं कबीर साहबने नइ परंपराओं को जन्म दिया।
संत रविदास आध्यात्मिक सूर्य की आकाश गंगा थे। उनका जन्म राजस्थान में हुआ ऐसी लोक वायका है। लेकिन, वो पश्चिम भारत में ज्यादा रहे। वो काशी में रहते थे और मोची का काम करते थे। उनका जन्म १३९९ इस्वीसन और मृत्यु १५२७ में माना जाता है।

उन्हों ने जाती प्रथा और मूर्ति पूजा और क्रिया कांड का विरोध किया था। वो सहिष्णु और सादगी से जीये थे। वो ब्राह्मिन नहीं थे। शास्त्रार्थ में पंडित को उन्हों ने पराजित किये थे। चितोड की रानी मीराबाई उनकी शिष्या बनी थी।
गुरु शिष्य का सम्बन्ध
जो तुम गिरिवर तो हम मोरा,

जो तुम चन्द्र तो हम भये है चकोरा।।
माधवे तुम न तोरो तो हम नहीं तोरी,
तुम सो तोरी तो किन सो जोरी।।

संत रविदासजी अपने गुरु के प्रति अपनी प्रीत का वर्णन करतें है। वो कहते हैं कि प्रभु, तुम जो पर्वत हो तो में मोरा हूँ। में आप के प्यार में पागल हूँ। मेरा प्रेम आप के प्रति चन्द्र और चकोर जैसे है। रविदासजी प्रभु को माधव कहके पुकारते हैं। उनका एक शेर है।

आरजी सो अक्स था इके इल्तफाते दोस्त का,
जिसको नादानी से ऐसे जाबिंदा समजा था में।।

प्रभु आपने जब आँख घुमा ली तब पता चला ये तो काँटों की सेज है। संत रविदासजी अपने गुरु के प्रति प्रेम व्यक्त करते कहते हैं कि,
''जो तुम दिवरा तो हम बाती,
जो तुम तीरथ तो हम जाती''।।

वो कहते है की मैं बाती हूँ और तुम दिया हो। संत रविदासजी आदर्श शिष्य का जीवन कैसा होता है वो बताते हैं। सच्चे भक्त की पहचान कराते हैं।

''रैदास राती न सोइए, दिवस न करिये स्वाद,
अहिनिसी हरिजी सुमिरिए, छांड सकल अपवाद''।।
तुम मेरे पास होते हो गोया, जब कोई दूसरा नहीं होता।।

'मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मरतबा चाहे कि दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है" जब बीज मिट्टी में मिल जाता है तब खुद का अस्तित्व खो देता हैद्य वो फुल का रूप धारण कर लेता है। आध्यात्मिक मार्ग भी इसी तरह है। रविदासजी कहते हैं कि सच्चा शिष्य रात में सोता नहीं है शिष्य हमेशा गुरु के साथ जुडा हुआ होता है

''हम अपने जजबाए बंदार को रुसवा नहीं करेती,
शबे गम नींद से आँखों का आलूदा नहीं करेती"।।
ये संत दर्शनजी महाराज कहते है। आशिक अपनी प्रियतमा से नजर नहीं हटाता, वो आँखों को बदनाम नहीं करता। संत रविदासजी आगे कहते है कि ''ए दिल बेकरार ओ, रो ले, तडप ले, जाग ले, नींद की फ़िक्र क्यों, अभी रात मिली है बेसहर'' वो कहते हैं कि रात दिन हमें प्रभु को यही करना चाहिए। सब छोडकर उनका स्मरण करना चाहिए।

आध्यात्मिकता और धर्मः

चित सुमिरन करो, नैन अवलोकनो,
श्रवण वाणी सो जस पूरी राखो।।
मन सो मधुकर करो, चरण हृदय धरों,
रसना अमृत राम नाम भाखो
मेरी प्रीती गोविन्द स्योंजनी घटै,
मैं तो मोल महँगी लई लिया सटै
साध संगत बिना भाव नहीं उपजै,
भाव बिनो भक्ति नहीं होय तेरी
कहे रविदास एक बिनती हरी सयों,
पैज राखो राजा राम मोरी

इसमें संत रविदास आदर्श शिष्य के जीवन का वर्णन कर रहे हैं। आध्यात्मिकता का मार्ग है। प्रेममयी बने बिना कुछ मिलता नहीं है। गुरु और शिष्य में प्रेम होता जरुरी है। जिस तरह चरवाहा अपने गोआ बकरियां को पहचानता है, उसी तरह गुरु अपने शिष्य को, अपने जीवों को इकठ्ठा करके प्रभु के पास ले जाते हैं।

जन्म मरण दोउ में नाही जन परोपकारी आये,
जिया दान है भक्ति भावन हरि सयों लेन मिलाये।

शिष्य का जीवन भंवर जैसा होना चाहिए। जैसे भंवर फूल के आसपास घूमता रहता है, वैसे गुरु के पास शिष्य को आगे पीछे घूमते रहना चाहिए। शिष्य होना शरणागति है। रविदासजी प्रार्थना करते हैं कि हमें संगत साधू की मिले। संगत से भाव पैदा होता है। प्रभु को याद करना अपने जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। उनके मुख में प्रभु का ही नाम होता था। अपनी आँखों से प्रभु को ही देखना चाहते थे। संत रविदास और कबीर के गुरु स्वामी रामानंद थे। रविदासजी मांसाहार और नशा के विरोधी थे, जाती भेद का विरोध किया था। कर्म कांड के विरोधी थे, मद्य और पशु हिंसा के विरोधी थे। वो मेहनत की कमाई से ही जीना चाहते थे।

जाती पाती के फेरे में सुलज रह्यो सब लोग,
मानवता को खात है रैदास जाती को रोग।।

संत तुकाराम ने संत रविदासजी को एक साखी में कहा था, निवृति ज्ञानदेव सोपान चंगाजी, मेंरे जी के नामदेव, नागाजन मित्र , नरहरी सोनार, रविदास कबीर सगा मेरे।

शिखों के गुरु नानकदेवजी ने भक्ति काव्य में कहा है कि,
''रविदास चमारू उस्तुति करे, हर की रीती निमख एक गाई,
पतित जाती उत्तम भया, चारो चरण पये जग गाई,

रविदास हयाये प्रभु अनूप, नानक गोविद रूप''

गुरु नानक कहते हैं कि चारों वर्णों के लोग संत रविदास के चरणों में नमन करते हैं क्योंकि वो ज्ञानी है। मेवाड़ की महारानी भक्त कवियत्री मीराबाई ने गुरु दीक्षा लेकर उनका सम्मान किया था। मीराबाई एक भक्ति काव्य में कहती है कि,

''मेरा मन लागो गुरु सो, अब न रहूंगी अटके,
गुरु मिलियो रोहिदासजी, दिन्ही ज्ञान के गुटकी,
रैदास मोहे मिले सद्गुरु, दिन्ही सूरत सुरई की,
मीरा के प्रभु ते ही स्वामी, श्री रैदास सतगुरुजी"

संत रविदासजी भक्ति युग के महान संत थे। गुरु संत रविदासजी के पद ''श्री गुरु ग्रन्थ साहेब'' में समाविष्ट है। सोलह रागों में अपनी वाणी संत रविदासजी करते थे। रविदासजी कहते हैं कि,

''रविदास ब्राह्मण मत पूजिये, जो होवे गुण हिन,
पूजिये चरण चंडाल के जो होवे गुण परवीन''

600 साल रहेले मुस्लिम बादशाह ने ईरान में संत रविदास को बुलाये थे। ईरान के आबादान शहर में वो गए थे। आबादान के नाम से पर उन्होंने अपनी कल्पना का शहर ''बेगमपुरा'' कैसा होना चाहिए उसका वर्णन अपनी वाणी में किया है।

बेगमपुरा शहर को नाउ, दुःख अन्दोहु नहीं तीही ठाउ,
ना तसविस खिराजू न मालू, खउकु न खता,
न तरसु जवालु, अब मोहि वतन गई पाई,
हाँ, खेरी सदा मेरे भाई। कायमु, दायमु सदा पाति साही,
दोम न सेम एक सो आहि।
आबादानु सदा मशहूर, उहाँ गनी बसही मामूर।
तिह तिह शेल करही, जिह भावै।
महरम महन न को अटकावे। कवि रविदास खलास चमारा।
जो हम सहरी सु मितु हमारा। उनका भक्ति काव्य,
अब कैसे छूटे नाम रट लागी, प्रभुजी तुम चंदन हम पानी,
जाकी अंग अंग बास समानी, प्रभुजी तुम घनबन हम मोरा,
जैसे चितवत चन्द्र चकोरा, प्रभुजी तुम दीपक हम बाती,
जाकी ज्योति बरै दिन राती, प्रभुजी तुम मोती हम धागा,
जैसे सोन ही मिलत सुहागा, प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा,
ऐसी भक्ति करे रैदासा, प्रभुजी तुम चंदन हम पानी।

● ●

सन्दर्भ सूची :

संत रवि दास का जीवन चरित्र लेखक मगन भाई साहित्य,
संत रवि दास जी की वाणी – लेखक संत दर्शन महाराज गोधरा प्रकाशक :सावन कृपाल पब्लिकेशन्स नक देव जी सिखों के गुरु का भक्ती काव्य,
मीरा के पद,

एक राष्ट्र एक राष्ट्र भाषा और वैचारिक प्रदूषण

भारत में प्रांतीय भाषाए सबसे अधिक है,हर प्रांत में बोल चाल की भाषा और लिखने वाली भाषा अलग अलग देखने को मिलता है। भाषा का स्वरूप अलग अलग देखने को मिलता है। हिन्दी,गुजराती,अँग्रेजी,मराठी,पाली,कन्नड ,तेलुगू,उड़िया,पंजाबी,मालवा,खड़ी बोली,मलयालम आदि।

किसी भी देश के विकास में भाषा एक होना जरूरी है,भारत की यदि बात करें तो हिन्दी भाषा राष्ट्र भाषा के रूप में घोषित किया गया है,लेकिन उसका व्यवहारिक,आर्थिक,राजकीय उपयोग पूर्ण स्वरूप नही हो पाया है। विश्व के भाषा शास्त्रियों का मानना है कि,90% भाषाएं लुप्त होती जा रही है,अगर हम हमारे देश की राष्ट्रभाषा का और प्रादेशिक भाषाओं का संरक्षण नहीं करेंगे तो भाषाएं लुप्त हो जाएगी,राष्ट्रभाषा हिन्दी का व्यापक आज पूरे भारत के साथ विश्व में भी होता जा रहा है,मीडिया में भी हिन्दी भाषा का उपयोग सबसे ज्यादा होने लगा है,हिन्दी भाषा की आज 80% खपत है,जबकि 20 % अँग्रेजी भाषा की खपत है।

आज अँग्रेजी भाषा की और लोगों को आकर्षण बढ़ा है,लोग अपने बच्चों को अँग्रेजी पढ़ना चाहते हैं,आज सोशल मीडिया और हिन्दी साहित्य को तथा संस्कृत को आगे बढ़ाने का काम तेजी से हो रहा है,
महात्मा गांधीजी ने हिन्दी को आगे बढ़ाने का काम किया है,वो चाहते थे कि हमारे देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी हो और पूरे देश में हिन्दी में बातचीत हो,हिन्दी में ही देश का कारोबार चले,पूरे हिंदुस्तान में भाषा एक हो।
आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि हिन्दी को गंगा नहीं समंदर बनना होगा,पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था की,हिन्दी समर्थ भाषा है,हिमाचल प्रदेश में स्थानीय भाषा के साथ हिन्दी प्रचलित है,आजकल डिजिटल युग में मीडिया में हिन्दी का दबदबा है,

भारत में हिन्दी भाषी राज्यों की संख्या ज्यादा होने पर भी आज पूरे देश की भाषा राष्ट्रभाषा हिन्दी नहीं बन पाई है,माननीय अटल जी ने ,आदरणीय नरेंद्र मोदी जी ने विदेश में जाकर हिन्दी में अपनी बात रखी है, हिन्दी भाषा को सम्पूर्ण रूप से लागू करने के लिए गृह प्रधान श्री अमित शाह जी ने संसद में ब्यान दिया था तो विरोध का सुर दक्षिण स्थित राज्यों से उठने लगा है,सरकार इसमें आगे बढने में बाधा आती है,

मातृ भाषा के बजाय आज अंग्रेज़ी पर लोगों का प्रेम बढ़ा है,भारत के विकास के लिए हिन्दी भाषा की हमें ज्यादा जरूरत है,जल्दी से सीख ले ऐसी भाषा

हिन्दी है,1925 में कानपुर में आयोजित बैठक में मंजूर किए गए, ठहराव में,हिंदुस्तान में एक ही भाषा हो,एक ही बोली हो, राष्ट्रीय महासभा द्वारा हिन्दी को पहचान दी गई है,तब से सिद्धान्त में,हिन्दी राष्ट्रभाषा के रुपमें गिनी गई है । शिक्षा के लिए हिन्दी की बोलियाँ भाषाओं को पहचान ने की और उसका महत्व समाज ने की ,उसे स्वीकार करने की कोशिश 1920 की साल में शुरू हुई थी,

महासभा अखिल हिन्द समारोह में इकट्ठे होते महासभावादी समझ सके ऐसी समस्त हिंदुस्तान की एक बोली याने कि हिन्दी भाषा को स्वीकार करने का एक उमदा प्रयास शुरू हुआ था,हमें राष्ट्र भाषा लिखने में बोलने में लिपि में लिख सके वो सीखना चाहिए ।

वैचारिक प्रदूषण :

सत्र को सम्पूर्ण रूप से व्यवहार में लाने के लिए महा सत्ता में महासभावादियों ने ठहराव का अमल नहीं किया था,वो दुख के साथ बताना पड़ता है,अंग्रेज़ी में बोलने का आग्रह रखने वाले खुद को समझ में आए इस लिए लोगों का इसी भाषा में बोलने की फर्ज दिखाने वाले महासभावादियों का चलन आज भी हमें देखने को मिल रहा है,अंग्रेजी भाषा ने आकर्षित किया है,उसकी चुंगल से हम छूट नहीं पाये है,बल्कि फसते जा रहे हैं,एक राष्ट्र भाषा और एक देश नहीं होने से ,हम हमारे देश के विकास में अवरोध पैदा कर रहे हैं,अँग्रेजी पढ़ने में हम सबसे ज्यादा समय खराब कर रहे हैं। लेकिन हिन्दी भाषा को समझने की कोशिश नहीं हो रही है।

स्वतंत्र भारत में गांधीजी द्वारा राष्ट्र भाषा हिन्दी भाषा की व्यवहार में प्रयुक्ति,हिन्दी का कपड़े मिल उद्योग का गुजरात में फैलावा,तकनीकी उद्योगों ,आदि ने गुजरात में हिन्दी प्रचार प्रसार में सराहनीय योगदान है। गुजरात विद्यापीठ की स्थापना 1920 गांधीजी के दृढ़ आग्रह राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के जेठालाल द्वारा हुआ महत्वपूर्ण कार्य के परिणाम स्वरूप हिन्दी पठन पाठन का महौल गुजरात में तो बन ही पाया है। रोजी रोटी के लिए कई लोग देश के विभिन्न प्रदेशों से गुजरात आए ,हिंदीतर क्षेत्रों से पेट पूर्ति के लिए शिक्षित लोग भी आए ,स्वीधीनता के बाद इन छह दशकों में गुजरात में हिन्दी लेखन शोध ,समीक्षा,कविता,उपन्यास ,अनुवाद कार्य ,बहुत भारी मात्रा में हुआ है। गुजरात के प्रसिद्ध कवीओं में अखो,ईश्वर सा प्राणनाथ ,हरदास ,सांदजी ,सुला,करसन दास,मुकतानन्द ,दया राम,अप्रकाशित पांडु लिपि या संग्रहीत है,ये कहा जाये कि गुजरात की भूमि पर हिन्दी का उपवन है।

अंग्रेज़ों की गुलामी से महात्मा गांधीजी ने हमें आजादी दिलाई और दूसरी और वैचारिक आजादी अन्ना हज़ारे ने दिलाई ,आज पूरे भारत वर्ष में 150 वी गांधी

जयंती मनाई जा रही है,इस अवसर पर राष्ट्र भाषा को उनका योगदान हम कैसे भूल पाते हैं। आज देश में चारों ओर भ्रष्टाचार ,भुखमरा ,शिक्षा का व्यापारीकरण,पाखंड ,धर्म और जाती के नाम पर इक्ठे होना और अपने जाती धर्म का संगठन बनाकर और धर्म और जाती के लोगों पर अत्याचार होता जा रहा है। कुछ संगठन जो देश में राजकारण ,हमें अपनी विचार शक्ति से अपने निर्णय जो देश के विकास में अवरोध पेदा करते है ,एसे जातियो का बटवारा ,धर्म के नाम पर लोगों को बेहकाना और अपना नाम बनाए रखने वाले है,किन्तु लोकशाही में देश में न तो भारत का सविधान को छु सकेंगे ,और अगर छु ने की कोशिश होगी तो प्रजा इसे स्वीकार नहीं करेगी। भारतीय सविधान विश्व का श्रेस्ठ सविधान है,विश्व तकनीकी में आगे बढ़ने के लिए कार्यान्वित है,जब की भारत में कुछ लोग उसे पीछे की और धर्म और जाती के नाम पर धकेल ने की नाकाम कोशिश कर रहे है।

आज हिन्दी भाषा के लिए देश विदेश में हिन्दी साहित्य सम्मेलन हो रहे है, मेघालय राष्ट्र भाषा प्रचार समिति द्वारा प्रकाशित तीन धार्मिक ग्रंथ आजान फकीर,शंकर देव,और माधव देव,पुस्तक प्रकाशित है,आजान फकीर का हिन्दी में अनुवाद हुआ है, ८० साल पहले महात्मा गांधीजी ने हिन्दी को आगे बढ़ाने का काम किया था ,आज मोदी जी के रॉम रॉम में हिन्दी बसी हुई है,और वे गैर हिन्दी प्रदेशों और विदेशों में भी हिन्दी में अपनी बात रखते है।

यू पी एस सी की परीक्षा में चोर दरवाजे से हिन्दी को भागने की साजिश रची जा रही थी लेकिन मोदी जी ने इसे रोक दिया,हिन्दी समृद्ध बनाने के लिए हिन्दी तमिल,हिन्दी बंगला,कभी हिन्दी डोगरी की कार्यशाला ये आयोजित होना चाहिए,हिंदुस्तान की सभी बोलिया और भाषाओं में जो उतम है वो हिन्दी को उन्नत बनाने के लिए मदद करेगा,आज विश्व हिन्दी सम्मेलनों का बड़ा महत्व है,दसवा हिन्दी सम्मेलन भोपाल में आयोजित हुआ था । आज हिमाचल प्रदेश में सोलन में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा आयोजित किया गया है,इन्हें मैं हार्दिक बधाई देता हूं । हिन्दी साहित्य सम्मेलन राजकीय स्नातकोतर संस्कृत महा विद्यालय पुंज ठोड़ों ग्राउंड सोलन हिमाचल प्रदेश में दिनांक २८ फरवरी 2020 से १ मार्च २2020 तक चलेगा ,हिन्दी को बढ़ावा देने वाला ये हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग आजादी से पहले से काम कर रहा है।

सुझाव : हिन्दी के विकास में अवरोध हिन्दी पैदा करने वाले प्रांतो को समझा कर हिन्दी को राष्ट्र भाषा का सम्पूर्ण दरजा देना चाहिए,हिन्दी राष्ट्र भाषा है,इसे कारोबार में और व्यवहार में तथा संसदीय ,राजकीय व्यवहारों में शामिल करना चाहिए इससे किसी को भी तकलीफ नहीं हो सकता है, अँग्रेजी में लोग बोलकर और लेखनमें काम कर रहे है उन्हें अपना रुआब छोड़कर हमारे देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी को पूरे भारत वर्षा में लागू करने के लिए आगे आना चाहिए, सरकार ने सख्ती की जरूरत पड़े तो वो भी करके हिन्दी को राष्ट्र भाषा के

रूप में पूरे देश में लागू करने की जरूरत हमें दिख रही है,एक और विरोध करने वाले की मात्र आज कम है,जबकि हिन्दी की फेवर करने वालों की संख्या सबसे ज्यादा है,और हिन्दी के प्रति लगाव,प्रेम,कामकाज में,व्यवहार में,सोश्ल मीडिया में,उसका प्रभाव बढ़ा है,तब सरकार से मांग है की,हिन्दी के लिए कड़े कदम उठाए जाय,सभी हिन्दी भाषी प्रदेश के हिन्दी के लिए काम करने वाली संस्था ये और हिन्दी प्रेमी लोगों को आगे आकार सरकार के पास उग्र मांग करना चाहिए,की पूरे भारत भारत वर्ष में राष्ट्र भाषा हिन्दी को सम्मानित करे और देश के सभी व्यवहार में ,पाठशाला ओ में हिन्दी की पढ़ाई को बढ़ावा दे,एसी ऊमीद के साथ हम हमारी विनम्र मांग सरकार से रखते है।

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

सन्दर्भ सूची : हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की औरसे आयोजित सोलन में हिंदी साहित्य सम्मेलन,हिंदी साहित्य अधिवेशन

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

महा प्रज्ञ आचार्य महान जैन संत कवि लेखक

जैनधर्म श्वेतांबर तेरापंथ के दसवे संत महाप्रज्ञ श्री आचार्य थे। महाप्रज्ञा संत,योगी,आध्यात्मिक,दार्शनिक,अधिनायक ,लेखक,कवि,वक्ता,और कवि थे। उनकी बहुत पुस्तकें और लेख,कविताएं पूर्व नाम नथुमल के नाम से प्रकाशित हुई है। उनका बचपन का नाम नथुमल था। पिताजी की छाया बचपन में खो दी थी,उनकी छोटी उम्र में ही पिताजी का निर्वाण हो गया था। माँ धार्मिक थी।

उनका जन्म 14 जून 1920 में टमकोर गाँव में राजस्थान में हुआ था। उनका निर्वाण 9 मई 2010 सरदार शहर राजस्थान में हुआ था।पिताजी का नाम भोला राम और माताजी का नाम बालू था। उन्होंने दस वर्ष की आयु में संन्यास के रूप में विकास और धार्मिक प्रतिबिंब का जीवन आरंभ किया था। आचार्य कालु गुणी ने उन्हें दीक्षा दी थी। महा प्रज्ञा ने अनुव्रत आंदोलन जो गुरु आचार्या तुलसी ने 1949 में आरंभ किया था उसमें मुख्य भूमिका निभाई थी,और 1995 के आंदोलन में स्वीकृत अधिनायक बन गए। आचार्य महा प्रज्ञा ने 1970 के दशक में अच्छी तरह नियम बद्ध प्रेक्षा ध्यान विकास किया जो छात्रों के संतुलित विकास और उसका चरित्र निर्माण के लिए प्रयोगिक पहुंच है।

आचर्य कालुगुणी तेरापंथ की आज्ञा से तेरापंथ के नोवे आचार्य नथुमल जी को बनाया गया। न्याय,व्याकरण,मानो विज्ञान,ज्योतिष,अर्थ वेद आरिका,तथा जैन आँगन,बौद्ध ग्रंथों,वैदिक ग्रंथो,तथा प्राचीन शास्त्रों का गहन अभ्यास किया था। वे संस्कृत भाषा के आशु कवि थे।

आगे चलकर उनकी प्रज्ञा से प्रभावित होकर आचार्य तुलसी ने उन्हें महाप्रज्ञ (मुनि नथुमल)को पहले अग्रगण्य एवं विक्रम संवत 2022 माह शुक्ल सप्तमी इसविसन 1965 हिसार में निकाय सचिव नियुक्त किए गए थे।

आगे चलकर उनकी प्रज्ञा से प्रभावित होकर आचर्य तुलसी ने उन्हें महाप्रज्ञ की उपाधि से अलंकृत किया गया था। तब से उन्हें महाप्रज्ञ के नाम से जाना जाता है। आचार्य तुलसी ने विक्रम संवत 2035 राजल देसर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर उन्हें आचार्य तुलसी ने उनका उतराधिकारी घोषित किया था। सूजन गढ़ राजस्थान में सुजानगढ में आचार्य तुलसी ने अपना आचार्य पद का सृजन कर दिया था और युवा आचार्य महा प्रज्ञा को आचार्य नियुक्त किया गया था,और वे तेरा पंथ के दसवें आचार्य बने थे।

आचार्य महाप्रज्ञ की नीचे दी गई पुस्तकें वेब साइट पर बब है।

1 विसृजन अवधारणा एवं प्रक्रिया
2 लोकतंत्र नया व्यक्ति या नया समाज
3 जैन योग
4 मैं कुछ होना चाहता हूं
5 किसने कहा मन चंचल है ?
6 महा वीर का अर्थ शास्त्र
7 जैन दर्शन और संस्कृति
8 समस्या को देखना सीखे
9 ऋषि भाषण
10 तत्व और बोध
11 कैसे सोचे

आचार्य श्री ने प्रवचन के साथ ही प्रचुर साहित्य का निर्माण किया था। विविध विषयों पर उनके भाषण के 150 ग्रंथ उपलब्ध है। उन्होंने विश्व के अनेक देशों में यात्रा की और अतुल्य प्रेक्षा ध्यान और एकांत दृष्टि के सूत्रों का प्रचार किया।

उनके जीवन का रहस्य :

जैन शासन मिला उसे जीने का अर्थ मिला,अनेकांत का दृष्टि कोण मिला,अनेकांत किया,यदि अनेकांत का दृष्टि को पाया न होता तो शायद वे कही न कही दल दल में फंस जाते।

आँख से दुनिया देखना शुरू करे तो बहुत सारी समस्याओं का समाधान अपने आप में हो जाता है। दिगंबर समाज के प्रमुख विद्वान कैलाश चंद शास्त्री कानपुर प्रवास में मिले,उन्होंने नाथमलजी को ग्रंथ पढ़ने को कहा था। जैन दर्शन मनन और मीमांसा हो चुका था ,पंडित कैलाश शास्त्री ने नथुमल जी से कहा श्वेतांबर दिगंबर की परंपराएं के बारे में जो लिखना था वह लिख दिया पर हम अखरे नहीं,हमें चुभा नहीं,जिस समन्वय की शैली में लिखा है,वह शास्त्री जी को बहुत अच्छा लगा।

वे आचार्य तुलसी के निकट रहते थे। जो भी समस्या आती थी उसका समाधान वो खुद करते थे। साधुओ से विनम्रता बनाई रखी थी। उनमें कोई बड़प्पपन के लक्षण नहीं थे। उन्होंने आचार्य भिक्षु को पढ़ा ,उनकी संयम ,निष्ठा त्याग और व्रत की निष्ठा थी,उसे पढ़ने से जीवन को समझने का बहुत अवसर मिला। पूज्य गुरु देव का अनुग्रह था कि जब भी कोई प्रसंग मिला तब उन्होंने उन्हें महा प्रज्ञा जी को कहा,पढ़ो जो अतीत में हो चुका है वह सब कुछ हो चुका ऐसा नहीं है।

–ये सिद्धरेम का वाक्य था

ये वाक्य उनके हृदय पटल पर

छा गया था। मैं केवल मेरे अतीत के गीत गाने नहीं जन्म लिया है ।

आचार्य महा प्रज्ञ जी की कविताए

1 वर्तमान उपलब्ध करना है

2 कविता की क्या परिभाषा दूं

3 प्रसाद का सिर झुक गया है।

आचार्य महा प्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष 2019–20 मान्य जा रहा है। 30 जून 2019 से ये शुरू हुआ है। योगिरूप,प्रज्ञपुरुष ,लोक महर्षि ,ज्योति पुंज है। तेरा पंथ धर्म संघ के दाशमश्वताकी जन्म शताब्दी वर्ष शुभारंभ अवसर पर श्रद्धा प्रणाम पूर्वक अभिवादन करते है।

156 वे मर्यादा महोत्सव क महा आगाज हुब्ली में (कर्णाटक) में बाबा रामदेव ने कहा तेरा पंथ मेरा पंथ है.तिर्थंकर प्रभु महावीर के प्रतिनिधि जैन श्वेतांबर तेरा पंथ धर्म संघ के वे आधी शासता आचार्य महाश्रमण जी के पावन सानिध्य में तेरा पंथ के अति विशिष्ट महोत्सव का 156 मर्यादा महोत्सव आगाज हुब्ली कर्णाटक में तीन दिन तक चला था।

जहाँ अनुशासन का मन नहीं होता वहाँ उनके व्यक्तित्व का भी मन नहीं होता।,अर्थात् महा श्रमण ज्ञान के सक्षम आधार अतुल्य है। आचार्य महा श्रमण आचार्य ने 2001 से 2004 तक अहिंसा यात्रा का नेतृत्व किया था।

पश्चिमी विचारकजी के चरुट्टान लिखते हैं कि,देवदूत इस लिए आकाश में उड पाते हैं कि,वे अपनी महानता को लड़े नहीं फिरते हैं।

अहिंसा यात्रा के प्रतीक :

आचार्य महाप्रज्ञ ने बताया है कि,अनेकवाद ,शांति,अनुशासन, हीनता और अववस्था से विश्व को बचाने क एक मात्र उपाय अहिंसा ही है। विख्यात बंगला लेखक श्री विमल मिग कहा करते हैं कि,मीने महा प्रज्ञ साहित्य से नया सत्य पाया है। थोड़े शब्दों में अगर कहा जाये तो आचार्य महा प्रज्ञ की सृजन चेतना से तेरा पंथ धर्म संघ लाभान्वित हुआ है और सम्पूर्ण मानव जाती लाभान्वित हुई है।

उनकी अश्रु बिना नामक पुस्तक आध्यात्मिक पुस्तक है,पृष्ठ 79 है,उसका अनुवाद मुनि मिट्ठा लाल ने किया है। आचर्या महाप्रज्ञ की दूसरी एक पुस्तक किसने कहा मन चंचल है?उसके कुल 284 पृष्ठ है। सत्व आवृति जनवरी 1992 और आठवां संस्करण 1994 में प्रकाशित हुआ है। उसका मूल्य तीस रुपए है। प्रकाशक जैन विश्व भर्ती लादन नागौर राजस्थान है। किसने कहा मन चंचल में महा प्रज्ञ जी बताते हैं कि,बीज का वृक्ष बनाने के लिए भी लंबी यात्रा करनी होती है,बीज यदि बीज ही रहे तो विश्व को वह उपलब्ध नहीं होता है,जो बीज से हो सकता है। पत्र,पुष्प,फल,छाया,और ईश्वर ये सब बीज के विकास

से ही संभव होता है। चेतना को भी विकास के शिखर तक पहुंचने के लिए,बहुत लंबी यात्रा करना होती है। यदि चेतना सुषुप्त रहे तो उसे वह उपलब्ध नहीं होता है। जिसकी हम अपेक्षा करते हैं। मैत्री,शांति,सौहार्द,सद्भावना,समता और समन्वय सभी तत्व जागृत चेतना से ही प्राप्त हो सकते हैं। चेतना जागरण के लिए ऊर्जा की उर्ध्व यात्रा करनी होती है। उनमें ध्यान का प्रयोग चला है और साथ साथ ध्यान के विषय में चर्चा भी चलती है। वही चर्चा इस पुस्तक में संकलित है। अक्टूबर1977 ,मार्च 1978,तथा जून 1978 के तीन शिविरों की चर्चा इसमें संग्रहीत है। ध्यान के प्रयोग से व्यक्ति अपने आपसे परिचित होता है। अपने भीतर होने वाली घटनाओं से सीधा संपर्क स्थापित करता है। ध्यान विषयक चर्चा उस कार्य में बहुत सहयोग करती है। शरीर शास्त्र का अध्ययन एक एक डॉक्टर के लिए भी जरूरी है,और एक साधक के लिए भी जरूरी है। प्रयोजन दोनों का भिन्न हो सकता है। प्रेक्षा ध्यान का अभ्यास करने वाले व्यक्ति के लिए शरीर बोध इस लिए जरूरी है कि वह शरीर के प्रत्येक भाग को देख सके,शरीर की प्रत्येक कोशिका का चेतना के द्वारा स्पर्श कर सके और उसे सक्रिय बना सके।

मानव शास्त्र का अध्ययन एक मनोवैज्ञानिक के लिए जितना आवश्यक है उतना ही ध्यान साधक के लिए भी आवश्यक है। प्रेक्षा ध्यान का अभ्यास करने वाला चेतना के विभिन्न स्तरों को जाने बिना अनिश्चितता में विद्यमान शक्तियों का विकास और उनका उपयोग ।

कर्म शास्त्र का अध्ययन एक दार्शनिक और तत्व वेटा के लिए जितना जरूरी है उतना ध्यान साधक के लिए जरूरी है। नदी संस्थान में उठने वाला कर्म विपाक के विभिन्न तरंगो को जाने बिना उन्हें शांत नहीं किया जा सकता है,और प्रेक्षा ध्यान से चित की जागरूकता बढ़ती है। जागरूक साधक नदी संस्थान में उठने वाली उत्तेजना या वासना की प्रत्येक तरंग का अनुभव कर सकता है,और दर्शन के द्वारा उसे निष्क्रिय बना सकता है।

हम चिंतन की शक्ति से जितना परिचित है,उतने ही दर्शन की शक्ति से अपरिचित है। चिंतन से ज्ञान तंतुओ में थकान लगती है और दर्शन से वे शक्तिशाली बनते हैं। उनकी सक्रियता बढ़ती है।

दर्शन चेतना की सहज प्रवृति है। चित शरीर के जिस भाग में आता है,उस भाग में प्राण की धारा प्रवाहित होती है। जहां प्राण का प्रवाह प्रचुर मात्रासे होता है वह सुप्त चैतन्य केंद्र जागरूक हो जाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में जागरण की प्रक्रिया के कुछ सूत्र स्वरचित है।

इन सूत्रों की चर्चा की परी समाप्ती पर आचार्य श्री तुलसी की उपसंहारक

टिप्पणियाँ भी होती रही है। ये एक स्वतंत्र पुस्तक में पढ़ने को मिलेगी। आचार्य तुलसी ने मेरी ध्यान चर्चा को बहुत सजीव बनाया है। उनकी उपस्थिति और प्राण वता ने उसे बहुत प्रेरित किया है। इससे लाभान्वित किया है। अस्तित्व की खोज में बताया है कि आज हमने यात्रा प्रारम्भ की है। यात्रा के लिए हमने एक मार्ग चुना है। मार्ग पर हर कोई चलता है,हम भी चलते थे और चल रहे हैं ,हर मार्ग पर पद चिन्ह होते हैं। किन्तु आज हमने एक एक ऐसा मार्ग चुना है कोई पदचिन्ह नहीं है,पदचिन्ह होने का अर्थ है,अनुसरण होना जहां अनुसरण नहीं होता है वह कोई पदचिन्ह नहीं होता है। हमारा मार्ग बिना पदचिन्ह का मार्ग है,इसमें कोई किसी का अनुसरण नहीं करता है।

किन्तु हमने ऐसे मार्ग पर यात्रा शुरू की है ,जिसमें कोई अनुसरण नहीं है। पद चिन्ह नहीं है। जब चलने वाले अपने मार्ग से आशक्त हो जाता है,तब पद चिन्ह शेष रह जाता है,किन्तु जो विरल होता है जिसे मार्ग का कोई मोह नहीं रहता है। उसके कोई पदचिन्ह नहीं होते है। मार्ग चलने के लिए होता है। मार्ग अस्तित्व के लिए नहीं होता है। मोह करने के लिए नहीं होता है। जो चलता है वह चला जाता है। जो आता है वह जाता है। पीछे कुछ भी शेष नहीं छोड़ता । एक मार्ग ही उत्तम होता है। हमने भी ऐसा ही मार्ग चुना है। जहां कोई पदचिन्ह नहीं,कोई अनुसरण नहीं ,कुछ भी शेष नहीं,कोई संस्कार नहीं,जैसे आया वैसे गया, न स्मृति और न संस्कार। आत्मा को देखने का पहला मार्ग महाप्रज्ञ ने खास बताया है,भीतर की समता पहला द्वार है,हम बाहर बाहर ही देखते है। मन बाहर की और दौड़ता है। जब भीतर की यात्रा शुरू करना होता है तब प्रथम प्रवेशद्वार श्वांस से गुजरना होता है। जब श्वांस के साथ मन भीतर जाने मांगता है तब अंतर यात्रा शुरू होती है। श्वांस आत्मा है। शरीर आत्मा है,मन आत्मा है।

श्वांस का स्पर्श किए बिना श्वांस को देखे बिना शरीर को ठीक भाव से नहीं समझ सकते नहीं देख सकते। शरीर को देखे बिना मन को ही नहीं देख सकते हैं। मन को देखे बिना आभा मण्डल को देखे बिना प्राण को नहीं देख सकते हैं और प्राण को देखे बिना उस चैतन्य तक नहीं पहुंच सकते हैं। जहां हमें पहुंचना है। सूक्ष्म तत्व तक पहुंचना है। अस्तित्व तक पहुंचना है तो इसी यात्रा पथ पर चलना होगा। इसी क्रम से चलना होगा। आप चाहे सीधे आत्मा को देख लें,यह भांति होगी। मे काहू की 'आत्मा को देख' यह भी भांति होगी / आप यह मान ले, उस परमसत्ता को,परम अस्तित्व को चैतन्य को जो अमूर्त है,सूक्ष्म है,हमारे कर्म व चक्षुओं का विषय नहीं है। उसे हम देख ले, यह कहना और ऐसा समजना बहुत बड़ी गलती होगी। आत्मा से आत्मा को देखे। इसका पहला अर्थ है,माकन के द्वारा श्वांस के स्पंदन को देखे इसका दूसरा अर्थ है–मन के द्वारा शरीर के प्रकंपनों के संवेदनाओं को देखे। इसका तीसरा अर्थ है,–विचारों को देखे, इन सभी तक पहुंच जाने आभा मण्डल स्पष्ट हो जाता है,

दृष्ट हो जाता है,
–श्वास को देखना आत्मा को देखना पहला पड़ाव है–
–शरीर को देखना आत्मा को देखना दूसरा पड़ाव है
–विचारों को देखना आत्मा को देखना तीसरा पड़ाव है।
–आभा मण्डल को देखना आत्मा को देखना चौंथा पड़ाव है।
–प्राण शक्ति का साक्षात्कार आत्मा को देखना पांचवा पड़ाव है

ये पाँच पड़ाव है। जब इन पंचो पड़ावो को पार कर जाते हैं,तब छठे पड़ाव में हम वहां पहुंचते हैं। जहां हमें पहुंचना है। बाहुबली के साथ अपने मधुर संबंधो की स्मृति करते हुए भरत कहता है,– मैं बाहुबलि से बहुत दूर जा रहा हूं और वह भी मेरे से दूर जा रहा है। वह तक्षशिला में है और मैं अयोध्या में। पिताश्री ने हमें केवल शरीर से ही पृथक किया है। हृदयसे नहीं। हम दोनों के बीच में अनेक पहाड़ी हैं।,नदियाँ है,जंगल हैं,ये सारी चीजें भले ही हो,कोई चिंता की बात नहीं है। इतने सारे तत्वाधान है,फिर भी कोई बात नहीं है। किन्तु हम दोनों के बीच चुगलखोर न हो ,तो कोई दूरी नहीं है।

आचार्य महाप्रज्ञ जी 'एक जीवित किवदंती ही नहीं है,बल्कि एक उद्देश्य भी है न कि केवल विश्वास है,बल्कि एक विश्वास है,वह वह धारणा है जो समय या क्षेत्र से बंधी नहीं जाती विश्व कोश के रूप में एक अनंत ज्ञान का खजाना था प्रख्यात कवि रामधारी सिंह ने उन्हें 'भारत का दूसरा विवेकानंद 'के रूप में नामित किया है। वह ज्ञान का भंडार नहीं है,बल्कि बहुत बड़ा श्रोत है। पूर्व में हमेशा ताजा पानी नहीं हो सकता है,जो बाद में यानि स्त्रोत के पास हमेशा रहेगा। ऐसे श्रोत में अकेले असंख्य व्यक्ति की प्यास बुजाने की क्षमता है। विरोधाभास रूप से आचार्य महाप्रज्ञ ने न केवल शमन किया ,बल्कि लोगों में ऐसी प्यास भी पैदा की उनके चिंतन की गहराई से विचार मंथन स्थायी और प्रभावी है।

इस तरह आचार्य महाप्रज्ञ ,मानवतावादी नेता ,आध्यात्मिक गुरु,और शांति के दूत ,जैन धर्म के श्वेताम्बर तेरा पंथ संप्रदाय के सर्वोच्च प्रमुख ,दसवें आचार्य थे। वे एक उच्च आदरणीय संत ,योगी ,आध्यात्मिक नेता दार्शनिक लेखक संचालक कवि थे।

● ●

सन्दर्भ सूची :किसने कहा मन चंचल है ? :लेखक आचार्य महाप्रज्ञ प्रकाशन जैन विश्व भारत लाडन नागौर – राजस्थान

● ●

प्रवासी विमर्श

हर्ष और आनंद का विषय तो यह है कि प्रवासी भारतीयों ने हिन्दी प्रयोग अनुप्रयोग से विश्व में जो भाषाई सांस्कृतिक परचम लहराया है,वह गौरव गरिमा का विषय तो है ही,स्तुत्य एवं प्रणम्य भी है। पूरे विश्व में फैले भारतीय मूल के निवासियों ,देश प्रेमियों ,भाषा–भक्तों ने जो श्रद्धा कर्मण्यता तथा रचनाधर्मिता प्रदर्शित की है। उससे देश का,हिन्दी समाज का सृजनशीलता का जरूर हिन्दी की प्रजाजन शक्ति का मान सम्मान बढ़ा है।

यदि प्रवासी हिन्दी लेखन के विस्तार को ,प्रचार प्रसार को,उसकी गंभीरता और गहराई को,उसके आयामों और दिशाओं को देखे तो निःसंदेह कहा जाता है कि यह हमारे भारतीय प्रवासियों की साहित्य एवं भाषा साधना का ही सुपरिणाम है कि साहित्य का एक नया नितांत मौलिक इतिहास निर्मित हो यहा है। गुनवाता हो या लेखन की मात्र ,वैविध्य हो या गम्भीर्य और गहनता,किसी भी तरह ये यह साहित्य भारतीय हिन्दी लेखन से कम नहीं है।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य का इतिहास लगभग ग्यारह सौ वर्ष पुराना है। इन ग्यारह सौ वर्षों में हिन्दी पुरष्कृत हुई ,विकसित हुई। उसके अनेक आयाम उजागर हुए । उसकी अनेक विधाएं उद्घाटित हुई। भारत में हिन्दी प्रयोक्ता निरंतर भाधते रहे और अहिंदी भाषी भारतीय क्षेत्र भी धीरे–धीरे हिन्दी भाषी बनते गए। समेकित संस्कृति ने ,राष्ट्रीय एकता ने ,व्यवसाय तथा बाजार ने हिन्दी भाषी क्षेत्रों ,राज्यों का विस्तार किया। रोजी रोटी ने आजीविका अर्जन ने भाषा के अवरोध को ही समाप्त किए गए तो कही कम किए। आज लगभग सभी 29 भारतीय राज्यों में हिन्दी बोधगम्यता की ,विचार विनिमय की,लेन–देन की ,व्यवसाय – व्यापार की भाषा बन गई है। इस स्थिति में आजादी के बाद से तो लगातार और निरंतर विकास हुआ है। बरसों पहले रोजी–रोटी तथा आजीविका की तलाश में अपने देश ,समाज ,परिवार तथा मित्र आदि को छोड़कर मोरेसियास ,फ़िजी,सूरीनाम ,गुयाना,त्रिनिदाद,एवं टूबेगो आदि देशों में गिरमिटिया मजदूर बनकर प्रवास पर गए प्रवासी भारतीयों ने राष्ट्र के राजपूत बनकर जो देशभक्तो की भूमिका निभाई वह सराहनीय है,स्मरणीय है। धीरे–धीरे प्रवासी भारतीयों ने अपने त्याग ,संघर्ष, एवं ताप–साधना से जो मुकाम हहील किए ,अपने तथा परिवार आदि के लिए जो स्थान एवं सम्मान जुटाया है,वह निश्चित ही अप्रतिम है,दुर्लभ है। विदेशों में जाकर अपनी श्रम–साधना से भारतीय संस्कृति की जो सुंगंध बिखेरी है,जो श्रम कल्याण रूपी पराग विकीर्ण किया ,उसी का परिणाम है कि आज दुनिया के अनेक देशों में भारतीयता का,भारतीय मूल्यों का ,भारतीय संगीत नृत्य का ,गायन तथा भारतीय कलाओं का डंका तो बज ही रहा है। भारतीय भाषाओं का ,हमारी सृजनशीलता का ,

हमारी रचनात्मक प्रतिभाओं का भी डंका बज रहा है। हजारों हिन्दी लेखक आज विश्व के सैंकड़ों देशों में अपनी लेखनी का लोहा मनवा रहे है।

यदि भारत देश के निकटस्थ देशों पर ,पडोशी देशों पर द्रस्ती डाले तो हिन्दी लेखन की समृद्धि को प्रोत्साहित करने वाले इन देशों में ,नेपाल,पाकिस्तान,बांग्लादेश,भूटान,श्रीलंका, और म्यांमार (बर्मा) आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रवासी हिन्दी लेखन के इतिहास को बल प्रदान करने वाले इन देशों में जो भारतीय मूल के रचनाधर्मी रह रहे हैं, वे गद्य पद्य की हिन्दी विधाओं में नियमित लेखन कर रहे हैं। उनका अवदान वंदनीय है।

यदि विश्व के अन्य महाद्वीपों पर नजर दौड़ाएँ तो प्रवासी हिन्दी लेखन की समृद्धि के श्रोत हमें वह भी प्रचुर मात्र में मिलते हैं। सर्वप्रथम यदि अमेरिकी महाद्वीप को देखे तो वहा संयुक्त राष्ट्र अमरीका में ,कनाडा में,मैकसिको में,और क्यूबा में भी हिन्दी लेखन ज़ोर ज़ोर से चल रहा है। यदि यूरोप महा द्वीप की बात करे तो गर्व से कह सकते है,हिन्दी,हिन्दी लेखन और हिन्दी संस्कृति का विस्तार वह भी निरंतर हो रहा है चेक,रूस, जर्मन, फ्रांस, बेल्जियम, होलेण्ड, नीदरलेंड,ऑस्ट्रिया, स्विटजरलैंड, डेन्मार्क, नॉर्वे, स्वीडन, फ़िनलैंड, इटली, पोलेंड, चेक, हंगेरी , रोमानिया, बलगरिया, उक्रेन तथा क्रोएशिया हंगेरी , रोमानिया, बलगरिया, उक्रेन तथा क्रोएशिया आदि देशों में हिन्दी अपने पाँव पसार चुकी है। औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में ,सांस्कृतिक संबंधो की दिशा में ,लेखन सृजन के संदर्भ में हिन्दी भाषा और साहित्य अपनी रचनात्मक उपस्थिती दर्ज कर रहे है । कभी,किसी जमाने में हिन्दी भारतीय सीमा ओ में ही कम विस्तार पर रही थी,किन्तु अब अंतराष्ट्रीय परिव्याप्ति ने हिन्दी को पंख लगा दिये हैं। प्रवासी भारतीयों की भूमिका इस क्षेत्र में वंदनीय है।, श्लाघनीय है।

याद है कि हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने प्रवासी भारतीयों के लिए जो लड़ाई लड़ी थी ,जो संघर्ष किया था,उससे उन भारतीयों को भी,उनकी भाषाओं को भी तथा भारतीय संस्कृति को भी,वैश्विक लोक स्वीकृति प्राप्त हुई। सन् 1909 में गांधीजी ने अपनी पुस्तक ‘हिन्द स्वराज’ में भी भारतीय प्रवासियों की इस समस्या को उठाया और उजागर किया था दक्षिण अफ्रिका में तो गांधीजी ने प्रत्यक्ष इस समस्या के वीरुध अपनी आवाज बुलंद की थी।

भारतीय चिंतको ने,समालोचकों और रचनाकारों ने,समाज सुधारकों और देश भक्तों ने प्रवासी भारतीयों को, युद्धों को,उनकी चुनौतियों और समस्यायों का अपने चिंतन का,लेखन का विषय बनाया। समय–समय पर पत्रकार भी इस दिशा में अपना योगदान करते रहे। पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने भी सन् 1914 से लेकर 1936 तक प्रवासी भारतीयों की समस्याओं की तरफ देशवासियों का ,विश्व का ध्यान आकृष्ट किया तथा जागृति लाने का कार्य किया। भारतीय राजदूत डॉ० लक्ष्मी माल सिंघवी ने पूरी विश्व में फैले भारतीय प्रवासियों

को ‘भारत वंशी’ कहकर संबोधित किया। इसमें सभी प्रवासी भारतीयों का मान–सम्मान बढ़ा और उन्हें भारतीय संस्कृति के अग्रदूत के रूप में देखा जाने लगा। सन् 2003 में तो पहली बार 9 से 11 जनवरी तक तीन दिवस का आयोजन करते हुए ‘प्रवासी भारतीय दिवस’ के आयोजन का शुभारंभ भी किया गया । यह एक नवीन सांस्कृतिक अध्याय लिखने का प्रयास था। आगे चलकर नियमित रूप से यह दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाने लगा । अब तो ‘प्रवासी भारतीय दिवस ‘पूरे विश्व में मनाया जाने लगा है।

यदि आंकलन करे तो देख सकते हैं कि देश के बाहर रह रहे भारतीय प्रवासियों ने जो हिन्दी लेखन,सम्पादन आदि के कार्य किए है वे सभी अद्‌भुत,अप्रतिम,और अविश्वासनीय भी है। इन प्रवासी भारतीयों ने हिन्दी भाषा में कविता,कहानी,नाटक,एकाँकी, निबंध,दरी,आत्मकथा,भेटवार्ता,साक्षात्कार ,यात्रा वृतांत ,संस्मरण लेखन,पुस्तक समीक्षा लेखन,शोध–अनुसंधान कार्य ,पाठ्य–पुस्तक–लेखन बाल साहित्य लेखन,समाचार पत्र प्रकाशन फीचर लेखन,रेडियो लेखन,संवाद लेखन,लोक साहित्य लेखन आदि तमाम क्षेत्रों ,विधाओ में अपनी सृजनात्मक शक्ति का ही नहीं दिया,लोहा भी मनवाया है।

आज अभिमन्यु अनंत,हरीशंकर आदेश,प्रो. पुसपिटा,पुर्णिमा वर्मन,सुरेशचन्द्र शुक्ल,शरद आलोक,शुष्मा बंदी,तेजेंद्र शर्मा,ब्रजेन्द्र कुमार भगत,और मुनीशवल चिंतामणि जैसे स्कोण्डो नाम है जो हिन्दी भाषा और साहित्य समृद्धि में अपना अतुल्य योगदान कर रहे है। हिन्दी में अनुसंधान सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हो रहा हे। स्नातक,स्नातकोत्तर स्टार स्तर का प्रशिक्षण भी चल रहा है।भारतीय कालाओं को सीखने हेतु ,उनके प्रचार–प्रसार हेतु अनेक संस्थान,काला केंद्र खोले जा रहे है। हिन्दी तथा हिंदीतर भारतीय भाषाओं की,शिक्षा इनके साहित्य की शिक्षा,इनको माध्यम रूप में पढ़ने पढ़ने की सुविधा दी जा रही हे। मोरेसियस में तो हिन्दी सचिवालय,महात्मा गांधी संस्थान,टैगोर संस्थान आदि है ही,आर्य समाज की स्थापना आदि उल्लेखनीय है। हिन्दी सिनेमा भी अतुल्य भूमिका निभा रही है। किन्तु आवश्यकता है इस बात की हम भारतीय हिन्दी सेवी ,समालोचक, इतिहासकार,–इस प्रवासी भारतीय हिन्दी लेखन को हिन्दी साहित्य के इतिहास में ससम्मान एवं कृतघ्नतापूर्ण स्थान दे। इस दृष्टि से यह साहित्य और ये साहित्यकार अभी तक उपेक्षित रहे हैं। हिन्दी लेखन और लेखकों की राजनीती ने खेमेबाजी ने प्रवासी हिन्दी लेखन को वह स्थान नहीं दिया जिसका वह हकदार रहा है। अभिमन्यु अनंत को तो कहीं–कहीं हमने अपने पाठ्यक्रमों में शामिल किया किन्तु विश्व भर में लिख रहे प्रबंध एवं मुक्तक लेखन को,उनकी गद्य–पद्य विधाओं को हमें अपने संस्थानो में, शिक्षा केन्द्रों में ,आलोच्य ग्रंथो में, इतिहास लेखनमें शामिल करना होगा उनके अवदान को पहचान देनी होगी। आज आवश्यकता है कि भारत में एक ‘प्रवासी हिन्दी लेखन अकादमी’ बनाई जाय। पूरे विश्व में हो रहे हिन्दी लेखन का एक संग्रहालय बने, पुस्तकालयों

में उनकी पुस्तकें खरीदी। उन्हें अलग खंड के रूप में स्थान भी दिया जाय। प्रवासी हिन्दी लेखकों को प्रकाशन की सुविधा उपलब्ध कराई जाए । उनके लिए प्रकाशन अनुदान की भी व्यवस्था कराई जानी चाहिए। क्यों न हम प्रवासी हिन्दी लेखकों के नाटकों, एकांकियों, का मंचन यह विधिवत करायें। उन्हें प्रोत्साहन एवं बल मिलेगा और हमें अपनी संस्कृति की सुगंध के वैश्विक बोध का लाभ मिलेगा।

आज हिन्दी के प्रवासी लेखन को भारत में तथा पूरे विश्व में शिक्षा का हिस्सा बनाने की भी आवश्यकता है। विश्वविद्यालयों को यदि एक विभाग ही प्रकार का खोला तो उससे हिन्दी के प्रवासी लेखन को बल मिलेगा।

विदेशों में रहकर हिन्दी लेखांकर रहे भारतीय मौलिक रचनाकारों की प्रकाशित पुस्तकों देश के पुस्तकालयों में पहुंचने, खरीदने की व्यवस्था सुविधा भी दी जानी चाहिए।

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय को एक राज्य स्तर की सरकारों को यह भी करना चाहिए की प्रवासी हिन्दी लेखकों को भारत आगमन पर रेडियो टीवी में अवसर दिये जाए,मीडिया में उन्हें पर्याप्त अवसर दिया जाए, उनके साक्षात्कार हो,संगोष्ठियां हो, चर्चा–परिचर्चा आदि का आयोजन हो ताकि देशवासी उनके अवदान को जान सके,उन्हें भी पहचान सके । प्रवासियों द्वारा लिखित साहित्य पर देश के विश्वविद्यालय शोध करवाए ,ऐसे शोधार्थियों को छात्र एवं शोधवृतियां उपलब्ध कराई जाए। इससे साहित्यिक सेतु बनेंगे। सांस्कृतिक संबंध प्रगाढ़ होंगे। विश्व भर के हिन्दी में सैक्शन प्रशिक्षण कर रहे विश्वविद्यालयों को प्रोत्साहित करने की योजनाएं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को बनानी चाहिए। प्रवासी हिन्दी साहित्य विभाग बनाने को प्रोत्साहिन दिया जाना चाहिए प्रवासी हिन्दी साहित्य को कोश बनाने की,साहित्य कोश बनाने की योजनाएं भी प्रवासी हिन्दी लेखन को बल प्रदान करेगी। प्रवासी हिन्दी लेखन में प्रयुक्त लोकोक्तियों –मुहावरों का संग्रह बने,उनके प्रयोग कोश बने,जिससे सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित बनाया जा सके,यदि प्रवासी हिन्दी साहित्य और हिन्दी साहित्यकारों के स्थित स्तंभ हमारे समाचार पत्रों में ,पत्रिकाओं में प्रारम्भ किए जाए तो हम इस लेखन को और सशक्त कर सकते है। रेडियो में और दूरदर्शन पर भी हम प्रवासी हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित कर सकते है। आज प्रवासी हिन्दी लेखकों के चित्र एल्बम बनाने की,शैक्षणिक चैनलों पर उनका परिचय करने की हिन्दी भाषा और साहित्य को उनके अवदान से अवगत करने की आवश्यकता है। अनेक महत्वपूर्ण हिन्दी पत्रिकायें अभी प्रवासी रचनाकारों द्वारा,पत्रकारों द्वारा,प्रकाशित की जा रही है। वहां बच्चे ,युवा,प्रौढ़ तथा बुजुर्ग रचनाकार अपनी रचनाधर्मिता से इन्हे सशक्त बना भी रहे है।

यदि प्रवासी हिन्दी साहित्य का अंग्रेज़ी एवं भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराया जाये तो भी इस आंदोलन को बल मिलेगा। यदि सरकारी गैर सरकारी स्तर पर

प्रवासी स्थित हिन्दी लेखको के नाम से कुछ हिन्दी पुरस्कार सम्मान प्रारम्भ किए जाए तो भी उन्हें मान–सम्मान मिलेगा। प्रवासी हिन्दी लेखन की बृहत इतिहास लेखन,योजना,जो कि अनेक खंडो में,विधानुसार भी हो सकती है। प्रारम्भ की जानी चाहिए। प्रवासी हिन्दी सेवइयों का हिन्दी संस्थाओं का समाचार पत्र पत्रिकाओं का, साहित्यिक पत्रपत्रिकाओं का भी इतिहास अलग अलग प्रकाशित किया जाना चाहिए। इससे हम प्रवासी हिन्दी लेखको के योगदान एवं समग्रताह अवदान का तटस्थ मूल्यांकन भी कर सकें,तथा भविष्य की अपेक्षित आवश्यक योजना ओ को स्वरूप भी दे सकेंगे ।

एग्रीमेंट के अंतर्गत विदेशों को जाने वाले ये गिरमिटिया मजदूर आज अनेक देशों में शासक है। भारतीय मूल्यों के प्रहरी बनकर भारतीय संस्कृति की सुगंध को यहां विखेर रहे हैं। ये हिन्दी सेवा में सैंकड़ों विद्वान गिनवाए जा सकते हैं जिन्होनें हिन्दी कोश कार्य में साहित्य इतिहास लेखन में अविस्मरणीय योगदान किया है। ज्योर्ज ग्रीयर्सन ,वरणिकोव ,टेस्सीटोडी,जॉन केतलर ,थॉमस काल,ब्रुक ,गार्सा द तासी, विलियम प्राइज़ ,प्रो व्यांग,गिल क्राइस्ट ,जॉन फार्मूसन ,काइटलर ,वुलके, आदि को भला कौन भुला सकता है? इसी प्रकार लोठार लुजसे,डॉ० मारिया,शिस्टोफ,डॉ० ओमोलेन,सोकल,डॉ० रूपर्ट समेल, प्रो जिन डींग हाँ, डॉ० टोमियों मिजोकमी,आदि सैंकड़ों विदेशी हिन्दी सेवी विद्वानों को भुलाया नहीं जा सकता है। अपनी मौलिक सृजनात्मक प्रतिभा से अनुवाद कला से ,संपादन्न–कौशल, से, कोश निर्माण विवेक से ,इतिहास लेखन तकनीक से इन सभी ने हिन्दी भाषा साहित्य और भारतीय संस्कृति को सशक्त आधार प्रदान किया है।

● ●

सन्दर्भ सूची : हिंदी की वैश्विक प्रासंगिकता सन्दर्भ और सामर्थ्य पुस्तक, संपादक :प्रोफ़ेसर पूरन चंद टंडन, प्रो. महेश दिवाकर प्रोफेसर

● ●

स्वामी विवेकानंद

सत्य तक पहुचना ये मानवीय लक्ष्य है ,वहाँ संवेदना का कोई स्थान नहीं है ,और जो इंद्रियो से स्पर्श का एहसास होता है उसे भी कोई स्थान नहीं है ,सिर्फ शुद्ध तर्क के प्रकाश को ही स्थान है ,मानव वह आत्मा स्वरुप है ,"
स्वामी विवेकानंद

मकर सक्रांति के पावन अवसर पर सूर्योदय होने की तैयारी के समय ई.सं 1919 को पोष महीने में वद सप्तमी सन १८६३ जनवरी महीने की दिनांक १२ सोमवार के दिन भारत के आध्यात्मिक व धार्मिक जीवन में एक नए सूर्य का जन्म हुआ वो थे बंगाल के सपूत नरेंद्र नाथ दत्त,विश्वनाथ दत्त और भूनेश्वरी देवी के प्यारे पुत्र ,श्री राम कृष्ण परम हंस के प्रिय शिष्य ,भारत के पूजनीय आदरणीय सन्यासी ,विश्व के एक महान आध्यातम पुरुष स्वामी विवेकानंद, प्रजा की एक अलग विशिष्टता होती है, भारत की बेंगोली प्रजा अनेक क्षेत्र में प्रसिद्ध है, विश्व में नाम कमा रही है,उसने जगदीश चन्द्र जैसे महान वज्ञानिक दिये हैं ,सुभाषचंद्र बॉस जैसे आजादी के स्वतंत्रता सेनानी दिये हैं जिस में श्री अरविंद घोष,श्री रामकृष्ण परम हंस और उनके परम शिष्य नरेंद्र नाथ दत्त – स्वामी विवेकानंद ।

बचपनः

नरेन्द्रनाथ के चरित्र के विषय में तीन बात मुख्य है, १. कोटिम्बिक संस्कार २. ज्यादा अध्ययन का प्रभाव ३. श्री रामकृष्ण परम हंस का मार्ग दर्शन ,मात–पिता के संस्कार । भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा ,श्री रामकृष्ण परम हंस आध्यात्मिक मार्ग के गुरु बने ,उनके परिवार में सन्यास वृति पहले से ही थी,उनकी बहन स्वर्णमई और छोटे भाई महेंद्र साधू जैसा सादगी भरा जीवन व्यतीत करते थे ,दूसरे छोटे भाई क्रांतिकारी थे,उनके पिताजी हाई कोर्ट में 'एटरनी एट लो'थे,वे इंग्लिश और फारसी भाषा में प्रवीण थे,उनकी माता भुवनेश्वरी देवी शिव भक्त थे,नरेंद्र नाथ का नाम पहले वीरेश्वर रखा गया था ,बाद में उनकी माता ने नाम बदलकर नरेन्द्रनाथ रखा था ,नरेन्द्रनाथ बचपन में बहुत तूफानी थे ,उनकी माता ने राम की कथा सुनाई तो वे सीताराम की मिट्टी की मूर्ति खरीदकर पूजा करने लगे,बचपन उनके जीवन में एक आलौकिक घटना बनी,वो रात में सोते थे तब उन्हें बंद आंखों में प्रकाश दिखता था,रंग बदलते रहते थे,उनके पूरे शरीर पर प्रकाश फ़ैल जाता था ,ऐसा पूरे जीवन तक होता रहा,यह घटना नरेंद्र नाथ के पूर्वजन्म की आलौकिक घटना आद्यात्मिक विकास की सूचक थी ,एक बार नरेन्द्रनाथ ध्यान में बैठे थे ,तब एक साँप निकला,तब सभी बच्चे भाग गए,नरेन्द्रनाथ बैठे रहे। उनकी माता ने पूछा तो बताया की में तो ध्यान में बैठा था,उन्हें पाठशाला में पढ़ाई के लिए भेजा गया तो वे खराब चीजों का अनुसरण करने लगे इसलिए उन्हें पढ़ाने के लिए

घर पर शिक्षक की व्यवस्था की गई,उन्हें पशु पक्षी रखने का शौक था ,एक विद्यार्थी को सिर में चोट आई तो उन्होंने अपनी धोती फाड़कर पट्टी बांध दी ,और डॉक्टर के पास ले गए ,डॉक्टर की फीस के लिए सभी बच्चों से पैसे इकट्ठे किए ,स्कूल में उन्होनें अंग्रेज़ी कठिन लगने के बावजूद सीख लिया,शिक्षक को आश्चर्य हुआ,साधू संन्यासी से बहुत आकर्षण था,उन्हें कुदरती प्रेम था साधुओं के प्रति,एक बार उन्होंने एक साधू को नया धोती भिक्षा में दे दिया,नरेंद्र अपने मित्रों से कहते थे कि,मेरी हस्त रेखा देखकर एक ज्योतिषी ने हमें बताया है कि नरेंद्र तुम संन्यासी बन जाएगा,वे बहुत ही निडर थे,उन्हें नाटक का शौक था ,लेकिन उनके चाचा जी ने उनकी नाट्य मंडली को बिखेर दिया था ,घर के पास में ही फिर व्यायाम शाला शुरू कर दी,चाचा ने उनके साधन जब्त कर लिए तो उनका हाथ तोड़ दिया ,उन्हें पढ़ाई से प्रेम था ,बड़े होकर आध्यात्मिकता की ओर मुड़े ,उन्होने रामचरित मानस और महाभारत की कथायें सुनी थी ,श्री राम की कथा ने उनके मानस पर गहरा असर डाला था,उन्हें बचपन में कोचमेन के साथ दोस्ती थी,बड़े होकर वे कोचमेन बनने की इच्छा रखते थे,घोडा गाड़ी के कोचमेन नहीं लेकिन भारत के विश्व के धार्मिक रथ के सारथी बने,उन्हें पूर्व जन्म की स्मृति बार बार होती थी,ज्यादा पुस्तक पढ़ने के शौक के कारण वे पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में आ गए,हर्बट स्पेन्सर की फिलोसोफी ने उन्हें आकर्षित किया,जर्मन फिलसोफ़ों कान्त और शोपन होर तथा जॉन स्टुअर्ट मिल और अगस्त कोमो के तत्व ज्ञान का अभ्यास किया । एरिस्टोटल के विचारों को समझने लगे ,उन्हें तत्व ज्ञान, शरीर विज्ञान ,विश्व का इतिहास और कविता में भी रस था , नरेंद्र नाथ ने एक बार रामकृष्ण परम हंस से पूछा था कि,आपने ईश्वर को देखा है ?तब रामकृष्ण ने बताया की ,हां जैसे मैं तुम्हें देखता हूं ऐसे ही ईश्वर को देखता हूं,ईश्वर देख सकूं इस तरह मैं तुम्हें देखता हूं,श्री रामकृष्ण के ये वचन से नरेन्द्रनाथ बहुत प्रभावित हुए ,रामकृष्ण के सानिध्य में नरेन्द्रनाथ का आध्यात्मिक विकास हुआ । नरेन्द्रनाथ के पिताजी ने शादी के लिए बहुत प्रयास किए लेकिन वो सफल नहीं हुए ,उनके पिताजी का अवसान हुआ ,बाद में लोग शादी के लिए दबाव डालते थे ,तब कहते कि हमें डुबो देना है ,पिताजी की मृत्यु के बाद घर चलाने के लिए उन्होंने शिक्षक की नौकरी शुरू की,रामकृष्ण की बात मानकर वो जगदंबा के मंदिर गए,वहां वे दिव्य आवेश में आ गए ,उन्होने विवेक वैराग्य भक्ति और ज्ञान दे ,तेरे दर्शन होते रहे ऐसा वरदान दे,रामकृष्ण ने पूछा कि क्या मांगा ? सांसारिक गरीबी मिटाने के लिए माँ से प्रार्थना की ? वो तो मैं भूल ही गया ,फिर से जा और तुम्हें जो चाहिए वो बात कर,रामकृष्ण के कहने से वो तीसरी बार मंदिर गए,कोलकाता जाने से पहले नरेन्द्र नाथ रामकृष्ण से मिलने गए तब वे हुक्का पी रहे थे ,उन्होने नरेन्द्रनाथ को भी हुक्का पिलाया ,फिर गुरुदेव हुक्का पीने लगे तो नरेंद्र को संकोच हुआ ,उन्होने गुरुदेव को कहा कि पहले आप हाथ धो लीजिये ,गुरुदेव फिर हुक्का पीने लगे ,नरेन्द्रनाथ को एहसास हुआ की गुरुदेव को उनके प्रति कितना प्रेम है ,

सन 1885 में रामकृष्ण को गले का कैंसर हुआ था ,नरेन्द्रनाथ और अन्य शिष्य रामकृष्ण की निष्ठा से सेवा करते थे एक दिन रामकृष्ण ने नरेन्द्रनाथ को कहा कि वो रामनाम का गुरु मंत्र पाये थे ,ऐसा कहकर उन्होंने नरेन्द्रनाथ को रामनाम का मंत्र दिया ,नरेंद्र नाथ को गुस्सा आया ,हे राम करते करते मकान की आसपास चक्कर काटने लगे ,गुरुदेव के सानिध्य में उन्हें आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त हो गई है ऐसा मानकर एक शक्ति गुरुभाई पर आजमाई ,नरेन्द्रनाथ का स्पर्श होते ही उसका हाथ कांपने लगा ,१६अगस्त १८८६ में श्री रामकृष्ण परमहंस दुनिया छोड़कर चल बसे ,गुरुदेव की समाधि के एक सप्ताह के बाद नरेंद्र नाथ को अद्‌भुत अनुभव हुआ ,गुरुदेव के दर्शन हुए ,काशीपुर के गार्डन में एक प्रकाशित आकृति उनकी और आगे बढ़ती देखी ,रामकृष्ण की मृत्यु बाद नरेंद्रनाथ के बहुत अनुयाई बनें उन्होंने इशू की कथा रसपूर्वक सभी को सुनाई ,नरेन्द्रनाथ का हृदयभक्ति से भरपूर था ,वरहनगर मठ में नरेन्द्रनाथ और अन्य शिष्यों ने विधि पूर्वक विरजा होम किया ,आजीवन ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की सौगंध ली ईश्वर प्राप्ति के लिए जीवन समर्पित किया ,पूर्व जीवन के संबंध और संसारी नाम छोड़कर संन्यास धारण कर लिया ,नरेन्द्रनाथ ने उसी समय ‘विवेकानंद ‘नाम धारण किया ,सन १८८७ से १८९३ तक भारत ब्रामान किया ,गुरुभाईयों को अपना पता न मिले इसलिए वे नाम बदल लेते थे ,जिस में विवि दिशा नन्द,सचिदानंद इत्यादि नाम मिलते हैं,

एक बार वो वृंदावन जा रहे थे ,रास्ते में उन्होने एक इंसान को चिलम पीते हुए देखा,स्वामी को भी चिलम पीने की इच्छा हुई,वो इंसान ने बताया कि वो शूद्र जाती का है ,विवेकानंद को लगा कि इससे चिलम कैसे पी सकते हैं वे शूद्र से चिलम पीने रुक गए,उन्होने उस इंसान से चिलम लेकर पी,क्यूंकि मन में विचार आया कि सभी इंसान एक जैसे ही है ,उसे धिक्कारण्ना नहीं चाहिए ,सभी भगवान के बालक है,उनके पिताजी वकील थे ,सभी क्लायंट के लिए हुक्का बैठक में रखा गया था ,विवेकानन्द भी कभी कभी हुक्का पीते थे,शूद्र से चिलम लेकर पीने के प्रसंग के बाद चलमोर हुक्का पीना छोड़ दिया,जातिऔर संप्रदाय वाले हिन्दू समाज व्यवस्था का उन्होंने सख्त विरोध किया था ,विवेककानन्द अमेरिका गए,शिकागो की वैभव और संशोधन कार्य से वे बहुत प्रभावित हुए ,अमरीका में विश्वधर्म परिषद के लिए उन्होंने सुना था ,विवेकानंद विश्वधर्म परिषद के कार्यालय में पहुचे,उन्हें पूछा गया कि कौनसी संस्था से आ रहे हो ?वे किसी संस्था की ओर गए नहीं थे ,इसलिए व्यवस्थापक ने उनका नाम लिखने से मना कर दिया ,उन्होंने अमेरीकन वेश धरण किया ,परिषद की कमेटी के सदस्य और हावर्ड यूनुवर्सिटी के प्रोफेसर ने परिषद को पत्र लिखा ,प्रो.राइट विवेकानंद से प्रभावित थे ,११ वी सितंबर १८९३ को विश्व धर्म परिषद में विवेकानंद ने हिन्दू धर्म के लिए अपने वक्तव्य में हिन्दू धर्म के समग्र स्वरुप का वर्णन किया,आत्मा,उसकी गति,वेदान्त का तत्व ज्ञान और इंसान के आखरी ध्येय की समझ दिया,विश्व के सभी धर्मो के प्रतिनिधिओं का ध्यान विवेकानंद

जी की और गया ,विवेकानंद ने माँ सरस्वती की प्रार्थना करके अपना वक्तव्य दिया था ,अमेरिका के मेरे भाईयो और बहनों बोलकर अपनी बात शुरू की ,तालियों की आवाज गूंजने लगी,सभा के सदस्यों को मरूत के संतान कहकर सम्बोधन किया था ,सभी आश्चर्य चकित हो गए ,विवेकानंद जी सर्व श्रेष्ठता का बिरुद हासिल करने में सफल हुए ,द न्योर्क हैरोल्ड पत्रिका ने लिखा कि स्वामी विवेकानंद विश्व धर्म परिषद के सबसे महान व्यक्ति है,बहुत सारी विश्व पत्रिकाओं ने उनकी तारीफ़ की।

उपसंहार

स्वामी विवेकानन्द जी के नाम से ही हमें उत्साह ,आत्म विश्वास,परोपकार की भावना और राष्ट्र भावना पैदा होती है ,युवाओं में प्रिय ये विरल संत की मृत्यु ३९ साल की उम्र में हुई थी ,स्वामी विवेकानन्द जी ने देश और विदेश की धरती पर लोक जागृति पैदा करने में सफलता प्राप्त की थी,उन्होंने खास करके युवनों में धर्म और राष्ट्रियता के पाठ पढ़ाकर प्रशंसनीय कार्य किया है,

गीता और उपनिषदों का उन्होंने विस्तृत प्रचार किया है ,लेकिन स्वामीजी ने अपने जीवन के अंत वर्षो में संस्कृत व्याकरण का गहन अभ्यास करने का प्रयास किया था ,उनकी महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण और बाद में वेदों का अभ्यास करने की उनकी अंतिम इच्छा अधूरा ही रह गया ,स्वामी विवेकानंद जी उनके जीवन के अंतिम वर्षो में ऐसी अनुभूति करते थे कि भारतीय संस्कृति ,सभ्यता ,परंपरा के मूल वेद तथा वैदिक सिद्धांतों में ही रहा है ,वैदिक ज्ञान का प्रचार ,संस्कृत भाषा की रक्षा ,अंध विश्वाश ,तथा रस्म का उन्मूलन करने वैदिक उपदेशकों का निर्माण करने का लक्ष्य था,शास्त्रों की विषमता दूर करने के लिए भी वैदिक ज्ञान ही महत्व की भूमिका अदा कर सके ऐसा उनका मानना था। इसलिए ही उन्होंने शिक्षण क्षेत्र के साथ जुड़े हुए महान व्यक्ति के साथ तत्कालीन कोंग्रेसी नेताओं को जब वो मिलते तब वैदिक कॉलेजों की स्थापना करने के लिए प्रेरित करते थे,

स्वामी विवेकानंद जी के यह वेद विषयक विचारों का होना चाहिए इतना प्रचार नहीं हुआ है ,स्वामीजी वेद के महत्व को समझे तो सही लेकिन समाज में वेदों को पुनः गोरवपूर्ण स्थान दिलाने में उन्हें पर्याप्त समय मिला नहीं,स्वामीजी के यह अधूरे रह गए अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यो को लोक समाज समझे इसलिए स्वामी विवेकानंद जी के प्रामाणिक जीवन चरित्र में से ही उनके वेद और संस्कृत भाषा के प्रति उनकी अनन्या श्रद्धा को उजागर करते हुए पुस्तक का प्रकाशन हो रहा है।

स्वामीजी की वेद के प्रचार की यह अधूरी इच्छा को उनके शिष्य तथा प्रसंशकों ने पूरा करना ही होगा ,स्वामीजी की मृत्यु को १५७ वर्ष हो गए हैं ,उनकी 150 वीं जन्म जयंती के अवसर पर समग्र भारत देश में विविध कार्यक्रम करके समारोह मनाया गया था। ऐसे महान मानव को हम भी वंदन अर्पित करते है।

सन्दर्भ सूची : यशस्वी मानव रत्न :लेखक :यशवंत कड़ी कर,–गुजराती संस्करण – 2005,
आदर्श मानवीय निर्माण –श्री राम कृष्ण परम हंस आश्रम
सफलता का रहस्य – लेखक :स्वामी निखिलेश्वरानंद

अतीत से भविष्य की और ले जाने वाले विचारक – स्वामी विवेकानंद

संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका है, असंभव से भी आगे निकल जाना। यह संदेश देने वाले महान देशभक्त, वक्ता और विचारक स्वामी विवेकानंद एक ऐसी राष्ट्र विभूति थे, जिनके ज्ञान का लोहा पूरी दुनिया ने माना। 12 जनवरी वन 1863 को जन्मे और 4 जुलाई 1902 को अनंत की यात्रा पर निकल गये। इस तेजस्वी सन्यासी ने अपनी प्रखर चेतना से समूचे विश्व को बताया कि क्यों भारत विश्वगुरु है। 30 वर्ष की अल्पायु में ही शिकागो में सन 1893 में आयोजित विश्व धर्म संसद में यादगार भाषण दिया था। उसने दुनियाभर में भारत की विरासत और ज्ञान का डंका बजा दिया था। वे केवल संत ही नहीं थे। एक महान देशभक्त, प्रखर और तेजस्वी वक्ता, विचारक, लेखक और मानव प्रेमी भी थे। उन्होंने अपने भाषण में भाइयों और बहनों के संबोधन से सबको भारत की वसुधैव कुटुंबकम की भावना से अवगत कराया।

अयं निज परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तू वसुधैव कुटुंबकम्।।

वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा संपूर्ण विश्व को परिवार मानने की विशाल भावना भारतीयों में समाविष्ट है। यह मेरा है यह पराया है। ऐसे विचार तुच्छ या निम्न कोटि के व्यक्ति करते हैं। उच्च विचार वाले व्यक्ति समस्त संसार को ही कुटुंब मानते हैं। यह मन को विश्व बंधुत्व की भावना देता है। विवेकानंद अध्यात्म और दर्शन की बात के साथ–साथ कहते थे –उठो, जागो, स्वयं जागकर औरों को जगाओ अपने नर जन्म को सफल करो और तब तक रुको नहीं जब तक कि लक्ष्य प्राप्त ना हो। स्वामी विवेकानंद ने हमेशा सच्चाई को जानने के लिए कार्य किया। उन्होंने कहा था कि दुनिया को तलवार से नहीं आध्यात्मिक ज्ञान से जीता जाता है। वे कहते थे कि हमें पसंद हो या नापसंद हो लेकिन धर्म और आध्यात्मिकता ही हमारे राष्ट्रीय जीवन के उज्जवल भविष्य के आधार स्तंभ है। यहां सभी कौम के लोग रहते हैं। रीति–रिवाज में तो कमाल का फर्क है। लेकिन तब भी धर्म ही हमारी समान राष्ट्रीय एकता का आधार है। हिंदुओं का जीवन दर्शन वेदांत के अद्वैत एक शब्द में समाया है तो उसका सारभूत अर्थ गीता में समं सर्वेषु भूतेषु इस शब्द में है। स्वामी विवेकानंद विश्व इतिहास के अच्छे अध्येता थे और ऐतिहासिक विषयों में उनकी अंतर्दृष्टि बहुत गहरी थी। स्वामी विवेकानंद ने 1890 के दशक में भविष्यवाणी कर कहा था कि भारत अकल्पनीय परिस्थितियों के बीच अगले 50 वर्षों में ही स्वाधीन हो जाएगा। जब उन्होंने यह बात कही तब कुछ लोगों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। उस समय ऐसा होने की कोई संभावना भी नहीं दिख रही थी। अधिकांश लोग अंग्रेजों द्वारा

शिक्षित होकर संतुष्ट थे। उन दिनों लोगों में शायद ही कोई राजनीतिक चेतना दिखाई पड़ती थी। उन्हें राजनीतिक स्वाधीनता की कोई धारणा नहीं थी। ऐसी पृष्ठभूमि में स्वामी विवेकानंद ने भविष्यवाणी की थी कि अगले 50 वर्षमें,स्वाधीन हो जाएगा और यह सत्य सिद्ध भी हुई।
एक और भविष्यवाणी की थी जिसका सत्य सिद्ध होना शेष है। उन्होंने कहा था भारत एक बार फिर समृद्ध तथा शक्ति की महान ऊंचाइयों पर उठेगा और अपने समस्त प्राचीन गौरव को पीछे छोड़ जाएगा। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि भारत का विश्व गुरु बनना केवल भारत ही नहीं, अपितु विश्व के हित में है। विवेकानंद ने कहा समाज का नेतृत्व चाहे विद्या बल से प्राप्त हुआ हो, चाहे बाहुबल से पर शक्ति का आधार जनता ही होती है। उनका मानना था कि प्रजा से शासक वर्ग जितना ही निकट रहेगा वह उतना ही सफल होगा। हमें नहीं भूलना चाहिए कि यथार्थ भारत झोपड़ी में बसता है, गांव में बसता है। इसलिए भारत की उन्नति भी झोपड़ी और गांव में रहने वाले आम जनता की प्रगति पर निर्भर है। हमारा पहला कर्तव्य दीन हीन निर्धन निरक्षर, किसानों तथा श्रमिकों के चिंतन का है। उनके लिए सब करने के उपरांत ही संबंधों की बारी आनी चाहिए। स्वामी विवेकानंद ने कहा था अतीत से ही भविष्य बनता है। यथासंभव अतीत की ओर देखो, उसके बाद सामने देखो। हमारे पूर्वज महान थे। हम भारत के गौरवशाली अतीत का जितना ही अध्ययन करेंगे हमारा भविष्य उतना ही उज्जवल होगा। अपने इतिहास को लेकर आम जनता को जगाना होगा, तभी तो भारत वर्ष का कल्याण होगा। अपनी आध्यात्मिकता और दार्शनिकता से हमें जगत को जीतना होगा। संसार में मानवता को जीवित रखने का कोई उपाय नहीं है।

● ●

सन्दर्भ सूची :विचारक स्वामी विवेकानंद – स्वामी विवेकानंद लेखक :जया मेहता (गुजराती संस्करण)

● ●

गुजरात के क्रांतिकारी साहित्य जगत के स्वामी जवेरचंद मेघानी

गुजरात में ही नहीं ब्लकि गुजरात के गांव गांव में उनकी 75 वी जन्म जयंती मनाई गई थी, राजस्थान और पूरे देश में, दिल्ली, मुंबई, मद्रास, सिकंदराबाद जैसे दूर दराज के क्षेत्रों में बहुत ही उत्साहपूर्ण मनाया गया, मेघानी की स्मृति में 'मेघानी अवॉर्ड' स्थापित किया गया है, राजस्थानी भाषा और साहित्य के द्वारा यह महान गुर्जर साहित्य के स्वामी का इस प्रकार का सम्मान भारत में सर्व प्रथम स्थापित करने का यश राजस्थान साहित्य अकादमी को जाता है, और यह शुभ कार्य को प्रेरणा देने का काम गुजरात साहित्य संगम को जाता है,

यह पहाड़ के बालक का जन्म काठियावाड के नाम से प्रचलित पर्व तो का देश सौराष्ट्र के चोटिला, टेढ़े पहाड़ की बगल में स्थित उस समय, डाथा दाना नाम से पहचाने जाते थे, दाना में हुआ था, ''पिताजी कालिदास, पुलिस अफसर थे,

ग्रेजुएट होने के बाद कोलकाता में एल्युमिनियम कंपनि में मैनेजर के पद पर जुड़े, आत्मा को शांति नहीं मिलती थी, वतन की मीठी यादें सताती थी, नदी, पहाड़ और टेढ़े पहाड़ आवाज देकर बुलाते थे, उसे भूलने के लिए बंगाली साहित्य का अध्ययन शुरु किया, कंपनी के काम के लिए विदेश केंब्रिज लंदन हो आए, लेकिन उस आत्मा को कहीं अच्छा नहीं लगता था, वतन की याद आते ही निकल पड़े, मैं आता हूं, इतना बोलते हुए दौड़ पड़े, उनके शब्द थे, ''मेरे प्यारे काठीयावाड में आया हूं, थोड़ा इधर उधर घूमकर अंत में रणपुर सौराष्ट्र से जुड़ें, यहां से मेघानी की क्रांति यात्रा का आरंभ हुआ, अपनी जनता के साथ वीर, शूरवीर, फिर भी सदियों से गुलामी की ज़ंजीर से बंधे हुए थे, आत्मा विश्वास के साथ जनता के साथ एकता के लिए क्रांति का प्रारम्भ हुआ, कारावास की सजा भुगता, ब्रिटिश शासन ने अदालत में जब सजा सुनाई तब मेघानी ने बुलंद आवाज में गीत प्रस्तुत किया,

हज़ारों वर्षों की हमारी पुरानी पीड़ाएं
कलेजे को चीरती, कंपन देती हमारी भय कथायें
मरे लोगों के लहू उसे जिन्दा लोगों के आंसू

जनता की आँखों में आंसू बहने लगे, और वह ब्रिटिश न्यायाधीश भी छुपकर आंसू पोछने लगा, क्रांतिकारी ये मेघानी कोई संकुचित प्रदेश का संकुचित इंसान नहीं था, उसका राष्ट्र प्रेम संकुचित नहीं था, उसका मन दलित पीड़ित, लोगों के दुख से दुखी था,.

भारत भाग्य विधाता महात्मा गांधी, राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस में हिस्सा लेने के लिए विदेश जाते थे तब हृदयको स्पर्श करने वाला गीत मेघानी गाते थे,

‘अंतिम कटौरा जहर ये, पी जाना बापू,और राष्ट्र पिता ये गीत से मुग्ध हो गए, और उनका दिल बोल रहा था,‘धन्य मेघानी ’धन्य, है राष्ट्र शायर, तूने तो मेरे हृदय की पूरी व्यथा व्यक्त किया, गुरु देव टैगोर ने मेघानी को शांति निकेतन बुलाए थे, और हमें काव्या प्रसाद के रूप में ‘रवींद्र वीणा’ प्राप्त हुई,

मेघानी लोक कथाकार, बिना मौलिकता वाला सर्जक पत्रकार, राष्ट्रवादी कवि और अनुवादक थे, विश्व के आंगन में विराट क्रांति कारी प्रतिभा के धनी के लिए साहित्य सृजन और प्रदान के लिए उनका सही अर्थ में मूल्यांकन हुआ नहीं है, उसका कारण यही है कि विरल और विराट साहित्यकारों के जीवन को जानने के लिए, तत्कालीन मूल्यांकन के लिए फुट पट्टी छोटी पड जाती है, समय के बहाव में उनकी सही पहचान बह जाती है, ऐसी विभूतिओं को काल की कबार से निकलकर पुनः प्रतिष्ठा देने का प्रयास होता नहीं है, काल का प्रवाह सब कुछ बहा ले जाता है, विराट मेघानी के लिए भी यही हुआ है, मेघानी का जन्म बदलती सदी के समय हुआ था, इतिहास करवाते ले रहा था, क्रांतिकारी बदलाव आ रहा था, ऐसे समय में मेघानी का जन्म हुआ था, नई शिक्षा और नए विचारों का स्पर्श होना बाकी था, ज्ञान का किरण भी पहुंचा नहीं था ऐसे समय में दूर दराज के गांव में उनका जन्म हुआ था, उन्हें नई शिक्षा पाने का सोभाग्य प्राप्त हुआ था, एक व्यापारी संस्था में मेघानी नौकरी करने के लिए कोलकाता गए थे, उस समय अमेरिकन क्रांति, फ्रेंच क्रांति, यूरोप की औद्योगिक क्रांति, रूसी क्रांति आइरिस मुक्ति आंदोलन, ये सभी क्रांतियों से विश्व हिल गया था, लेकिन पूरे विश्व के गोले में जोश से घुमा दे ऐसी रूसी क्रांति ने नए क्रांतिकारी परिवर्तन ए परिमाण का सृजन कर दिया, ये प्रवाह पूरे विश्व में जा पहुचा, मेघानी में छुपा हुआ क्रांति कारी आंतरिक प्रेरक शक्ति उन्हें अन्दर से प्रेरित कर रहा था मेघानी नौकरी छोड़कर कोलकाता से सौराष्ट्र वापस आ गए, उनकी कलम को छूट मिल गया, कलम से क्रांति की बूंद गिरने लगी, तेजाबी कलम आग बरसाने लगी, आगे बढ़ने लगी, अंग्रेजी शासन के खिलाफ कलम ने युध्द शुरू कर दिया

मेघानी कवि – योद्धा थे, योद्धा कवि थे, समाज की हर बुराईयां, अज्ञान, वहम, साम्प्रदायिक प्रपंच, आडंबर, गलत परंपराएं, धर्म के नाम पर होते हुए अत्याचार से पीड़ित प्रजा, के उद्धार के लिए संघर्ष शुरू किया, मेघानी का समय बदलाव का समय था,

कवि मेघानी के पीछे पीछे लोग जुड़ते गए, अंग्रेज सल्तनत घबरा गई, कवि को जेल में डाल दिया था, मेघानी ने बचाव के बजाय मातृभूमि का मुक्तिगान गाया था, गुजराती साहित्य में मेघानी ने उपन्यास, काव्या, गीत और लोक साहित्य के सभी सभी क्षेत्रः में उनकी सुनहरी लेखनी घूमी थी, पृथ्वी पर

श्रम जीवी लोगों का, किसानों का, खान के मजदूरों का ये देश में अधिकार है, गरीब लोगों का लहू चूसकर अलमस्त ये अमीर लोगों को ये नई दुनिया में कोई स्थान नहीं है, ये तो बाज पक्षी की तरह भक्षक है, श्रम जीविको नींद को त्याग दो, जागोजं खना रचना में मेघानी पुरानी जर्जरित समाज रचना को त्याग कर नई मानवीय समता समाज की जं खना करते हैं, मेघानी कहते हैं कि, मेरी माता को असुख है, और कहीं चैन नहीं है, धीरे धीरे घबराते हुए मुश्किल से चलती है, इंकलाब तू आ! ओ! ज्वाला मुखी तू फ़ट जा! ओ, भूकंप तू आ! यह जीर्ण समाज की दारुण स्थिति को तू भेद दे ये धरा ग्रस्त, काल सैन्य आता है, ये काव्य में क्रांति वीर रिवोल्यूशन वर्ल्ड विज़न, इस में स्पष्ट होता है,मेघानी कहते हैं कि, हम खेतों से आ रहे हैं, जंगल से आ रहे हैं, सागर किनारे से पहाड़ पर आ रहे हैं, कांटों का ताज पहनकर आए हैं, हम पीड़ितों दलितों का राज रचने के लिए आए हैं,

विराट जागे काव्या में विराट मेघानी की प्रचंड प्रतिभा के दर्शन होते हैं, क्रांतिकारी मानवता रिवॉल्यूशन ह्यूमैनि ज़ाम की चरम सीमा के शिखर मेघानी सर करते हैं, विराट विश्व के विराट फलक पर मेघानी अपने विराट बहुओं से समग्र विश्व विराट को आलिंगन दे रहे हैं, विराट मेघानी में विश्व मानव प्रकट होता है, विराट विश्व कवि मेघानी कहते हैं कि, दिग्दिगंत में डॉ मरू बजता है, अनेक नाद गूंजता है, कैसी आँधी है, पृथ्वी के हर क्षेत्र से, प्रदेश से लोग उन्नत मस्तक से आ रहे हैं, आज मुक्ति के गीत गूंज रहा है, आपने दिव्य धामों को कलंकित किया गया है, यह दिव्य धामों में प्रभु बिराज रहे हैं, हम नये आलय रचने आए हैं, हम श्रद्धा के गीत गाने आए हैं, देखो, महाकाल का कराल काल सैन्य आया है, समग्र मानव जाति को मुक्ति दिलाने आए हैं, जालिमों यहां से भागों, अंतिम विजय हमारा है,

झंडा वंदन काव्या में मेघानी का क्रांतिकारी राष्ट्रवाद तथा अंतर्राष्ट्रीय मानव एकता के लिए अपनी जनता के साथ साथ समग्र विश्व की मुक्ति की आवाज गूंजती है, मेरा ध्वज थके हुए जगत का आशा दीप है, उसमें शहीद पुत्रों की वियोगी माताओं का नयन आंसू गिरे हैं, मेरा ध्वज विश्व के पीड़ित लोगों की बंधुत्व का शुभ संदेश देता है, ये मानव मुक्ति का ध्वज है,

कवि तुम्हें केसे पसंद आए ?

जुल्म, अन्याय, हिंसा, जीते जी मृत्यु, नर्क जेसा जिवन,एसे असंख्य पीड़ा से पीड़ित दुखी समग्र मानव जाति के दुख देखकर चरम वेदना की अनुभूति मेघानी को होती है, दुख देखकर वो व्यथित होते हैं, करुणा मूर्ति मेघानी कहते हैं कि,

अरे कवि! यह जगत में जगह जगह पर मुठ्ठी अन्न के लिए छोटे बच्चे मर रहे हैं, भगवान मर गया है, करोड़ों लोग अमीर के जुल्म सहकर दुखी हो रहे हैं, तुम्हें कैसे मुलायम गीत गाने को अच्छा लगे? कवि मन आकाश के तारे देखना छोड़ दे, तुम्हें पृथ्वी पर काले कैद खाने में जगत के गुलामों के हृदयका रुदन सुनाई नहीं देता है? जेल के सलिए के पीछे हज़ारों मुफ़लिस के प्राण नष्ट होते हैं तब है कवि! तुम्हें मीठे मीठे गीत गाना केसे अच्छा लगे? घन बोले रे,

विश्व मानवता के भीरु मेघानी कहते हैं कि, जो हथोड़ा और लोहे पर समस्त मानव कुल की तबाही करते हुए अस्त्र शस्त्र बनते हैं वो हथोड़ा और लोहे को भाई बहन कल्प कर ये विश्व वी संवाद के बजाय विश्व सम्वाद करने के लिए संवाद की रचना होती है, लोहे से बनाना है तो बच्चों के लिए हिचका बनाओ, नारी के लिए पलंग बनाओ, दर्जी और मोची के लिए सांचे बनाओ, रोजी रोटी देते मनुष्य के अंग ढंकने के लिए रेटिया का आर बनाओ, युद्ध के तोप गोले के निर्दयी आवाज बंद करिए, सितार के तार बनाइए, छोटे बच्चों के लिए दूध पीने के लिए प्याले बनाओ, हम, धर्म के नाम पर जनता को लूटना बंद करो, महंत, मठाधीश के सामने मेघानी पुण्य प्रकोप निकालते मेघानी यहां तीखे कटाक्ष करते हुए तीर पर तीर यह काव्य में बरसा रहे हैं, मेघानी कहते हैं कि, हे लोक शत्रु! आप तो सड़े हुए कलेवर हो, आप ने मानवी को पशु बना दिया है, आप प्रभु के आडंबर से तोता पाठ कर रहे हैं, अंध श्रद्धालु को स्वर्ग की चाबी दिखाकर उन्हें बना रहे हैं, आप धर्म के नाम पर नाटक बनाया है, आप मदारी हो, देव मूर्ति की दुकाने लगाकर बैठे हो, किफायत कीमत से ब्रह्म ग्यान बेचते हो, प्रभु धाम का स्वप्न दिखाकर स्वर्ग के काल्पनिक जहाज उड़ा रहे हैं, त्यागी के वेश में भोग के पुतले हो, समर्पण के नाम पर सब लूट लेते हो, अंध श्रद्धा में डूबे हुए भोले लोगों को अज्ञान का लाभ उठा रहे हैं, सत्य और ज्ञान के दुश्मन हो,

मेघानी सिर्फ क्रांति के उपासक नहीं थे, वो ग्रेट मेघानी लिटरेचर फॉर ऑल टाइम्स थे, जिसकी जोड़ गुजराती साहित्य में मिले ऐसा नहीं है, मेघानी की कलम सभी क्षेत्र में प्रवास करती है, काव्य, उपन्यास, यात्रा वृत्तांत, विवेचन, संशोधन, चरित्र, पत्र लेखन, पत्रकारिता एंड वोट नोट? उसमें भी केसी विशिष्टता, विविधता, अलग ता, और अपनापन?, गुजराती भाषा पर तो मेघानी का बड़ा उपकार है, उन्होंने भाषा को तेजस्वी, वैभवशाली, प्रभावशाली, तेजोमय, भव्य बनाया गया है, मेघानी ने नर्मदा को पीछे छोड़ दिया, मेघानी का जागो! कराल काल जागो! नाद में नाजुक उर्मिल गीत भुला गया है, मेघानी के हृदयसे प्रकट होती प्रेम लहरिया देखो,

हे प्रिये, मैं तेरे चरणों में मेरा सर्व समर्पण आई हूं, रूप रंग, रस,

जिन्दगी की सकल सुवास, मिठास उल्लास तेरे चरणों में अर्पण करने आई हूं, हे प्यारे ब. पैया, तुम उदास मत होना, मैं मेरे हृदय की सुधा तेरे होठों को देने आई हूं, यौवन महकता है, प्रेम में पागल मन ही मन रो रही है, मेरे परदेशी प्रीतम! तू मुजे चाहे या न चाहे मैं तुम्हें सदा चाहूँगी,

मेघानी की संवेदना ग़ज़ब की थी, रवींद्र विना 'ग़ज़ब का उदाहरण है, उनके उपन्यास अमृत कलश बने हैं, सत्य की खोज में, और भिड़े हुए द्वार, दो कहानी संग्रह ऐसा ही अमृत कलश बन जाता है, प्रतिमाओं और पल कारा :खुद देखी हुई उम्दा क्लासिक अंग्रेजी फ़िल्मों याद रह गई थी उस पर कहानी संग्रह की रचना की गई थी,

मेघानी के ऐतिहासिक उपन्यास :

ये राग गाज लियो, गुजरात का जय, या युद्ध भूमि हो, लेखन परिपाटी सबसे अलग, है, प्रभु पधारे, जेसा उपन्यास में बर्मा रंगून की लोकल में एसी हृदयस्पर्शी उपन्यास जितनी अनुपम है उतनी ही उत्कृष्ट और मानव मन के सुक्ष्म मनो व्यापार पर अद्‌भुत निरूपण किया है, ये उपन्यास अद्धितीय है,

अजर अमर 'उपन्यास, वे वी शाल ', 'तुलसी क्या रा, और सोरठ तेरा बहता पानी, तो क्लासिकल विश्व साहित्य कक्षा की है, सो र ठ तेरा बहता पानी' तो विश्व कृति 'धीरे बहता है डॉन' एंड क्वा एट फलों ज दी डॉन जेसा प्रसि सट उपन्यास है,

मेघानी की कहानियां की मिशाल मिले ऐसी नहीं है, सिर्फ भारतीय कहानी साहित्य में ही नहीं किंतु विश्व साहित्य क्षेत्र में उसका स्थान है, गुजरात के अन्य कहानीकार से मेघानी विशिष्ट कहानीकार थे, किशन चंद्र की तरह मेघानी का खुद का कथन था कि कहानी को एक हजार रीत से खेला जाता है, प्रस्तुत कर सकते हैं, प्रतिमा, पल कारा, मेघानी की कहानी है
खंड 1 खंड 2 ये गुजराती साहित्य का अक्षय कहानी निधि है,

जन सेवक श्री संत देवी दास का प्रेरणादायी जीवन पर आधारित लिखा गया "पुरातन ज्योत" एक अद्‌भुत कला कृति है, रक्तपितियों को जिंदा जलाते थे तब देवी दास मदद में आए थे, विवेचन की तो बड़ी खोट थी, विवेचन के क्षेत्र में मेघानी का अनोखा प्रदान है, विवेचन याने कि समीक्षा भी साहित्य का एक प्रकार है ऐसी जानकारी किसी को भी नहीं थी, और आज भी नहीं है, तब मेघानी ने अलग मार्ग दिखाया है, उनके पास विवेचन कोई पद्धति नहीं थी, पत्रकारिता प्रयोग है, समर सेट मोम विश्व प्रचलित सर्जक थे, उनकी कृ तियां मेघानी की तरह ही कालजयी थी, उन्होंने विश्व की महान 'टेन ग्रे टेस्ट नॉवल ऑफ दी वर्ल्ड नामक सर्जनात्मक विवेचन का पुस्तक लिखा है, विवेचन

के नए माप दंड के साथ सर्जनात्मक विवेचन' क्रियेटिव लिटररी क्रिटिसीजम के आदी पुरुष मेघानी कहते हैं कि, हम प्रजा समग्रतः, साहित्य की सोच को जीवन की सोच को एक आंगन समझे ऐसा देखना चाहते हैं, याने कि प्रजा को रस लेती करना चाहते हैं, प्रत्येक सच्चे साहित्यकार को हम प्रजा के जीवन शैली तक पहुंचते हुए देखना चाहते हैं, प्रत्येक लेखक नवयुग की रचना में रुका हुआ मजदूर है, उसका निर्माण कार्य वो करे ही करे, न करने वाले को नवयुग की रचना में रुका हुआ मजदूर है, उसका निर्माण कार्य वो करे ही करे, न करने वाले को नव रचना में स्थान नहीं, मेघानी कहते हैं कि,हमारी उर्मि और आसक्ति चाहे जन्मजात हो लेकिन उर्मि और आसक्ति अकेला निकम्मा है, उसकी विद्युत चेतना को विद्यापीठ ने दिया हुआ विवेक बुद्धि के साथ जोड़े तो सत्य की यात्रा कर सकते हैं,

कुछ पत्र साहित्य में (ली. स्नेहा दिन मेघानी, मेघानी के पत्र) भी मेघानी की अंगत भावनाओं से पहचाना जाता है, जिसका सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक मूल्य है, लोक साहित्य और लोक शास्त्र क्षेत्र में मेघानी का महत्वपूर्ण प्रदान है, उस समय 'फोक लोर' 'फोक लिटरेचर' विश्व में नया था, सोरठी बाहरवटीया, सोरठी संतों, रंग है बारोट, सौराष्ट्र की रसधार खण्डों में विभक्त लोक कथायें, डॉसीमा बू माँ की बाते, कंकावाटी, दादाजी की बाते, भी दिया, लोक सागर के किनारे किनारे, धरती का धावन, सो राठी संत वाणी, लोक साहित्य का समालोचन, परिभ्रमण भी लिखा गया,

मेघानी उत्तम नाट्य लेखक भी थे, वन ठेला, शाहजहां, और प्रताप उन्होंने कसू बी का रंग, लोक गीत संग्रह लिखा था, उनका जन्म 1897 में हुआ था और उनकी मृत्यु 1947 को हुआ था, वो स्वातंत्रय सेनानी थे, रस्ट्रिया, क्रांतिकारी और जनता के लिए पत्रकारिता आद्य मेघानी ने पत्रकारिता को नव प्रस्थान कराया,निडर, सत्य वक्ता, सत्य प्रेमी, किसी से भी न डरने वाले, थे, मेघानी आधुनिक गुजराती साहित्य के अग्रध्वज धारी थे,
मेघानी आधुनिक गुजराती साहित्य के सर्वोच्च शिखर थे, क्रांतिकारी और समाज परिवर्तक थे, कर्म वीर और साहित्य वीर थे, मानवता के उपासक थे, बग सारा में मेघानी पुस्तकालय है, उपलेटा में प्रतिमा स्थपित की गई है, महुआ में मेघानी हॉल बनाया गया है, सुरेंद्र नगर में मेघानी की मूर्ति स्थापित किया गया है, राजकोट में मेघानी रंग भवन निर्माण किया गया है, अहमदाबाद में मेघानी की, प्रतिमा स्थापित किया गया है, मेघानी नगर बना दिया गया है, मेघानी की 75 वी जन्म जयंती के अवसर पर "मेघ मणि महोत्सव" गुजरात के सभी गांवों में मनाया गया,

सन्दर्भ सूची :जवेर चंद मेघानी जीवन चरित्र – लेखक :साहित्य निधि श्री नरेंद्र दवे

● ●

गुजराती साहित्यकार कन्हैयालाल मुन्शी

मुन्शी की सुजन प्रतिभा के लिए, गुजरात की अस्मिता और भारतीय संस्कृति के वारसा को उजागर करने वाली बहुमुखी प्रतिभा के धनी महान उपन्यास ”जय सोमनाथ” ”गुजरात का नाथ” और ”पाटण की प्रभुता” का रस पूर्ण साहित्य और इतिहास के दर्शन होते हैं, विद्वान धारा शास्त्री और तेजस्वी यह राज पुरुष ने देश के पवित्र संविधान बनाने के लिए भी अपना अमूल्य योगदान दिया था, देश सेवा के लिए वो महात्मा गांधी और सर दार पटेल के भरोसा पात्र अनुयायी रहे हैं,

श्री नरेंद्र मोदी, मुख्य मंत्री श्री, गुजरात

घ्से प्रतिभा शाली, साक्षर, तेजस्वी श्री मुन्शी गुजरात की अस्मिता के स्वप्न द्रष्टा थे, गुजरात की अस्मिता, गोरव और संस्कारी ता का प्रत्येक गुजराती को परिचय कराने वाले श्री कन्हैयालाल मानेक लाल मुन्शी एक गर्वीले गुजराती थे, उच्च स्तरीय साहित्यकार, निडर धारा शास्त्री और कुशल राज किय व्यक्ति थे, अनेक संस्था ओ के द्वारा राष्ट्र और समाज का कार्य करने वाले उम्दा राष्ट्र पुरुष थे, एक ही व्यक्ति में अगर इतना सारा गुण हो तो वो मुन्शी में ही थे, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, स्वातंयिं सेनानी मुन्शी गुजरात की अस्मिता के, राष्ट्रीय एकता के और नारी स्वतंत्रता के हिमायती थे, पूर्व संस्कृति के अभ्यासी और आग्रह के कारण पाश्चात्य संस्कृति के प्रति उनका प्रेम देखने को मिलता है, ”कला के लिए कला” का मत रखने वाले, मुन्शी तप, संयम और चारियिं के आग्रह रखते थे, वो इतिहासकार भी थे,

उच्च स्तरीय निबंधकार के इलावा उपन्यास कार और गुजरात में सबसे अधिक पढ़े जाने वाले गुजराती उपन्यास कार थे, शेष जीवन में धर्म का मर्म को समझ कर ”कृष्ण अवतार” जेसा उपन्यास बहुत अच्छी तरह अभिव्यक्ति के साथ दिया है,
भाग्येश जहां, इन्फर्मेशन कमिश्नर (आई ए ए स)

महान व्यक्ति मुन्शी :
मुन्शी की सुजन प्रतिभा ने साहित्य के क्षेत्र में अनेक प्रकार प्रकाशित किया है, उनकी आत्म कथा भी सृजनात्मक लगे एसी हे,नर्मदे” मेरी हकीकत” लिखकर आत्म कथा का प्रकार देने का प्रयास किया है, मुन्शी की आत्म कथा ”आधे रास्ते” का पहला खंड ई स. 1943 में पब्लिश हुआ था, बाद में तुरंत ही ”सीधे चढ़ा न” दो हिस्से में एक ही साल में पब्लिश हुए, ”मेरी बिन जिम्मेवार कहानी” एक ही साल में प्रकाशित हुई, और बाद में ”दश साल बाद

स्वप्न सिद्धि की खोज में ”(1953)पब्लिश हुई, वह पुस्तकों के द्वारा उन्होंने अपनी जीवन किताब के कुछ पृष्ठ खुल्ले रख दिए, ”आत्म कथा ”का प्रकार बहुत ही कठिन है, लेखक में यदि सत्यता, निडरता नहीं होतीं तो आत्म कथा की रचना करना बहुत ही मुश्किल है, मुन्शी ने ए जरा सा भी संकोच रखे बिना अपने जन्म से लेकर करीब 1926 की साल तक के जीवन प्रसंगों का वर्णन किया है, उनके आलेख में उन्होंने अपनी सिद्धियां बताई हें, मर्यादा को भी अछूता नहीं रखा हे, मुन्शी का रोमांटिक जीवन और उसमें से प्रकट होती उनकी प्रतिभा का आस्वादन यह पुस्तकों के द्वारा मिलता है, अलबत्ता, गांधीजी की आत्म कथा, कि तरह मुन्शी ने अपने जीवन की प्रचुर विगत, सील सिला बंद इतिहास का आलेख नहीं दिया है फिर भी उनके जीवन की बहुत सी बातें और घटना ओका रस पूर्ण विगत और उनके व्यक्तित्व के विविध पासे का आस्वादन उसमें से मिल रहा है,

यह आत्म कथा मुन्शी ने सहज भाव से, हास्य शेली में होने से वो शुष्क जीवन कथा बनने के बजाय कहानी पढ़ाई का आनंद देती है, यह उनकी विशिष्टता हे,

मुन्शी की सुजन प्रतिभा का ही नहीं उनकी राजकीय और धारा शास्त्री के रूप में और आत्म निर्भरता का परिचय यह खंड में होता है, कवि समुद्रम ने उनके पुस्तकों के लिए सही ही कहा है कि, मुन्शी की यह आत्म कथा में यह प्रकार के लिखावट के लिए आवश्यक एसी सरल, बिन अभिमानी, आत्म निर्भरता और सत्य प्रिय ता, के तत्व दिखाई देते हैं, उनमें नर्मदे की तरह अपना सब कुछ बताने की हिम्मत हे, किन्तु लिखावट की समरसता यह युग के साहित्य माध्यम में जितना विकास हुआ है उसके जितना बढ़ा है, उसमें कवि कला पी में दिखाई देती उर्मि या हे, लेकिन मुन्शी की कला सर्वत्र व्याप्त है, उस में गांधीजी की तरह जीवन जीने की कला दिखाई देती है, इस कथा में मुन्शी की कलम की और मानस की विशिष्टता पूरी तरह प्रकट हुई है, यह पुस्तक को सिर्फ उसके विषय के दृष्टीकोण से देखा जाए तो मुन्शी के विकास की एक हृदयगम रेखा देती है, उसमें कोई शक नहीं है, गुजरात के सुनामी पुत्र ने यह कथा यदि नहीं लिखी होती तो गुजरात उसके अंतः करण तक नहीं पहुंच पाता, मुन्शी की अच्छी या बुरी दोनों तरफ देखने को मिलता है,
मुन्शी की समग्रतः साहित्य का परिचय यहा कराना मुस्किल हे, क्यू की उनकी कलम सर्जन, विवेचन, चारियिं, इतिहास, पत्रकारिता आदि अनेक क्षेत्रों में गुजराती एवं अंग्रेजी में घूमी है, उनके अंग्रेजी पुस्तकों में साहित्य के इतिहास के बारे में पुस्तक ”हनरंतंज ंदक पजे सपजमतंजनतम” एक विशिष्ट प्रकार का गुजराती साहित्य का इतिहास का पुस्तक हे, उसमें साहित्य का इतिहास केसे लिखा जाय उसकी एक पद्घति मुन्शी ने दी है, उनके अन्य अंगेजी पुस्तकों में, ”ए विससवू जीम उींजउं, ींदक ीनदकनेजंद, ेवउदंजी जीम ीतपदम मजंतदंस, जीम मदक व ंद म्तं, जीम हसवतल जींज ू हनतरंतकमें, इत्यादि, उनके इतिहास तथा

राजकीय अनुभव प्रकट करने वाले और नई रत तेजस्वी अध्ययन का परिचय देने वाले पुस्तक है, उनमें से किसी में उनकी निडरता, व्यक्तित्व, उनकी मौलिकता, उनका इतिहास में रस, भारतीय संस्कृति तथा गुजरात की अस्मिता का गौरव भाव का परिचय होता है,
अब आगे बढ़ने से पहले उनके जीवन की कुछ बाते करते हैं,

उनका जन्म ई स 1887 दिसंबर को हुआ था, उनकी मम्मी का नाम तापीबा था, छह पुत्रियों के बाद उनका जन्म होने से वो बहुत ही प्यारे थे, उनके आगमन से उनके पिताजी रेवेन्यू में अधिकारी के पद पर नियुक्त हुए थे, 1913 में यह महंगा पुत्र कनुभाई के नाम से जाना गया, सभी रिस्तेदार, स्कूल में, कॉलेज में, गांव में कनुभाई के नाम से जाना जाते थे, पत्र में यदि सिर्फ कनुभाई भरुच लिखा हो तब भी पत्र मिल जाता था,
मुन्शी को सीता स्वयंवर का खेल देखने की आदत सी बन गई थी, उसमें भी परशुराम का पात्र देखना उन्हें बहुत अच्छा लगता था, तेरह साल की उम्र में कक्षा कूदकर मैट्रिक में आए, तब उनकी शादी नौ साल की उम्र की कन्या के साथ किया गया, वो शिव भक्त थे, 1902 में कॉलेज में दाखिला वडोदरा में किया गया, 1903 में उनके पिताजी का अवसान हुआ था, हर साल मुन्शी उनकी डायरी में दो सूत्र लिखते थे,

मृत्यु तो निश्चित है ही,
तो फिर क्यूं बैठ रहना,
लंबे जीवन के अंधेरे दिनों में, निकम्मे, नियम के बिना और नाम के बिना ?
(1)

जीवन देव का दिया भार है,
और नीरखी ले, उठा ले,
स्वस्थ रहकर एक निष्ठा से निभा ले.
शोक के कारण हारना नहीं,
पाप से डरकर हिल मत जाना,
स्थिर पेर से आगे बढ़,.
आगे आए ऊंचे,
ध्येय प्राप्त हो जाय तब तक.. (2).

वो हाईकोर्ट में धारा शास्त्री बने, हाई कोर्ट में वो प्रचलित हुए, बचपन में उन्होंने सरस्वती चंद्र का प्रथम खंड और नारायण हेम चंद्र के अनुवाद और अन्य उपन्यास पढ़े थे, 1911 में कवि कलापी काका केक राव, कवि नन्हालाल का वसंतोत्सव रस से पढ़ा था, मित्रों के आग्रह पर ई स 1912 में ''मेरी कमला'' नामक लघु कथा लिखी थी तब से उनकी साहित्य यात्रा शुरू हुई थी,

उन्होंने सबसे पहले ''वे र की वसूला त" उपन्यास लिखा, 1915 में पब्लिश हुई, 1915 में गांधीजी जब दक्षिण अफ्रीका से हिंद आए तब सभा में मंत्री की पद से सो प्रथम मिले और राज कारण में प्रवेश किया, 1915 में उन्होने "किसका वा क" उपन्यास लिखा, "पाटण की प्रभुता "उपन्यास भी लिखा गया, मुन्शी राजकीय घटना ओ में शामिल होने लगे, उन्होंने हाजि महमद के आग्रह पर "प्रथ्वी वल्लभ" उपन्यास लिखा था, मुन्शी ने गुजरात नामक मासिक पत्रिका शुरू की थी, विस्मि सदी से आगे बढ़ कर गुजरात की अस्मिता के संदेश वाहक बने, स्त्रियों के अधिकार के लिए प्रतिबद्ध थे, उनके जीवन में नया मोड़ आया, उन्हेंलीलावती नामकी स्त्री के साथ परिचय हुआ,, उससे प्रेम हो गया था, गुजरात मासिक पत्रिका में लीलावती के आलेख आते थे, इसलिए उनका परिचय बढ़ता जा रहा था, पत्नी अति लक्ष्मी की मृत्यु ई. स. 1923 में हुई थी, अब लीलावती ने बच्चों के साथ आत्मीयता बना दिया और जिम्मेवारियां अपने शिर ले लिया था,

लीलावती के साथ संबंध के कारण सामाजिक नाराजगी उन्हेंझेल नी पडी, ई स. 1934 में वो कोंग्रेस पार ला मेंट रि बोर्ड के मंत्री बने,

मुन्शी ने गुजरात की अस्मिता का प्रजा को साक्षरता कराने के लिए अनेक कदम उठाए, साहित्य संसद स्थापित किया, उनके इस कार्य में ख्यातनाम साक्षर लोगों का सहकार मिला,

19 24 में भावनगर में सातवीं परिषद् मिली तब से मुन्शी के गले में परिषद् का धागा बंधा हुआ था, एतिहासिक उपन्यास उपन्यास लिखते हुए उन्होंने विराम नहीं लिया था, "स्वप्ना दस्ता" सामाजिक उपन्यास लिखना शुरू किया, उनके जीवन में किशोर उम्र में कलेजे को ठेस पहुंचाने वाला प्रसंग को उन्हों ने आत्म कथा में बताया गया है, उनके पिताजी की 1930 में म्रत्यु हो गई थी, मुन्शी राज कारण में व्यस्तताओं के बीच ई स. 1940 में उन्होने "जय सोमनाथ "नामक एतिहासिक उपन्यास लिखा, उस से पहले सोलंकी युग की भूमिका पर "पाटण की प्रभुता" उपन्यास, गुजरात का नाथ, और राजा धीरज नामक उपन्यास ने गुजराती पाठ्कों को मोह लिया था, उनके उपन्यासों में फ्रेंच उपन्यासकार डुमिनी शेली का प्रभाव किसी समीक्षाकार ने देखा था, ई स. 1921-22 में महाभारत और पुराण की प्रेरणा से पोराणिक कथाओं पर आधारित नाट्क लिखना शुरू किया था, 1922 में पुर अंदर पराजय, 1923 में आ विभक्त आत्मा, 1924 में तर्पण, 1929 में पुत्र स मेवाड़ी, लिखा गया, बाद में, शाबर कन्या, देव ने दिया हुआ, और विश्व मित्र रूसी नाट्क लिखा, यह लोपामुद्रा के भाग एक, दो, तीन और चार में प्रकाशित हुए हैं, गुजराती पाठ्कों के लिए सरल न होने के कारण उन्होंने बाद में लोम हर्षि नि, और भगवान परशुराम उपन्यास लिखा,

जीवन का महान कार्य आजादी के बाद उन्होंने गोरव पूर्ण रूप से राष्ट्रीय कार्य किया, हैदराबाद के एजेंट के रूप में काम किया, 1947 में सरदार पटेल ने मुन्शी को हैदराबाद भेजा गया, अपनी जान जोखिम में डाल कर उन्होंने हैदराबाद में प्रशंसनीय काम किया,

1952 में देश में इलेक्शन पूरे होने के बाद नेहरू सरकार ने मुन्शी को उत्तर प्रदेश के गवर्नर के पद पर नियुक्त किया गया, स्वराज के बाद मुन्शी ने केंद्र में ई स. 1950 में कृषि और खाद्य विभाग के मंत्री के रूप में सेवा दी, 1952 से 57 तक वो उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रहे, उन्होंने आगरा, इलाहाबाद, लखनऊ, गोरखपुर, रुड़की और बनारस संस्कृत यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति के रूप में फर्ज निभाईं, राज्यपाल थे तब 1955 में उन्होने एक नए किस्म की ऐतिहासिक उपन्यास ''भग्न पादुका'' प्रकाशित किया गया,

1957 में उनकी ''तपस्विनी'' उपन्यास तीन भाग में पब्लिश हुई, मुन्शी के नाट्क वाह रे वाह, ई स. 1953 में लिखा गया था, ''ब्रह्म चर्या का प्रहसन, ''मुन्शी ने यरवाडा जेल में लिखा था, I follow the mahatma पुस्तक में उन्होंने गांधीजी की प्रतिभा और उनका संदेश अपनी खुद की अलग रीत से समझाने का प्रयास किया है, ई स. 1942 में प्रसिद्ध हुए' Akhabd Hindustan' पुस्तक में मुन्शी ने प्रजा में चर्चा का विषय जताया था, उनके विचारों में लोगों को गलत समझ हुई थी,. The glory that was gurjard में पुस्तक में ई स. 550 से 1300 तक के इतिहास का निरूपण किया गया था, यह पुस्तक दो हिस्सों में बटा हुआ था,. The saga of Indian sculpture" शिल्प के क्षेत्र में भारतीय सिद्धियां का विस्तृत विवरण दिया गया है, Bhagvad Gita and mordan life "पुस्तक में उनकी आध्यात्मिक विचार विमर्श का निरूपण किया है, Somnath The shrine EtarnalÞ पुस्तक मुन्शी का प्रिय पुस्तक होना चाहिए, उसमें उनके जीवन का स्वप्न और उनकी सिद्धि का वर्णन दिया है, महमूद गजनी ने सोमनाथ पर सदियों पहले हमला किया था, वो घटना समग्रतः राष्ट्र की आत्मा को ठेस पहुंचाया था,
The end of An era "पुस्तक उपन्यास पढ़ने जितना आनंद देता है, यह दस्तावेजी मूल्य वाला पुस्तक है, उसमें राज पुरुष मुन्शी की प्रतिभा के दो रूप मुस्तैद और देश भक्त दोनों का परिचय मिलता है,

सारांश :
यह सभी पुस्तक के इलावा भारतीय विद्या भवन के कुलपति के रूप में संस्था के दो मुखपत्र ''भवन स, जर्नल्स,'' तथा ''समर्पण'' में लिखे गए उनके उद्‌बोधन और यह महान विद्या संस्कार, संस्था का गतिशील संचालन तथा उसके अलावा भी उनकी शिक्षण और संस्कार तथा संस्कृति विषयक प्रवृतियों का ख्याल

करें तो मुन्शी ने राष्ट्र की, गुजरात की, गुजराती साहित्य और भारतीय संस्कृति की तथा शिक्षण क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया है उसका संस्मरण होता है, उनका जीवन अविरत प्रवृतिमय था, वो कर्म वीर थे, ई स. 1887 – 1971 तक के आयुष्यपट में उन्होंने बहुत सारे क्षेत्र में प्रकाश फैलाया है, उनकी प्रतिभा बहुमुखी प्रतिभा थी, और अंत में उन्होंने उनके उपन्यास में जो महान पात्र का सृजन किया है ऐसे ही मुन्शी खुद भी थे, वो एक महान विद्वान व्यक्ति थे! भारतीय संस्कृति को उजागर करने वाले महान पुरुष थे,
उनके स्मरण में उस महान साहित्यकार और राजकीय स्वतंत्रता सैनानी युग पुरुष, प्रतिभाशाली धारा शास्त्री के लिए ''गुजरात के पनोते पुत्र" नामक किताब गुजरात सरकार के इन्फॉर्मेशन विभाग के द्वारा पब्लिश किया गया है

गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से वापस लौटे तब गुजरात में निवास किया था, 1915 की साल में अहमदाबाद में साबरमती नदी के किनारे सत्याग्रह आश्रम स्थापित किया, उनके सन्यासी जीव ने और उनकी सत्याग्रह पद्धति ने पूरे देश में चमत्कार किया, उन्होंने 1917 में चंपारण्य में गोरे अफसरों के खिलाफ किसानों का पक्ष लेकर सत्याग्रह सफल बनाया, 1918 में उनके सत्याग्रह से खेड़ा जिला ने पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया, पूरे देश में गांधीजी का प्रभाव बढ़ता गया,

मुन्शी ने 'गुर्जर सभा' के द्वारा 1915 में गांधीजी का सम्मान समारोह मनाया था, तब उन्हें मिलने का अवसर प्राप्त हुआ था, उसके बाद 1918 में गांधीजी ने अंगेज को युद्ध में, मदद करने का, सैन्य में भर्ती करने का कार्य आरंभ किया, मुन्शी और उनके अन्य मित्र यह प्रवृति के खिलाफ थे,

गांधीजी का अंग्रेज में रखा गया विश्वास निकम्मा साबित हुआ, सरकार ने रोलट ऐक्ट पेश किया, गांधीजी ने बताया कि ये जो काला कानून पास होगा तो वो खुद सत्याग्रह करेंगे, यह ऐक्ट का विरोध करने के लिए गांधीजी पूरे हिंद में घूम आए, उनकी लोकप्रियता बढ़ने लगी,

मुन्शी को गांधीजी की अनोखी कार्य शक्ति का अनुभव हुआ, मुन्शी और अन्य मित्रों ने रोलट ऐक्ट के बहिष्कार का समर्थन किया, लेकिन गांधीजी ने बहिष्कार में हिंसा आए वो रास्ता निकम्मा बताया, मुन्शी ने बहिष्कार के समर्थन में बहुत बातें बताई, गांधीजी उस समय 'होम रूल लीग' के प्रमुख थे, उन्होंने कहा कि, स्वदेशी व्रत चले, लेकिन यदि आप बहिष्कार का मार्ग स्वीकार करेंगे तो में इस्तीफा दे दूँगा, आपको दूसरा प्रमुख चुनना होगा, मुन्शी और उनके साथी अचरज में पड गये, उनकी मान्यता ऐसी थी कि, ज्यादा मत से बहिष्कार की बात गांधीजी को स्वीकार कराएंगे, लेकिन मुन्शी लिखते हैं कि, हमें कहा मालूम था कि हमारे बीच देवाशीष व्यक्ति आया है, हमारे नसीब में, उनसे सहमत होना

या भाग छूटने के दो ही रास्ते थे,
मुन्शी को गांधीजी की कार्य प्रणाली शुरुआत में पसंद नहीं थी लेकिन अंत में उनके सभी साथी नर्म मक्खन जैसे हो गए, वो जो कहें वह करने के लिए तैयार थे,

मुन्शी राष्ट्रीय प्रवाहों में खिंचवाते गए, उनकी मानसिक तकलीफ भी बढ़ जाती थी, मुन्शी ने उस दौरान हाजी महमद के आग्रह पर ''पृथ्वी वल्लभ" उपन्यास 'बीसवीं सदी' मासिक में लिखने लगे, उनके मन की अशांति से पृथ्वी वल्लभ निकल आया, मुन्शी के दिल में एक और रसिकता थी और दूसरी और संयम, यह दोनों के बीच खिंचाई चल रही थी, पृथ्वी वल्लभ 'एक रीत से उनकी उस समय की मनोदशा का प्रतिबिंब देती कथा है, यह कह सकते हैं कि उनकी आत्म कथा का एक प्रकरण है, मृणाल एक और खींचता है और दूसरी तरफ मूंज, लेकिन मृणाल हार जाता है, मूंज विजयी होता है, शुष्क और दिखावे का यह संयम के सामने रसिकता का विजय होता है, पृथ्वी वल्लभ मुन्शी के हृदय की ज्वाला में से सृजन हुई कृति है, उसमें कलात्मकता विशेष है, ऐसा बहुतों का मत है, ये कृति पर से नाटक हुआ और उसकी फिल्म भी बनी, गुजरात में उसकी बहुत सारी आवृतियां हुई, ''पृथ्वी वल्लभ के प्रकाशन से समाज का नीति रक्षक वर्ग चौंक गया, तपस्वी मृणाल पर मूंज ने जीत हासिल की, यह कथा वस्तु ने समाज में विरोध प्रदर्शन हुआ, कला और नीति के लिए अनेक प्रश्न उठे, कला और नीति के बीच संघर्ष प्लेटो से भी पहले से पूर्व काल से चला आ रहा है, कला का प्रयोजन क्या है,? कला बड़ी या नीति बड़ी? कला नीति की गुलाम है, कला के लिए कला हो सकती है क्या? ऐसे प्रश्न पूरी दुनिया में युगों से चले आ रहे हैं, गुजरात में मुन्शी का 'पृथ्वी वल्लभ' उपन्यास से यहां प्रश्नों की चर्चा चमक उठी, गुजराती समीक्षाकार का एक वर्ग मुन्शी की साहित्य विचार विमर्श का विरोध करने में प्रवृतियों करने लगा,

मुन्शी ने जब 'काम पूर्ति' धर्म पत्नी 'नामक लघु कथा लिखी तब से उनकी कला सूझ पर कुछ समीक्षाकार को की पुष्प वर्षा होने लगी, यह लघु कथा हास्य व्यंग्य से भरी हुई थी, अपने अनुभव से यह सृजन हुआ था, एक प्रसंग में मुन्शी ट्रेन में भरूच जा रहे थे उस समय किसी बूढ़े ने मुन्शी के पास बैठी हुई किसी पराई स्त्री और उसके बालक को देखकर पूछा कि ये उनके है, ऐसा मानकर मुन्शी को मुश्किल में धकेल दिया था, यह प्रश्न का उत्तर लघु कथा में उन्होंने विस्तृत किया,

विवाह के समय छोटे स्टेशन पर अलग अलग बारात आई और यह बूढे की भूल की वजह से राव साहब – कहानी का नायक और पराई स्त्री, पति पत्नी हे ऐसा लोगों ने मान लिया और अंत में दोनों एक शयन कक्ष में मिले तब उन्हें पता चला कि लोगों ने उन्हें पति पत्नी मान लिया है, उतना ही नहीं उस

रिश्ते के अनुरुप व्यवस्था भी की,

यह लिखने के बाद मुन्शी ने ''पृथ्वी वल्लभ" लिखकर आग में घी डाला, साहित्य सृष्टि में मुन्शी के सामने एक प्रचंड विरोध वर्ग खड़ा हुआ, काम पूर्ति, पत्नी कहानी पढकर एक समीक्षक वर्ग इतना गुस्से हो गया था कि उन्होंने लिखा कि, यह कहानी के लेखक के हाथ कहानी लिखते समय कट क्यूं न गए? ''पृथ्वी वल्लभ "उपन्यास ने मुन्शी के लिए आग का गोला फेंक कर बारूद फैला दिया, मुन्शी नीति और सदाचार की घोर खोदने बैठे हों ऐसा लगता है, उससे हलचल मच गया, अलबत्ता किसी ने मुन्शी की कला के लिए भावना का समर्थन भी किया था, मुन्शी मानते थे कि, कला ये नीति की पुत्री नहीं है, उन्होंने नीति को कला की 'विष कन्या' है ऐसा मत प्रकट किया और फैला दिया,

इस तरह ''पृथ्वी वल्लभ" के सृजन से मुन्शी ने गुजरात की गूढ़ साहित्य प्रणाली पर जाने अनजाने में आक्रमण आरंभ कर दिया था, और कलाकार के स्वतंत्रता का धर्म ध्वज मुन्शी के हाथों में आ गिरा, मुन्शी के अभिमान के कट्टर विरोधी और प्रणालियां तोड़ने वालों के दुश्मन थे,उन्होंने किसी की भी परवाह नहीं की है, पृथ्वी वल्लभ ''उपन्यास ने आडंबर के साथ देनेवाली प्रणालियां पर ब्रह्मचर्य आश्रम जैसे नाटकों में उन्होंने नीति मूल्यों के आडंबर करने वालों का बहुत मज़ाक उड़ाया है,

मुन्शी ने लिखा है कि, पृथ्वी वल्लभ 'लिखने की बाबत में उन्हें कभी प्रायश्चित नहीं हुआ था!!

मुन्शी के महान उपन्यास' जय सोमनाथ का पाठकों पर और समीक्षक पर असर :

मुन्शी देश की राजकीय बाबत में व्यस्त थे तब भी उनकी सृजन यात्रा रुकी नहीं थी, ई. स. 1940 में जब ''जय सोमनाथ" नामक दूसरा एक समर्थ ऐतिहासिक उपन्यास प्रकट किया, तब उनके उसके पहले सोलंकी युग की भूमिका पर रची गई 'पाटण की प्रभुता' 'गुजरात का नाथ', और 'राजाधिराज' उपन्यास ने गुजराती पाठकों को के दिल जीत लिया था, यह उपन्यास पर फ्रेंच उपन्यासकार डुमिनी शैली का असर कुछ लोगों ने देखा था, उन्होंने मुंजाल और मीनल के सम्बंध में डुमिनी असर माना है, लेकिन मुंजाल में रि शल्य के माझा रिण का अंश नहीं है, ये तो प्राण योगी, भावना शील, उन्नत, प्रचंड उर्मिओं के घनी है, री शल्य गिनती बाज, ईर्षा वान हे, वो रानी को चाहता नहीं है, माझा रिण अधम अवतार हे,

मुन्शी की लिखने की रीत ऐसी है कि, उसमें संकल्प अनुकरण को स्थान नहीं है, वो कहते हैं कि मैं कहानी लिखने बैठूंगा उस समय प्रथम दो – तीन प्रकरण को एक या दो बार फिर से लिखना होगा, फिर वो सृष्टि मेरी कल्पना का कब्जा कर ले, उसके पात्रों में, मैं तन्मय बन जाऊं, शब्द, व्याकरण या संधान की परवाह किए बिना मेरी कलम कल्पना से रचे प्रसंग, भाव, चर्चाओं को जल्दी व्यक्त करने का सिर्फ अंधा अनुकरण साधन बन जाता है, ऐसे समय मेरी उद्दीप्त कल्पना किसी की भी राह देखती नहीं है, मेरी पूर्व संचित सामग्री हो उसकी मदद लेकर वो अपने नियम के अनुसार शाब्दिक सृजन करता है,

मुन्शी की सृजन की सिस्टम ही ऐसी है कि उसमें संकल्प अनुकरण को स्थान नहीं है, वो कहते हैं कि, मैं कहानी लिखने बैठूं उस समय दुबारा लिखना ही पड़ता है,

इस तरह मुन्शी का ऐतिहासिक उपन्यास पाठ्कों को मुग्ध कर होती है तब भी समीक्षक वर्ग में ठीक ठीक टीका हो जाती थी, 'जय सोमनाथ' ऐसी टीकाओं से मुक्त उपन्यास है, यह उपन्यास में गजनी के महमद ने सोमनाथ पर चढ़ाई की उस समय राजपूत राजाओं ने सोमनाथ की रक्षा करने का सामूहिक पुरुषार्थ किया था, वो वीर गाथा की भूमिका पर राजा भीम देव और चोला देवी की प्रेम कथा का निरूपण हुआ है, यह उपन्यास में मुन्शी एक प्रौढ़ उपन्यास कार के रूप में प्रस्तुत हुए हैं, समीक्षाकार श्री पाठ्क ने तो उसकी गद्य काव्य की पहचान दी है, रण और आँधी में आता हुआ प्रकरण मुन्शी की गद्य शैली के नमूने के रूप में जरूर अविस्मरणीय रहेगा, उसका स्मरण जरूर रहेगा,

ई. स. 1946 में मुन्शी का एक और उपन्यास भगवान परशुराम प्रकट हुआ, पौराणिक ग्रंथों के सतत अभ्यास के बाद उन्होंने पौराणिक उपन्यास और नाटक रचने का एक पूरा नक्शा चित में कल्पना की हे, 'भगवान परशुराम' की प्रस्तावना में उनकी यह योजना का कुछ ख्याल आता है,

ई. स. 1921 – 22 में महाभारत और पुराणों की प्रेरणा से मैंने पौराणिक विषयों पर नाटक लिखना प्रारम्भ किया उस समय से मेरा संकल्प था कि मुझे महाभारत के प्रसंगों की पूर्व कथाओं की कृतिओं की एक लेख माला बनानी है, प्रथम बारह नाटकों का एक महा नाटक लिखने का संकल्प किया था और उसी मुताबिक 1922 में ''पुरंदर पराजय", 1923 में 'अविभक्त आत्मा', 1924 में 'तर पन', और 1929 में ''पुत्र समोवड़ी, लिखा था, 1932 में उसी महा नाटक का उद्‌भव होने से 'विश्व रथ' का उपन्यास लिखा, बाद में 'शाबर कन्या', देवे दिया हुआ 'और' विश्व मित्र ऋषि कुल मिलाकर तीन नाटक लिखे, यह चारों लोपा मुद्रा के भाग 1–2–3–4 के रूप में पब्लिश हुए,

बाद में मुझे ध्यान आया कि नाट्क गुजराती पाठ्कों को सरल नहीं है, देव ने दिए हुए 'नाट्क जैसे ने मुश्किल से ध्यान खींचा है इसलिए यह महा नाट्क का उत्तरार्ध उपन्यास के रूप में ही लिखने का मैंने प्रयास किया और मैंने दो हिस्सों में बांट दिया, 'लोम हर्षिनि' और 'भगवान परशुराम'।

यह वैदिक, पोराणिक कृतियां रचने के पीछे मेरा हेतु वैदिक को पुराण काल के दर्शन करने का और कराने का था, अलबता उन्होंने जो सामग्री डाला है उसे कुछ लोग अक्षम्य भी गिनते हैं, फिर भी सामग्री की खोज के लिए उन्होंने वेद और पुराण की बन सके उतनी मदद ली है, लेकिन यह सामग्री, यह महा नाट्क तो उससे रची गई स्वतंत्र कृति है, मानव जीवन के उसके आदर्श और उनकी सृजन शक्ति में से ही यह कृति का निर्माण हुआ है,

मुन्शी को उनकी साहित्यिक प्रगति आरंभ से ही पुराण काल के इतिहास के महान पुरुषों और उनके महान प्रसंगों को कथा में निरूपण करने का मनोरथ था, प्रतापी और कीर्तिमान स्त्री पुरुषों के व्यक्तित्व से मुन्शी हमेशा आकर्षित रहे हैं, 'भगवान परशुराम' उनके यह मनोरथ से ही प्रकट हुआ उपन्यास है, मुन्शी उपन्यास लेखन और नाट्कों का उपन्यास में और उपन्यास का नाट्कों में रुपांतर हुआ है,

'भगवान परशुराम' वो भी उनका एक नाट्य रूपी महा उपन्यास है, कथा का बड़ा आकर्षण वो परशुराम का पात्र है, पात्र चित्रण की अद्भुत कला मुन्शी के पास थी, अलबता समीक्षक अनंत राय रावल ने कहा है, अलग अलग देश, काल, और कार्य के कारण व्यक्तिगत भिन्नता के साथ दिखते हैं फिर भी रा. मुन्शी के पात्रों एक ही मिट्टी के बने होते हैं,... परशुराम का पात्र भी प्रतापी नर युगों के रा. मुन्शी की प्रकृति से अनुकूल और आलेख ने आते आदर्शो के ढलान में ढाले हुए हैं,

श्री अनंत राय रावल का यह विधान उनके प्रतापी पात्रों का तुरंत स्मरण कराते हैं, मुंजाल, पृथ्वी वल्लभ (मूंज) भगवान कोटिल्य, भगवान परशुराम ये सारे पात्र 'सुपर मेन' है, मुन्शी के महात्वाकांक्षी और प्रतापी मानस में से से काल अग्नि जैसे दुस्साहस यह कैलाश जैसे पात्र का सृजन हुए वो स्वाभाविक है,
भार्गव ऋषियों में मुन्शी जिसको श्रेष्ठ मानते हैं वह परशुराम की कथा आलेख का स्वप्न यहां उपन्यास में साकार हुआ है, भार्गव मुन्शी की कलम से ऐसी पूर्वज भक्ति ये उनके प्रताप का गौरव न हुए तो ऐसा हो नहीं सकता है, मुन्शी ने भृगु वीरों की इतिहास मान्य और पुराण प्रसिद्ध महता उनकी कृति की प्रस्तावना में निर्देश करके उसकी पूरी योग्यता सिद्धहस्त करके दिखाई है, इसके अलावा अगस्त्य, वसिष्ठ, विश्वामित्र, इत्यादि भार्गव न होते हुए भी पुराण प्रसिद्धि, महत्व भी उनकी कृतियों में आलेख किया है,

आर्यावर्त, या आर्यावर्त की महाकथा कहने की मुन्शी की अभिलाषा महान थी और उसमें उन्होंने प्राप्त की हुई सिद्धि भी महान है!

---जय हिन्द---

सन्दर्भ सूची :गुजरात के लाडले पुत्र कन्हैयालाल मुन्शी – प्रकाशक : इन्फर्मेशन कमिश्नर गुजरात राज्य गांधीनगर संपादक :मधुसूदन पारेख

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से हिंदी प्रचार

आज इलेक्ट्रोनिक माध्यम से हिंदी शिक्षा की शुरुआत हो चुकी है, पी एच डी करने वाले छात्र हिंदी में अपना शोध निबंध तैयार कर के ईमेल से ऑनलाइन अपना शोध निबंध भेज सकते हैं, इसमें समय की बचत होती है, विविध क्षेत्रों में विज्ञान के विषयों में शोध निबंध गोष्ठी में प्रस्तुत करने के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, सभी को कार्यक्रम की जानकारी मीडिया के माध्यम से कम समय में सभी के पास पहुंच जाती है, खर्च कम होता है और समय की बचत बहुत जरूरी है, समय की बचत होती है,

गोष्ठी में प्रोफेसर विद्वान और विद्यार्थी हिस्सा लेते हैं, उसमें कवि लेखक अनुवादक और हिंदी प्रेमी भी जुड़ते हैं, आज सोशल मीडिया के माध्यम से सब कुछ आसान हो गया है, थोड़ी ही सेकंड में कोई भी व्यक्ति को सूचना या जानकारी दी जाती है, पहले की तरह डाक से आलेख या फिर किसी भी प्रकार की सूचना नहीं दी जाती है, डाक से बहुत समय का योगदान देना पड़ता है इससे मीडिया के माध्यम से कितना आसान हो गया है, ईमेल, twitar whats app पर भी सूचना दी जाती है, ऑन लाइन परीक्षा का भी आयोजन किया जाता है, न्यूज पत्रिका ऑन लाइन पब्लिश होती है, ऑन लाइन ही लोगों तक पहुंचाया जाता है, अब किसी भी लेखक या कवि को अपनी रचना या कविता या आलेख डाक से नहीं भेजना होगा, लेकिन ईमेल से ऑनलाइन बहुत ही कम समय में भेज सकते हैं, इंतजार नहीं करना पड़ता,

Facebook के माध्यम से अपनी कविता या लेख पब्लिश करके लोगों तक पहुंचाया जा सकता है, बहुत ही कम समय में आपकी रचना लोग पढ़कर अपना राय भी बता देते हैं, जिससे आपको मालूम हो जाता है कि आप जो लिख रहे हैं वो अच्छा है या नहीं, आज के समय में किसी भी कवि लेखक अनुवादक को समय के साथ चलना होगा नहीं तो आपकी रचना डाक से पहुचने में देरी होने से आप प्रगति नहीं कर सकते हैं, आप को सोशल मीडिया, नेटवर्किंग वेबसाइट, ईमेल करने सीखना होगा, इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से लोगों का जीवन भी तेजी से आगे बढ़ रहा है, मीडिया के माध्यम से जितनी रचना या मैसेज भेजे जाते हैं वो ज्यादातर हिंदी के माध्यम से ही होता है, लोग जल्दी मैसेज भेजते हैं, जल्दी अपना काम हो जाता है,

आज पाठ शाला ओ में पढ़ाई की शुरुआत लेपटोप और टेबलेट पर होने लगी है, इसलिए सरकार ने विद्यार्थियो को फ्री में टेबलेट दिए गए थे, विषय या वस्तु की जानकारी पर्दे पर चित्र दिखाकर समझाई जाती है जिससे बच्चे को जल्दी समझ में आएगा, अब बच्चों को गृहकार्य नोट बुक में नहीं लेकिन मैसेज से

पहुंचाया जाता है,कोई भी शिक्षक क्लास रूम में क्या कर रहे हैं, वो पढ़ा रहा है या बातें कर रहा है उसकी जानकारी प्रिन्सिपल अपनी ऑफिस में बैठे बैठे रखता है, ऑनलाइन किताबें पढ़ी जाती हैं, बहुत सारी जानकारी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से प्राप्त होती है, अपनी अच्छाई भी लोगों तक पहुंचाया जा सकता है, और लोग इससे प्रेरित भी होते हैं, संस्कृति का जतन होता है, हिंदी सम्मेलन देश विदेश में होने लगे हैं, आज के विज्ञान तकनीक युग में इलेक्ट्रिक मीडिया, उपकरण आशिर्वाद रूप है, किसी भी प्रकार की जानकारी गूगल से उपलब्ध हो जाती है, किताबें खरीद नहीं करनी पड़ेगी और आप ऑन लाइन पढ़ सकते हैं, कोई भी स्कूल या कॉलेज में दाखिला लेने के लिए फ़ॉर्म ऑन लाइन ही भरे जाते हैं, किसी भी परिक्षा में आवेदन पत्र ऑन लाइन भरा जाता है, बच्चों के परिणाम भी स्कूल कॉलेज में लेने नहीं जाना पड़ता। ऑन लाइन ही उपलब्ध हो जाता है, छात्रों को इलेक्ट्रोनिक मीडिया उपकरण की जानकारी जरूरी बन गया है, आज कल जरूरत बढ़ रही है,

न्यूज भी टी वी पर आप देख सकते हैं, बहुत ही जल्द कोई भी न्यूज टी वी में प्राप्त हो जाता है, न्यूज हिंदी में ही होते हैं, पूरे देश में हिंदी के पाठक बढ़ गए हैं, हिंदी का प्रचार इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से बढ़ रहा है उसमें कोई दो राय नहीं,

--जय हिन्द--

सन्दर्भ सूची : ऑन लाइन ई पत्रिकाएं, ऑन लाइन कवि सम्मेलन

● ●

दलित पत्रकारिता पर डॉ० अम्बेडकर का प्रभाव

दलित पत्रकारत्व और दलित पत्रकार आज डॉ० अंबेडकर ने बताई गई दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। चोटी बड़ी सभी दलित पत्रिकाएं आज भारत देश में काम कर रही है। यह सभी पत्रिकाएं व्यवसाय के लिए नहीं बल्कि ' दलित चेतना ' के लिए काम कर रही है। सिर्फ विज्ञापन,सदस्यता राशि हेतु या पैसे इकट्ठे करने के लिए ये सभी दलित पत्रिकाएं चाहे किसी भी भाषा में हो या किसी भी प्रांत में प्रकाशित हो रही हो यह उद्देश्य नहीं है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली की ओर से दलितों व शोषितों के लिए पब्लिश किया जाता 'हिमायती' पाक्षिक दलितों के प्रश्नों को अपनी पत्रिका में स्थान देकर उन्हें न्याय मिले उस दिशा में काम कर रही हैं। उसके संपादक डॉ० सोहनपाल सुमनाक्षर बहुत ही मेहनतकश इंसान है। पत्रकारों को,साहित्यकारों को ,समाजसेवियों को, कलाकारों को, हर साल एक बार विविध सम्मानों से सम्मानित करते हैं। आजादी के सात दशक बाद भी दलितों का उत्पीड़न बंद नहीं हुआ है, देशभर में दलित उत्पीड़न बढ़ता जा रहा है। इसलिए दलित पत्रकारत्व यदि नहीं होगा तो दलितों के उत्पीड़न से उठते सवाल कौन उजागर करेगा? अन्य सवर्ण वर्ग का पत्रकारत्व उसे सामने लाने में हिचकिचाएगा । सोचेगा या किसी के दबाव से उसे प्रकाशित नहीं करेगा । आज जितनी भी दलित पत्रिकाएं काम कर रही है उन पर डॉ० बाबा साहब का प्रभाव है यह कहना जरा सा भी गलत नहीं सकता है,क्योंकि दलित पत्रकारत्व का जन्म डॉ० बाबा साहब अंबेडकर ने ही किया है। उन्हीं से प्रेरणा पाकर दलित पत्रिकाओं ने जन्म लिया है। डॉ० बाबा ने 3 अप्रैल 1927 के दिन उनकी ओर दलितों,पीड़ितों,शोषितों अछूतों के विरुद्ध में किए गए मिथ्या प्रचार का उत्तर देने के लिए 'बहिष्कृत भारत सामयिक का प्रकाशन शुरू किया था। यह पत्रिका के माध्यम से उन्होंने दलित वर्ग का मार्गदर्शन करनेका उद्देश्य ध्यान में रखकर उन्होंने अपने ये अभियान में दलित वर्ग के हक और हित के विरुद्ध में होते राजकीय पक्ष और नेताओं की भरपूर मात्रा में टीका की है ।

बाल गंगाधर तिलक जैसे हिंदुत्ववादी राष्ट्रीय नेताओं को उन्होंने बा नहीं था उन्होने चेतावनी देते हुए कहा था कि ''यदि तिलक अछूत परिवार में पैदा हुए होते तो स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है ऐसा नारा बुलंद करने के बदले ऐसा कहने पर मजबूर हुए होते कि अस्पृश्यता को नष्ट करना ही मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। उन्होंने दलितों के लिए लिखा कि 'खोये हुए अधिकार मांगने से या अपील करने से प्राप्त नहीं होते हैं। अधिकार तो मिलते है सतत संघर्ष करने से मिलता है। दलित बली के बकरे नहीं बने किन्तु सिंह बनना है। उन्हें मानवीय अधिकार अपने आप मिल जाएंगे ।

दलितों को आजादी पूर्व शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था,यह अधिकार डॉ० अंबेडकर ने दिलाया है । दलितों और स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार संविधान में बने कानून से प्राप्त हुआ है। उस जमाने में जहाँ पढ़ाई का अधिकार नहीं था तो पत्रकारत्व की अपेक्षा कैसे रख सकते हैं।

दलितों पर होते हुए अत्याचार के लिए कुछ ध्यान नहीं दिया जाता था,क्योंकि पत्रिकाओं के मालिक बिन दलित थे। उस समय में दलित प्रश्न ज्यादा मात्रा में थे। उस समय पत्रकारत्व में नगन्य रूप में दलित थे। दलितो के प्रति किसी भी प्रकार की संवेदना नहीं थी। दलितों पर अत्याचार करना उनका अधिकार गिना जाता था।

डॉ० अंबेडकर विदेश से भारत वापस आए फिर दलित पत्रकारत्व का जो खालीपन था उसे वो भर दिया गया। डॉ० अंबेडकर के उदय के बाद दलित पत्रकारत्व की शुरुआत हुई।
डॉ० अंबेडकर की विचार धारा का प्रभाव दलित पत्रकारों और दलित पत्रकारत्व पर 1920 से शुरू हो चुका था। डॉ० अंबेडकर ने अपने सार्वजनिक कार्यकाल में 5 पत्रिकाओं को जन्म दिया था।

1 मूक नायक
2 बहिष्कृत भारत
3 समता
4 जनता
5 प्रबुद्ध भारत

पत्रकारत्व जब मुश्किल था दलितों के लिए तब डॉ० अंबेडकर ने असंभव को संभव बनाकर दिखा दिया । मूक भारत ,बहिष्कृत भारत, अस्पृश्य और वंचित पीड़ित दलितों के दुख ,वेदना और अत्याचार को ,उनकी व्यथा का लिपि बद्ध निरूपण उस पत्रिकाओं में करते थे। इसलिए ही उसे दलित पत्रकारत्व कहा जाता है। डॉ० बाबा साहब कहते थे कि न्यूज़ पत्रिका,सामयिक जागरूकता का अमोघ शस्त्र हैं। आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित समानता लाकर समानता युक्त समाज का निर्माण करना वही दलित पत्रकारत्व और पत्रकार,साहित्यकार ,डॉ० बाबा साहब के द्वारा दिखाये गए,मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं ,जो गौरव सम्मान है। सिर्फ विज्ञापन के लिए नहीं अपितु अंबेडकर की विचारधारा ज्यादा से ज्यादा लोगों तक यानि कि निचले स्तर पर बैठे सामान्य मनुष्य तक पहुंचने का काम उनका उद्देश्य था। पत्रकारत्व के माध्यम से दलित समाज में सामाजिक क्रांति लाना वही उनका मिशन था । डॉ० बाबा साहब के उदय पूर्व 50 पत्रिकाएं पब्लिश होती थी। आजादी के बाद उसकी संख्या 200 तक पहुंच गई। गुजरात में 150 से अधिक पत्रिकाए निकलती है। दलित

पत्रकार ,साहित्यकारों को अपने नाम के लिए नहीं किन्तु दलितों के प्रश्नो एवं अत्याचार को ध्यान में रखकर अपनी कलम चलनी होगी।

आज देश में 400 से अधिक न्यूज़ चैनल है। उसमें दलित वर्ग की मेरे मत से 5 के करीब होगी ऐसा मेरा मानना है। 2010 में यू ट्यूब विड़ियो चैनल शुरू हुआ। आज देश में एक लाख न्यूज़ पत्रिकाएं निकलती है। गुजरात में 1200 न्यूज़ पत्रिकाएं हैं। आज सोशल मीडिया का जमाना है। 2/3 मीडिया की चेनले नकल करती है। भास्कर की 68 न्यूज़ पत्रिकाए है। प्राइम टाइम न्यूज़ वर्ष भारत चल रहा है। आज भी पूअर एरिया याने कि ग्राम्य रुरल विस्तार की न्यूज़ नहीं दिखाते हैं। 30 जून को 'सोशल मीडिया दिवस' के रूप में मनाया जाता है। भारत में मोबाइल 1995 में लॉन्च हुआ। आज 30 करोड़ के करीब इंटरनेट यूजर्स हैं। गांवो में 20 प्रतिशत इंटरनेट यूजर्स हैं।

उमाशंकर जोशी साहित्यकार ने कहा था कि हमें एक ही झूठ चाहिए,की झूठ में विविधता नहीं करनी चाहिए। सोश्ल मीडिया के प्राइम टाइम 60% कॉलेज के छात्र है। जब न्यूज़ पत्रिका नहीं थी तब विश्व की किसी महान व्यक्ति की मृत्यु की खबर भारत तक पहुंचने में एक महीने का समय लग जाता था। आज 52 % व्हाट्सप यूजर्स है। जीरो को हीरो और हीरो को जीरो बनाने की क्षमता पत्रकारत्व में है। पत्रकारत्व में सत्य और आदर्श होना चाहिए। इंटरनेट और सोश्ल मीडिया के जमाने में आज भी मुद्रण पत्रिका चल रही है। न्यूज़ पत्रिका को गीता मानना होगा। भारत में 2006 में फेस बुक आया। आज सोश्ल मीडिया के माध्यम से न्यूज़ बहुत जल्दी तेजी से लोगों के पास पहुंच जाते हैं। पत्रकार परमानेन्ट प्रेस है। किसी भी घटना का वर्णन बिना देखे नहीं करना चाहिए। ट्विटर 2006 में आया। पत्रकारत्व में मौखिक माध्यम भी है। लोगों का कहा सुना भी कभी कभी सच होता है। इसलिए लिखा जाता है कि आधार भूत सूत्रों से ऐसी जानकारी मिली है । पारंपरिक माध्यम,मौखिक माध्यम,क्षेत्रीय माध्यम,वृत चित्र,पत्रिका के माध्यम है। पत्रकारों को जिम्मेवारी वहाँ करना होता है। दलित पत्रकारों को यह सभी चीजें ध्यान में रखनी होगी। गांधीजी के पत्रकारत्व के तीन आदर्श थे। बुरा मत प्रकाशित करो,बुरा प्रचारित मत करो,बुरे लोगों को मत प्रचारित करो । 84 हिन्दी पत्रिकाएं गुजरात में चलती है। 25 वर्षो में पत्रिकाओं में उभार आया नहीं है। पत्रिका के प्रति समर्पण होना चाहिए।

गुजरात की बात करें तो आपणु गुजरात दैनिक अहमदाबाद से,न्याय ज्योत पाक्षिक मेहसाना से,समाज दीप गांधीनगर से,मेघवाल न्यूज़ दैनिक अहमदाबाद से ,वॉइस ऑफ गांधीनगर गांधीनगर से,वॉइस ऑफ ट्रस्ट पाक्षिक अहमदाबाद से,जोरावर टाइम्स दैनिक न्यूज़ पत्रिका जोरावरनगर से,सेवन न्यूज़ दैनिक सुरेन्द्रनगर से ,चैलेंजर दैनिक पालिताना से ,समाज दीप सामयिक विसनगर से,आदि न्यूज़ पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। हमें जानकारी उपलब्ध थी इन

पत्रिकाओं के नाम यहां देने का प्रयास किया गया है।

दलित न्यूज़ नेटवर्क की हिन्दी न्यूज़ चेनल दिल्ली में चल रहा है। दलित उत्पीड़न और सामाजिक बहिष्कार जैसी घटनाओं का प्रसारण करके जानकारी लोगों तक और संबंधित विभाग के ध्यान पर लाने का अच्छा काम कर रही है। दलित प्रश्नों को उजागर करने का उम्दा कार्य यह चैनल के माध्यम से हो रहा है। क्योंकि सभी न्यूज़ पत्रिकाओं का और चैनलों का उद्देश्य पैसे कमाना नहीं बल्कि दलितों के प्रश्नों को लोगों तक पहुंचाकर इन्हें न्याय दिलाना यही कार्य है। डॉ० अंबेडकर की विचारधारा से यह सभी न्यूज़ पत्रिका चल रही है। इन्हें विज्ञापन की कोई अपेक्षा नहीं है। दलितों के अत्याचार की जानकारी तेजी से सत्य पर आधारित माहिती पहुंचकर न्याय दिलाने में मदारूप होना यही यह सभी न्यूज़ चैनलों का भी उद्देश्य रहा है। उन सभी न्यूज़ पत्रिकाओं पर डॉ० अंबेडकर का प्रभाव है ये बात साबित हो रहा है। चाहे किसी भी प्रांत में या किसी भी भाषा में न्यूज़ पत्रिकाएं पब्लिश होती है यह सभी पत्रिकाएं डॉ० अंबेडकर के आदर्शो पर चल रही है।

दलित पत्रकारत्व की वास्तविकता :

दलित पत्रकारत्व की वास्तविकता जानना भी जरूरी है। दलित पत्रिकाएं आज दलितों पर होते हुए दमन और अत्याचार,महिलाओं पर होते बलात्कार,अस्पृश्यता और संघर्ष की विगत पत्रिकाएं विपुल मात्र में दे रही हैं किन्तु दलित समस्याओं का वैज्ञानिक हल की दिशा में कोई उत्सुक दिख नहीं रहा है। कुछ पत्रिकाएं वैचारिक (चिंतन) लेख जरूर दे रही है।

दलित पत्रिकाओं में दैनिक पत्रिकाएं कम निकाल रही है। अब भी वहां तक पहुंच सके ऐसी स्थिति नहीं है। ज़्यादातर पत्रिकाएं सामयिक,साप्ताहिक,पाक्षिक,या मासिक होती है। उसमें प्रकाशित होते हुए न्यूज़ वासी या पुराने हो ऐसा हो सकता है। दैनिक पत्रिकाओं में ख्याति प्राप्त कर चुके न्यूज़ पहले से ही प्राप्त हो चुके होते हैं,पाठ्कों को उसमें रस नहीं होता है। परिणाम स्वरूप घटना पर दलित–दृष्टि कोण से दलित पाठक वंचित रह जाता है।

दलितों पर होते अत्याचार या अन्य के खिलाफ सीधी सादी सरल भाषा में प्रस्तुत होते न्यूज़ या जानकारी या विगत संवेदना जरूर पेदा करता है। किन्तु वह क्षणिक होती है। ऐसी संवेदना लंबे समय तक कायमी बनाने के लिए वो उपयोगी नहीं बन सकती है।

दलित महिलाओं पर होते हुए बलात्कार दलित पत्रकारत्व के लिए कलेजे में जलन पैदा करने वाली करुणा है। जब बिन दलित न्यूज़ पत्रिकाओं के लिए वह

बिकाऊ है, ज्यादा नकल बेचने का व्यापार है।

दलितों पर होते हुए अन्याय के खिलाफ अन्य दलित पत्रिका में या सामयिक में चाहे ज्यादा स्पेस मिलता हो लेकिन जानकारी में विकृतता होती है या अपेक्षित महत्व नहीं दिया जाता है। दलित पत्रकारत्व को नग्न सत्य के रूप में पेश करते हैं। इसलिए दलित पत्रकार की जिम्मेवारी बढ़ जाती है।

दलित जब अपने अधिकार के लिए संघर्ष करते हैं,तब दलित पत्रकारत्व उसके साथ खड़ा होता है,यह स्वाभाविक है। ऐसी परिस्थितियो में बिन दलित पत्रकारत्व पर जातीय आक्षेप कहकर हल्ला मचाते हैं। दलित पत्रकारत्व को दंडित करते हैं।

हर न्यूज़ पत्रिका की अपनी राजकीय विचारधारा तय होती है। ज़्यादातर दलित पत्रकारत्व अंबेडकर की विचारधारा पर चलता है। जो सम्यक विचारधारा है। दलित अब तक देशव्यापी स्वतंत्र स्वरूप का राजकीय अस्तित्व खड़ा नहीं कर सके हैं। इसलिए अपनी मुख्यधारा से विमुख हो जाते हैं। लालच या स्वार्थ के लिए ऐसा होता है।

पत्रकारत्व निष्पक्ष और तटस्थ होगा यह मानना जरूरी नहीं है। दलित पत्रकारत्व दलितों की वकालत जरूर करेगा, अन्य दलित पत्रकारत्व चाहे अपने को सुधारवादी माने किन्तु समय आने पर पुरानी रुढ़ी चुस्तता व परंपराओं को जरूर संभालेगा। दलित पत्रकारत्व के विकास के कारण बिन दलित ऐसा मानने लगे है कि यह असभ्य,असंस्कृत व अक्षम भाग अपने स्थान झड़पकर रहे हैं। ऐसी संवेदना पत्रकारत्व और पत्रकारों का पक्षपाती बनाएगा ही।

बिन दलित पत्रिकाओं को सम्पूर्ण रूप से राजकीय पीठ बल होता है। या तो उसके मालिक या मुख्य संपादक को किसी न किसी राजकीय नेता गोद फादर के आशीर्वाद होते हैं। बिन दलित पत्रकारत्व ऐसे असहाय और असुरक्षित होते हैं। अपने बल पर विकास करना होता है।

दलितों के अनेक प्रश्न जैसे कि राजनीति,नौकरी,गरीबी,अत्याचार,बलात्कार,आदि विशेष रूप से चर्चित होते हैं। आज भी दलित परिवार की बेटियाँ सुरक्षित नहीं हे। उन पर बलात्कार होते हैं। उसकी मजबूरी का फायदा उठाते हैं। अत्याचार का भोग बनने पर भी उन्हें न्याय नहीं मिलता है। बिन दलित पैसे से न्याय को खरीद लेते हैं और सजा से बच निकलते हैं। संविधान में कानून बनाए गए हैं लेकिन एट्रोसीटी के सभी केसों में ज़्यादातर लोग समाधान से या साक्षी को धमकी देकर अपनी और कर लेते हैं,वे सजा से बच जाते हैं। बहुत ही कम मात्र में ऐसे केसों में गुनहगारों को सजा होती है।

कुछ भ्रांतियां लालची लेखक–पत्रकार अपने नाम और दाम के लिए दौड़ लगाते है। कुछ व्यक्तिगत आपसी द्वेष के कारण कलम चलाते हैं। कुछ पद या प्रतिष्ठा के लिए काम करते हैं। ये सभी जाने अनजाने दलित पत्रकारत्व को नुकसान पहुंचाते हैं।

दलित पत्रकारों और पत्रकारत्व का कोई लंबा अनुभव इस क्षेत्र में नहीं है। सिर्फ 70 वर्षो का छोटा अनुभव स्थिरता के लिए सम्पूर्ण नहीं है। मानसिक,राज नैतिक ,आर्थिक और सामाजिक इस तरह सभी क्षेत्रों में दलित आज भी अविकसित है। इसलिए उसका बिन दलित पत्रकारों से तुलना करना वह उचित नहीं है। हकीकत में पत्रकारत्व में दलित पत्रकारत्व में दलित पत्रकार अपने कदम धीरे धीरे रख रहा है,

सामान्य रूप से समझ में आए ऐसी बात यह है कि विश्व के देश पूर्व या पश्चिम,यूरोप या अफ्रिका,रशिया या मध्य पूर्व,इस्लामिक देशों में बनती घटनाओं के लिए दलित पत्रकारत्व कोई सकारात्मक चिंता करता नहीं है,या उसकी शोध भी लेना नहीं चाहता है। कारण ये हो हो सकता है कि समग्र विश्व के देशों को हिला दे ऐसी घटनाएं ये दलितों के जीवन में इतनी प्रभावित नहीं करती जितनी उनके देश की आंतरिक घटनाएं उन्हें पीड़ा देती है।
दलित पत्रकारत्व में दलित प्रतिभाओं का अभाव उनके विकास में सबसे बड़ी स्पर्श करनेवाली समस्या होने से उसके बारे में विचार करना जरूरी है।

गुजरात में अजाज मीडिया ने डॉ० अंबेडकर की प्रेरणा से ट्रष्ट खोला गया है। अभी कुछ समय पहले मूक नायक शताब्दी वर्ष समारोह मनाने के लिए कार्यक्रम अहमदाबाद में अजाज मीडिया ट्रस्ट की ओर से आयोजित किया गया,उस कार्यक्रम में हमें उपस्थित रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, क्योंकि हम वॉइस ऑफ गांधीनगर के पत्रकार एवं हिन्दी गुजराती पत्रकार और दलित हैं। इस कार्यक्रम में गुजरात के सभी दैनिक ,पाक्षिक ,साप्ताहिक,पत्रिकाओं के तंत्री,पत्रकार और लेखक अजाज मीडिया की ओर से आयोजित समारोह में उपस्थित थे। अजाज मीडिया के साथ काफी न्यूज़ पत्रिका के संपादक,पत्रकार एवं लेखक जुड़े हैं। इस कार्यक्रम में कुछ पत्रकारों का सम्मान मोमेंटों,पुष्प गुच्छ और शॉल से किया गया, गुजरात के हर जिले में अजाज मीडिया ट्रस्ट की शाखायें बन रही हैं। उनका मुख्य उदेश्य पत्रकारों को प्रोत्साहित करना,दलित पर होते अत्याचारों की सत्य विगत बाहर लाना और दलित पत्रकारों को सहायता करना यही है। हर महीने मीटिंग बुलाना और सभी पत्रकारों को जानकारी से वाकिफ करने का निर्णय किया गया है। उस मीटिंग में बाकी के अन्य पत्रकारों को सम्मानित करना है, नए युवा पत्रकारों को मार्गदर्शन करना है और अत्याचार की घटनाओं का निरूपण कैसे करना है उसकी जानकारी दी जाएगी।

हम भी अजाज मीडिया के सदस्य हैं। अजाज मीडिया के अध्यक्ष डॉ० स्वप्निल मेहता एक प्रोफेसर और बुधद्धिजीवी इंसान हैं। इन्हे मूलचंद राणा उच्च सरकारी पद से निवृत हुए पदकारी मदद कर रह रहे हैं। मूलचंद राणा के सुझाव से सभी कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। अजाज मीडिया ट्रस्ट के पदाधिकारियों की चुनाव हर साल की जाती है। किसी भी पद पर किसी को भी एक वर्ष से ज्यादा रहने का अधिकार नहीं है। कुछ समय यानि कि एक महीने पहले आयोजित मूक नायक शताब्दी वर्ष के समारोह में चुनाव करके पदाधिकारियों को चुना गया है। अजाज मीडिया का सोश्ल मीडिया में व्हाट्स अप्प ग्रुप बनाया गया है। जिसमें सभी जानकारी प्राप्त होती रहती है। यहां कुछ न्यूज़ पत्रिका के अंक भी रोजाना प्रस्तुत किए जाते हैं। यहां पत्रकारिता की भाषा गुजराती है। दलित हिन्दी न्यूज़ पत्रिका वामन बहुजन समाज और दलित साहित्य अकादमी दिल्ली की ओर से पब्लिश होती है। दिल्ली से डॉ० सोहन पाल सुमनाक्षर इस पत्रिका' हिमायती 'के संपादक हैं। भारतीय दलित साहित्य के अध्यक्ष डॉ० सुमनाक्षर हे। वे भारतीय दलित साहित्य की और से प्रकाशन भी करते हे। उनकी एक किताब का नाम 'विश्व धरातल पर' है। दलित साहित्यकारों के परिचय का एक ग्रंथ भी उन्होनें प्रकाशित किया है। उनकी करीबन 18 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। पुस्तक मँगवाने का पताः

पताः दलित साहित्य प्रकाशन सेंटर,
भारतीय दलित साहित्य अकादमी
3–9 दूसरी मंजिल,मॉडल टाउन –1दिल्ली–9 वे निडर संपादक एवं लेखक हैं। आजादी के बाद दलितों, आदिवासियों और महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिए कई नियम कानून बने। लेकिन आज तक सम्पूर्ण रूप से वे धरातल पर लागू नहीं हो सके हैं। सवर्ण और पुरुष वर्चस्व वाला हमारा समाज दलितों–महिलाओं को आज बराबरी का दर्जा नहीं देना चाहा । पुरुष और सवर्ण वर्चस्व वाला समाज आज भी दोनों को सेवक समझता है। ऐसे में जब भी वह किसी दलित और महिला को अपने से आगे बढ़ता हुआ देखता है तो उसे यह किसी अनहोनी से कम नहीं लगता है। लेकिन आज दलितों और महिलाएं पढ़ाई में आगे निकल गई है। वे जागरूक हो गए हैं। आज पहले की तरह उनका उत्पीड़न करना आसान नहीं रहा है, फिर भी आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण उन पर होने वाले अपराध अभी भी बंद नहीं हुए हैं। पिछले कुछ वर्षो से तो ज्यादा ही बढ़े हैं। दलितों के साथ घटित आपराधिक घटनाएं कुछ दिन मीडिया की सुर्ख़ियों में रहती है,फिर गायब हो जाती है।

यही हाल गुजरात के बोटाद गाँव में एक दलित उप सरपंच माँजी भाई सोलंकी की हत्या के बाद भी हुआ । मीडिया अब खामोश है। माँजी भाई के परिजन न्याय की आस में हैं। जो शायद ही उन्हें मिलेगा। यहां देखने जैसी दिलचस्प बात यह है कि माँजी भाई कोई आम नागरिक नहीं हैं। पिछले 20 सालों से

उनके परिवार के लोग गाँव के सरपंच चुने जा रहे हैं। अभी माँजी भाई की पत्नी सरपंच है और वे उप सरपंच थे। यह कहा जा सकता है कि गाँव में उनकी अच्छी पकड़ थी। किन्तु उनके गाँव के उच्च जाती के लोगों को दलित समुदाय के व्यक्ति का सरपंच चुना जाना अच्छा नहीं लग रहा था। पहले उनको धमकियां मिलती रही फिर हत्या करके मार दिया गया। गुजरात में ये कोई पहली घटना नहीं है। देशभर में दलितों का उत्पीड़न बढ़ता जा रहा है। आज इक्कसवी सदी में भी दलितों की हत्या,बलात्कार और जातीय उत्पीड़न की घटनाओं में कमी नहीं आई है। सरकारी आंकड़े भी इस बात की पुष्टि करते हैं। नेशनल क्राइम ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ो के मुताबिक पिछले दस साल में (2007–2017)में दलित उत्पीड़न के मामले में 66% फीसदी का इजाफा हुआ है। इस दौरान देश में रोजाना छह दलित महिलाओं से बलात्कार के मामले दर्ज किए गए हैं। आंकड़ों के मुताबिक भारत में हर पंद्रह मिनिट में एक दलित के साथ कोई न कोई आपराधिक घटना घट रही है।

पूरे भारत देश में रोज बरोज ऐसी दलित उत्पीड़न की घटनाएं सामने आती है। ऐसी घटनाओं में दलित पत्रकारिता और पत्रकारों को अपनी अहम भूमिका अदा करनी होगी। घटना की पूरी जांच करके सत्य सामने लाने का प्रयास करना होगा। डॉ० बाबा साहब अंबेडकर ने दिखाई गई राह पर चलकर दलित समाज को न्याय दिलाने हेतु आगे आना चाहिए । दलित न्यूज़ पत्रिकाओं के संपादकों ने ऐसी घटनाओं को अपनी न्यूज़ पत्रिका में उचित स्थान देकर घटना को उजागर करना होगा। दोषियों को सजा मिले और जिन्हें अत्याचार का सामना करना पड़ा है इन्हें न्याय दिलाने का काम दलित पत्रिकाओं और पत्रकारों को करना होगा।

————————————————————————————————————जय हिन्द————————————————————————————————————

सन्दर्भ सूची : डॉ० अम्बेडकर विचार और व्यवहार (गुजराती) लेखक : गोविंद भाई चोहान, हिमायती पाक्षिक पत्रिका संपादक :सोहन पाल सुमन अक्षर अंक जनवरी 2020 भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली

● ●

सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रभाव

इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से हिंदी का प्रचार :-

मीडिया की भूमिका हिंदी ही है, जो सारे भारत में हिंदी में घटनाएं एवं न्यूज का विवरण प्रस्तुत करते हैं, ज़न मानस को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं, हिंदी राष्ट्र भाषा प्रचार समितियां भी पूरे भारत वर्ष में हिंदी को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं, हर साल देश विदेश में हिंदी साहित्य सम्मेलन होते हैं, उसमें प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन के जरिए हिंदी का प्रचार प्रसार करने के लिए मीडिया द्वारा ही जानकारी दी जाती है,

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से भी पूरे भारत वर्ष में हिंदीतर भाषी राज्यों में हिंदी शिविर का आयोजन करके लोगों के मानस तक हिन्दी को पहुंचाने का उत्तम कार्य कर रहे हैं, हमें प्रसन्नता हुई है क्योंकि भारत सरकार के द्वारा आयोजित हिंदी शिविरों में हमने केरल, दार्जिलिंग, हरिद्वार, पुणे, नागपुर, मुंबई और शिलॉन्ग तक हिस्सा लिया है किन्तु कहीं पर भी संपर्क करने में हमें कोई कठिनाइयां महसूस करनी पडी, हिंदी सिनेमा, हिंदी न्यूज देखने पढ़ने में कोई कठिनाई का सामना करना नहीं पड़ता है लेकिन हिन्दी को बोलचाल की भाषा उपरांत पत्राचार की भाषा बने,ऐसा मेरी इच्छा है, अंग्रेजो को गए हुए 70 साल हो गये फिर भी अंग्रेजी भाषा का मोह लोगों का पीछा नहीं छोड़ता है, एक क्रेज हो गया है, अपने बच्चों को अंग्रेजी भाषा स्कूल में दाखिला लेते हैं किन्तु यह अंग्रेजी भाषा की स्कूलों में हिंदी के माध्यम से ही बच्चों को समझाया जाता है, बच्चे घर और स्कूल के अंदर ज्यादातर हिंदी में ही बात करते हैं,

अस्सी साल पहले गांधीजी ने हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने का काम किया है, राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने हिंदी का सम्मान बढ़ाया है, उन्होंने संसदीय समिति की रिपोर्ट को स्वीकार किया है, राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री हिंदी में बातचीत कर सकते हैं, पढ़ लिख सकते हैं, तो हिन्दी में ही अपनी स्पीच देते हैं,

अब सी बी एएस की केंदीय वि ॥लयों में आठवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक हिन्दी को कॉम पल सर किया गया है, अपने प्रधान मंत्री विदेश में चीन, रूस, जापान और कही भी जाते हैं तो वहा अपने समकक्षों के साथ हिंदी में बात करते हैं, अपना वक्तव्य भी हिंदी में देते हैं, यह तो हिन्दी के प्रचार प्रसार की बात की है, मीडिया के माध्यम से ही हम यहां बैठकर सब कुछ देख सकते हैं, सुन सकते हैं यह सभी ऊपर में की गई बातों के हम सभी साक्षी हैं,

आज हिंदी अभिव्यक्ति की सबसे सशक्त माध्यम बन गया है, हिंदी चैनलों

की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है, बाजार की स्पर्धा के कारण अंगेजी चैनलों का हिन्दी में रुपांतर हो रहा है, अब सैंकड़ों पत्र पत्रिकाएं इन्टरनेट पर उपलब्ध हैं,

हिंदी के वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों में भी देखा जा सकता है, संचार माध्यमों ने हिंदी के वैश्विक स्वरूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है, देश की संस्कृति भी हिंदी भाषा की वाहक है, संचार माध्यमों पर प्रसारित कार्यक्रम से समाज के बदलते सच को हिंदी के माध्यम से ही उजागर किया गया है, डिजिटल युग में दुनिया में हिंदी की मांग अंग्रेजी की तुलना में पांच गुना अधिक तेज है, हिंदी अंग्रेजी की तुलना में पांच गुना तेजी से बढ़ रही है, हिंदुस्तान में हर पांचवा इंटरनेट प्रयोगकर्ता हिंदी का उपयोग करता है, अंग्रेजी की सामग्री की खपत केवल 19 फीसदी दर से बढ़ रही है जबकि देश में हिंदी सामग्री की डिजिटल मीडिया में खपत 94 फीसदी के दर से बढ़ रही है,

आज स्मार्ट फोन के रूप में हर हाथ में एक तकनीकी डिवाइस मौजूद है और उसमें हिंदी की ऑपरेटिंग सिस्टम हिंदी में मैसेज भेजना, हिंदी संदेश पढ़ना सुनना या देखना लगभग उतना आसान हो गया है कि जितना अंग्रेजी सामग्री को, हालाकि कंप्युटर पर भी हिंदी का व्यापक प्रयोग होता है, इन्टरनेट पर भी, लेकिन मोबाइल ने हिंदी भाषा के के प्रयोग की इतना तेज गति पकड़ लिया है कि उसकी कल्पना करना मुश्किल है, इन्टरनेट पर भारतीयों में हिंदी भाषा के प्रति रुझान बढ़ा है, भारत में 50 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी भाषा का बोल चाल में उपयोग कर रहे हैं, 21 प्रतिशत लोग ही भारतीय हिंदी में इंटरनेट का प्रयोग करना जानते हैं, भारतीय युवा 93 प्रतिशत हिंदी वीडियो देखते हैं, हिंदी मीडिया के प्रमुख ाटक नीचे दिए गए हैं,

1 हिंदी रेडियो..
2.टेलीविजन
3.हिन्दी फ़िल्में
4.हिन्दी ई पत्र पत्रिकाएं
5.हिन्दी सायबर

भारत सरकार ने इंटर नेट पर हिन्दी के लिए बहुत सारी वेबसाइट उपलब्धकरायी गयी है,

1-www word any where. In
2-www-Lprc iiit AC. In
3-www-3d L LMit gov. In
4-www-CfLP iAtb-.In
5-Www-cse iit B As. In
6-www- Nic- In bliss. Org
7-www- Bicthindikhoj. Com

हिंदी में लोग सिनेमा देखना ज्यादा पसंद करते हैं, हिंदी बोलने वाले की संख्या बढ़ी है, इन्टरनेट के कारण संख्या में बढ़ोतरी हुई है, प्रचार प्रसार के लिए इंटरनेट सबसे अच्छा माध्यम है, हिंदी पढ़ने वाले की संख्या में इजाफा हुआ है, हिंदी का प्रचार प्रसार करने में सोशल मीडिया ने बड़ी भूमिका निभाई है, इंटरनेट के प्रयोग ने हिंदी भाषा के लिए एक नई दिशा खोल दी है,
आज से 60 साल पहले 14 सितंबर 1949 में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी भाषा को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है इसलिए हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, हिंदी अब व्यवहारिक तौर पर देश की संपर्क भाषा बन गई है उसमें कोई दो राय नहीं है, हिंदी की अनिवार्यता विदेशी सरकारें भी महसूस कर रही है, इसलिए अमेरिका, चीन, यूरोप तथा अन्य प्रमुख देशों में हिंदी के अध्ययन की व्यवस्था की गई है, विदेश में बड़ी संख्या में छात्र छात्राएं हिंदी संस्थान में विभिन्न विश्व विद्यालयों में और अन्य शिक्षण संस्थानों में हिंदी पढ़ने के लिए जाते हैं, 1960 और 1970 के दशकों में दक्षिण के जिन राज्यों में हिंदी के विरुद्ध आंदोलन चले थे, अब उन राज्यों के नेता हिंदी विषय को लेकर बी ए. एम ए. करने वाले बच्चों की संख्या भी बढ़ती जा रही है

सौ सालो में भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए हमारे हिन्दी कवि लोग तुलसीदास, मैथिली शरण गुप्त, रामधारी सिंह, दिनकर, सुमित्रानंदन पंत, प्रेमचंद, जगदीश गुप्त, बच्चन और आग्नेय ने बहुत महत्वपूर्ण रोल अदा किया है, हमारे धर्म ग्रंथों, साहित्य, रामायण और भागवत गीता का भी योगदान देश के विकास के लिए हिंदी भाषा में परिवर्तित हुआ है, कबीर को एक समाज सुधारक के रूप में देखा गया है, कबीर के पास कोई डिग्री नहीं थी, फिर भी उनके द्वारा रचे गए दोहे आज के दिशाहीन समाज के लिए काफी महत्वपूर्ण है, मीडिया के माध्यम से हिंदी में यह सभी धर्म ग्रंथ उपलब्ध होते हैं, मीरा के पद भी बहुत प्रचलित है, यह सब हिंदी भाषा साहित्य है, हिंदी को आगे बढ़ाने में हमारे धर्म ग्रंथ, धर्म गुरु, महात्माओं का योगदान भी हमें सौ सालों से महत्तवपूर्ण रूप से प्राप्त हुआ है, उन्हें इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से हमारी और पहुंचकर एक बड़ा उपकार किया है, उन्हें भूलना नहीं चाहिए,

भाषा शास्त्रीय लोगों का मानना है कि, 21 वी सदी के अंत में विश्व की 6000 से 90 प्रतिशत भाषाएं लुप्त हो सकती है, इसलिए राष्ट्र भाषा को बचाना हम सभी की जिम्मेदारी है, सौ सालो में परिवर्तन आया है, आजकल विदेशों में भी हिंदी साहित्य सम्मेलन होने लगे हैं, दशवें हिंदी साहित्य सम्मेलन 2015 में भारत में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था, अमेरिका में भी हिंदी साहित्य सम्मेलन आयोजित होते हैं, मॉरिशश में भी होते हैं, आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि, हिंदी को गंगा नहीं समुद्र बनाना होगा,

उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में जहा भारतीय भाषाओं का प्रयोग की पूर्ण रूप से उपेक्षा की जाती थी, अब हिंदी ने सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है, रेडियो, टी वी तथा हिंदी पत्र पत्रिकाओं में हिंदी में विज्ञापन देने की होड़ लगी है, उन तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि हिन्दी को देशव्यापी स्वीकार्यता मिल चुकी है, वो समय दूर नहीं है अब हिंदी पूर्णरूप से भारत की एक मात्र संपर्क भाषा बन जाएगी,

हिंदी ने जो प्रगति हासिल की है उसमें मोबाइल, कंप्युटर, लेपटोप और टेबलेट का योगदान इंटर नेट के माध्यम से बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका के रूप में रहा है यह कहना जरा सा भी गलत नहीं है, मेरे मत से हिंदी ने सोशल मीडिया से बहुत तेजी से दौड़ लगाई है, अपने कदम मजबूती से रखने में सफल हुआ है, राष्ट्र भाषा हिंदी ने बहुत कुछ हासिल कर लिया है, और देश को समर्पित किया गया है, अपने धार्मिक ग्रंथ बाईबल और कुरान भी हिंदी में उपलब्धहै, ये भारतीय संस्कृति को उजागर करता है, हिंदी ने अपनी जड़ें मजबूत कर दिया है, साहित्य जगत, व्यापार उद्योग के क्षेत्र में अपना पग डंडा मजबूत किया है, देश के विकास में हिंदी का की महत्वपूर्ण भूमिका रही है,

एक समय था जब पढ़ लिखे होने का मतलब था अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना, आजादी के बाद उस समय राष्ट्रीय न्यूज अंग्रेजी में पब्लिश होते थे, किन्तु शिक्षा और साक्षरता के कारण प्रसार प्रचार की दिशा बदल गई है, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को सर्व स्वीकार्य बनाने में रेडियो की उल्लेखनीय भूमिका रही है, आकाश वाणी के समाचार, विचार, शिक्षा, सामाजिक सरोकार, संगीत और मनोरंजन इत्यादि सभी स्तरों पर अपने प्रसारण के माध्यम से हिंदी को देश के कोने कोने तक पहुंचाने में महत्व पूर्ण योगदान दिया है, इस में हिंदी फ़िल्में और फिल्मी गीतों ने तहलका मचा दिया है, हिंदी फ़िल्मों की लोकप्रियता भारत की सीमाओं को पार कर के रूस, चीन और यूरोप तक जा पहुंची है, आकाश वाणी की विविध भारती सेवा तथा अन्य कार्यक्रम से देशभर में लोगों के जुबान पर गाने को ला दिया है, उस समय आकाश वाणी के 225 केंद्र थे और 361 ट्रांसमीटरों के साथ लगभग 1400 एफ एम और सामुदायिक रेडियो स्टेशन थे, अधिकतर रेडियो प्रसारण हिंदी में होते थे, कौन बनेगा करोड़पति जैसे कार्यक्रम ने लगभग पूरे देश को एक सूत्र में बांधकर रखा है, हिंदी में प्रसारित ऐसे कार्यक्रम में पूर्वोत्तर राज्यों जम्मू कश्मीर और दक्षिण राज्यों के प्रतिभागियों ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया है, हिंदी समाचार सबसे अधिक देखे सुने जाते हैं, 2009 में 22 हिंदी चैनलों को अनुमति मिली है उसमें अधिकांश हिंदी की है,
भारतीय संविधान में भाग 17, के अध्याय की धारा 343 (9), इस प्रकार हैं, संघ वह राजकीय राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी, संघ व राजकीय

प्रश्नों के लिए प्रसंग होने वाले संघ का रूप अंतर्राष्ट्रीय होगा ”

यह निर्णय 14 सितंबर को लिया गया इस लिए इस दिवस को श्रेष्ठ माना गया है, गैर हिंदी भाषी राज्य के लोग इसका विरोध करने लगे तो अंग्रेजी भाषा को भी राजभाषा का हक देना पड़ा, इस कारण हिंदी में भी अंग्रेजी भाषा का प्रभाव पड़ने लगा, हिंदी के हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर वर्ष 1953 से भारत में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, हिंदी को भारत में राजभाषा के रूप में 14 सितंबर 1949 में स्वीकार किया गया, इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा को संविधान में स्वीकार किया गया,

स्वतंत्रता पूर्व 1833 – 1886 गुजरात के महान कवि श्री नर्मदे हिंदी को राजभाषा बनाने का विचार रखा गया था, 1918 में मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कोंग्रेस के अध्यक्ष के हैसियत से घोषित किया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी, 1918 में इंदौर में संपन्न आठवें हिंदी सम्मेलन में अध्यक्षता करते महात्मा गांधी ने कहा कि मेरा मत है कि हिन्दी को हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा बनाने का प्रयत्न न हो तो हिन्दुस्तान समाप्त है, राजभाषा बनाना हमारा कर्तव्य है, 2019 को सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय हिंदी और अन्य भाषाओं में अनुवादित करेंगे।

अभी न्यायालयों के निर्णय भी मीडिया के माध्यम से आम लोगों को जल्द से जल्द मिल रहा है, कोई भी व्यक्ति अपना केस का स्टेट्स भी ऑन लाइन जान सकता है।

जब इंटरनेट ने भारत में कदम रखा तो यह आशंका व्यक्त की गई थी कि कम्प्यूटर के कारण देश में फिर से गुलामी आएगी किन्तु यह धारणा गलत साबित हुई, आज हिंदी वेबसाइट तथा ब्लॉग न केवल गलत चल रहे हैं बल्कि देश के साथ साथ विदेश के लोग भी इन पर सूचनाओं का आदान प्रदान तथा चैटिंग कर रहे हैं, इस प्रकार इंटरनेट भी हिंदी में सहायक होने लगे हैं, हिंदी आज राजमार्ग पर सरपट दौड़ रही है और हिंदी अश्वमेघ के घोड़ों को रोक पाना किसी के भी बस में नहीं है, मीडिया इस दौड़ को और गतिशील बना रहा है, आज यह सच है कि जिस तरह हिंदी को अपने प्रसार के लिए मीडिया की जरूरत है, उसी तरह मीडिया को अपने विस्तार के लिए हिंदी भाषा की आवश्यकता है,

भारत में आरंभ से 30 साल तक टेलीविजन की प्रगति धीमी रही लेकिन वर्ष 1980 और 1990 के दशक में दूरदर्शन ने राष्ट्रीय कार्यक्रम और समाचारों के प्रसारण के जरिए हिंदी को जनप्रिय बनाने में काफी योगदान दिया, वर्ष

1990 के दशक में मनोरंजन और समाचार के निजी उपग्रह चैनलों के पर्दापन के उपरांत यह प्रकिया और तेज हो गई, रेडियो की तरह टेलीविजन पर भी मनोरंजन में फ़िल्मों का भरपूर उपयोग किया गया और फीचर फिल्म, वृत्त चित्र, तथा फिल्मी गीतों के प्रसारण से हिंदी भाषा को देश के कोने कोने तक पहुंचाने का सिलसिला आगे बढ़ाया गया, टेलीविजन पर प्रसारित धारावाहिक ने दर्शकों के मन में अपना विशेष स्थान बना लिया, सामाजिक, पौराणिक कथाओं, धार्मिक विषयों को लेकर बनाए गए हिंदी धारावाहिक घर घर में देखे जाने लगे, रामायण, महाभारत, हमलोग, भारत एक खोज जैसे धारावाहिक न केवल हिंदी प्रसार के वाहक बने बल्कि राष्ट्रीय एकता का सूत्रधार बन गया,

हिंदी देश में संपर्क की भाषा बन गई है, हिंदी बोलने में, लिखने में शर्म नहीं करनी चाहिए, देश के नागरिकों को अपनी राष्ट्र भाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए, देश के विकास के लिए उसे अपनाना होगा, हिंदी बोलना होगा और लिखना होगा, आज कल पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी की स्थिति अच्छी है, हिमाचल प्रदेश, मेघालय और सिक्किम आदि, मेघालय राष्ट्र भाषा प्रचार समिति द्वारा ''आजा न फकीर" हिंदी में अनुवाद किया गया है जवाहर लाल नेहरू ने कहा है कि हिन्दी एक शानदार भाषा है, वह जितनी बढ़ेगी, देश का इतना ही नाम होगा!

सन्दर्भ सूची :गूगल विकीपीडिया और सोशल मीडिया

● ●

● ●

हिंदी साहित्य में सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त

1. ‘‘साहित्य सारथी सम्मान”
2. ‘‘साहित्य समाज सेवा सम्मान”
3. ‘‘सारस्वत सम्मान ”
4. ‘‘सशक्त लेखनी सम्मान
5. ‘‘साहित्य गोरव 2018”
6. ‘‘अभ्युदय सम्मान ”
7. ‘‘साहित्य गोरव सम्मान ”
8.‘‘ ऑल मीडिया काउन्सिल अवॉर्ड
9. मातृत्व ममता सम्मान
10. ‘‘भोलाभाई पटेल स्मृति सम्मान
11. साहित्य भूषण सम्मान
12.‘‘श्री अंबा लाल हिंगड़ ”बाल साहित्य सम्मान – रुपए 2100 की धन राशि
13.‘‘ शब्द भूषण सम्मान ”
14.”वुमन इंस्पायर्ड अवॉर्ड
15.‘‘स्टार हिन्दी बेस्ट राइटर अवॉर्ड 2019 ”
16. ‘‘साहित्य श्री 2019”
17. ‘‘स्टार हिन्दी साहित्यकार सम्मान”
18. ‘‘रामेश्वर दुबे साहित्य सम्मान
19 स्टार हिन्दी साहित्य सम्मान
20. ‘‘साहित्य रत्न सम्मान
21साहित्य सरोज मैत्री सम्मान
22.‘‘राष्ट्र भाषा गोरव मानद उपाधि से सम्मानित 2014
23.‘‘ हिंदी भाषा भूषण सम्मान 2015
24. साहित्य अकादमी मध्य भोपाल साहित्य उत्सव में सम्मानित
25.शोध आलेख प्रस्तुत किया ‘‘प्रमाण पत्र प्राप्त
26.‘‘मुन्शी प्रेमचंद अलंकरण 2019 सम्मान
27 हिंदी भाषा गोरव सम्मान
28.साहित्य विचार संस्था सराहनीय प्रदर्शन सम्मान
29. सुदर्शनिका ऑन लाइन कवि सम्मेलन सम्मान
30. जीवन उड़ान साहित्य गगन उत्तम प्रदर्शन सम्मान
31. इकाई साहित्य भूषण सम्मान
32. वृक्ष मित्र सम्मान
33.स्टोरी मिरर literary colonel सम्मान

34.‘‘साहित्य साधना सम्मान”
35.‘‘काव्या विभूषण सम्मान”
36.स्टोरी मिरर ‘‘मेरी उड़ान” सम्मान
37.स्टोरी मिरर ‘‘बुक ऑफ लव”सम्मान
38 ‘‘हिंदी गौरव सम्मान
39.‘‘मातृ भाषा गौरव सम्मान
40.‘हिंदी साहित्य समृद्धी रत्न” सम्मान
41.केसरी सिंह बारहठ सम्मान
42.‘‘साहित्य साधक सम्मान”
43.‘‘हिंदी सारथी सम्मान”
44.‘‘बाल साहित्य विशिष्ट सहभागिता सम्मान
45.भाषा सहोदरी सम्मान
46.क्रांति धरा साहित्य साधक सम्मान”
47. स्टोरी मिरर
लिटररी कोलोलेन सम्मान
48. साहित्य साधना मंच बदयु यू सम्मान
49. ‘काव्य विभूषा सम्मान ‘
50. स्टोरी मिरर ‘नॉन स्टॉप नवंबर सम्मान
51. हिन्दी गौरव सम्मान
52 ‘मातृ भाषा गौरव सम्मान
53 ‘हिन्दी साहित्य स्मृति रत्न 2019 ‘सम्मान
54. ‘साहित्य साधक सम्मान
55 ‘हिन्दी सारथी सम्मान
56. स्वतंत्र सेनानी ओमकारलाल शास्त्री स्मृति सम्मान
57. श्रेष्ठ रचनाकार“सम्मान
58. ‘कार्गिल प्रतिस्पर्धा में श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान
59.साहित्य के दीपक सम्मान
60. ग्रेस परिचर्चा सम्मान ’
61. ‘विशिष्ट प्रतिभा सम्मान ‘
62. ब्रज लोक कलम साधक सम्मान
63. मधुशाला काव्य गौरव सम्मान
64. शोध पत्र सहभागिता सम्मान
65.‘‘कलम का भीष्म पितामह ”
66. स्टोरी मिरर प्रतिभा गीता सम्मान
67. नाथद्वारा ”हिन्दी भाषा बाल साहित्य विमर्श सम्मान
68. ‘कार्तिक मास –‘विषय में प्रथम स्थान सम्मान
69.अग्रसर भाषा सम्मान
70. ” भूषण ” सम्मान

71. ”साहित्य के एक लव्य सम्मान
72. त्रिलोचन सम्मान
73. वासंती सम्मान
74.”सुर साधक सम्मान”

सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त

व्यसन मुक्ति की एक मिशाल

व्यसन मुक्ति कार्यक्रम और ब्रेस्ट कैंसर अवेर्नेसस कार्यक्रम, स्कूल कॉलेज में विद्यार्थीओं की जागरूकता के लिए कार्यक्रम करना, सामाजिक चेतना के लिए सामाजिक संस्थाओं और गांवो में व्यसन मुक्ति कार्यक्रम करना, महिलाओं के लिए ब्रेस्ट कैंसर अवेर्नेसस कार्यक्रम करना एवं साहित्य हिंदी, गुजराती कवि लेखक अनुवादक के चलते मिले अनगिनत सामाजिक सम्मान की एक झलक

1. मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 2009 में पोरबंदर सर्किट हाउस में बुलाकर सम्मानित किया और प्रमाण पत्र प्रदान किया, गुजरात में किसी कवि के लिए गौरव की बात है।

2 गुजरात राज्य के गवर्नर डॉ. कमला बेनीवाल के करकमलो से शॉल, पुष्पमाला, धरती रत्न अवॉर्ड 2011 रुपए 5000 की धन राशि के साथ आशीर्वाद एजुकेशन ट्रस्ट अहमदाबाद के आयोजित कार्यक्रम में प्रदान किया।

3. नेशनल यूथ नागपुर महाराष्ट्र की ओर से अबुल कलाम आजाद आइडियल सोशल अवॉर्ड 2011 से सम्मानित।

4. पूज्य कथाकार रमेश भाई ओझा द्वारा संदीपनी आश्रम पोरबंदर में गुरु पूर्णिमा के दिन शॉल, पुष्पमाला अर्पित करके प्रशस्ति पत्र दिया।

5. परम पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज के आर्शीवाद सारंगपुर में मिले।

6. परम पूज्य आनंद स्वरूप स्वामी द्वारा हरि मंदिर गांधीनगर में आर्शीवाद दिया और सम्मानित किया।

7. प्रजा पिता ब्रह्म कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय गांधीनगर केंद्र में कैलाश दीदी से मिला आशीर्वाद।

8. परम पूज्य कथाकार मोरारी बापू के कर कमलों से व्यसन मुक्ति की दो पुस्तक 1.स्वर्णिम संकल्प 2.चलो व्यसन मुक्त स्कूल कॉलेज का निर्माण करें, का विमोचन गांधीनगर में किया गया और आर्शीर्वाद प्रदान किया।

9 राष्ट्रीय अध्यक्ष लोकजन शक्ति पार्टी के श्री रामविलास पासवान जी द्वारा

अहमदाबाद में सम्मानित किया गया और प्रसश्ति पत्र दिया गया।

10. सचिव श्री नशाबंदी और आबकारी विभाग गांधीनगर द्वारा प्रशस्ति पत्र दिया गया। उनके नशा मुक्ति कार्यक्रम में शामिल किया गया

11. समता निर्माण सेवा ट्रस्ट मोटेरा अहमदाबाद की ओर से एडिशनल डीजीपी (आई.पीएस) डॉ. राजन प्रियदर्शी के द्वारा सम्मानित किया।

12. समता निर्माण ट्रस्ट अहमदाबाद की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम में, गांधीनगर के विधायक शंभूजी ठाकोर के हाथो डॉ. बाबा साहब अंबेडकर अवॉर्ड प्रदान किया गया।

13. राज्यसभा के सांसद परम पूज्य शंभूनाथ जी के कर कमलो से 'समाज रत्न 'अवॉर्ड से लुना वाडा में सम्मानित।

14. सीनियर सिटीजन काउंसिल गाँधी नगर की ओर से विशिष्ट सिद्धि अवॉर्ड 2017 से गांधीनगर में सम्मानित किया गया

15. पारुल ट्रस्ट गांधीनगर द्वारा सम्मानित।

16. शिक्षा मंत्री श्री रमनलाल वोरा द्वारा प्रसस्ती पत्र प्रदान किया।

17. भारतीय जनता पार्टी गांधीनगर द्वारा प्रसास्ति पत्र और मोमेंटो से सम्मानित।

18. गुजरात राज्य के स्वर्णिम जयंती उत्सव समारोह कार्यालय, खेलकूद विभाग के सेक्शन अधिकारी श्री आर पी पटेल ने व्यसन मुक्ति कार्य की प्रशंसा पत्र प्रदान किया।

19. गवर्नमेंट पीजी कॉलेज कवर्धा छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय सेमिनार 2018 में आमंत्रित किया गया और सम्मानित किया गया

20.आमिर सत्या फाउंडेशन सिरसा हरियाणा की ओर से अहमदाबाद में 'एशिया अवॉर्ड – 2' से मोमेंटो के साथ सम्मानित किया गया

21. जय हो नेशनल अवार्ड – 2019 से दिल्ली में स्मार्ट मीडिया की और से सम्मानित किया गया

22.माँ दक्षिण काली सेवा परमार्थी ट्रस्ट जयपुर की ओर से 'राष्ट्रीय कर्म योगी सम्मान – 2019' मोमेंटो के साथ प्रदान किया गया

23. इन्द्रप्रस्थ एजुकेशन रिसर्च एंड चेरीट्रेबल ट्रस्ट जयपुर की ओर से 'इंडियन ग्लोरि अवॉर्ड 2019' से मोमेंटो के साथ इन्द्र लोक ऑडिटोरियम जयपुर में सम्मानित किया गया

24. कृष्णा महिला बचतघट जलगांव की ओर से 'समाज भूषण' अवार्ड से सम्मानित किया गया

25. गुजरात केन्द्रीय विश्व विद्यालय गांधीनगर एवं नेशनल इंडस्ट्रीज ऑफ सोशल डिफेंस न्यू दिल्ली की ओर से ड्रग्स इवेंट में सम्मानित

26आदित्य फ़ाउंडेशन वर्धा की ओर से विश्व महिला दिवस पर सेवा ग्राम वर्धा में ''महात्मा गांधी अवार्ड 2020 '' सम्मानित

27 इंडियन लायन्स गांधीनगर की ओर से सम्मानित

29 रेस टू रेन कैंसर ट्रस्ट की ओर से सम्मानित

30 ऑल इंडिया कैंसर केर कॉन्फ्रेंस बेंगलुरु में स्पीच दिया ओर सम्मान प्राप्त किया

31 काउंसिल ऑफ फिजिकल एंड स्प्रिच्युयल क्वाटा कानो स्टेट नाइजीरिया की ओर से स्पेसियल एम्बेसेडर फॉर पीस के पद पर नियुक्त

32 गांधी पीस ऑफ फ़ाउंडेशन नेपाल की ओर से एम्बेसेडर ऑफ इंटरनेशनल के पद पर नियुक्ति

33 रेस टू रेन ट्रस्ट की ओर से तालिम प्रमाण पत्र से सम्मानित

34 अहमदाबाद रोहित पंच की ओर से अहमदाबाद में सम्मानित

35 राज कवि साहित्य परिषद रायपुर की ओर से प्रतिभा सम्मान 2019 से सम्मानित

36 सागर काला भवन अयोध्या की और से रवीद्रनाथ टैगोर स्वदेश इंडिया ग्लोरी एवार्ड 2020 से सम्मानित

37 ग्रेस इंडिया नेशनल एज्यूकेसन ट्रस्ट दिल्ली की ओर बेस्ट सोश्ल वर्कर अवार्ड 2019 से सम्मानित

38 वेब पीपल काउंसिल की और से कोविड–19 (कोरोना वाइरस) सेवा के लिए आई कोण अवार्ड 2020 से सम्मानित

39 शाइनिंग झारखंड स्वयं सेवी संस्था के द्वारा कोरोना सेवा के लिए एप्रिएसन सेर्टिफिकेट से सम्मानित

40 नारायण मानव सेवा संस्था राजस्थान की ओर से कोरोना सेवा के लिए एवार्ड 2020 से सम्मानित

41 सामाजिक कार्यकर नरेंद्र उपाध्याय राजस्थान की ओर से कोरोना सेवा के लिए वर्ल्ड सोश्ल आइकॉन अवार्ड 2020 से सम्मानित

42 गांधी पीस फ़ाउंडेशन नेपाल की ओर से कोरोना सेवा के लिए एप्रिएसन सेर्टिफिकेट से सम्मानित

43 हिन्दू राष्ट्र निर्माण सेना झाँसी के द्वारा मोदी के योद्धा अंतर्राष्ट्रीय सम्मान –2020

44 लोक स्मृति न्यूज़ की ओर से कोरोना योद्धा सम्मान –2020

45 जय भीम फ़ाउंडेशन ट्रस्ट चांदखेड़ा अहमदाबाद की ओर से सम्मान पत्र –2020

46 निदान सेवा संस्थान जयपुर की ओर से कोरोना योद्धा सम्मान –2020

47 मीन साहित्य संस्कृति हरियाणा की ओर से कोरोना योद्धा सम्मान –2020

48 समता एज्युकेशन ट्रस्ट मोटेरा अहमदाबाद की और से सम्मान पत्र –2020

49 वेक पीपल काउंसिल की और से आईकोन एवार्ड –2020

50 विश्व संवाद परिषद दिल्ली की ओर से एप्रिएसन सर्टिफिकेट 2020

51 आदित्य फ़ाउंडेशन वर्धा की ओर से महात्मा गांधी अवार्ड –2020 से सम्मानित

52 गांधी पीस फ़ाउंडेशन नेपाल की ओर से एप्रिएसन सर्टिफिकेट –2020

53 उत्थान संस्थान जयपुर की ओर से कोरोना फाइटर अवार्ड –2020
54 श्री राम सोसाइटी की ओर से ऑन लाइन कोरोना फाइटर अवार्ड –2020
55 ह्यूमन राइट एंड एंटी करपसन सेल ऑफ इंडिया पंजाब की ओर से सर्टिफिकेट ऑफ एप्रिएसन –2020
56 नेहरू युवा केंद्र संगठन द्वारा ऑन लाइन प्रतिभा सम्मान –2020 से सम्मानित
57 वरदान न्यूज़ द्वारा इंडियन वोरियर्स कोविड –19 सर्टिफिकेट
58 स्वच्छ भारत निर्माण परिषद जयपुर द्वारा कोरोना योद्धा सम्मान –2020
59 युवा फॉर नेसन इंडिया द्वारा सर्टिफिकेट ऑफ एप्रिएसन –2020